

॥६०॥ दुःखी भवतः ॥ अथ एकादशकी भाषा लिख
ते ॥ संतदास सतगुर के चरणों ॥ तिन को गहों सुद
ठ करि सरणों ॥ जातैं उपजे जान विचारा ॥ छूटै भर्म
बहारा ॥ १ ॥ बहु ख्यों जगत जनमि नही आऊं ॥ तिन
को निजानंद पद पाऊं ॥ तिन की आज्ञा हृदय में ॥ लो
कहितारथ भाषा करों ॥ २ ॥ श्री नगवान विरंचि दि
भाष्यो ॥ सो विरंचि नारद सो आष्यो ॥ सो नारद व्यास
सहि समुझायों ॥ व्यास व्यास करि सुकहि पढायों
॥ ३ ॥ सो सुक कह्यो परी छत आगे ॥ छूटै दैत सु
पनज्यों जागे ॥ सोई सत अजुं त आगे ॥ छूटै

अव्यासो रिवि मनहरै ॥ ४ ॥ श्री भगवंत आयुय
भाष्यो ॥ तातै नाम भगवत राष्यो ॥ आपसिलन के
पंथ बतायो ॥ यामारग बहुत निहरि पायो ॥ ५ ॥ दे
हा ॥ व्यास देव सो भगवत ॥ भाष्यो द्वादश संकंध
॥ तिन में एकादश कहों ॥ ने न लहे ज्यों अंध ॥ ६ ॥
चौ पई ॥ एकादश इक तीस अध्याय ॥ तिन को व्यो
रै कहों सुनाय ॥ यदु कुल नास प्रथम में गायो
॥ बहुत भोति वैराग उपायो ॥ ७ ॥ हरि पुर पंथ क
ह्यो पुनि चारि ॥ जनक हियोगे सुरनि बिचारि
॥ सो नारद बस देव हि कह्यो ॥ पायो ज्ञान परम

दलह्यो॥८॥ वृत्ते कृत्स्न उद्धव प्रस्ताव॥ ते ईस वारि
निज ज्ञान सुनाव॥ द्वे यादव विना सविस्तार॥ एव
कती स ज्ञान निज सार॥ ए॥ श्री सुकदेव करत
रंभ॥ श्री तानू पति अडिगत जि अंभ॥ तव शुक्
जी यदा कियो विचार॥ ज्ञान विना नां नां हो उद्धार॥
१०॥ ताते ब्रह्म ज्ञान समझां ऊं॥ प्रथम दिट वे राग
उपां ऊं॥ पंधी उडे पंध द्वे जे सैं॥ ज्ञान विराग मिलै
रि ओ सैं॥ ११॥ एजा सुनौ जगत सुष जे सैं॥ जिन सैं
ता गि भ्रम तनर ओ सैं॥ न एको टि चप्यन कुं जादव
॥ अपो घन घम डिच दुंदिसि नादव॥ १२॥ तिन को

बहुत जाति विस्तार ॥ गनती करत लहे को पार ॥
वन आय भों कों ला कियो ॥ नवनिधि जहां बसे
लियो ॥ १३ ॥ बहुरि सुधर्मा समा मगाई ॥ बैवे जत
न व्यापे काई ॥ तिन की समता कों न बतां ॐ ॥ ता
लो क में कहूं न पां ॐ ॥ १४ ॥ तिन की बात कहत
बऔ सी ॥ पलक माहि सुपने की जै सी ॥ चारि घ
में सब संहारे ॥ जु बुद बुदा षवन के मारे ॥ १५ ॥ र
म कृष्ण तहां कोति कहार ॥ आयुहि आयु सक
संहार ॥ बिष आय को कीन्हौ व्याज ॥ ए सब कृष्ण
देव के काज ॥ १६ ॥ लोगनि कों वै राग जनायो ॥ ३

द्ववादिद्वारां समुत्थायौ ॥ प्रथमिमीमं अरजुनदे
अनी ॥ दुष्टनृपति अरुसेनां हनी ॥ १७ ॥ इदिवि
धिभूको भारउता स्यौ ॥ नावरुपजसकों बिस्ता
स्यौ ॥ जाकौंगदि पऊचेन वपार आगेजे जनहों
दि अपार ॥ १८ ॥ बहुतमांति करि अदभुत कर्म
॥ थाप्यो जगत भागवत धर्म ॥ इदिविधिसबके
काजसंवा रे ॥ तब हरिजी बेकूं गपधारे ॥ १९ ॥
दोहा ॥ येसी सुनि अदभुत कथा ॥ यदुकुलकों दि
जप्राप ॥ प्रसन्न करी रा जातहां ॥ लखिबेंतिन को
पाय ॥ २० ॥ राजो वाचा चोयई ततो विप्रभक्त ते सारे

परमदंनि अरु सेवक भारे ॥ विप्र को पकी न्हों कैं
पूरण ॥ जाते ना स भय सब तरण ॥ २१ ॥ कौन निमति
प्राप सो कौन ॥ कहो कृपा करि कस्तूरण भो न ॥ एव
मनां यादव ते सारे ॥ आपुहि आपु कौन विधि म
॥ २२ ॥ श्री सुक ऊ वा च ॥ भु को नार हरन के काजा
॥ भू अवतार ली यो वृजराजा ॥ बहु विधि भू को म
रउ ता स्थो ॥ सब मन मे गोपाल विचा स्थो ॥ २३ ॥
ल गि है जादव कुल सारो ॥ तौ लगि नहि भू नारउ त
रो ॥ मम आधीन रहें ए सारे ॥ ता ते निज करब नैन
मारे ॥ २४ ॥ दू जो कोई स कै न मारि ॥ ता ते कीजै ज

नविचारि॥ ज्यो बद्ध बांसवटेंवनमांही॥ पवननिमि
तपाइघरषांही॥ २५॥ आयु-आयुमें-अग्निउपावे
तासोंलागिसकलजरिजावें॥ ज्योहीइहांपवनदिज
आय॥ क्रोध-अग्नि-तहां-आपहि-आय॥ २६॥ क रि
विस्तारहोहि-संहार॥ यद्वद्वरायो-कृष्णविचार
आये-सकल-रषा-श्वर-गोन॥ निकट-क्षेत्र-करवायो
गोन॥ २७॥ कन्य-अंगि-रा-विश्या-मित्त॥ दुर्वा-सा-भ
यु-अग्नि-असित-कश्यप-बांस-देव-अरु-नारद॥ अ
रव-दु-तरि-षिव-दु-त-वि-सारद॥ २८॥ तहां-त-बे-मुनि
सुष-सौ-वै-ठे॥ यदु-कु-मार-तहां-छल-करि-पै-ठे॥ सांव

दिवनिताभेषवनायो॥बस्त्रादिकनिउदरअधिक
यो॥२९॥अतिविनीतसेचरणनिलागें॥पूछेप्रस
परतिनआगें॥यहबनितापूछेदिजराजा॥सनमुख
होतलगेअतिलाजा॥३०॥निकटप्रसन्नआयोहै
को॥करोविचारआपमैताको॥तुमत्रिकालदर
सबजानो॥कहाजनेंसोहमहिबषानों॥३१॥त
बकरिक्रोधबचनतेजनें॥कुलनासनभूसलइ
जनें॥जातेतुमबहुमदसेमांते॥दुष्टबुधिहोवो
सबदांते॥३२॥बैनसुनतअतिभैमनाआयो॥
बहिंताउदरछिटकायो॥देख्योतहांलोहकोमूस

ल॥ तवतिनिजां न्योनां दीकुसल॥ ३३॥ तेसबव
दुतमांतिपाछिताये॥ लेमूसलराजापेंआये॥ ३४॥
सेनसोंबोलेवेन॥ अतिमलीननदीजोरेंनेन॥ ३५॥
॥ सुन्योआपअरुमूसलदेव्यो॥ जीवनसबनिगयो
करिलेव्यो॥ मूसलरेतचूरणकरवायो॥ वृक्षुनप
छेसमंदबदायो॥ ३५॥ रेततरह्योदुतोअतितुछ
ताकोंनिगलिगयोंएकमछ॥ तेचूरणलहरिनि
मारे॥ आरुतीरभएट्टणमारे॥ ३६॥ मीवरएक
जालविस्तह्यो॥ औरनिसंगमछसोपख्यो॥ ता
उदरिलोदसोपायो॥ व्याधएकसोबांनबनायो॥

३० ॥ हरि जी बात सकल सो जानी ॥ बहु त भली ह
मे मानी ॥ जघा पि जोग अन्यथा करणो ॥ परि मन मं
हिं सकल सहरणो ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ यहु बे राग निरूपि
यो ॥ ज्ञान काज सुक देव ॥ ज्ञान कहैं अब जो लह्यो
नारद सो बस देव ॥ ३९ ॥ इति श्री भागवते महाप
रणो ॥ अष्टादश शास्त्रे संहितायां ॥ एकादश स्कं
यहु कुल प्राप निरूपणो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥
दा रावती आपु जंहां पालक ॥ सहान दक्ष प्राप वे
तालक ॥ नारद तहां निरंतर आवै ॥ कृष्ण देव के
रसन पांवे ॥ १ ॥ जीवन मुक्त भजे नित ता कों ॥
श्री सुक उवाच ॥

जीवतजै कौता कौं॥ जाको सकल लोकमें काल॥ ज
हां तहां निस दिन वैदाल॥ २॥ मानव तन इति न सों
जा॥ इतनी हरि सेवा की साजा॥ बंधै जादि ब्रह्म सु
राजा॥ कृष्ण देव सेवा के काजा॥ ३॥ औ सी देह भाग ते
पावै॥ हरि कौं पावै हरि कौता स॥ पल में कटें काल के
पास॥ हरि कौं पावै हरि कौदास॥ ४॥ एक बार बस
स्यो कै भौन॥ नारद की यो कृपा करि भौन॥ तिन ब
हु बिधि पूजा विस्तरी तापी छैं बानी उचरी॥ ५॥ त
स देव ऊचा च॥ देव सुजीतु म्हाशे आगमनां॥ स
व देहिन कौं सुख को भावैनां॥ उपमा तुम्हें कौन क

स

दाजै ॥ जिनके दरसं कल नय छी जै ॥ ६ ॥ ओर देव
 वै सुषुषुषुषुको ॥ तुमसे साध प्रगट पर सुषुको ॥ जिन
 हृदे बिश जै रंम ॥ तिन तें हो दि कौ नन दि कांम ॥ ७ ॥
 से फल लाइ के सब देवा ॥ त तो लहें जि ती करे से व
 जुं कर ले दर पन कौ कोई ॥ आपु करै आना से से
 ॥ ८ ॥ तुमसे साध सदा सुषुदाई ॥ जिन की महिमा
 ही न जाई ॥ जद पि दरस मे न यो कृता रथ ॥ पूछों व
 तथा पिदि तारथ ॥ ९ ॥ जि नाग वत धर्म सुनि जीव
 जन मरण त जि पावै पीव ॥ जिनि आचरण नित
 कौ देव ॥ हरि प्रह्लाद सो नाथो नेव ॥ १० ॥ पुरब जवन

सेवमें करी॥ मायामोह्यो सममिन परी॥ तब मै हरि वि
पुत्र करि बस्वो॥ ताही दुने नही उध स्यो॥ ११॥ तातें अ
वमे तुम्हरी सरना॥ सो कुक्कुरो मिटे ज्यु मरना॥ कद
लौं कदुं जगत के दुष॥ जा मैं सुपि नै दूं नही सुष॥ १२॥
जहां जद जाइ तहां कालु॥ हरि विन जीव सदा बेहालु
॥ ओ सेव चन सुने जवनारद तब बोले ते परम विस
रद॥ १३॥ श्री नारद ॐ धनि बसुदेव धानि तु वानि
॥ जा करि पूछे सारंग पानी॥ कोई होइ सकल जग घा
तक॥ बिष्णु धर्म ते रहे न पातक॥ १४॥ प्रवन की रत
नै आदर ध्यान॥ अनुमोदन ऊं करे सयान॥ सो पुन

तहो वै तत काल॥ बहुरि परे नही जंम के जाल॥ १५॥
॥ तुम यद कियौ बडौ उपकार॥ मोहि सुमिश्र यो मि
रजन हार॥ जा को अवन की रतन औ सो॥ अंध क
र को सुरि ज जे सो॥ १६॥ तुम सों कहैं कथा इति हा
॥ जातें छुटे भव के पास॥ रिषभ देव सुत न त्र योगे
॥ तिन्य ते सुनियौ जनक नरे स॥ १७॥ सुनि कै ब्रह्म
राय न भयो॥ जनम मरन संसा सब गयो अब उ
पत्ति कहत हैं तिन की॥ पूरन प्रीति रांम सों जिन
॥ १८॥ स्वायं भूम नृप सिर ता जा॥ ता को तनया
वृत्र त राजा॥ ता के अग्निध्र सुत भयो॥ नामि-

ताही तें लयो ॥ १९ ॥ ताके रिष न देव अवतार ॥ जि
नि प्रगटायौ ब्रह्म विचार ॥ ताके पुत्र एक सत भये ॥
सकल वेद के पारहिं गये ॥ २० ॥ तिनमें बडो भरथ से
नांम ॥ जाके हरे देव से नित रांम ॥ जाते नरत षंड यद
कह्यो ॥ तब अजना ननांमतो लह्यो ॥ २१ ॥ प्रथम हिं
बहु तनोग एभोग ॥ सम कित्या गि पुनिली न्हो योग
मन क्रम बचन करी हरि भक्ति ॥ तीजे जन मिलहाति
निमुक्ति ॥ २२ ॥ तिनिमें नव नव षंड नरिस ॥ एकरु ऊ
सी कर्म उपदेस ॥ नव ते महाभाग अधिकारी ॥ सबत
जिसे वै सदा मुरारी ॥ २३ ॥ तजे अनर्थ अर्थ विचारै ॥

यं हि विधि वदुत जावनि स्तारें ॥ देह अतीत दि
वर वेष ॥ सदा हृदै में एक अलेष ॥ २४ ॥ कवि हा
अंतरिक्ष पर बुद्ध ॥ पियलयनं आविर होत्र सु
॥ इमिल चमस कर भाजन नांम इनन व की
सब्र में धाम ॥ २५ ॥ आयु आदि संसार य सारा
सब कौं जा नैं सिर जन हारा ॥ हेत जाव को की
षंड ॥ या विधि विचरै सब ब्रह्मंड ॥ २६ ॥ सुर
रुसिध साध गंधर्व ॥ किं नर यक्ष नाग नर सब
सकल लोक मेइ छा चारी ॥ आउ रहित सब में
धिकारी ॥ २७ ॥ निमि से नांम जनक के सत्रा ॥

कवारतिनि कीन्ही जत्रा ॥ रवि सी सो नित जिन की
रहा ॥ आवत देवे नृपति बदेहा ॥ २८ ॥ राजा विप्र
मि उ विधाये ॥ आगे है ली बे कों आये ॥ क्रम क्रम
निधरे सिंह संसन ॥ क्रम ही क्रम ते वै वे आसन ॥ २९ ॥
तब ताही क्रम पूजा कीन्ही ॥ करि दंडोत प्रदक्षिना
दीन्ही ॥ प्रिक आनर रावस्तर बहुरंगा ॥ ते सब सो
तिन कै संग ॥ ३० ॥ ज्ञान विचार ब्रह्म मय ऐसे ॥ ब्रह्म
पुत्र संनका दिक् जैसे ॥ तब कर जोरि भयो नृप
दी ॥ बोल्यो वचन प्रेम अति बाढो ॥ ३१ ॥ तब नृप के
आनंद बढ़ो ॥ कछू नदिरही संनाल ॥ प्रेम मग न दे

बोलियो॥ वानी परमरसाला॥ ३२॥ विदेह ऊवाच
। चौपई ॥ तुम पारषद परमहरिजीके॥ भिजां
सब दिन मैं नीके॥ जीवनि के उद्धर वे कारज॥ सव
ल लोक में बिचरो आरज॥ ३३॥ धनि में धनि मेरो
अवतारा॥ जातैं पायो दरस तुम्हारा॥ नाना जोनि
जीव्य दयावे॥ मनषतन कबहुं एक आवै॥ ३४॥
या बिधि नर देहो बढु गहै॥ दुर्लभ साध संग नही
लहै॥ जिन के संग मिटे भव बंधा॥ नैन अनंत ल
दे नर अंधा॥ ३५॥ प्रांन नाथ दरिह दै बिराजै॥
टै कर्म नर्म नय भाजै॥ आधो छिन होवै सत संग
॥ सोऊ करै जगत नय जंग॥ ३६॥ ताते मम संदेह

वारतिनि की न्ही जत्रा ॥ रवि सी सो नित जिन की
हा ॥ आवत देवे नृपति बदे हा ॥ रघा राजा विप्रत्र
उविधाये ॥ आगे है लो वे कों आये ॥ क्रम क्रम अं
धरे सिंह सन ॥ क्रम ही क्रम ते वै वे आसन रटी
वताही क्रम पूजा की न्ही ॥ करि दंडोत प्रदक्षिना
न्ही ॥ प्रिक आचरण वस्तर बहु रंगा ॥ ते सब सोने
तिन कै संग ॥ ३० ॥ ज्ञान विचार ब्रह्म मय ये से ॥ ब्रह्म
मुत्र संनका दिक् जै से ॥ तब कर जोरि भयो नृपग
र्धो ॥ बोल्यो वचन प्रेम अति बाढो ॥ ३१ ॥ तब नृप के
आनंद बढ़ो ॥ कछू नहि रदी संनाल ॥ प्रेम मग न के

बोलियो॥ बानी परमरसाल॥ ३२॥ विदेह ऊवाच
। चौपई ॥ तुम पारषद परमहरिजीकि॥ मिजां
सब दिन मैं नीके॥ जीवनि के उद्धर बेकारज॥ सव
ल लोक में बिचरो आरज॥ ३३॥ धनि में धनि मेरो
अवतारा॥ जातैं पायो दरस तुम्हारा॥ नाना जोनि
जीव्य दयावे॥ मनषतन कबहुं एक आवै॥ ३४॥
या बिधि नर देही बढु गहे॥ दुर्लभ साध संग नह
लहे॥ जिन के संग मिटे भव बंधा॥ नैन अनंत ल
हे नर अंधा॥ ३५॥ प्रांन नाथ दरिह दै बिराजें॥
टे कर्म नर्म नय भाजै॥ आधो छिन होवै सत
॥ सोऊ करै जगत नय भंगा॥ ३६॥ ताते मम सं

॥ विष्णु भक्त ॥
मिटावौ ॥ परमहंस मोहि सुनावौ ॥ नगवंत धर्म
कदौ विस्तारी ॥ जा में दो सुनिवे अधिकारी ॥ ३७ ॥
॥ जिनि तैमिदि जगत मय मारी ॥ बहुरि आयु कौ
देत मुरारी ॥ ऐ सुनिवचन सबन सुषपाये तब मान
हि देवे न सुनाये ॥ ३८ ॥ कवि ऊवाच ॥ राजा प्रसन्न
रीतु मञ्जरी ॥ बड जागी पूछत हैं तैसी ॥ निरभेय द
ए के दे देवा ॥ हरिके चरण कंवल की सेवा ॥ ३९ ॥
॥ ता कौ छोडि करें नर जो ई ॥ दुष को मूल होत है सी
ई ॥ जहं जहं जाइ तही दुष मारी ॥ काल पासि कहुं द
रै न टासी ॥ ४० ॥ ता तै कहुं नागवत धर मां ॥ मिलै य
म कूटे मय मर मां ॥ श्री सुष श्री नागवत सुनाये ॥

॥ १ ॥ आपुनिलसदोपेथबसारदरदरदरदरदरदरदर
 जेहोवैकोहीदुस्ययथनिहाससिसोहोअपमममि
 होइबिलंबनलागे।अरसभिसारस्तोनिहासागे॥
 ४२॥आंविमूदिअधालेकोहीसाहारेमपममम
 नयहोइ॥हरिकीभक्तिसजनिसेप्याप्या॥कोहिले
 घनतेंटरेनटारी॥४३॥हरिमिलननितोभाषममम
 ॥हरिमजिमुक्तहोइइदिदिही॥मममममममममम
 धिअरुचित॥होइसुनायुहलहीनिन॥॥॥॥॥॥॥
 बहरिहिंसमरपनकरी॥मममममममममममममम
 ॥जबइहजीवदरिदिनीममम॥मममममममममममम
 आवस्यो॥४५॥नवआपमममममममममममममम

प मां नित न मैं मन लायो ॥ दैत ना वत बतैं ऊप नौ ॥
॥ ताही तैं यद मरि ज्यों ॥ ४६ ॥ ताते बुध से वै द
रि चरण ॥ जातैं मिटै जनम अरु मरण ॥ सोधि
इ उत्तम गुर देवा ॥ हरि कों जानि करै ता सेवा ॥ ४७
॥ सो ज्युं ज्युं आचरण बतावै ॥ त्यों ही त्यों हरि सों हि
त लावै ॥ कथट न न जे तजे सब काम ॥ छूटे जगत
मिलै तव राम ॥ ४८ ॥ दैत कछु दैये न ही राजा ॥
ना सै सो मन को काजा ॥ जे सै मृषा मनोरथ सुधि
ना ॥ मन ही करि ते रैन्युं उपना ॥ ४९ ॥ हे कछु न ही
परि हे सो सो है ॥ ताके संगि सब मो है ॥ तौ सै क
ल्प बि कल्पन की जे ॥ मन टिठ राखि राम रस पा जे

५०॥ हरिकेजनमकरमगुंननांमां॥ सुनें कहें सुमि
रे सब जांमा॥ तजैला जहो वैनिहसंगा॥ मगनरहेनि
तहारिकेरंगा॥ ५१॥ औसैं नजत प्रेम अधिक आवै॥ स
बत नरोमांचित है आवै॥ गदगद सबद अटपट
नां॥ इवै चित्त जल बरिषे नैंनां॥ ५२॥ रोवै हसे ऊच
रगावै॥ कबहुं मोन गहे रहि जावै॥ लोक वेद कुत
लाजन जांनै॥ ज्यों उनमत्त विवसयों वांनै॥ ५३
दसदिसि सरित सिधु नगनागा॥ रबिसासिता
हुंस अरु कागा॥ क्षति जल पाव कप वन आका
॥ जो कहु देखे सो हरि दासा॥ ५४॥ हरिको रूप
सकल को जांनै॥ जहां तहां परनां मदिगंनै॥

मुलिनभासैं आनां॥ नयौ अनन्य भजे भगवानां
५५॥ ज्यों ज्यो बढे दृष्टम अनुरागा॥ त्यों त्यों अनुभव
न्यों प्रतिग्रासा॥ तोष पोष अरु भूष विनासा॥ ५६
या विधिकरते साधन भक्ति॥ हरिजी सो बढे
अनुरक्ति॥ तब कछू और नुलिनहि भासैं॥ तब
ही हृदय प्रकासे॥ ५७॥ ब्रह्म एक दस दूंदिसि
दषे॥ द्वैत भाव करि कदे न लेषे॥ ऐसे अंग भागव
त मांही॥ सो हरि मे देखें जग में नांही॥ ५८॥ दोहा॥ य
मुनि कवि जी के वचन॥ कीन्ही प्रसन्न विदेह॥ अ
वभाषी भागो तके॥ लक्षन करणों गेह॥ ५९॥
विदेह ऊँ बाव॥ चौ पद॥ प्रभु जी कहो भागवत ल

मरण॥ जिन वस दो वे शं म वि च क्षण॥ कोण धर्म
द दै दि ठ रा धे॥ क्यो आ च रै को न वि धि भा धे॥ ६१
को न सु भा व नि रं त र ति न के॥ दै त भा व नां ही उ
जे न के॥ बो ले ह रि यो गेश्व र दू जे॥ नृ प के व च न
दु त ति नि पू जे॥ ६२॥ ह रि ऊ वा चा था व र जं ग म सु
म थू ला॥ ए के प्र कृ ति स क ल को मू ला॥ सो ए व
मा त म के आ धा रा॥ सो आ त मां अं स वि र का रा॥
२॥ ह रि जी तै उ प जे ए दो इ॥ अं ति ली न ह रि ही
दो ई॥ ता तै अ व दू ह रि को जं नै॥ दै त भा व क
हं न ही आं नै॥ ६३॥ ज्यौ सा ग र बु द बु दा तं र ग
मो सब ज ग त ज ग त पा ति सं गा॥ या वि धि जां

मयो जो धीरा ॥ सो हरि जन उत्तम है बीरा ॥ ६४ ॥
॥ जाँको हरि सौं निहचल प्रेमा ॥ अरु हरि जन सं
गति नित नेमा ॥ सब जीवन पर करुनां आने ॥ स
ब उधरै हृदये जो जानै ॥ ६५ ॥ जो कोई ता पर दोष
हिं गनै ॥ तहां तजे के औं त्यों धां नै ॥ निस दिन
देखं मरंग राता ॥ सो हरि जन मध्यम है ताता ॥ ६६ ॥
॥ जो मूरति में हरि कौं जानै ॥ मन क्रम वचन आ
न नही आनै ॥ ता कौं पूजे हित चित लाई ॥ कछु न
मागे सहज सुजाई ॥ ६७ ॥ ये हरि जन नमजे हरि
जानी ॥ सत गुर विनां नही पहिचानी ॥ सब आत
मान हरि के जानै ॥ सो प्राकृत जन साधव धां नै

॥ दया बहुरिकहुं उत्तमहरिनक्त ॥ जाहियरषिटूं
जै आसक्त ॥ दरसपरसतैंकारजसारैं ॥ तेहरिज
ननवदुषनिवारैं ॥ ६९ ॥ कृष्णबसैंजाकैंमनमा
ही ॥ औरसतिकछूजानैंनांही ॥ जोककूकहेसुन
अरुदेखै ॥ इंद्रियकृतमाषासबलेखै ॥ ७० ॥ सोह
रिजनउत्तमनरदेवा ॥ तातैमिलैनिरंजनदेवा
जोजनब्रह्मविचारदियायो ॥ आपुसमुहिसुषमा
देसमायो ॥ ७१ ॥ जनमरुमरनदेहकोजानैं
यात्रिषाकौंप्राणदिमानैं ॥ तस्माबुद्धिरुजैसो
को ॥ इहलक्षणउत्तमहरिजनको ॥ ७२ ॥
मनांअरुसबकामां ॥ तिनकौंभूलिनजानैंनां

॥ वासदेव मैकी न्हां वास ॥ सो कदि ये उत्तम हरिदा
स ॥ ७३ ॥ जिन के जा निवरन कुल के मी ॥ लोक बेदन
ही आस मी ॥ अलि देह अनिमानन आवै ॥ सो उत्तम
हरिदास कदा वै ॥ ७४ ॥ किसी बस्तु परम मता नंदी
॥ अरु तन को अनिमानन मांही सब भूत निपरस
मता आं नैं ॥ सो उत्तम हरिदास बंधां नैं ॥ ७५ ॥ अ
ष्ट सिद्धि त्रिभूवन सुष आं वै ॥ परिजेक बहूं मनन
डोला वै ॥ लव निमिषारध तजै न चरण ॥ गुना तीत
निरभेयद सरनां ॥ ७६ ॥ जां कों सिव बिगंघि अरु
देवा ॥ तन मन लाइ करै नित सेवा ॥ ते उजा के चरण
न पां वै ॥ तां कों जन क्यूं करि छुट कां वै ॥ ७७ ॥ हरि

कैचरनचंद्रचितजाकै॥ईहांतापउवैक्योंताकै॥
सोहरिजनउत्तमकहिये॥ताकैसंगिपरमपद
कहिये॥७८॥जाकोंहरिजीनिमधनत्यागें॥प्रेमउ
रिवंधेकूंभागें॥सोकहियउत्तमहरिदासा॥कदे
मतजियेताकोपासा॥७९॥दोहा।त्रिविधिनक्त
नकहे॥नृपसोंहरियोगेस॥तबमायाकैजांनि
वे॥कीन्हीप्रस्मनरेस॥८०॥इतिश्रीभागवतमहा
पुराणेएकादसस्कंधेबसुदेवनारदसंबादेदि
तीयोऽध्यायः॥२॥श्लोक ५५ चौपई॥११॥
जनकउवाच॥चौपई॥ ॥ ॥
॥ ॥ अबकरिहयाकहौहरिमाया

नेये सकल लोक नर माया ॥ तुम्हरे मुषसरोज की
बानी ॥ हरिकी कथा अमृत मै जां नो ॥ १ ॥ ताकों पीव
मत्पति नहि मां नो ॥ सदा पियो औ सी मन मां नो ॥ न
व के ता पत पत जो देही ॥ ताकों परम ओषधी एही
॥ २ ॥ औ से सुनि नर पति कै बेनां ॥ बकता को उपजा
वन चैनां ॥ तब वो ले बानी अनिरं मां ॥ तीजे अंतरि
क्ष सेनां मां ॥ ३ ॥ आपुहि आपु बिराजै रं मां ॥ दया सि
धु मन मां दि विचारा ॥ तब यह कस्यो सकल संसा
रा ॥ ४ ॥ पंच भूत करि श्रियो देहा ॥ बध्यो तहां आ
त माये हा ॥ जातें पहल भोग वै भोग ॥ बहु स्यो डधि
त होइ भव शोगा ॥ ५ ॥ तातें मो तैं चित लगवै ॥ मरै

निजानंदयदयावै॥ मगनरहै मेरै आनंदा॥ बहु
रिनदी व्यापै दुषदंदा॥ ६॥ याही तै यद नवविस्ता
स्यौ॥ नीतरि अंस आयनौ आस्यौ॥ इंद्रियदस अ
रुमनविस्तारे॥ बहुतभांतिके विषयपसारे॥ ७
॥ सोइह अंस इंद्रियन्यमनसू॥ भोगभोगवै सब
हीतनसू॥ आयभूलि भोगनिमनदीन्हौ॥ तब अ
भिभांनदेहको कीन्हौ॥ ८॥ भोगनिमातिकरमवि
स्तारे॥ तिनि के फल सुष दुष जय नारे॥ तिनि क
रमनि तेजो निअंनता॥ जनममरन को लहै न अ
ता॥ ९॥ प्रलय अवधि लौ भ्रमै निरंतर॥ लीन
इहुनि माया अंतर॥ सृष्टिसमै ब

॥१४॥ पवनकरै जव गंध दिक्षीन ॥ नमि होइ तव
जल में लीन ॥ लोही रस को हरे समीर ॥ तातें मिले
ज में नीर ॥ १५ ॥ अंधकार जवरूप दिहै ॥ तेज तबै
पवन दि संचरै ॥ बहुरि सपरस दिहै अकास ॥
पवन करै तब नभ में वास ॥ १६ ॥ काल की यो जव स
व दिक्षीण ॥ तामस अंधकार नभ लीन ॥ तामस
अंधकार मन मिले ॥ राजस अंधकार दोऊ मिले
॥ १७ ॥ इंद्रिय अरु राजस अंधकार दि ॥ सत अंध
की न्हों आहार दि ॥ बुद्धि देव सातिक अंधका
॥ महातत्त्व की न्हों संहारा ॥ १८ ॥ महातत्त्व सो प्र
कृति दि मिले ॥ या विधि काल सकल

ऐसा ही विषय तारं वाग उतपति परले श्री
अपारा १६ इदं नव हरि की माया करे उपज
प्रतिपाले हरे संतों की संक्षेप सुनाई वहु स
करे प्रसाद मन नारद २०
बल उत उत गोकर्ण श्री सुनिभाया
तातिरिजे की पति २१ तव पूछे आधी वदे
ईश की नामा जिनि एकल लोक नर माया त
को नुस मेझा नातिरे हम से देही कंनिस तरे २२
ता को नुस हीतिरि दे देवा सो कारि छपावता वो
मेवा एसा निबचन नृपति के सुझा तव बोले
बीय उदया २३ सकल मवष

दुषनि कै काजा ॥ करै करम आरंभ दिराजा ॥ तिन
केवल दुष अधिकारा ॥ अबहुं अरु आगे बिस
ारा ॥ २४ ॥ पायेहुं धन दुष अपारा ॥ नि
राको अधिकारा ॥ सोऊ अति दुर्लभ नहि
जो आबोंतो थिर नरदावे ॥ २५ ॥ त्यों ही गढ़ कु
वसुत दारा ॥ पलक मांदिं दहि जाई पसारा ॥ ज्यों
य मांदिं मिलाना होई धरि क मांदि बिचुरै स
ई ॥ २६ ॥ जे कछु ईहां कर्म कमावै ॥ तिन तैं जो नि
नि दुष पावै ॥ इन मै कोई नांदि क उावै
पुकों सब कोई जावै ॥ २७ ॥ या ही बिधि न
लोका ॥ थिर नरदे बिधि हुं को लोका

चैवदुःखं तां। तिनैमनकीमिटेनकांती॥२४॥
मधुरचरित्राचार्यानां कामक्रोधअरुलोभस
नां लक्ष्म्यायकमलमहीजांतां आपुआपुमें
दिव्यानां २५॥ कालागईऊहांतैपदे॥ बहुरिअ
इईलंनकलमय ३० सवदत्रससकलज
सो॥ नमुराचरित्रावे ३० सवदत्रससकलज
आवे ३० सवदत्रससकलज
नम्रावे ३० सवदत्रससकलज
वावावे ३० सवदत्रससकलज
नम्रावे ३० सवदत्रससकलज
वावावे ३० सवदत्रससकलज
नम्रावे ३० सवदत्रससकलज
वावावे ३० सवदत्रससकलज

सों लावे ॥ अरु दान नि पारि करु नां आने ॥ सम मि
ता उत म बह मां ने ॥ ३३ ॥ सौ च पाव त प मो न ति
ता ॥ बहु बिधि ले वे गुर सों सिद्धा ॥ ब्रह्म चर्य अरु के
ल रह नां ॥ दिसा त्याग दुंद सब सह नां ॥ ३४ ॥ य
ता की आश्रम न बांधे ॥ बस्रटू क के बल कल सा
ये ॥ जहां तहां चेतनि आत म देखे ॥ पर मात्मा निय
लेखे ॥ ३५ ॥ ग्रंथ भगति के अद्वा करे ॥ निदा राग
तष परिहरै ॥ देह बचन अरु मन को डै ॥ सम द
सत संतोष न छू डै ॥ ३६ ॥ जनम करम अरु गु
हरि जी के ॥ सदा सुनें उद्धार न जी के ॥ त्यों ही क
निरंतरि ध्यावे ॥ सोई करै हरि ही जो भावे ॥

३० जपतप जाग जागि तदां नाना तनमनुध
दारा सुत प्रां नो जाक ह्ये सा स बुद्धि दिनि वैदे
आविधि सकल कर म को छे दे ॥ ३८ ॥ पात्र रजंग
मदरि मय जा न पारि सेवा साधन की गं नें ॥ मिले
परस पर छवि नं न गं वे तिसा दिन कहत सुनत
सुष पाव ॥ ३९ ॥ पल पल प्रीति बटै दिय फूलें ॥ गुं
ना निल नाल न तन को न ले दू जो भाव न के बहं
इ प न प्रेम स गन जागत अरु सुप नें ॥ ४० ॥ ऐसे
प्र न म गति को पावे पल पल तनु पुलकत है आ
॥ कवहं दरि चिंतन ते रोवे कवहं दं द से अनंदि ॥
न दो ॥ ४१ ॥ कवहं नाचै कवहं गावे ॥ लाजर

हित ज्यों ज्यों मनि भावै ॥ कबहुं गुन सुमिर ता
लि जावै ॥ स्वास सब दबाहर नेही आवै ॥ ४२ ॥
विधि लेवै गुर सौं सिद्धा ॥ गुर सिष्य नि की डहे
रक्षा ॥ ब्रह्म परायन ता जन केरे ॥ माया भूलि न
आवै नेरे ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ एसुनि बचन विदेह
हृदय बढे आनंद प्रसन्न करत ब्रह्म की ॥
बूटे न व फंद ॥ ४४ ॥ विदेह ऊवाच ॥ ब्रह्म वेत्ति
अधिकारी ॥ तुम होइ हे मै हृदै विचार ॥ ता
हो ब्रह्म को स्तुता ॥ जाने जाहि मिटे गृह कृपा
॥ ४५ ॥ परमात्म ब्रह्म भगवों नां ॥ एसवर एव
॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सब जिन को आवै

॥ ३७ ॥ जपतपजोगजगिब्रतदांना ॥ तनमनधन
दाशसुतप्रांना ॥ जोकसुसोसबुद्धिदिनिबैदे
याविधिसकलकरमकोंछेदे ॥ ३८ ॥ पावरजंग
महरिमयजानें ॥ पारिसेवासाधनकीगंनें ॥ मिले
परसपरहरिगुंनगावे ॥ निसदिनकहतसुनत
सुषपावे ॥ ३९ ॥ पलपलप्रातिबटैदियफूलें ॥ गुं
ननिमंजालततनकोंचलै ॥ दूजोभावनकबहुं
उपनै ॥ प्रेममगनजागतअरुसुपनै ॥ ४० ॥ ऐसे
प्रेममगतिकोपावे ॥ पलपलतनुपुलकतदैआ
वै ॥ कबहुंदरिचिंतनतेरोवै ॥ कबहुंदहसेअनंदि
तहोवै ॥ ४१ ॥ कबहुंनचैकबहुंगावै ॥ लाजर

हित ज्यों ज्यों मनि भावै ॥ कबहुं गुन सुमिरत मि
लि जावै ॥ स्वास सब दबाहरने ही आवै ॥ ४२ ॥
बिधि लेवै गुरसों सिद्धा ॥ गुरसिष्य नि की ददे
रक्षा ॥ ब्रह्म परायन ता जन केरे ॥ माया भूलि न
आवै नेरे ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ एसुनि बचन बिदेहत
॥ हृदय बढे आनंद प्रथम करत ब्रह्म की ॥
छूटे भव फंद ॥ ४४ ॥ विदेह ऊवाच ॥ ब्रह्म वेत्ति
मैं अधिकारी ॥ तुम होइ रहै मैं हृदय विचारी ॥ ता
कहौ ब्रह्म की स्तुति ॥ जाने जाहि मिटे गुरु कृपा
॥ ४५ ॥ परमात्म ब्रह्म भगवानां ॥ एस सब एव
विद्यो है नां नां ॥ सब जे जीवन को अतिकरुना

यन ॥ तब बोले पंचमपि पलाइन ॥ ४६ ॥ धियलाइ
नऊवाच ॥ सहस्रमथूल सकल संसार ॥ जाकी सव
तिस कांति बिस्तारा ॥ उत पाति प्रलै करे ब्रह्मा के
॥ काहू हूतें जन मनहि ता को ॥ ४७ ॥ जागरत सु
पन सुषंति तुरिया ॥ चंद्रु मे सदा एकर सपुरि जा
॥ इंद्रिय देह हृदयं अरु प्राणं ॥ जातै चेतनि दे
वरतां नां ॥ ४८ ॥ जे सेइ देह ज उलोहा वरते ॥ चुंब
क संग बहुत विधि निरते ॥ सो नग वांन ब्रह्म
निसोई ॥ सो परमात्म जानै कोई ॥ ४९ ॥ मन अ
रु बुद्धि चित्त अरु प्राणं ॥ इंद्रिय देह सब दत्त मि
मां नां ॥ की ईताहि पदु चिनाहि संके ॥ जात जात

रही तेथे के॥५०॥ जे स्याव कलोहत पाथी॥५१॥
वक सभा ते जातिनियाथी॥ सब परका सै सब दे
जाले॥ परि पावक परि जोर न चाले॥५२॥ यों स
इंद्रिय हृदय अचेतन॥ ताके संग दुते के चेतन
॥ और सकल अरथ नि को जानै॥ कोन सकाति
जो ताहि पिछां ने॥५३॥ लै लै अरथ बंधां ने बे
॥ परि परत न जानै मेदा॥ यह नृदिग्रह नृदिग्र
ह नृदिग्रह॥ यार्ते परं सत्य है सोई॥५४॥ स्तब्ध
थूलन जावै बरनि॥ गगन पवन पावक जल ध
नि॥ नहि मन बुद्धि चित अहंकारा॥ चिदानंद
य सब के पारा॥५५॥ नां सो बाल दृष्टि देय

यन ॥ तव बोलि पंचमपि पलाइन ॥ ४६ ॥ पियलाइ
नऊवावा ॥ सहस्रमथूल सकल संसार ॥ जाकी स
तिस कांति विस्तार ॥ उत पाति प्रलै करै ब्रह्मा के
॥ काहू हतै जन मनहि ता को ॥ ४७ ॥ जागरत सु
पन सुषांति तुरिया ॥ चहु मे सदा एकर सपुरि जा
॥ इंद्रिय देह हृदयं अरु प्राणं ॥ जातै चेतनि के
वरतां नां ॥ ४८ ॥ जै से इहे ज उलोहा वरते ॥ चुंब
क संग बहुत विधि निरते ॥ सो नग वांन ब्रह्म पु
निसोई ॥ सो परमात्म जानै कोई ॥ ४९ ॥ मन अ
रु बुधि चित्त अरु प्राणं ॥ इंद्रिय देह सब दत्त मि
मां नां ॥ की ईताहि पदु चिनाहि संके ॥ जात जात

रैहा तेथ के ॥ ५० ॥ जे सै पाव कलो दत पायी ॥ प
व क स मा ते ज ति नि या यो ॥ सब पर का सै सब के
जाले ॥ परि पाव क परि जो र न चाले ॥ ५१ ॥ यों स
इंद्रिय हृदय अचेतन ॥ ता के संग दु ते के चेतन
॥ और स कल अरथ नि कों जानै ॥ कौन स कति
जो ता दि यि छां ने ॥ ५२ ॥ लै ले अरथ बंधां ने बेद
॥ परि परत क्षन जां ने मेदा ॥ य द न दि य द न दि य
द न दि हो ई ॥ या ते परं स त्य हे सो ई ॥ ५३ ॥ स्त द न
यूल न जा वे ब र नि ग ग न प व न पा व क जल धर
ने ॥ न दि म न बु धि चित्त अहं कारा ॥ चि दानंद म
सब के पारा ॥ ५४ ॥ नां सो बाल वृद्धि न दि यू वा

ना सो विन सै ना सो दुवा ॥ तिरिया पुरिष कलेव
न होई ॥ सुरनर ना देग असुरन ही कोई ॥ ५५ ॥ रक
त पात सित न हरिता ॥ जाति बरन आप्र मन धरि
ता ॥ सीत उ सम चंद नहि सुरा ॥ दिवसन राति नि
कट नहि दूरा ॥ ५६ ॥ सुष दुष रहित वसे सब मा
ही ॥ आपुहि आपुलि पै कहुं ना ही ॥ बंधे भाव सो
आतम अंसा ॥ सुनि सरोवर बिल सेहं सा ॥ ५७ ॥
गगन पवन पावक अरु नीरा ॥ धरनि बंध सब
किये सरीरा ॥ पंचवस्तये पंच बंधा ॥ सबद सप
रसरूप रसगंधा ॥ ५८ ॥ इंद्रिय दूद स अरुति न
को देवा ॥ साति कर ज सताम सनेवा ॥ मन बुद्धि

वेत्त महत्त त अहं कारा ॥ एक प्रकृति को सकल
सा रा ॥ ५ ए ॥ एके ब्रह्मदेता को कारन ॥ विन इ
सब को विस्तारन ॥ ज्यो सुव में बहु घट उपजावे
सुव मादिरहि सुव मादिसमावे ॥ ६० ॥ ते सब घट
हैं विधिनां ॥ परि सुव को दिन ही कहूँ आनं
॥ त्यों सब जगत आदि माधि अंता ॥ और न के कू
क भगवता ॥ ६१ ॥ सो नहि उपज्यो विन सेनां ही
बाल जुवादि परे नही छांदी ॥ बचेन घटे चले न
हि डोले ॥ शेष न तोष मो न नहि बोले ॥ ६२ ॥ जहं
तहं पूरन परम अनूपा ॥ चिदानंद विज्ञान स रूप
देह नैद बहुधा सो सो है ॥ जान विनां

मो है॥६३॥ जे संपवन एकई प्रांना॥ दण्डिनि
संगदी सेनांना॥ उदभिजस्वेदजरावुजअंडा च
रिषानिपूरनवसुंडा॥६४॥ लिंगदेहजादेहदि
वे॥ प्राणवायुतहंआनिसंमावे॥ सबदसपर
रूपरसगंध॥ मनअहंकारबुद्धिचितबंध॥
॥ लिंगदेहईनहीनवकोहे॥ याकैमिटेतिरंज
नसोहे॥ निद्रावसुसुषयातिजवआवे॥ तवय
हलिंगदेहछिटकावे॥६६॥ अहंकारममता
कहुंनाही॥ मनअरुबुद्धिचितअहंकारनरदे
॥ जागेंप्रथमबातकोकहे॥ जोकरनोतोजे
तो कियो॥ आगेंपीछेंलीन्होंदियो॥६८॥ ताते

॥ दारिद्र्य जाननि दार ॥ या विधि की जे ब्रह्म वि-
रा ॥ यारे वासना सहित ही रहै ॥ तातें देह फेरि क-
रिल है ॥ ६९ ॥ लिंग सरी सहित वासना ॥ ताहि
टेन हि भव सासना ॥ तातें दारिचरन निचित ला-
वे ॥ और सकल बंधन छिटकावे ॥ ७० ॥ या वि-
धि सकल चित्त मलना सें ॥ राखे समानत ब-
ल प्रकासे ॥ जो न प्रथम भक्ति नहि जानै ॥ तो व-
ह करम योग कौं ठां नै ॥ ७१ ॥ करम जोग तैं उयजे
भक्ति ॥ तब दारिचरन बटे आसति ॥ तातें दो ई-
श प्रकासा बूटे काल जाल भव यास ॥ ७२ ॥
दीप ए पिप्पलायन बैन सुनि ॥ करी प्र

मो है ॥ ६३ ॥ जे संपवन एकई प्रांना ॥ ६४ ॥ इंद्रिनि
संगही सैनांना ॥ उदभिजस्वेदजरावुजअंडा चा
रिषानिपूरनवत्संडा ॥ ६४ ॥ लिंगदेहजादेहदिज
वे ॥ प्राणवायुतहंआनिसंमावे ॥ सबदसपर
रूपरसगंधा ॥ मनअहंकारबुद्धिचितबंध ॥ ६५ ॥
॥ लिंगदेहईनहीनवकोहे ॥ याकैमिटेनिरंज
नसोहे ॥ निद्रावसुसुषुपातिजवआवे ॥ तवय
हलिंगदेहछिटकावे ॥ ६६ ॥ अहंकारममता
कहुंनाही ॥ मनअरुबुद्धिचितअहंकारनरदे
॥ जागेंप्रथमवातकोकहे ॥ जोकरनीतो जो
तो कियो ॥ आगेंपीछेंलीन्हों दियो ॥ ६७ ॥ ताते

हरिसाजाननिदारा॥याविधि कीजेब्रह्मविचार
रा॥पारेबासनांसहितहीरदै॥तातेंदेहफेरिक
रिलहे॥६९॥लिंगसरीसहितबासनां॥तादिमि
टेनदिभ्रवसासनां॥तातेंहरिचरननिचितला
वे॥औरसकलबंधनछिटकावे॥७०॥यावि
धिसकलचित्तमलनासें॥राविसमानतब्रह्म
प्रकासे॥जोनप्रथमभक्तिनहिजांनें॥तौव
हकरमयोगकोंठांनें॥७१॥करमजोगतेंउपजे
भक्ति॥तबहरिचरनबटेआसक्ति॥तातेंहीई
ब्रह्मप्रकास॥छूटेकालजालभ्रवयास॥७२॥
दोहरपिप्पलायनबैनसुनि॥करीप्रसन्नमिथि

॥ करमजोग अवकारि कृपा ॥ कदौ परम ॥
॥ ७३ ॥ विदेह ऊवाच ॥ कर्मयोग अव कदौ ॥
॥ मैं आयो तुम्हरी सरनाई ॥ जाके कीये कटे
कर्मा ॥ उपजै ग्यांन होइ निहं कर्मा ॥ ७४ ॥
॥ त्म कदौ तुम वेदा ॥ या कौ मेरे अति संदेह
॥ सपुत्र संनका दिक चारी ॥ ब्रह्म परांडन
विचारी ॥ ७५ ॥ एक बार किरपा करी आ
ता समि पदरस मैं पाये ॥ इहे प्रसन्न मैं
कीन्ही ॥ उत्तर नदियो हृदै धरि लीन्ही ॥ ७
॥ दिवो लो सो कौ मैं कारन ॥ यह भाषो भवस
तारन ॥ ॥ श्रे सेवचन नृपति जब भाषे ॥ अ

सातेकरेवेदकेकर्म॥ हरिकेहेतबडोयदुधमो॥
८६॥ औरकछूफलभलिनजामे॥ हरिकेहेतकर्म
सबगंनै॥ गैकर्ताइहकदेनभाषै॥ जोकछूसोह
रिकौकरिराषै॥ ८७॥ याविधिध्रमभगतिउपजा
वै॥ तबसबकर्मआपुहीजावै॥ तबहीध्रगटैजा
मप्रकासां॥ मिलैरंमछुटेभवयासा॥ ८८॥ वेदक
मंथकह्योभेतोसों॥ अवेसुनितंत्रपंथपुनिमोसों
हदैगाविकाटीजाचाहै॥ सोविधिसोंपुजाअ
गगाहै॥ ८९॥ वेदमिलितभाषतहोंपूजा॥ ताते
मेटेसकलभ्रमदूजा॥ श्रीगुरतेंप्रसादहि

सो ज्यों ज्यों सब विधि दिवता वें ॥ ए० ॥ जामूरति प
रिद्धा होई ॥ हरिदि जां निकारि पूजे सोई ॥ अति
पवित्र है करै सना नां ॥ मन कीत जै वासनां नां तं
॥ ए१ ॥ वायु अं पां न छीक जमुहाई ॥ और पवन
गुन उठे न काई ॥ सन मुख वै ठि करे तन रक्षा ॥ अ
ग्न्या समंत्र पटि अक्षा ॥ ए२ ॥ आसन सो धि सो ज
सेवा की ॥ सब लेवे टे तजै न बाकी ॥ विष्णु रूप प्रति
मा मे आने ॥ अर्घ पाद अरु बिष्ट बवं ने ॥ ए३ ॥
मूल मंत्र करि पूजा करै ॥ और न कछु वचन उच्चारै
॥ सकल अंग हरि जी के ध्यावै ॥ संघ चक्र गदा पद मणि

ल्यावे॥ ए॥ ४॥ नूषन वसन पारषद सहिता॥ हसि
त वदन देषत दुषदहिता॥ विविधि भांति असनां
न कराव॥ करितिलकादिक बस्त्रपदिरावे॥ ए॥ ५॥
॥ बहु सुगंधमालापदिरावे॥ बहु तभांति करिने
गलगावे॥ गंधधूप आरती संकारे॥ घंटा आदि स
बद विस्तारे॥ ए॥ ६॥ या विधि मंत्रानि सों सब करे
। ता पाछे स्तुति विस्तरे बहुरिकरे दंडी त प्रनां मां
। पठे मंत्र लेवे हरिनां मां॥ ए॥ ७॥ बाहिर बस्तु
नि आने॥ और नि मन सुपूजा वाने॥ त नम यु न
नेरंतरि सेवे॥ बहु प्रसाद माये करिलेवे॥ ए॥
बहुरि देव को हृदये॥ मुरति संनयि टारै क

सो ज्यो ज्यो सब विधि दिवतावे ॥ ए० ॥ जामूरति प
रिद्धा दोई ॥ हरिदि जां निकारि पूजे सोई ॥ अति
पवित्र कै करै सना नां ॥ मन कीत जै वासनां नां
॥ ए० ॥ वायु अं पां न छीक जमुहाई ॥ और पवन
गुन उषे न काई ॥ सन मुख बैठि करै तन रक्षा ॥ अ
ग्न्या समं च पटि अक्षा ॥ ए० २ ॥ आसन सो धि सो ज
शिवा की ॥ सब लेवे टै तजेन वा की विष्णु रूप प्रति
मा मे आने ॥ अर्घ पाद अरु विष्ट बगं ने ॥ ए० ३ ॥
मूल मंत्र करि पूजा करै ॥ और न कछु वचन उच्चारै
॥ सकल जग हरि जी के ध्यावे ॥ संष चक्र गदा पद मणि

त्यावै॥ ए४॥ भूषनवसनपारषदसहिता॥ हसि
तवदनदेवतदुषदहिता॥ विविधिभांतिअसनां
नकराव॥ कारितिलकादिकबस्त्रयदिरावै॥ ए५॥
॥ बहुसुगंधमालापदिरावै॥ बहुतभांति करिने
गलगावै॥ गंधधूपआरतीसंवारै॥ घंटाआदि
बदविस्तारै॥ ए६॥ याविधि मंत्रनिसों
॥ तापीछेस्तुतिविस्तारैबहुरिकरैदंछीत
॥ पढैमंत्रलैवैहरिनांमां॥ ए७॥ बाहिरवस्तु
तेआनै॥ औरानिमनसुपूजागानै॥ तनमय
निरंतरिसंवै॥ बहुप्रसादमांरि
॥ बहुरिदेवकोंहदेधरै॥ मु

॥याविधिहरिकेआत्मजाने॥तथासकतिसबपूजा
गंनें॥९॥१०॥॥असैसेवतउपजेजाना॥वेगेआनिमि
लेंभगवांनं॥उभेप्रतिमाहरिकीसेवे॥साधूप्रत
दसोहरिदेवे॥१००॥दोहा॥एसुनिवचनबिदेके
॥बाद्यौमनमैप्यार॥तवगुंनअरुकर्मनिसहित
॥पूछेहरिअवतारा॥१०१॥श्लोक॥इतिप्रीतगवते
महापुराणेएकादस्कंधेवसुदेवनारदसंवादेत
थोध्यायः॥३॥चौपड़ी॥२२०॥राजाउवाच॥अवअ
वतारकथाविस्तारो॥गुनअरुकर्मसहितउचारे
॥जिजेलायेलेंदिजेआगें॥अवहेंसबनाथोअनु
रागें॥१॥एसुनिनृपतिजनककेवेना॥कृपासिंधु

करुना के अना॥ तब सा तयें डुमिल सेनां मां॥ बोले व
चन परम अमिरां मां॥ २॥ डुमिल उवाच॥ जे अनंत
के गुन अवतारा॥ तिन को नृपति लहे कौ पारा॥ भू
रे नु करि कोई गनै॥ सो ऊकहा सकल गुन भनै॥ ३॥
हरि के गुन अवतार अनंता॥ बाल बुद्धि जो चाहे
ता॥ ताते कह्य एक में भाष्यो॥ ते रै हृदै न संसाराष्यो॥ ४॥
॥ पंच भूत निर्मित ब्रह्मडा॥ राख्यो नीर मां दिज्यो अंज
ता में अंस आपनौ धारा॥ सो है आदियुरिष अवता
रा॥ ५॥ जिन के अंगनि ते सब देहा॥ देह मां दिबर ते
सब येहा॥ तिन के अंगनि ते सब अंगा॥ इंद्रिय अहं
बुद्धि बहुरंगा॥ ६॥ सतरजतम ते सकल पसारा॥ ७॥

पति अरुपालन संहारा ॥ प्रथमद्विज ते ब्रह्मा कि
यो ॥ सातिक जनम विष्म कों दियो ॥ ७ ॥ ताम सकरि स
कर उपजाये ॥ तिन सों सकल लोक निपजाए ॥ ब्र
ह्मा रच्यो विष्म प्रतियाले ॥ दरे रुद्र यों नव पथ चाले
॥ ८ ॥ बहुरि सुनों हरिके अवतारा ॥ नव सागर के ता
र न दारा ॥ धर्म पिता अरु मूरति माता ॥ तह नर ना
शं यं न विष्या ता ॥ ९ ॥ आत्म ज्ञान भक्ति विस्तरे ॥ ज्ञा
सों ला गि जीवनि स्तरै ॥ अब दू प्रगट करै आच
र नाना रदादि नित सेवै चरना ॥ १० ॥ एक बार सु
र पति मनि आन्यो ॥ मम लोक हिलै दे यों ज्ञानों
॥ तब तिहि आशा कां मदि दीन्दी कांम संग से

सबलानी ॥ ११ ॥ रंभादिक अपसरा अपारा ॥ त्रिविधि
पवन वसत पसारा ॥ बदरी घंड सखे चलि आये ॥ नर
नारायण न देखे पाये ॥ १२ ॥ भरि भरि बान निहने सरीरा
॥ निर्फल भये अग्नि ज्यों नीरा ॥ तब तेरे मरो मथ ह
राने ॥ आप अग्नि जीवन गत माने ॥ १३ ॥ हरि अपरा
ध इंदु तजान्यों हसि बोलेति नकों नय मान्यों ॥
मति नय करौ पंच सरबीरा ॥ देव नारि भव प्रांस
मीरा ॥ १४ ॥ बैवौ इहां अति प्य करावौ ॥ हंस आश्र
म सुफल करि जावौ ॥ ए सुनि अभव दान के वे
जा ॥ ते सब जोरि सके नहि नैना ॥ १५ ॥

नवायेसीसा॥बोलैंबचनजानिजगदीसा॥दिप्रमुक्ते
हकछुनदीअचंभा॥तुमहोप्रकृतिपुरुषकेपंभा
॥१६॥निर्विकारनिरगुन॥निरबेदा॥जिनकोजा
निसकौनहिबेदा॥निजानंदपूरनमुनिसारे॥तेसे
वतहैंचरनतुम्हारे॥१७॥तुम्हरेचरनसरनजेआ
वे॥तिनकोसुखबहुबिघनपठावे॥तिनकोलोक
दाबिपगनावे॥गएचहैंतुम्हरेपदऊचैं॥१८॥तातें
बिघनसबदेवा॥मिटतैंजानिआपनीसेवा॥ओ
रकिसीकोबिघननकरहा॥जातेंतिन्हेंदंडसबनर
हा॥१९॥परितुवजनहिनबिघनसंतावे॥बिघननि
सीसा॥सचरनदेजावैं॥जोत्रिभुवनपतितुमरख

वारे। कदा करैतौ विघन विचार ॥ २० ॥ ताते तुम्हारे
दा अचंभा ॥ जाते मोहि सकी नदी रंभा ॥ देखा जिध
अस जाल सनिजा ॥ सीत उल्लव रपा अरु तंदा ॥ न
जिहा सिखादिक विस्तार ॥ इन के गुन ते जल अ
अपारा ॥ ता कौं बहुत कटकारिते ॥ गोपद जो धन
डिते नरे ॥ २२ ॥ तिन कौ तुय सब मिछा दोई ॥ उहु
जो कमें एक न कोई ॥ ताते सब साधन ऊं करे ॥ तुम्ह
भक्ति विना न दीतरे ॥ २३ ॥ या जिधि टेव वचन
रे ॥ तव द्वार एक अचंभा करे ॥ अति अदभुत न
नारि अने का ॥ मन मोहनी एक ने एक ॥ २४ ॥
सब सेवा करत दिखाई ॥ मनों ॥ २५ ॥

ई॥ तिन के रूप गंध सब मोहे॥ चंद्र उदै उड गन जे
सोहे॥ २५॥ तिन सौ हरि जी बोले बेनां॥ इन मै एक
लेहु तुम मैनां॥ स्वर ग लोक कों भूषन रूप॥ जाते
ए सब परम अनूपा॥ २६॥ तिन सब हरि कों कीये
प्रनां मां॥ लीही एक उरव सीनां मां॥ करि प्रनां मपु
निवारं वारा॥ पदुचे सकल इंद्र दर वारा॥ २७॥ ति
न इंद्र हि परसंग सुनायो विसमय आस इंद्र मन
आयो॥ बहुरि लीयो हंसा अवतारा॥ चारि भए
सनकादि कुमार॥ २८॥ दत्त कपिल व्यास अरु पि
ता हं मारा॥ आवहुं ब्रह्म रूप विस्तारा॥ हे प्रीति म
धु प्रांन निवारे॥ ता करि हरे वेद उधारे॥ २९॥ सत

प्रलराजाहरिभक्त॥ ताकौंहारिजीकीयोविरक्त॥
नदीप्रलयप्रलयदिषरायो॥ मध्वरूपजांनहिस
मायो॥ ३०॥ बहुरिवराहरूपहरिधास्यो॥ हर
देअतिदुष्टहिमास्यो॥ बोरीदुतीमहीजलमां
ही॥ सोऊपरिधापीपलमांही॥ ३१॥ कूरमकेमंद
गिरिधस्यो॥ अंभृतकाटिसुरकारजकस्यो॥ या
हयलौगजराजपुकास्यो॥ तबहारिजीततकाल
उवास्यो॥ ३२॥ बालविल्यादिकजेरिविराजा॥ अं
गुष्टसमआकारविराजा॥ कश्यपकेकाजेएकवा
रा॥ समिंधानिकौंतेबनहियधारा॥ ३३॥ तहांगाई
पगजलभरिया॥ तिनमेंआपुआ

॥ हा सी करै इंदु तहां परो ॥ तबतिनिहृदे हरि स
रो ॥ ३४ ॥ जब आतम को कोई नां दो ॥ तब तुम ना
थ उधार न मां दो ॥ ताते अवदम भए अनाथा ॥ क
रुनां सिंधु गहो कर हाथा ॥ ३५ ॥ इतनी सुनि आ
रति की बानी ॥ तहां उति धार सारंग पानी ॥ तब ह
रि कर गहि सब नि उधां रा बाल पिल उधर न अ
वतारा ॥ ३६ ॥ ब्रह्म हत्या मय इंदु सदा स्यो ॥ तब
ही हरि जी प्रगट उधा स्यो ॥ सुरबनिता जब असु
र निहरी ॥ तब ते हरि सर नहि अनुसरी ॥ ३७ ॥ तब
हरि जी ते सकल उधा री ॥ असुर मारि सब विपति
निवारी ॥ पुनि नर सिंघ रूप हरि धा स्यो ॥ असुर

हर नि क पु जि नि श र सो ॥ त त ॥ ज न प्र हित ॥ त
ली न्दों रा यी ॥ जा की प्र ग त क रें स त्त मा नी ॥ त त ॥ त
अ सुर प्र व ल अ ति न श ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त
॥ ३ ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त
तार ध रं ही ॥ मी रि अ म र स व द ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त
त सुर न र सु प्र पा त्रि ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त
आ च ल अ न्न यो न्न नि श र ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त
रा व न्नि की म ति अ म र स व द ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त
उ प न्नि म त्त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त
व न्नि म त्त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त
व न्नि म त्त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त त ॥ त

रां मां॥ साइर ऊपरि से लाजिनि तारे॥ रां वन आदि
दुष्ट संहारे॥ ४३॥ आगे रां म क ल्म अवतारा॥ भुके
प्रबल दरहि गे नारा॥ ज दु कु ल जन मि कर्म ते क
रि हें॥ जिन सों ला गि जी व नि स्त रि हें॥ ४४॥ असुर
दोषिय जन के करता॥ जी व न मारि उ दर के मर
ता॥ बुध रूप हरि जी व धरि हें॥ ज ज नि मे टि पा व
डा वि स त रि हें॥ ४५॥ बहुरि धरहि गे कलि के रूप
॥ अति अपराध करहि ज ब नू पा॥ कलि के अंत
स क ल संह रि हें॥ बहुरि प्र कृत स त्प जग करि हें
॥ ४६॥ ओ से विष्णु कर्म अवतारा॥ को ई क दू त न
पावे पारा॥ क छू ए क मे तु म सों कहें॥ औरै कौ टि

अनत निरह ॥ ४७ ॥ इनकों कहै सुनै जोग वै प्रेम
हित नि सबा सुरि ध्यावै ॥ सो भव सागर में नहिर है
पावै जानै पद ल है ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ एवै ना सुने दु
ल के ॥ कीन्ही प्रसन्न स्यंद ॥ प्रभु जी नि की कौन ग
ति ॥ जे न भजे गो बिंद ॥ ४९ ॥ इति श्री भागवत म
हा पुराणे एकादश स्कंधे नारद संवादे
पायंते जो पारव्याने चतुरथोऽध्यायः ॥ ५॥ चौपई ॥
६९ ॥ श्लोक ॥ बिदेह ऊंचा च ॥ जे न करे हरि जी की
सेवा ॥ तिन की कहै कौन गति देवा ॥ तिन के
पति न सुधि न आवै ॥ निस दिन

रं मां॥ साइर ऊपरि से लाजि नितारे॥ रं वन आदि
दुष्ट संहारे॥ ४३॥ आगे रं म कल अ व तारा॥ मुकी
प्रबल दरहि गे नारा॥ ज दु कुल जन मि कर्म ते क
रि हैं॥ जिन सों ला गि जी वानि स्तरि हैं॥ ४४॥ असुर
दक्षिय जन के करता॥ जी व न मारि उ दर के मर
ता॥ बुध रूप हरि जी बि धरि हैं॥ ज ज नि मे टि पा
उ वि स त रि हे॥ ४५॥ ब दुरि धर हि गे कलि के रूप
॥ अति अपराध करहि ज ब नू पा॥ कलि के अंत
स कल संह रि हे॥ ब दुरि प्र वृ त्त सत्य जु ग करि हैं
॥ ४६॥ ओ से बि स्म कर्म अ व तारा॥ को ई क दू त न
पावे पारा॥ क हू ए क मे तु म सों कहें॥ औरैं कौ टि

अनत निरहे ॥ ४७ ॥ इन कों कहै सुनै जोगा वै प्रेम
हित नि सबा सुरि ध्यावै ॥ सो नव सागर में नहि रहै
पावै जानै ^{परम} पद लहै ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ एवै नां सुने दुशि
लके ॥ कीन्ही प्रसन्न संद ॥ प्रभु जी नि की कौन ग
ति ॥ जे न जे गो बिंद ॥ ४९ ॥ इति श्री भागवत म
हा पुराणे एकादश स्कंधे बंसुदेव नारद संवादे
पायंते जोगारम्भा ने चतुरथोऽध्यायः ॥ ४९ ॥ चौपई ॥
६९ ॥ श्लोको विदेह ऊवाच ॥ जे न करै हरि जी की
सेवा ॥ तिन की कहै कौन गति देवा ॥ तिन के त
पति न सुधि नै आवै ॥ निस दिन तस्मात्त गनि ज

रावे॥१॥परिजोबहुविधिधर्मउपायें॥तौमोहि
वचनजनकजवरहे॥~~अथैकदो कछूसुषपा~~
वे॥येकदिवचनजनकजवरहे॥अथमचमस
नामवकहे॥२॥चमसऊवाच॥हरिजीविप्रवद
नतेकरे॥बाहनतेदत्रीविसतरे॥जघनिदुतेवे
स्यउपजाए॥सुप्रतिमेंचरननि तेआए॥३॥या
दीनांति कियेआसरमां॥तातेनजनसबनि
कोधरमां॥तेआपहीकरेंप्रतियाला॥आपुही
पोषेदीनदयाला॥४॥एसेप्रभुकोजेबीसरे ते
अपारअपारभनिकरै॥तेईगुरजोहीपित्तो

ही ॥ स्वां मी जो हकि रत घन ओ ही ॥ ५ ॥ तिनि
परा धनि अध गति जावें ॥ कब हूं सुलि सुषन
पावें ॥ सुद जो पिता अंत ज आदि ॥ तिनि कों हरि
कथा श्रवनादि ॥ ६ ॥ ते मन मे अभिमान न धरे
॥ ताते तुम से किरपा करे ॥ या ते इति कों ह
धारा ॥ परि ऊचेन कों वारन पारा ॥ ७ ॥ विप्र
सत्री बेस्य त्रिवर्ना उपनयनादि वेद मय क
॥ उन सब दिन के ते अधिकारी ॥ ताते हो दिने
हुत अह काशी ॥ ८ ॥ तात पर ज कों जाने
उह पति वां नी मे भर मां ही ॥ विष्म भज
म अधिकारी ॥ पायो ना दिन लयादि

॥ ८ ॥ कर्म अकर्म विकर्म न जानै ॥ अतिकंठे
र आ पु हि ब द्दु मं नै ॥ दं म पं डित ज ज नि के का
र क ॥ औ र ब द्दु त क र्म नि बि स तार क ॥ १० ॥ आ
प भ र में औ र नि भ र मा वै ॥ प्रिय वानी ब द्दु भ्रा
ति सु ना वै ॥ कां म रु अ र्थ अ र्थ करि मा नै ॥ पटि
पटि वे द सा पि ब द्दु आ नै ॥ ११ ॥ ब द्दु सं क ल प क
रि म न मां ही ॥ ब द्दु त ब द्दु आ रं भ क रं ही ॥ त्यों
ही त्यों राज स आ धि का रा ॥ कां म क्रो ध लो न अ
दं का रा ॥ १२ ॥ दं भ क प ट च तु रा ई आं नै ॥ द रि भ
ग त न की सै ब न ग नै ॥ आ पु आ पु वे ठे मि लि
ज ब ही ॥ गृ ह के सु ष नि स रा हें त ब ही ॥ १३ ॥ डि

नमैं अंनदक्षनां नांही ॥ दंभमानसौं जज्ञ करे
ही ॥ बहुतपसुनि मारैं अजानी ॥ तिन अपर
धनि सकैं न जानी ॥ १४ ॥ इत नौ धन आयौ
इह त्रै है ॥ इत नौ मिलि एतौ तब कै है ॥ कुल
संपत्ति विद्या व कुराई ॥ सागरूप बल कर्म बि
ऊई ॥ १५ ॥ इन कौ मद बाढ्यौ अधिकार ॥ ताते
हूँ स मुनि नदिकाई ॥ हरि भगति नि सों गने
हासी ॥ मगदर मरै ह्यो डिषल कासी ॥ १६ ॥
॥ धावर जंगम सब धंघट मांही ॥ हरि पुर
षाली कहुं नांही ॥ ज्यो आकास लिपति न
हि होई ॥ त्यों हरि वेद कहत है सोई ॥ १७ ॥

सारिखे मूढ न कबहुं जानै ॥ जातैं हरि भगत
ति नहि मानै ॥ बहु तम नौरथ नि सदिन क
रे ॥ तस्मात्ताप जल नि नहि टरै ॥ १८ ॥ मद्य वा
न अरु मास अहारा ॥ नारी नेह सहित जग
साश ॥ तास कलहित्या गिवे निमित्ता वि
धि मै वेद लगायो चिता ॥ १९ ॥ संग करै तो
नारि बिवांही ताहुं मै बहु तैं तिथि नांही
बहु रिक्हे देवै रति दांनो ॥ पर जा निमित्त
नाहि आंनो ॥ २० ॥ या विधि क्रम क्रम बहु त
छुडावै ॥ बहुरि वेद सब त्याग करवै ॥ औ
सेहि आंमिष अरु मद पांनो ॥ यज्ञ मांदिनां

ही कहुं आना ॥ २१ ॥ बहुस्यो उहां हुते छो डावे
॥ ओ सो तात परज को पावे ॥ हरिकी सरन दि
आवे कोई ॥ सारी बिधि समुझै एक सोई ॥
॥ कै जोतिन की सरन दि आवे ॥ अत्रि प्रायत
रो सो पावे ॥ वै हरि जन अरु हरि दिन जानै
॥ आपु दि कौ पंडित करि मानै ॥ २३ ॥ ताते त
त परज न दि जानै ॥ पटि पटि वेद अनरथ मि
गंनै ॥ धन ओ सो जो करै उधारा ॥ सो धन व
वै वृथा गवारा ॥ २४ ॥ जो धन हरि के काज ल
गावे ॥ सो तब प्रेम भगति कौ पावे ॥ तातें हो
ई ग्यान प्रकासा ॥ तब हरि मिले मिटे भव पा

सा॥२५॥ ॐ सो धनते मुट अयां ॥ देद का ज वो
वै मर मां नां ॥ काल निरंतर हरत न देषे ॥ बहु म
द मत्त दूरि करि लेषे ॥ २६ ॥ मद्य मां समख मे
आं नी जे ॥ और भूलि कहूं नां व न ली जे ॥ त हं
ऊं आ पु ले ई आ घां नां ॥ धान पान ते अ धि ग
ति जां नां ॥ २७ ॥ सौं वनि तारि ति दां न हि दे वे
और भूलि कहूं नां व न ले वे ॥ सो ऊज बल गि
एक सुत हो ई ॥ सुत के भये त्या गिये सो ई ॥ २८
॥ ॐ सो सकल वर्न को धर्मी ॥ ता को भूलि न पा
वै मर मां ॥ मर मही न युति सु मृत्यु बधां ने ॥ मृ
ष आ पु हि पंडित मां ने ॥ २९ ॥ ता ते बहु त कर्म

आरभे ॥ इन्द्रियमनहिकदेनहि धंभे ॥ ३० ॥
करैबहुजीवनिमारे ॥ तेबहुजनमतिन
संहारे ॥ ३० ॥ यावरजगमसबघटमांही
एकैहरिदूजोकोनांही ॥ तिनकोद्रोहकरे
नपोषे ॥ दोरसुतनिआनिसेतोषे ॥ ३१ ॥ न
सुरिसनहीतत्वज्ञानी ॥ पटिपटियंथदो
अभिमाने ॥ तेअसाधिरोगीसबज्ञानी ॥ ति
सोज्ञाननमाडेज्ञानी ॥ ३२ ॥ तेसबकारेंआपु
घाता ॥ सुपिनैहुंनलहेंकुसलाता ॥ कर्मपंथ
सुषकोंचाहें ॥ अमृतदेकरिबिषदिविसा
॥ ३३ ॥ नांनोतापतपततेरहें ॥ करैम

फल दिन लहे ॥ बहु त जांति श्रम करि उपजाये
॥ सुत वित दाश सकल मन जाए ॥ ३४ ॥ तिनि स
ब दिन कौं छोडि इहां दी ॥ बंधे आपु जम द्वारे
जांही ॥ जम के दूत नरक भोगा हैं ॥ तहा के उपक
हे नहि जावै ॥ ३५ ॥ तिन को को नहि राखन दाश
॥ हरि रक्ष कसो न दिन सं जाए ॥ कहा कहौ कछु
कहे न जांही ॥ हरि विन कहूं पलक सुषणां दी
३६ ॥ दोहा ॥ चम सव चन सुनि भूषके ॥ बघौ न
स अरु प्यार ॥ तब जुग जुग कौं पूछियो ॥ हि
रि कौं न जन प्रकार ॥ ३७ ॥ राजा ऊवाच ॥ कौन
समें कै सौं अवतार ॥ कै सौं नाम वरन आका

रा ॥ किं हि विधि न जें वरन आसर्मा ॥ कहौ जं
न के साधन धर्मा ॥ ३८ ॥ जिन ते ज्ञान लहें सब
त्यागै ॥ तिन ही हरि चरनुं अनुशगै ॥ सुनि नृप
वैन भगति के भाजन ॥ तब बोले नव मे कर भाज
॥ ३९ ॥ कर भाजन ऊबाच ॥ सत ते तादा पर कति
काला ॥ बहु त भानि भजि एगो पाला ॥ बहु विधि
वरन बहु त आकारा ॥ बहु तनां सबहु न जन प्र
काश ॥ ४० ॥ सत जुग सुकल वरन भुज चाश ॥ स
सजटा तन बल कल धाश ॥ कंव जने ऊकर ज
प माला ॥ दंडुक मंडलु अरु मृग छाला ॥ ४१ ॥
तब मनुष्य होवै सब सुखा ॥ सम निरवै र

दपरबुद्धा॥ अस्थिरकरि इंद्रियमनप्राना॥ क
रे सवेतिनिहरिको ध्याना॥ ४२॥ हे ससुपरम
धरमजोगेश्वर॥ निरमलपरमात्मन्यरुई
श्वर॥ पुरुषोत्तमबेकुंठअव्यक्ता॥ तिनकेनाम
हों हिएव्यक्ता॥ ४३॥ रक्तवरनत्रेताजुगमोदी
त्रिगुनमेषलागलिपहसंही॥ पीतकेससुरवा
दिकेहाथा॥ रिगजुगसामन्यईमयनाथा॥ ४४॥
॥ तवतिनिहितजजादिककरे॥ वेदविदितव
रमनिविस्तरे॥ सर्वदेवमयहरिकोंजाने
॥ तवसबसुंदरिपूजागाने॥ ४५॥ दृष्टिगरम
अरुगाईकहोजै॥ विष्णुवृषाकपियजमनीजै॥

॥ सवेवेद उरुक्रमविजयत ॥ असेनां म कहे स
वसेत ॥ ४६ ॥ वापरपीतवसनघनस्त्रां मां ॥ सं
षादिक आयुध अमिरमां ॥ चारिबाहुभृगल
ताधरनां ॥ लक्ष्मीचिन्हवदुत आभरनां ॥ ४७
॥ चांमरछत्र आदिवदुसेनां ॥ महाराजलक्ष्
नसुषदेना वेदतत्रपथसेवाकरे ॥ सर्व अ
र्घनपूजाविस्तरे ॥ ४८ ॥ वासुदेवसंकरषन
देवा ॥ प्रद्युम्नरु अनिरुद्ध अनेवां ॥ नारायणभ
गवां न अंनत ॥ जिनको कोई लहेन अंत ॥ ४९
॥ विश्वरूप विश्वपूरणस्त्रां मां ॥ सर्वात्मसव
अंतरजां मां ॥ वदुतभांति अस्तुतिविस्तरे ॥ वि

धि सौं द्वा पर पूजा करै ॥ ५० ॥ कलि जु गपी तपि
तेवर धारी ॥ कृष्ण देव घन स्याम मुरारी ॥ सहि
त पारषद बहु आभरना ॥ अवन की रतन पू
जा करना ॥ ५१ ॥ इंद्रिय मन बहु भरे बिकारा
तिन तेरा घेचरन तुम्हारा ॥ सब बिधि सब ती
र्थ कौ बासा ॥ सुमिरत ही पुरवें सब आसा ॥
५२ ॥ सिद्धा विरंच मुन रमुनि ध्यावे ॥ जाको न
द वेदन ही पावे ॥ राखिले तसर नहि जो आवि ॥ ज
नम मरन सब दुष मिटावे ॥ ५३ ॥ केवल दीन
त उधारै ॥ भव सागर के पार उतारै ॥ त्रैलोक्य
रन तुम्हारा गायो ॥ ताकी सरन दीन में आयो ॥

५४॥ अत्यदुःखस्तजुसुरबंछे जाकों॥ ऐसो
जछोडि कैरिताकों॥ दसरथ भक्त बचसति
राना॥ बनको गवन कीयो जिनि चरना॥ ५५॥
दम मिरग दय्यंता मन भायो॥ जो ताके पीछे
विधायो॥ जो भगत निवेयों आथाना॥
रन सरन में लीना॥ ५६॥ ऐसी विधि कलि आ
स्तुति करै॥ बहु विधि हरिनामनि उचरै॥
ने कहै सुमिरै अरु ध्यावै॥ ते तत काल त
पावै॥ ५७॥ या विधि जे जुग हरि सेवै
कों हरि जानि दैवै॥ जान पाइनि जत त
वै॥ जहां जाइ बहु स्यां नहि आवै॥

लिजुग के गुन कौं जानत ॥ ते बहुविधि अस्तुति
कौं गानत जै सो परमसार कलि मांही ॥ औ सो
और जुगनि मै मांही ॥ ५६ ॥ सति जुग ध्यां न जज
त्रेता माहि ॥ द्वापर प्रति मां पूजै रं माहि ॥ कलिके
बल नामादिक गावे ॥ सो सो फल तत्त काल हि
पावे ॥ ६० ॥ या न वसागर मां हि निरंतरि ॥ दुवि
त जी वषरे न ह्यंतरि ॥ ता मै हरि गुन नाम
चारन ॥ एका जिहाज सर्क कौं तारन ॥ ६१ ॥ पा
प अंधार हो र कलि मांही ॥ जा मै पुन्य लेस क
हुं नाही ॥ ता मै हरि गुन जे उचारै ॥ ते तरि आ
प और कौं तारै ॥ ६२ ॥ ते कृत्य कृत्य ते ई बड ना

गी॥ जे कलिहरि की रति अनुरागी॥ आपु सुमार
ओर निसुमिरावै॥ ते जगि जनमि बहुरि नदी
आवै॥ ६३॥ सतने ताछा पर अवतर ही॥ ते कलि
जुग की बंछा कर ही॥ कलिकछु साधन अरु
प्रमना ही॥ हरि गुन गावत हरि दिस मां ही॥
६४॥ अरु कहुं कहुं कोई देस बिबुधा॥ जावत
दिमान वत दंबुधा॥ जे उपजे ते नाक्ति दिकरे॥ ता
तें तदा बहुत उधरे॥ ६५॥ अरु जे हां तांति ३
शिकत माला॥ कावेरी पै सुनी बिसाला॥ अरु
सुरसुती पछिम बाहनी॥ गंगा आदि पुरत ही

दनी ॥ ६६ ॥ जे मां न व जल पीवै इन को ॥ दूरि दो
इ हृदे मलतिन को ॥ ते सर्व चा हो दि हरि भक्ता
॥ साध संग होवै आसक्ता ॥ ६७ ॥ भूत कुटुंब पि
तरिषि देवा ॥ इन के रिनी करै सब सेवा ॥ सो
न रिनी नही सेवा करई ॥ सो सबु ताजि हरि को
अनुसरइ ॥ ६८ ॥ जे बिधितजि हरि चरननि
आवै ॥ तिनिके मल हरि दूरि बर्दावै ॥ बहु
मल उपजे नही कोई ॥ उपजे कदे हरै हरि सो
ई ॥ ६९ ॥ तातें सब बिधिको फल एका गदि
हरि पद छाडि अनेका ॥ सब के प्रभु सब ही

सिधु ब्रह्ममेग यो ॥ ७४ ॥ याही बोधतु महु ब्रह्ममेग
षदा ता ॥ सरनागतपालक विष्णु ता ॥ जब ज
जो जो सरनहि आयो ॥ तब ही तैति निहरि पा-
॥ ता ते और सकल परदरियो ॥ श्री भगवान चर-
त धरियो ॥ ७१ ॥ ऐसे सुनिन वहुं केवेनां ॥ जन-
दे अति उपज्यो चेनां ॥ संसापि द्यौ सकल-
ब्रह्म ज्ञानि सूतो सो जाग्यो ॥ ७२ ॥
दुपूजा कीन्ही ॥ बिप्रनि सहित प्रदक्षिणा दीन्ही ॥
बिधि दरसन पावे सब ही ॥ अंतर ध्यान भये ते त-
ब ही ॥ ७३ ॥ जन कबि देह और सब त्याग्यो
के चरन केवल अतुराग्यो ॥ या बिधि ब्रह्म-
निज यो तति भाव्यो ॥ देकरि हरि चरन नि

रागी॥ और सकल कौं ताजि दौ संग॥ तब पाइ
दौ ब्रह्म संग॥ ७५॥ अरु तुम तो देव कि व सुदेव
॥ भय कृता रथ करि हरि सेव॥ तुम्हरे जस पूस्यो
जग सारो जिन के हरि लीनों अवतारा॥ ७६॥ दर
स अलिंगन आलापा॥ आसन नो जन सैन मिता
पा॥ हरि सों पुत्र जां निचित दीनों॥ ताते सकल न
जन तुम कीनों॥ ७७॥ कापट बा सुदेव सि सुपाल
॥ दंत वक्त सत्पादिक राला॥ बेर जा वक्त सत्पादिक
तथा स्यो॥ तिन दूँ कौं हरि देव उधा स्यो॥ ७८॥ तो
जे प्रेम प्रीति स्पु सेवों॥ तिन कौं क्युं न परम पद दे
वें॥ अरु तुम पुत्र बुद्धि माति आनो॥ कृष्ण दे

व्रको ब्रह्मदिजानौ ॥ ७९ ॥ माया करि धार नरद
ह ॥ पार ब्रह्म तुं मजानौ येही ॥ बढो देखि मुत्र में
धारा ॥ मेहन काज धर्यो अवतारा ॥ ८० ॥ प
रमपुनीत जसदि बिसतरही ॥ जासौ लागि जीव
निसतरही ॥ जेजे इन सदेत लगवैं ॥ ते ते सक
ल परमपद पावैं ॥ ८१ ॥ औसी सुनि नारद की बान
॥ बसुदेव देव की अदभुत मानी ॥ आपुहि देह म
क्त करि जान्यो ॥ हरि मै जाव ब्रह्म की आन्यो ॥ ८
॥ इह दुख दास कथा जो भाषै ॥ सावधान सुनिह
दे राखै ॥ सो सब भव बंधन छिटकावै ॥ उपजे जा
परमपद पावै ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ इह मा

॥ हरिमिलनेको द्वार ॥ हरि उद्यव संवाद अब ॥ ब
र नु करि विस्तार ॥ ८४ ॥ इति श्री ज्ञान गवतै महापुरु
षो एकादश स्कंधे वसुदेव नारद संवादे जायते यो
पाठ्यानि पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ नारद वसुदेव संवाद
समाप्त ॥ चौपई ॥ ३५३ ॥ अथ कृष्ण उद्यव संवाद
प्रस्तुयते तत्र ॥ श्री सुक ऊवाच ॥ बहुरि सुमो नृप
आत्मविद्या ॥ जाके ज्ञाने मिटे अविद्या ॥ मिटे अ
विद्या ब्रह्महि पावे ॥ ब्रह्महि पाइ फेरि नहि आवै
॥ १ ॥ तब ब्रह्मासन कादिक संग ॥ नारदादिरंग
हरिरंग ॥ सकल प्रजापति भृगु मरीचादिक
महादेव लीने भूतादिक ॥ २ ॥ सुर समूह संग ले सु

रयती॥यवनअश्वनीसुतयादपती॥वसुआग
रासुरुद्ररिनुदेवा॥साध्यादिकअरुविस्वदेवा
॥३॥रिषिगंधर्वापितरअरुनागा॥चारनसिद्ध
रेअनुरागा॥अपसरुअरुगुलकाविद्याधरा॥
किंनरयक्षादिकमायाधरा॥४॥हस्तदेविवेक
रनसारे॥आनदितधारिकायधारे॥केईनांचे
केईगांवे॥केईवाजेबहुतबजावें॥५॥केईजय
जयसबदउचारे॥केईहस्तजसहि विस्तारे॥य
विधिकरैबहुतउछादा॥मगनन
वादा॥६॥श्री

सब मनहरन मुरारी॥ लो कनि मां हि ज स हि बि
स्तारै॥ अ व न अ दि क नि स क ल अ व जारै॥ ७॥ नि
धि रि धि पू र न द्वा रा व ती॥ जा के सं मि न दि अ म
रा व ती॥ ता में ब्र ह्मा दि क च लि आ ये॥ कृ त्त दे व
के दर स न पा ये॥ ८॥ सु र ग वृ द्ध पू ल नि की माल
॥ ब्र ह्मा दि त की न्हे दी न द या ला पा व त दर स त प
ति न दि हो वें॥ चि त्र लि षे स स न मु ष जो वें॥ ९॥
॥ चि त्र प द नि ब दु अ स्तु ति करै॥ उ त्त म अ र थ
नि ज स बि स्त रै॥ स हि त बी न ती अ रु प्र ना मा
दर स न ये सब पू र न का मां॥ १०॥ दे वी ऊ वा च दे

प्रभुचरनसरोजतुम्हारा॥मनकंमनचनचित्त-
दंकारा॥इंद्रियबुद्धिप्राणअरुदेहा॥बंदतदेह
मप्रगट्टेदा॥११॥जाकोंप्राणवचनमनसाधें॥सा
वधाननिसादिनआराधें॥जावसहितअनिअं
तरध्यावें॥तेऊपोंविधिप्रगट्टेपोवें॥१२॥
येधनिधानिदमधनिजागदमारे॥परगट्टेप
रनतुम्हारे॥जिनकेध्यानकीरतनअवनां॥बु
दिनहोवेंआवागवनां॥१३॥तुम्हारेदेतदेतदे
दकरो॥अपनीमायासबविस्तरो॥तुम्हारीमेउ
पजेसंसार॥सदारेहेतुम्हारीआधारा॥१४॥

मदीमाहिलीनसबदोई॥तुमकोंपरसिसकेनद
कोई॥रगरहितआनंदस्वरूपा॥अजितअमि
तचिद्रूपअनुपा॥१५॥बहुअध्ययनश्रवणअ
कुरुदोनों॥क्रियाउपासनतपआश्रानां॥त्यागजो
गजोर्जोगादिकजेते॥आतमसुद्धकरैनहाएते॥
१६॥तुवगुंनश्रवणपरतअघनासैं॥ज्युतममांदि
सुरप्रकासैं॥तार्तेजनमकरमतुमधारै॥दीनवं
धदीननिउझारै॥१७॥जोतुवचरनकंचलमुनि
ध्यावै॥भवभयभीतनपलछिटकावै॥अरुनि
जभक्तनिदंतरसेवै॥भयनदिसंभुगेनदिकछु

लेवै॥१८॥अरुयेकैवैकुवनिमता॥हृदैधरेंतौ
चरनदिनिता॥बहुरिएकसेवेंसहकांमां॥एव
नयेचांदैनिदिकांमां॥१९॥जीवनमुक्तमयेवकु
सेवै॥प्रेमभावसंअतिसुषलेवै॥एकौजज्ञादि
कसौमजें॥सर्वदेवमयतुमकौजजें॥२०॥एकै
वरनआदिआसरमां॥तुमूरेदेतकरैसबध
रमां॥एकैएकस्त्यकरिध्यावै॥देतभावकव
हूंनदिल्यावै॥२१॥एकैतुवप्रतिमांकोसेवै॥ए
कैनांवनिरंतरिलेवै॥एकैश्रवनकीरतनधा
नां॥कहांलगेकाहिएविधिनांनां॥२२॥योजें

[illegible]

पातितुमत्रैसे दीन दयाला ॥ न गति अधीन करत
प्रतियाला ॥ तब इंद्रादिक निरादर करौ ॥ बनम
लाता ऊपर धरौ ॥ २७ ॥ जो तु वचन न गत सुरका
रन ॥ दुष्ट असुर सेना संहारन ॥ असुरानि को अ
ध गति को दाता ॥ सुरानि सुरग दी से विष्याता ॥ २८
॥ अभय दान अघनासन वानें ॥ लोक वेद इह ज
गट बषां नौ ॥ बाधी धुजा गति हूं लोका ॥ जाके
दरसि मिष्ट नय सो का ॥ २९ ॥ ब्रह्मादिक सुरनर
अधिकारी ॥ तुम्हरे चरन केवल बस चाही
अति बली बेल मदजीनी ॥ नाथेना कधनी ॥

जेतुवचरनदिससेवै॥तेतेसबवंचितफलले
वि॥सोतुवचरनप्रगटदंमपायौ॥तातेअवदी
जेमनजायौ॥२३॥इददमबछापूरनकरो॥अ
पनेचरनकंवलचितधरी॥नसमकरेदूजीवा
सना॥जिनतेंउपजेनवसासना॥२४॥परम
दयालभगतहितकारी॥इछापूरकदेवमुरा
री॥इछापूरनकरोदमारी॥निदचलउपजे
भगतिहुमारी॥२५॥जेतुवजनवनमालाक
रे॥प्रेमसाहिततोआगेधरे॥कवलादेविसप
रधाआने॥ताकोंआपूसप्यातिनाजांने॥२६॥

तुम असे दीन दयाला ॥ नगति अधीन करत
प्रतियाला ॥ तब इंद्रादिस निरादर करौ ॥ बन
लाता ऊपर धरौ ॥ २७ ॥ जो तु वचन न गत सुर
रन ॥ दुष्ट असुर सेना संहारन ॥ असुरानि को
गति को दाता ॥ सुरनि सुरगदी से विष्याता ॥
॥ अमय दान अघनासन वानें ॥ लोक वेद इंदु
टवषां नौ ॥ बाधी धुजा गंगति दू लोका ॥ जा कै
दरसि मिष्ट नय सो का ॥ २८ ॥ ब्रह्मादिक सुरन
अधिकारी ॥ तुम्हरे चरन कंबल बस चाश ॥
नली तेल मदनी नी ॥ नाथे नाक ध

धीनां ॥ ३० ॥ जब जब असुर नितै दुष पावै ॥ तब त
व सरन चरन की आवै ॥ तब सुख निष उपजै सब
दुष भाजै ॥ अपने अपने वीर बिराजै ॥ ३१ ॥ प्रक
ति पुरुष महत तनियंता ॥ तुम इन के कारन भ
गवता ॥ तुम तें पुरुष सकति जब पावै ॥ प्रकृति
हि मिलि महत त उपावै ॥ ३२ ॥ तातें उपजै इह
ब्रह्मंडा ॥ जल अधराति रै ज्यों अंडा ॥ पावर जं
गम विविधि प्रकारा ॥ तातें होइ सकल वि
रा ॥ ३३ ॥ तातें तुम या सब के करता ॥ उपजाव
न प्रतिपालन हरता ॥ तुम आधार सकल के

स्वांमी॥ तुमफलदाता अंतरजांमी॥ ३४॥ जो
 कछुदोइ सकल जे मां दी॥ तुम करता दुजा की ना
 दा॥ पारिक दुं लिपति हो दुन दि देवा॥ कोई लिपि
 न सके तो नेवा॥ ३५॥ सोलह स दं स एक सत आवा
 ॥ जिनि कै हृदये प्रेम अतिका वा॥ हाव भाव संप्री
 तिव ठावै॥ मदनवानवान बहु भांति चलावै॥
 ३६॥ तुम तो दूव सहो वौ नां दी॥ निह चलनि
 जानंद पद मां दी॥ और छोडि दूवै वे कोई॥ का
 त वासनां बंधै सोई॥ ३७॥ एह नदी प्रगर तुम
 की न्दी॥ जिन की मदि मां परे न ची न्दी॥ एक गं

गचरनानि कोना रा॥ परसतानिरमल करे सरीरा
॥ ३८ ॥ दूजीतुवकीरतिकीसरिता॥ त्रिभुवनज
हांतहां बिसतरिता॥ प्रवनकरत अंतरमलना
से॥ निरमल हृदय ब्रह्म परकासे॥ ३९ ॥ ब्रह्म प्र
कास मये नयनाही॥ विले एक मेक मन मांही॥
इन दै नदि मुजै जे पंडित॥ तिन को काल करे
नदी पंडित॥ ४० ॥ ताते नाथ कृपा अब कीजे सा
ध संग हम को नित दीजे॥ जिन को कथानदी हं
म पावे॥ जाते तुव चरन निचित लावे॥ ४१ ॥
सुकुवाच॥ यो लै सिव सकादिक संग॥ अ

स्तुतिकरी बहुत प्रसंगा ॥ जूद सौ ॥ वि ॥ न वि न
सुनाये ॥ जाके का अस काल मिला ॥ ५ ॥
बाव ॥ हे प्रभु तू मत्त बलिन ती कौन ॥ ५ ॥
मरी जब चीन्ही ॥ तातें तुमली नों अकता ॥ ५ ॥
लउता स्यो सुप्रनौ ॥ ५ ॥
रम विमता स्यो ॥ ५ ॥
॥ अरु को रति बह बिधि निमान ॥ ५ ॥
तिरि वीर्यो मंगा ॥ ५ ॥
॥ सकल जन नि को मंग्यो ॥ ५ ॥
कर्म अग्रा ॥ ५ ॥

॥ अरु जड कुल दिज आ पावि नास्यो ॥ नदि रदि दै दि
न दै दै नास्यो ॥ तातें देव काज सब कस्यो ॥ करि वे
क वृनाही ऊबस्यो ॥ ४६ ॥ गर्द वरष सत अधिक
पचीसा तातें हम विन वे जगदीसा ॥ अब करि वृ
पाच लोनि जलोका ॥ करत पुनीत हमारे वीका
४७ ॥ हम दै दास तुम्हारे देवा ॥ निसा दिन करें तुम्हा
री सेवा ॥ असी सुनि ब्रह्मा की वांणी ॥ तब हसि बोले
सारंग पांणी ॥ ४८ ॥ श्री गगन वासुदेव ॥ में सब सुनी
तुम्हारी वाणी ॥ तुम्हारी काज भयो इह जांणी ॥ प
रिजड कुल योही परिहरें ॥ तौ नास सकल भुवको

में करो ॥ ४६ ॥ ये सब जादव बुद्धि मंद मांता ॥ न एर
हें सो मेरा सत्ता ॥ मोहित जे सब परलय गनै ॥ ज्यों सा
यर मर जादा भानै ॥ ५० ॥ तातेना सहै तउ जायो श्री
पुसवनि विप्रनि ते पायो ॥ अंब इन सब दिन कों दि
न सां ऊं ॥ पीछें तुव लोकनि में आं ऊं ॥ ५१ ॥ ऐसे सुनि
हरि जी के वैनो ॥ हृदे बंदी सब दिन के वैनो ॥ कोरि
प्रनयति बीन तीसारे ॥ अपनै अपनै लोक पधारे
५२ ॥ तब तरपति कीस भा मंजारी ॥ बेवे जदु कुल
सहित मुरारी ॥ द्वारावती उवै उत पाता ॥ तिन कों
देषि कदा हरि बाता ॥ ५३ ॥ श्री भगवानुवाच ॥

उतपातउठेचहुंऔर॥अतिमयदायकदीसेघोर
॥अरुदिजआपनयोकुलमांदी॥तातेमलादेविघे
नांदी॥५४॥तातेअबइहांनहीरहिए॥तजिएवेमि
जिवेजोचहिए अतिपुनंतक्षेत्रभासा॥तहांव
गिचलिकीजेबासा॥५५॥एकवारदक्षआपहिद
यो॥ससिकेद्वईरोगतबनवो॥जबसोंससिप
भासअन्दायो॥बूढोआपपरमसुषपावो॥५६॥
॥तातेअबपरभासेचलीजे॥तहांजाईअस्मान
हि कीजे॥तपतिदेवपितरनिकोंकरिए॥वि
प्रभोजबहुविधिवितरिए॥५७॥तिनकोंदांनव

द्विविधिविदाजै॥ अक्षासदितप्रनामदिकीजै॥
तिनपरसाददुषयारिए॥ ज्योंनां वनि सौ साईरति
रिए॥ ५८॥ ओसी सुनी हरिजी की बां नी॥ सब जात
वनि मली करि जां नी॥ तब चलि बेंको सकल वि
चारें॥ अपने अपने रथनि संवरि॥ ५९॥ तब उछ
व हरि कौ निज दासा॥ देखि सकल विधि नयौ उ
दासा॥ चलि एकांत हरिजी पैं आयौ॥ चरन नि
परि कै बचन सुनायौ॥ ६०॥ उछ ववाच॥ देवदे
व ईश्वर जोगिस॥ अवन की रतन दरन कलिस॥
ज दुकुल को संद

कपरिहारिदो॥६१॥विप्रप्रापमोठिनसंमरथा
॥ नदीमेंटोसोइहैअरथा॥मेरेजीवनिचरनतु
म्हारा जैसेमीनउदकआधारा॥६२॥पाननाथ
अबऔसीकीजै॥संगआपनेमोकोलीजै॥तुम्ह
रेसबआचरनअनुपा॥सबकोंअतिकल्यान
ससुपा॥६३॥जिनकोंपाइऔरसबत्यागें॥त्रि
भुवनकेसुषुपसेलागें॥आसनगवनअसन
असनांना॥जागतअरुसोवतविधिनांना॥६४॥
॥सदानिरंतरिकोंमैदासा॥क्युपलतजोतुम्हा
रेपासा॥इहमायानयतेनहिकहुं॥तुमबिन

अरधनिमेषनरदं॥६५॥गंधवसनमालात्रा
भरना॥तुवृत्तीरेनकोमेघरना॥महाप्रसाद
निरंतरयोष्यो॥दरसपरसबहुविधिसंतोष्यो
॥६६॥ओसोमेनिजदासतुम्हारे॥मायाकरिते
कदादंमारो॥मायानयअरुतुम्हरेदेता॥दोंदि
दिगंबरऊरधरेता॥६७॥इंद्रियदेहप्रानमनया
धे॥सावधानतुमकोंआराधेअसुविचारस
दामनलावे॥तेनिजरूपतुम्हारेपावे॥६८॥दंम
ककुर्मअकर्मनजानें॥हृदैजानवैरागनअ
ने॥तुम्हरेनगतनिकमिलिसंगा॥नवतरिते

नितुवपरसंगा॥दि॥तुमूरेकरमवचनपरिहास
॥आसनगवनरूपयरकासा॥कदतसुनतसुमि
रतसुषमादी॥नवमागरदंमरदिदेनादी॥७०॥
तातेमायाचयनदिआंनो॥आपुदिसदाभुक्तव
रिमांनो॥परितुंमविनांआनतजिजांदी॥तातेमो
दिहोहिएनादी॥७१॥दोहा॥एउद्धवनिजगत
के॥सुनेवचनगोपाल॥तवकरुनांमप्यकरिह
पा॥दोलेवचनरसाल ७२॥इतिश्रीभागवतेम
पुराणेष्कादसस्त्वैश्वरीमन्त्रानुद्धवसंवादेष्ट
मोआय॥६॥चौपई॥४२५॥श्रीमन्त्रानुद्धवच॥

महाभाग उद्धव इह यौंदा ॥ जूतैं कही बात देख्यो
दा ॥ सिव विरंचि सकांदि दिवसा ॥ बंछे मम बेकुं
ठ प्रवेसा ॥ १॥ भुमैं नारब द्यो जव नारी ॥ तब नूत्र ल
पास पुकारी ॥ ब्रह्मादि कनिबीन तीकरा ॥ ताते मनु
ज देह मै धरा ॥ २॥ अब नूको सब नार उता स्यो ॥ स
कल मुरनि को करि जसा स्यो ॥ अरु कीन्हो जस के
विसारा ॥ जातें जीव जांदि न वपारा ॥ ३॥ जहु कुल
आपल हो दिज पासा ॥ आपु आपु मै कै देना सा
आहु दुते सपल मदिन मांदा ॥ सिधु द्वारिकारा घेना
दा ॥ ४॥ जवही भेत जिहो इह लोका ॥ त

दुषमयसोका॥ कलिजुगआनिआधिष्टिनदोई
॥ तातेअघकरिहैंसबकोई॥ ५॥ तातेसुनिउद्धव
बडनागा॥ अवतुकरिसबदीकोंत्यागा॥ मोमेंस
दाचित्तथिरकरो॥ समदरसीकैनुवबीचरो॥ दी
जोकहुकहनसुननमेआवे॥ अरुमनबुद्धिज
हांलगजावे॥ सोइहसबमनकोकृतजानों॥ द
नमंगुरुमायाकरिमानो॥ ७॥ जिनइहसकलस
त्यकरिजानां॥ तिनकोंनेदमयोदेनां॥ तांनेद
दिभ्रमकरिनहिजानें॥ विधिनिषेधतादीमें
वांनै॥ ८॥ विधिनिषेधजोभाषेवेदा॥ सोताको

जाकैं है मेदा॥ निदमि टविन करै न त्यागा॥ तातें
 एद्वे कीये विनागा॥ ए॥ ज्यों ज्यों तजै सुषी तुं होई
 तातें वेदवता वै दोई॥ आगें जाइ छुडावे सारे॥ जे
 आपुही दुते विस्तारे॥ १०॥ तातें इह सब मिथ्या जा
 नों॥ ऊचनीच गुन दोष न मानों॥ इंद्रिय अरु मन
 निह चल करौ॥ अहंकार ममता परिहरो॥ ११॥ स
 क्षमथूल सकल विस्तार॥ एक ही आत्म के अ
 धार॥ सो आधार ब्रह्म के जानों॥ त्रैसी विधि म
 व के नय मानों॥ १२॥ या विधि वेद अर्थ कों जानों
 ॥ बहुरि हृदें निह चल क आ नों॥ दुहु लोक की

आसाच्छोडो॥याविधिअंतरादसबषडो॥१३॥
जेतनायाकेआसाहोई॥तेतनोंविघनकरेसबको
ई॥ज्योंज्योंतजतेजावेंआसा॥त्योंत्योंमिटेंविघन
केपासा॥१४॥जबइहहोइआतमोरामा॥तबतद
नहिआसाकोधामा॥तबविघननिकेकरतादे
वातेईउलटिकरेंतासेवा॥१५॥तार्तेविधिनिषे
धसबनावो॥आसाच्छोडिहृदैहरिरावो॥एकब्र
ह्मकरिसबकोंदेवो॥दूजोकवहूँभूलिनलेवो॥
१६॥अरुजिनिधायोंब्रह्मगियाना॥तिनिकेवि
धिनिषेधन~~न~~॥इ~~र~~गदिनांनो॥परितिन

केनितहाविधिहोई॥कदेनिषेधनपरसेकोई
॥१७॥विसुषदुषगुनदोषनजाने॥बालकसमिआ
चरननिगने॥परिविधिसारीसेवाकरें॥अरुनि
षेधआयुदियरिहैं॥१८॥सबपरिसुहृदसदा
अतिसंत॥ज्ञानविज्ञानसहितनितदांत॥सब
जगब्रह्मजांनिधिरहोईबहुस्योजनमनया
वैसोई॥१९॥अैसेसुनिहरिजीकेवैनां॥अतिदु
करअरुअतिसुषदैनां॥तत्वसुननकीबाद
प्यासा॥तबबोलेउद्धवनिजदासा
॥उद्धववाच॥जोगरूपजोगउपजावना

आसाच्छोडो॥याविधिअंतरादसबषडो॥१३॥
जेतनीयाकेंआसाहोई॥तेतनोंविघनकरैसबको
ई॥जौंजौं तजतेजावेंआसा॥त्यौंत्यौंमिटेंविघन
केपासा॥१४॥जबइहहोइआतमांरमां॥तबतद
नहिआसाकोधामा॥तबविघननिकेकरतादे
वातेईउलटिकरेंतासेना॥१५॥तार्तैविधिनिषे
धसबनावो॥आसाच्छोडिहृदैहरिराखो॥एकब्र
ह्मकरिसबकौंदेखो॥दूजोकबहुंमूलिनलेखो॥
१६॥अरुजिनियायौंब्रह्मगियांना॥तिनिकेवि
धिनिषेधनदखेजोई॥रजदिनांना॥परितिन

कैनि तदा विधि होई ॥ कदे निषेधन परसे कोई
॥ १७ ॥ वैसुष दुष गुन दोष न जाने ॥ बालक समि आ
चरन निवने ॥ परि विधिसारी सेवा करै ॥ अरु नि
षेध आयु दिय रिहै ॥ १८ ॥ सब परि सुहृद सदा
अति सांत ॥ जान विज्ञान सहित नित दांत ॥ सब
जग ब्रह्म जां निधिर होई ॥ बहु स्थौं जन मन पा
वै सोई ॥ १९ ॥ असे सुनि हरि जी के वैनां ॥ अति दु
कर अरु अति सुषदैनां ॥ तत्व सुनन की बाढ
प्यासा ॥ तब बोले उद्धव निज दासा ॥ २० ॥
॥ उद्धव दाच ॥ जोग रूप जोग उपजावना ॥ जो

गदा नीलो जो गे सुरभावन ॥ तुम इह त्याग क
ह्यो मेरे हित सो दुः कर आवै ना दी चित ॥ २१ ॥
॥ कपुंदो वै विषय निकी त्यागा ॥ पुत्र कलिना
दिक अनुरागा ॥ इह तन इह धन ए सुत मेरे
॥ एवनिता ए गृह ए चरै ॥ २२ ॥ वा विधि मम
अदंकार समुद्रो ॥ बूटि रह्यो मे मैतिको बुझ
॥ तुम्हरी मायी अति मेर मायी ॥ ताते ज्ञान ह
देन दी आयो ॥ २३ ॥ अब तुम मे सिद्धि उप
देस्यो ॥ मेरे उर कछु ज्ञान प्रवस्यो ॥ ताते अ
बहु विधि समुगावो ॥ मम उर पूरन ज्ञान बदा

वे ॥ २४ ॥ जातें सब तजितुम कौं पांऊं ॥ बहु स्त्री
जगत जनमि नहि आंऊं ॥ त्रुडु जो ओं सो न
दा की ई ॥ जातें लाभ जान को दो ई ॥ २५ ॥ ब्रह्मा
दिक तन धारी जे ते ॥ तु व माया बस की नृते
ते ॥ तातें माया ही को देखें ॥ कर मरु नोग न ले क
रि लेखें ॥ २६ ॥ तातें मे जन तु मृरी सरनां ॥ सो की
जे पांऊं तु व चरनां ॥ तु मृरी आदि न अंत न पा
रा ॥ जान रूप सब ही तें मारा ॥ २७ ॥ सो ई तरे ग
हो कर जा को ॥ माया का छन सबै कारिता को
॥ त म दी ते उप ज्यो य द जी वा ॥ जैसे अग्नि

बहुदीवा ॥ २८ ॥ सदा रहै तुम्हरी आधार ॥ नि
त उठियो धौ सिरजन दारा ॥ औ से प्रभु कों सेवेना
ही ॥ तातें परै परम दुष मांही ॥ २९ ॥ यान बके दुष
क देन जांही ॥ पस्यो निरंतरि मेतिन मांही
अब मो कों सरनागत जानों ॥ दि करि ज्ञान सक
ल भय जानों ॥ ३० ॥ मेरे तन मन धन तु वचर
ना ॥ मन बचक्रम आया में सरना ॥ औ से मु
नि उद्धव के वेंना ॥ हसि करि बेलि अबुज
नेना ॥ ३१ ॥ श्रीमगवान ऊवाच ॥ उद्धव मे क
द देवों ज्ञाना ॥ सति कहत द्रुनां ही आना ॥ य

गसाधनएदेंजेते॥आपुहीआपुउद्धरे
तेते॥३२॥आपुहिमलोवरोपदिचानें॥कोडे
रोमलेकोंकोने॥गुरआपुनोंआपुहीहोई
।यसुपंचीभावेजोकोई॥३३॥परिनरतन
सोहनीको॥जसादिकसबनिकोटीको॥ज
ब्रह्मविचारदियावे॥बहुस्यो जगतजन
मिनादिआवें॥३४॥एकपदद्वेपदत्रिय
एकाचोयदादिबहुपादआनेका॥मैबहु
मांतिस्ठिबिस्तरा॥तिनमेंप्रियनरदेह
हमारी॥३५॥मोपावेसोयाकरियावे॥

बहुदीवा ॥ २८ ॥ सदा रहै तुम्हरी आधार ॥ नि
त उठि योषै सिरजन दारा ॥ औ से प्रभु कों सेवै ना
ही ॥ तातें परै परम दुष मां ही ॥ २९ ॥ पानव के दुष
क देन जां ही ॥ पस्यो निरंतरि मेति न मां ही
अब मो कों सरनागत जानों ॥ दे करि ज्ञान सक
ल नय जां नों ॥ ३० ॥ मेरे तन मन धन तु वचर
नां ॥ मन वच क्रम आया में सरनां ॥ औ से सु
नि उद्धव के वेंनां ॥ इसि करि बेलि अबुज
नेनां ॥ ३१ ॥ श्रीमगवान ऊवाच ॥ उद्धव मे क
द देवों जां नां ॥ सति कहत हूं नां ही आनां ॥ या

जगसाधनएहैजेते॥आपुहीआपुउद्धरे
तेते॥३२॥आपुदिनलोबुरौपदिचाने॥बोडै
बुरौनलेकौ॥गुरआपुनौआपुहीहोई
॥यसुपंछीनावेजोकोई॥३३॥परिनरतनजे
सोहैनीकौ॥ब्रह्मादिकसबनिकोटीको॥ज
ब्रह्मविचारहिपावै॥बहुस्यो जगतजन
मिनहिआवै॥३४॥एकपदद्वैपदत्रिय
एकाचोयदादिवदुपादअनेका॥मेव
नांतिस्मृष्टिबिस्तरा॥तिनमेंप्रियनर
दमारी॥३५॥मोपावैसोयाकारि

रसवनि सुषुप्तमोगावै । यामे मे रौ करै वि
चार सावधान है बहुत प्रकार ॥ ३६ ॥ भाई
हती जड दे देहा इंद्रियादिक अरु सकल सने
हा अपने अपने अरथानि गहैं । सो एस कति
कोन कील है ३७ अरु सो वत ज व सुपिनां पा
वै तब तो इंद्रिय तन छिटकावे । सुपिन माहि सु
ष को लहैं जागे वात सकल को कहे ॥ ३८ ॥ ताते
मे इह तन नांही मै तो वास कीयो या मांही ॥ तो
वनिता सुता वित परिवारा मे रौ तो नहि सकल ॥ ४
पसारा ३९ ॥ ये तों सकल देह संग जांही ॥ सो इ

दुदुद कदेमें नांही ॥ जातें सुपिनमां दिनही कोई
॥ उहां सकल औरई होई ॥ ४० ॥ अरु जां व मे तो
वदनांही जो तनदी से सुपिनें भांही ॥ जातें वद
ऊधिर नर दावे ॥ वा कों तजिया मै फिरि आवे
॥ ४१ ॥ वति इदया तें वद रूची ॥ यद दृढ ज्ञान ग
द तो मे मूठी ॥ जो इद दं दं दं कों लदे ॥ इंदिय
न दे सब अर्थ निगदे ॥ ४२ ॥ इंदिय बुद्धादिकें
अरु बानी ॥ जा कों कोई सकें न जां नी ॥ सो मे
नित निरंतर एका ॥ उपजै विन से दह अने क
॥ ४३ ॥ जार्द सो मैं कदा तें आयी ॥ किन तनदी

हैं कि न उपजायों॥ अव तो मे द्वै देह आधार
पल को रा दिन सकौ निरधार॥ ४४॥ ए दो उत
जि का में रहैं॥ सो हे सत्यता हि दिट गहैं॥ औ से
बहु बिधि करै विचार॥ त्यागै देहादिक परिवा
रा॥ ४५॥ सो ई ज हंत हं ले वै जाना॥ क ब हूं क छू
न जां नै आं नां॥ या बिधि आपु आपु कौं तारे॥ ल
हे ब्रह्म न ब्रु दुष निवारे॥ ४६॥ य ह बिचार मान
व त न दोई॥ दूजा भू लिन पावे कौ ई॥ ता ते तू मा
न पायों॥ अरु क छु ड क मे तौ दिल पायों॥ ४७॥
ता तें तजौ सकल कौ संग॥ मन क्रम बचन दो

हुनिदं संग॥ सवतं परं आपुकों जों नों॥ सो आ
धार ब्रह्म के मां नों॥ ४८॥ जहां तहां दध्यो ज्ञान
उपदेसा॥ या विधिकरौ ब्रह्म परवैसा॥ श्री सै ज
हां तहां लै जां नों॥ बहुत कन एषु सपरवां नों॥ ४
॥ तिनमें वाहुं एक की वाता जोइत दास कथा
विष्वाता॥ दत्त दिगंबर अरु जडुनूपा॥ तिनको
देसं वाद अनूपा॥ ५०॥ दोहा॥ सुनि उद्धव इत
दास अब॥ भाषों परम अनूप वक्ता दत्तात्रे
य जहां अरु प्रह्लक जडुनूपा॥ ५१॥ एक समें भूष
ति जडुनां मां॥ गये सिकार छोडि निज

॥ तव तानगरानि कटहै सुता ॥ देष्यो एक परम
अवधूता ॥ ५२ ॥ निरञ्जे निहचल इच्छा चारी ॥ तेज
निधान तरुन तन धारी ॥ करि परनाम बहु तप
रकारी ॥ जहु भूपाति जव वचन उचारी ॥ ५३ ॥ ज
हुहु वाच ॥ हे प्रभू पूरन परम दयाला ॥ कहाँ सु
पा करि होहु कृपा ला ॥ औसी बुद्धि कहा तुम पा
ई ॥ जाते विचरो सहज सुभाई ॥ ५४ ॥ भए अ
रता इच्छा चारी ॥ बालक समि सब चितारारी
सबुज गुनि सदिन इहे विचारै ॥ धर्म अरु अ
र्थ कां भविस्तारै ॥ ५५ ॥ सो ऊन दि उपजे दुषपा

वै ॥ तिन सों ला गि सब आगु गवा बू वै ॥ तुम सम
र्थ सर्व ई विधि जां नों ॥ क्रिया निपुन प्रिय वै न व
षा नों ॥ ५६ ॥ सब विधि सरस तरुन तन सुंदर ॥ तु
ष्ट पुष्ट को लियै दुंदर ना कछु बंछो ना कछु क
॥ जां दुउन मत्त जिमै वीचरो ॥ ५७ ॥ तत्तां कां मलो
न दों लागी ॥ सकल लोक दा मेतिन आगी ॥ तुम
आनंद मय दा मोनां दी ॥ ज्यो गयंद गंगो दिक्
माही ॥ ५८ ॥ दिदु अर्थ सब दी के त्यागे ॥ रहौ अन
दत सो कहिलागे ॥ संगन को ई राबो देवा ॥ को
ई लदिन स कै तव भेवा ॥ ५९ ॥ तातै

रिनाथा ॥ अत्र जल वूडत पकरो दाथा ॥ युंज दु
भूप बीनती करो तब अत्र धूत गिरा उचरा ॥ ६० ॥
॥ अत्र धूत ऊवा ॥ सुनि जडु भूप परम वडना
गी ॥ जा की मति हरि सुं अनुराग ॥ बटु ते दे मेरे
गुरु देवा ॥ जिन ते मैं सब जान्यों नेवा ॥ ६१ ॥ पा
में म तो आप ते लान्यों ॥ तिन में सो कि न हूं नहि
ची न्यों ॥ ते गुरु सकल सुनों तुम मो सों ॥ हरि
जन जां नि कहत दुंतो सों ॥ ६२ ॥ धरनी गगन
पवन अरु पां नी ॥ अनल चंद्रा विक पोतहि
जां नी ॥ अजगर सिंधु पतंग रुमंगा ॥ कुंजर

मधुहरतारुकरंगा॥ ६३॥ मीनादिगुलाकुं
रुवाला॥ कुंवासरकरताश्रुकरुवात्या॥ मकु
रीशृंगाएवीवीसाइनतेंसीव्यामुनदुसदी
सा॥ ६४॥ प्रथमंधरणांमंगुनटव्या॥ मीमं
रमतत्वकरिलेव्या॥ सर्वरदंधरणाआया
गतापरिमंडकवेअपवाग॥ ६५॥ गोशिरअ
तिउतिमअंगा॥ तिनकांकरेंवदुतविधिलेगा
॥ ताकेपरवतवृक्षअनेता॥ परउपकारमने
वरतंता॥ ६६॥ परिअपगधकेछुनादिजाने
उलटिआपउपकारदिधने॥ श्रीमामीलभूरजि

कीलेवै॥ जो जनहरिचरननि कीसेवै॥ दृष्ट॥
प्रांनवायुज्युलेइअहारा॥ स्वादकुस्वादनको
ईप्यारा यौहरिजनआहारहिलेवै॥ स्वाद
कुस्वादनदिचितदेवै॥ दृष्ट॥ विनअहारवि
चारनओवै॥ स्वादकुस्वादनमनवहरावै
॥ ततिंएतौलेइअहारा॥ जेतौदोवैप्रांनअ
धारा॥ दृष्ट॥ अरुज्योपवनफिरैजगमांही॥
शुद्धअशुद्धालिपेकछुनांही॥ नांनोमेदनि
मेसंचरै॥ प्रियअप्रियगुनदोषनधरै॥ ७०
॥ यौविषयानियदतेंदंजो॥ मनक्रमवच

न न हो वै भोगा॥ भेद अने कानि में अनुसरै॥ प
रि कछु भेद हृदैन दिधरै॥ ७१॥ अरु ज्यों पवन
गंध से भोगा॥ लियत न यौ जानै सब लोगा॥ प
रि सो पवन सदा एक रूपा॥ लिधेन कब हूं इ
अनूपा॥ ७२॥ यंच नूतनू मति त्यों देहा॥ सक
ल विकार निही को गेहा॥ ता में जौ गी लियत न
होई॥ और लियत जानै सब कोई॥ ७३॥ ज्यूस
बदिन में एक अकासा॥ अरु सर्वा
में वासा॥ सब उय जे विन से बरतां हो॥ गग
न लिपे का ल्यति दुं मां हो॥ ७४॥ त्यों ब

सब जगत पसारा ॥ मुनि देखै आत्म आचारा ॥
॥ जो कबहुं सै जड देखै सोई ॥ जाकें संग तेचे तन
होई ॥ ७५ ॥ ज्यों आत्म देहनि में देखै ॥ त्यों परमा
त्म जहं तहं लेखै ॥ एक अनंत कहुं आवरनां लि
खै न छिपे जन मनहि मरनां ॥ ७६ ॥ सो परमा
त्म आत्म एका ॥ कहे न देखै भूलि अनेका ॥ ज्यों
जोग गन घटनि में होई ॥ बाहरि हूं पुनि जहं
तहं सोई ॥ ७७ ॥ कहि वे कौं है ना तरु एका ॥ यों
आत्म अरु ब्रह्म बिबेका ॥ ज्यों बहं मेद पव
न टां मिनी ॥ वरखै बहवा सुरि जां मिनी ॥ ७८ ॥

॥परि नमलिप्तकदेनदिहोई॥ श्रीरलिस
जां नैं सबकी ई॥ ज्यों आत्ममेदेह अनंता
॥ उपजै बिरतैं पावैं अंता॥ ७५॥ परि आ
त्मा लिप्तकदूनां ही॥ साध्य बिचारै यों मन
मां ही॥ इह अव रगुन तोहि सुनायो॥ अव
नाथो जो जलते पायो॥ ७६॥ नित निरमल
श्रीरनिमल दृश॥ ताप मेरि सीतल ताकै
॥ सब सुषदां प्रकहित रसवंत॥ एगुन जल
तैं सीधे संत॥ ७७॥ तिज वंत अति दीपति जु
सा जो अरदितं जं दंत दं निरमुक्ता॥ स्वाद

सब जगत पसारा ॥ मुनि देवै आत्म आधारा ॥
॥ जो ककुदी से जड है सोई ॥ जाकें संग ते चेतन
होई ॥ ७५ ॥ ओं आत्म देहनि में देवै ॥ सो परमा
त्म जहं तहं लेवै ॥ एक अनंत कहुं आवरनां नि
पैन विषे जन मनहि मरनां ॥ ७६ ॥ सो परमा
त्म आत्म एका ॥ कदे न देवै भूति अनेका ॥
जोग गन घटनि में होई ॥ बाहरि दू पुनि जहं
तहं सोई ॥ ७७ ॥ कहि वे कौं है ना तरु एका ॥ ये
आत्म अरु ब्रह्म बिबेका ॥ ओं बहं मेह पव
न दां मिनी ॥ वरवै बहु बासुरि जां मिनी ॥ ७८ ॥

॥परिनभालिप्तकदेनदिहोई॥औरलिस
जांनैसबकीई॥ज्योंआत्ममेदेहअनंता
॥उपजैविरतेंपावैंअंता॥७६॥परिआ
त्मांलिप्तकदूनांही॥साधविचारैयोंमन
मांही॥इदअबरगुनतोहिसुनायो॥अब
भाषोंजोजलतेपायो॥७७॥नितनिरमल
औरनिमलदृश॥तापमेरिसीतलताकदे
॥सबसुषदांयकदितरसवंत॥एगुनजल
तैंसीधेसंत॥७८॥तिजवंतअतिदीपतिजु
आआचरदितंजंतंतदंनिरमुक्ता॥स्वाद

रहितसवभक्षनकरै॥ अगनिनलियेसंचि
नदिधरै॥ ८२॥ त्योंहीज्ञानतेजमयहोई॥ इं
द्रियादिकसदीपतिहोई॥ जदयिबहुविधि
भोजनकरै॥ स्वादरहितगुनदोषनधरै
८३॥ काहेंहुतेंहोमनदिहोई॥ काहेंकेगु
नमितैहोसोई॥ उदरप्रमोनलेइआहार
॥ कछूनजानैसंचयसार॥ ८४॥ गुप्तरहैन
दिनूलिजनावै॥ कीन्हप्रगटप्रगटहैआ
वै॥ परदृष्टाआहुतिकोलेई॥ तिनकेपाप
रहैनदिहोई॥ ८५॥ त्योंमुतिगुप्तआपति

रहे॥षो जिले इता कौं भ्रम दहे॥उत्तम भोजन
दिन ऊहोई॥पर इच्छाते लेवे सोई॥८६॥बहु
स्यों अगनि एकर स एका॥बहु विधि दी से
का व अनेका॥त्यों आत्मा एकर समां दी॥ने
द देह हत संवेनां दी॥८७॥दी वाम साल प्रग
ट जू होई॥ज्वाला जात लखे सब कोई॥परि
ते दी से त्यों के त्यों ही॥प्रति दिन देह जात देयो
॥८८॥जे सैं सिसि कै बटिकला॥त्यों त्यों दिन
दिन दी से नला॥पूरन के कर दिन दिन ना से
॥सकल मिटें ते न दां पर का से॥८९॥त्यों वाला

दिअवस्था आवे ॥ कैकरितरुनक्रमदि
मजावे तबआत्मादेविषेनांही ॥ परिदेस
दाकालतिहुमांही ॥ ए० ॥ ज्यो रविकिरननि
सोंजललेवे ॥ समयपाग्रबहुस्यो जलदेवे
॥ परिकबहुअनिमाननआनें ॥ लियोदि
योआपुदिनदिमांने ॥ ए१ ॥ योमुनिकहेस
नेआरुदेवे ॥ सकलअर्थइंद्रियरुतलेवे
॥ नितआतमांअकतीजानें ॥ सबतजिब
सविचारहिवांनें ॥ ए२ ॥ ज्योघटजलप्रति
विवितसर ॥ लिपदेविषेपरिहेंदूर ॥ त्यो

आत्मा देह संबंधा ॥ थूल दृष्टि ज्ञान तद्देह बंधा ॥
ए ३ ॥ अब कपोत की कथा सुनां ॥ तिरंगन
की भ्रमहि मिटां ॥ एक कपोत कपोती संग ॥
॥ वन में कीन्हों गृह प्रसंगा ॥ ए ४ ॥ आपु आ
पु में आसक्ता ॥ आव पहर में पलुन विरता ॥
॥ मन सौं मन अंगानि सौ अंगा ॥ नैन ति नैन न
दो बहुरंगा ॥ ए ५ ॥ आसन गवन असन अ
सयांना ॥ सयन बैयन सारी विधि नानी ॥ मि
लिस कलक्रमानि को कथं ॥ निमय
कवहट रै ॥ ए ६ ॥ सा कपोत वरि

की यौ ॥ हाव भाव तन दरिली यौ ॥ १॥ बानि
ता जो वंछे सो त्यावे ॥ कष्ट साहित जां दी वि
धि पावे ॥ १७ ॥ सो अस्त्री जित ज्यों तुम राजा
॥ अपनो लषेन काज अकाजा ॥ तन मय म
यौ निरंतर रहै ॥ प्रांन निदुते तादि प्रिय क
है ॥ १८ ॥ ताकी जिया अंउ उप जाये ॥ तिन में
मन दोनू मिलि लाये ॥ तब दरि माया सि सु नि
रमये ॥ कोमल अंग रोम ते मये ॥ १९ ॥ तब
दो ऊ मिलि तिन कीं पोषे ॥ वदुत नांति बहू वि
धि संतोषे ॥ कोमल बचन सुनि मुख दर से

॥ अपने अंग सौ परस ॥ १०० ॥ हिरिकी माया बं
दुत मुलाये ॥ आपु आपु में सकल बंधाये ॥ पु
त्र सने दरदे अनुरागे ॥ सिर पर काल न लये
अभागे ॥ १०१ ॥ एक बार बालक निके कारन
॥ चारौ लेन गये ते आरन ॥ ताही समे व्याधिय
क आयी ॥ बालक देखि जाल बिचरायो ॥ १०२
॥ देख्यो कनन देख्यो जाला ॥ बंधे अनिसकष
ग बाला ॥ तब दो ऊमारा कौ ल्याये ॥ तिनि ग
द मां दिन बालक पाये ॥ १०३ ॥ तब देखे माता
ते बाला ॥ बंधे जाल महा बेहाला ॥ तब सोत दा

पुकारतथाई॥ जालमांदि सुतदुतबंधाई॥
१०४॥ तब कपोत देखे सबबंधे॥ हरि माया की
ने अति अंधे॥ तब सो बहु विधि करे बिला
पा॥ लेषे बहु त आ पने पापा॥ १०५॥ हा हा पाप
कोंन में की नै॥ अैसे दुःषदई मोहि दी नै॥ जा
की दुद पाति बरतानारी॥ पुत्र निले सुरलोक
सिधारी॥ १०६॥ मोहि छोडि स्नेह मांही
॥ सब मिलि आ पुइंद पुरजांही॥ नां में सुष
भोग एइ हिलोका॥ नहिं साधन पायो पर
लोका॥ १०७॥ धर्म अरु अर्थ काम सब जा

में॥ कछु वै गृहरक्षो नहिता में॥ अब प्रांननि
राषे कछु नांही॥ घरी घरी में दुष अधिकारी
॥१०८॥ या विधि नयो बहु त बेहाला॥ बंधे दे
खिबनिता अरु बाला॥ अकुल बुद्धि विचा
रन कस्यो॥ आपुहि जाइ जाल में पस्यो॥१०९॥
॥ सदित कुटंब कपोत दिपायो॥ तब ही नय
आध मन नाथो॥ ऐसी में कपोत की देषी॥
तब अये नेह देइ दलेषी॥११०॥ यों कुटंब हो
वे जाही कै॥ तस्मा राग बटे ताही कै॥ जीवत
अति आरंभ नि करे॥ सदित कुटंब काल मु

वपरे ॥ १११ ॥ या बोधे जो मानव तन पाव
॥ सो तो द्वार ब्रह्म के आवे ॥ ता द्वार जो गूढ
हित करे ॥ सो नर ब्रह्म द्वार च टिपरे ॥ ११२ ॥
॥ ता ते जो गूढ वरुगे हा ॥ तिन को जीवल
दे प्रति देहा ॥ ओ सो मानव तन नग वेए ॥ ज
करि देव निरंजन पेए ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ इह
भाषी गुरु आव की ॥ सिद्धा में तु वपास ॥ अ
ब और नि की कहत हों ॥ ज्यों कूटे न वपास
॥ ११४ ॥ इति श्री भोगवते महापुरुषो एका
शस्यं च भगवद्भक्त्यं वादे अवधूते इति हास

धारव्यानेसप्तमोऽध्यायः॥७॥ चौपई॥५३॥
अवधूतोवाच॥ जेइंद्रिय सुषक लु क हावे
॥ तेतो सुरगन र क दुं आवे ॥ ज्यूस कर कू क
र सुष मांही ॥ त्योंही देव और क छू नांही ॥१॥
अरु सो सुष आयुहिते आवे ॥ कर मालिष्यो
सो की ई न मिटावे ॥ की ई दुष कौं न हि च दे
॥ परि दुष आइ आयु ही रहै ॥ २ ॥ त्योंही सुष
आयु ते आवे ॥ विन जां नं नर बहु दुष पावे
॥ ताते बुद्ध सुष नां मन लेवे ॥ दोई करता
हरि पद सेवे ॥ ३ ॥ स्वाद कु स्वाद न दुत कैयो

रा॥ जो हरि जी पठवैति स ओरा॥ ता कौन
द्वर है उदास॥ अजगर वृत्ति गहे इह दास
४॥ जो कबहुं अहार न आवै॥ तौ धिर रहै न
कछु मन ल्यावै॥ कर्म अधीन देह कौं जानै
॥ मन क्रम वचन न उदिम गानै॥ ५॥ अति स
मर्थ इन्द्रिय मन देहा॥ परिकछु उदिम क
हे न एहा॥ निह चल ब्रह्मति रंत रिसै वै॥ ६॥
दसि दसा अजगर तेलै वै॥ ६॥ दर स पर स प
र मंगंजीर॥ अधिक अगाध जान सो नीर
॥ वार पार को इयाहन लहे॥ ये गुन मुनि

साथरके गह ॥ ७ ॥ ज्यो वारिषा बहु नीर प्रवे
मा ॥ साथरक बहु बवेत लेसा ॥ शीघ्र ममैक
बुद्दी न न होई ॥ सदा समृद्ध आ पुते सोई ॥ ८ ॥
॥ त्यों कोई बहु विधि अर चावे ॥ भोजन ब
स्त्रादिक पहरावे ॥ अस्तुति मान बडाई वे ॥
वे ॥ बहुति जांति बहु ते भैसा नि सैवे ॥ ९ ॥ अ
रुए कै लें जांति उतारी ॥ निंदादिक वा नें
एक भाश ॥ परिनां संयन मय मुनि मांही
राग दोष दोऊ उथजे मांही १० ॥ ना

स्रक्नकआमरनां॥ बहुविधिमायाकेउ
पकरनां इनमेंआइपरैजेकोई॥ अग्निपत
गसमांसोहोई॥ ११॥ जोलगिमुनिसमझैः
जदेहा॥ जाचिअहारलेइबहुगेहा॥ जाते
कहुंअनुगगनबढै॥ इहसिद्धामधुकरते
पढै॥ १२॥ छोटेबडेबहुतविधिग्रंथा॥ ति
नतेंसारगहेंहरिपंथा॥ ज्यमधुकरबहु
फलिनमांदा॥ वासगहैफूलतिकोंनांदा
॥ १३॥ सोमधुकरहैविधिकोकादिये॥ ६

हुआ सते सिद्धा लदिय । बहुत गहनितें ले
इ आरा ॥ उदर प्रमान एक ही नारा ॥ १४ ॥
जे कों कछु संचिन धरे ॥ निमेष त्रय विचार दि
करैं ॥ संग दभूलि करे जो कब हो ॥ मधुमांघी
ज्युं विन सैत बही ॥ १५ ॥ पुतली का ठुकी जो
होई ॥ पग दुं बुध पर सै माति कोई ॥ पर सक
रत हो वै दिट् बंधा ॥ ज्युं कलंद करिनी संबंधा
॥ १६ ॥ मृत्यु जानि बनिता कों तजैं ॥ पांडित क
बहुं भूलि न भजैं ॥ भजतैं हो वै करी समाना
ए कहि मिलि मारै दिगज नाना ॥ १७ ॥ जो को

इधनसंग्रहकरे॥ सो कोई औरै परिहरे॥ अं
मधुमांषी मधुसंग्रहे॥ मधुदासो उदिमबिन
लहे॥ १८॥ दरिबिनगीतसुनें नदा औरा॥ गयो
चंदे सो दरि की गौरा॥ और सुनत गति दो वै औ
सी॥ व्याधगीतहरणा की जैसी॥ १९॥ सुनो
दरिन गति सि वै सुनिबहु रंगा॥ षं गोरि वि
ज्यौंगनिका संग॥ अबलाधीन मुक्त ऊहोई
तिन के सबद सुनें जौ कोई॥ २०॥ मुनि जिह्वा
आसक्त न करे॥ स्वादकु स्वाद सकल परिहरे
॥ जिह्वा रस तें दो वै काला॥ जे सैं मान मरै तत

काला॥२१॥ जैमुनिसब अर्थनियारिदरे
॥ जाइए कांतवास जोकरे ॥ सहजहोहिइ
द्वियसबहीनां ॥ परिरसनां नहिदोइ अधी
नां ॥२२॥ रसनांसबको फेरिजीवावे ॥ जब
हीरसे संजोगदियावे ॥ जोसबइंद्रियजीते
कोई ॥ परिरसनां करमें नहिदोई ॥२३॥ तो
लगिसकलब्रथाकरिजांनी ॥ रसनांजा
तिजातिकरिमांनी ॥ तातेंमुनिरसनांवस
करे ॥ श्रीरसकलसाधनपरिदरे ॥२४॥ यो
जैएकएकवसनए ॥ तेसबजमके द्वारे गए

॥ परिजो एक पंच बसि होइ ॥ ता के दुष जानै
गा सोइ ॥ २५ ॥ बहुरि एक गनिका प्यंगला ॥ ता
तें में सीधौ गुन नैला ॥ सो तुम सौं नाषत दूर
जा ॥ जातैं सरैं तुम्हारे काजा ॥ २६ ॥ जनक ब
देह पुर में बासा ॥ नां व्रप्यंगुला रूप निवास
॥ एक बार णंगार बनावौ ॥ धनी पुरुष मन
में बहरायौ ॥ २७ ॥ बैठी निकसि नवन के ध
रा ॥ आगे चलै लोक बाराजारा ॥ कोई न लौ
आव तो देखे ॥ इह आवै गौ यों करि लेषे
॥ २८ ॥ जब बह आगे कौं चलि जावै ॥ तब

प्यंगुला और कौंध्या वे ॥ औरें आइ आइ च
लिजां हा ॥ त्यों त्यों यद दुष पावे मां ही ॥ २६ ॥ क
बहुं उ विनी तर को जावे ॥ कबहुं व्याकुल बा
हरि आवै ॥ अर्थ राति औ सी बिधि न यो ॥ ले
ग वजार चल तर दि गयो ॥ २७ ॥ तब वह न गन
मनोरथ नई ॥ चिता दुष अनल अनु मई ॥ अ
पनोंति रस कार करि मां न्यों ॥ सब तें ही न आ
पु कों जां न्यो ॥ २८ ॥ तब ता को कोई बड नाग
॥ जा तें उपज्यो दिट खे रागा ॥ जो लगि नहि उ
न भे नि जे रा ॥ सो लगि नहि न मिटै न वष

॥३२॥ या न व न ष सि ष दु ष अ ने का ॥ ता में प
र म र त न सु ष ए का ॥ बंध न बंध्यो जी व अ पा
रा ॥ ति न को द रि जी र चौ कु वा रा ॥३३॥ ता की
म दि मां क दान जा वै ॥ जा के ना ग ब डे सो सो पा
वै ॥ जा कों नां म क दे वै रा गा ॥ सो तो द रि को
द यो सु हा गा ॥३४॥ जा दि दो दि सो ई ये पा वै
॥ भ व न य को डि ब्र ह्म में जा वै ॥ ता तें मां न व
स व क्ति र का वै ॥ ज्मूं त्मूं क रि वै रा ग उ पा वै
॥३५॥ त व प्यं गु ला व च न उ चा रे ॥ बहु त मां
ति अ पु दि धि का रे ॥ ग ए दि न नि को अ ति

पद्धिनावे॥सबतेंदिटवैरागउयावे॥३६॥
गलावाचे॥अहोएकमेरीअज्ञाना॥जाकेह
दंबदोभ्रमनांमां॥जलबुदबुदसमजोनरदे
दा॥तासोंसुषहितकियोसनेदा॥३७॥सरव
रजलपूरनेतजियासा॥मृगजलधाइकर
जलआसा॥चारिपदारथदायकदेवा॥स
दानिकटकोलहोननेवा॥३८॥सत्यसदा
सुषदायकस्यामी॥सोच्छोओनिजपतिध
ननांमां॥मूवोसदाकालमुषमांही॥जातेंयु
षसोंकअधिकादा॥३९॥असेपुरिषुतादि

मैं न ज्यो ॥ आपु दिदुःष आप कों स ज्यो ॥ देह वि
चि में देह दि पोष्यो ॥ याही मांति मन हि संतो
ष्यो ॥ ३९ ॥ अस्त्री लपट तस्मादाह्यो ॥ दुष्यत
नर सो मै सुष चाह्यो ॥ हाउ मेद मं जा अरु अंता
॥ मांस रुधिर त्व च रोम अनंता ॥ ४० ॥ विष्टा स
त स्वेद दृमिगेहा ॥ ऊरें द्वार न वृत्तै सी देहा ॥
ता में क हो र मि त क्यो हाई ॥ मो सी मूट और
दि कोई ॥ ४१ ॥ या पुर मां दि जन क न्य असे
॥ सुष आधि कार सुर सुर जे सें ॥ ता दू पर सब
सुष कों त जें ॥ देव देह हरि चरन निभ जें ॥ ४२ ॥

॥ अरु सब प्रजा मजै हरि चरनां ॥ जातें मिटे
जनम अरु मरनां ॥ जा कौन जै ब्रह्म सिव सेवा
॥ परिसोतें तहों कदे न दुखा ॥ ४३ ॥ औ सो प्रभु
कों जे नर सेवें ॥ तिन कौ राखि आपु कों देवै ॥
औ सो प्रभु में नहि आराध्यो ॥ कियो अर्थ
अर्थ नहि साध्यो ॥ ४४ ॥ अब मैं आपु निबेदे
न कौ शें ॥ और सकल उर तें परिदगै ॥ अ
यनं यति हरि जी के संग ॥ सदा रहै नृजी क
र धंग ॥ ४५ ॥ कदा और सुर नर द्विष्य कहे
॥ जे बापु रे आपु ही मरिहें ॥ अन्ते दुख के

ईधिरनांही॥ देवतसकलपलकमेंजांही॥
धृद्ध मेरीद्विष्टिदुषीसबआवें॥ कालधीन
कदासुषपावें॥ तातेंमेंइहनिहचैजांही॥ कृ
पाकराहैसारंगपांनी॥ ४८॥ जिनमेरेवैराग
उपायो॥ अपनेचरनरकंवलचितलायो॥ इ
हहरिकृपाबिनानहिहोई॥ जोवैरागलहेन
रकोई॥ ४९॥ जांतेंसबभ्रुबंधननासे॥ हृद
रभापतिआपप्रकासे॥ भेतोमंदभागनीओ
सी॥ त्रिभुवनमांदिनहीकोजैसी॥ ५०॥ ताकों
केसोहरिकोभजनों॥ केसोंकालजालकोत

जनों॥परितेदीनबंधुगोपाला॥यतालि
धारनपरमदयाला॥५१॥तिनहीआप
पाहेकरी॥जिनिमेरैउरिअसोधरी॥
बलैयायरसादहिसीसा॥निसदिन
चरनजगदीसा॥५२॥जेतनैयादेदी
रबाहों॥सोउनहिआरंभसबाहों॥
मांहिजोहरिजीत्यावे॥ताकदिय
रतावे॥५३॥याभनकूपयलो
॥विषयआवरणदिष्टिहिये
अजगरकालगरास्यो॥

स्यों पा स्यो ॥ ५४ ॥ ता कौ हरि बिन कौ न छि
डावै ॥ आपुहि को नहि कूरन पावै ॥ आरु
पुही आपु को राखै ॥ जब सब वस्तु हृदये ते न
खै ॥ ५५ ॥ जब ही हरि की सरणहि आवै ॥ त
ब ही आपु ही आपु छोडावै ॥ वै प्रभु निजाने
दमय देवा ॥ कदा करै कोतिन की सेवा ॥ ५६ ॥
॥ पारि सब जग काल छिटकावै ॥ हरि की
सरन आप सुष पावै ॥ ता तै और सकल को
त ज्यौ ॥ प्रेम भाव हरि चरन निभ ज्यौ ॥ ५७ ॥
॥ या विधि आपु हि आपु उधारै ॥ अब नहि

भाव सागर में डारें ॥ यों व्यगुला परममति
पाई ॥ दुहुं लोक की आस मिटाई ॥ पचासी त
ल दूँ सजा मैं गई ॥ परम अनंद दि प्रापति
नई ॥ या सिद्धाता ते मैं नू ॥ जली जो निउर
अस्थिर की नू ॥ पछ ॥ जो लगि आस करै
नर कोई ॥ तो लगि सुधी कदे नहि होई ॥
जब ही सकल आस छिड़ कावे ॥ तब तत
काल परम पद पावे ॥ ६० ॥ दोहा ॥ इह गुरस
त्रह की कही ॥ सिद्धा मैं समुझाई ॥ अब जो
रनि की कहत हूँ ॥ सुनियो हितधि-

इ॥ ६१॥ इति श्रीजागव्रते महापुराणे एक
दशस्कंधे भगवद्गुह्यसंवादे अत्रयूते श्रु
तिदासो व्याख्याने प्यंगुलागीतो नामो अष्ट
मोऽध्यायः ॥ ८॥ ६०॥ अत्रयूतो वाच ॥ जौ
जौ दितकरि संग्रहकरै ॥ सोई सो अति दु
षविस्तरै ॥ जबही दित संग्रह करि कावे
॥ तब अपार सुषसागर पावे ॥ १॥ कुरर पं
षिकुंदुं आमिष पायो ॥ सोले उओ बहुत
दित लायो ॥ तब बहुत कुरर नि दुष दयो
॥ आमिष तज्यो सुषीत बनयो ॥ २॥ इदमे

सीष कुररतें पाई ॥ जातें संश्रुत कशे न वाई
॥ बहुरि सीष बाल कतें लई ॥ मेरु उरि जातें
मति नई ॥ ३ ॥ तब भे मां न अप मां न नदि न
नों ॥ चिंता कहु चित्त न दि आ नों ॥ निमदि न
रदों आत मां री मां ॥ कबहु कहु न उप जे का
मां ॥ ४ ॥ या न व भे हे ही को सुष हे ॥ और म न
ल जीवनि को दुष हे ॥ डाद मर दि न बाल
मति दी ना ॥ अरु जो गुना ती तप द ली ना ॥ ५ ॥
एक बिप्र कै हू ती कुमारी ॥ ला विज्ञाद की दि
चारी ॥ ता के मात पिता इक वाग ॥

मकिहुं कामसिधारा॥६॥ समाचारद्वकवि
प्रनिपाये॥ व्याहकाजदिजके गृह आये॥ क
न्यावचनकिसी सों भाषे॥ तिन तें दिज आद
र करि राखे॥७॥ तब तिन के भोजन की धार
॥ चावर घोट न लगी कुमारी॥ तब ता के कर
ज्यों ज्यों डौलें॥ त्यों दी त्यों कर कंकन बोलें॥
॥ तिन लजित है सकल उतारे है है दुहुं ह
थ में धरि॥ बहुरि लगी जब चावर रघु रनें॥ तो
हुं लगी सब दते करनें॥८॥ तब तिन एक ए
क ही राख्यो॥ चुप करि रहे बहुरि नहि भाख्यो॥

॥ में विचरतु दो इच्छा चार ॥ ताते दोषि हृद मे
 धारी ॥ १० ॥ बहुत न संग वटे व क बादा ॥ पूजे दु
 त दो इ अनु रागा ॥ ताते रं दे अ के ला जोगी ॥
 सदा विचार ब्रह्म रस जोगी ॥ ११ ॥ आस ए प्रा
 ण दे द मन बंधे ॥ दिट बै राग हृद मे संधे ॥ नि
 द चल के नित ब्रह्म विचारे ॥ यो क्रम कर जत
 म को जारे ॥ १२ ॥ त्यों त्यों निद चल बटे समाधि
 ॥ तज ते जात्रे सकल उपाधि ॥ तब ज्यों पाव
 कई धन हीन ॥ त्यों होत्रे निज पद में लीन ॥ १३ ॥
 ॥ तब कहूँ कछु है तरे पति गयो ॥ सिना सब दव
 ब ॥ जान ॥

दुतविधि न यो ॥ १४ ॥ परिसर कर ने द न दिं प
यो ॥ या विधि सर में चित्त लग यो ॥ ओ सी सी प
लई मै ता तें ॥ निह चल बुद्धि नई मम जा तें ॥ १५
॥ ज्यों लोग नितैं उ रे नु वं गा ॥ व से गु हा मै र दे
अं संग ॥ सा व धां न अ ति थो रो बो ले ॥ ग त्या
दि क अं तर न दा पो ले ॥ १६ ॥ गृ ह आ रं न दुष
को मू ला ॥ ते आ र ने जे न र भू ला ॥ सर पु प रा
ये गृ ह में र दे ॥ या विधि मुनि आ हि सि हा ग
दे ॥ १७ ॥ आ पु दा तें मा या वि स्ता रे ॥ स त
र जे त म ब द्ध ने द य सा रे ॥ १८ ॥ ब द्ध रि आ ही

सब संग दे॥ निजानंद मय ए कै रहें॥ तातें या
सब मिथ्या ज्ञानें॥ या को करता सो सति म
ने॥ १९॥ यदसि दाम करी ते लेवै॥ सब तें य
रे ब्रह्म की सैवै॥ जहां जहां इह मन को धा
रें॥ निसबा सुं रि कवट नहि टारे॥ २०॥ राग
दोष भय क्युं ही होई॥ होत सत्यता ही को सो
ई॥ भृंग की टटु तें दू दली न्हौ॥ तौ मन हरि
चरन निधि रकी न्हौ॥ २१॥ इह चौबीस गु
रुनि की सिद्धा॥ तौ सो मे भाषी दट दिद्धा॥
अब तन तें सीधो सो कहूं॥ तरे सब अज्ञा

नहि ददं ॥ २२ ॥ मेरा देह मोहि समझावै ॥
हृदै जां न वै राग उपावै ॥ ज्यों बाला पन
ग यौ बिलाई ॥ त्यों ही यह अवजोवन जाई
॥ २३ ॥ आवै जरा मरन ता आगें ॥ बहू बि
धि दुष देह सीलागें ॥ स्वानशृगालानि को
प्रद ज्ञा ॥ ता सो प्रातिन जो रे दक्षा ॥ २४ ॥
पुत्र अर्थ पसु मेदा ॥ कुल कुटुंब बहू सेव
क जेदा ॥ तिन सो मिलि जाई दहि सेवै ॥ सो
इ अत महा दुष देवै ॥ २५ ॥ आगें को बहू कर
म उपावै ॥ अब जंम के दरबार पवावै ॥ २६ ॥

निमित्तषैचैनितरसनां॥ प्राणसदात्र
देजलअसनां॥ रक्षनयनरूपअरुसबद
दिश्रवनां॥ इन्द्रियचहेनारिकोरवनां॥ त्व
चासपरसनासाबहुगंधा॥ चरनगवनक
रिकारिदैधंधां॥ २७॥ याविधिसबमिलि
लूटैताकौ॥ बंध्योदेहसौदेवैजाकौ॥ ताते
नेहदेहकोतजिये॥ सदानिरंतरिहरि
कौनजिये॥ २८॥ हरिजबमायागुननबि
स्तारे॥ तबनांनाविधिदेहसंवारे॥ तिन
तिनमनसंतुष्टनभयोबहुस्योमानवत

ननिरमयौ॥२८॥ ता कों देषि बहु त सुषपा
यौ॥ तामें अपनों धां म बनायौ॥ तब हरि जी
बोले इह बां नी॥ जो इह प्र ग ट वेद बषां नी॥
३०॥ मोहिल है सो या करिल है॥ या करि स
ब न व बंध न द है॥ जब मेरे हित करे उ मा
या॥ तब मे या कों करों सहा या॥ ३१॥ ता तें ऊ
ति इह दुर ल न दे दा॥ श्री न ग वां न र चो ति
ज गे दा॥ अति दुर्लभ केहु ज त न न पावे
जो या यो तो थिर न र हावे॥ ३२॥ प्रति दि
न मृत्यु निरंतर गा से॥ एक दि नांत त का

लविनासे॥जरारोगअथसोकनिधानां॥ज
मेयलकसुषीनहीप्रांना॥३३॥तातेतादि
पाइकरिराजा॥करिलीजेआपनीकाजा
॥जातेइहकुटेसंसार॥जाकेदुषकोवा
रनपारा॥३४॥निसदिनुदेवनिरंजनभाजि
ये॥हेअयनीतविषैसबतजिए॥विषिया
षानषानसुतदारा॥एसबदेहनिबारंबा
रा॥३५॥तातेत्यागसकलकोकीजेहरि
केचरनकेवलचित्तदीजे॥याविधिइनते
सिखापाई॥तबमेंऔरसकला

॥३६॥ भुमें बिचरै कैनिहसंगा ॥ यातनदुके
छोडौसंगा ॥ सदारहोंहरिचरननिपासा
बहुविधिदेषोंसकलतमासा ॥३७॥ बहुत
गुरनितेंपूरणजांना ॥ जहंतहंलेवैसाधसु
जांना ॥ छूटैअहंकारअरुममता ॥ हृदैआनि
विराजैसंमता ॥३८॥ निर्गुनअगुननेदपदि
चानै ॥ सारअसारअचिराथिरजानै ॥ जहां
तहालैलैदृष्ट ॥ संसयदैतमिटावैसंत ॥
३९॥ परियेपरमारथगुरनांही ॥ एसबगु
रहैसतगुरमांही ॥ सतगुरतेजबजांनदिपा

वै॥ तब सारौ जग जान सिषावै॥ ४०॥ सातें मे
रें सदा अनंदा॥ हृदै विराजे परमानंदा॥ या
विधि जेई हरि कों सेवै॥ तिन कों निज हरि
चरणानि देवै॥ ४१॥ ए औ से ज दु कों बचन सु
नाए॥ मन के भ्रम संदेह गंवाए॥ राजा बहू वि
धि पूजा कीन्दी॥ करि भ्रण पति परदासि
यां दीन्दी॥ ४२॥ तब राजा कौ करि सनमान
॥ दत्तात्रे मुनि कियौ पयांन॥ राजा बचन ध
रे उर मांही॥ सब कौ संगत ज्यो दनतांही॥
४३॥ ब्रह्म दृष्टि सब दिन मै आनी॥ औ सो

नमो परमं विज्ञानी ॥ सो राजा उदुब अहमा
रो ॥ जिनि अपनों नव संकट दारो ॥ ४४ ॥ ता
ते उदुब और न कोई ॥ गुर आपुनो आपुद
दोई ॥ आपुदी बूडै आपुदितिरे ॥ आपुदि
जावै आपुदी मरे ॥ ४५ ॥ इद भाष्यो विज्ञा
नमें ॥ सब अद्वैत उपाइ ॥ अब ता को सा
धन कहें ॥ बहुत मांति समझाई ॥ ४६ ॥ इ
श्री जागव तेमदा पुराणे एकादस स्कंधे श्री
मग वदुदुव संवादे ॥ चतुरविंशति गुरवा
ध्याने नाम नवमो ध्याये ॥ १ ॥ चौपद ॥ ६४ ॥

॥ अवधूते इतहा सो व्याघ्या न संपूर्ण ॥ प्र
भगवान् न ऊवाच ॥ सुनि उद्धव अवसाधन
कहौ ॥ तेरे सब संदेह दिह दहौ ॥ जातें उप
जे ब्रह्मगियां नां ॥ वृद्ध और सकल भ्रम
नां ॥ १ ॥ मम भक्त निजे मारग आवे ॥ ते स
ह देवै विमें आवे ॥ ते कहिए आत्म के
मी ॥ और सबे बंधन के कर्मा ॥ २ ॥ तिन
सावधान देखे जानै ॥ बर्णाश्रम कुल मि
मानै ॥ जे जे बटु आरंभ निकरें ॥ सुख
देनि सदिन दुष नरें ॥ ३ ॥ आगे को बंध

नयौ परमं विज्ञानी ॥ सो राजा जदुब डै दम
रौ ॥ जिनि अपनों न वसंकट टारौ ॥ ४४ ॥ ता
ते उद्धव औरन कोई ॥ गुर आपुनो आपुदी
होई ॥ आपुदी बूडै आपुदिति रे ॥ आपुदि
जावै आपुदी मरे ॥ ४५ ॥ इद भाष्यो विज्ञा
न मैं ॥ सब अद्वैत उपाइ ॥ अब ता को सा
धन कहूं ॥ बहुत जांति समझाई ॥ ४६ ॥ इति
श्री भागवत मे महा पुराणे एकादस स्कंधे श्री
मग वदुद्धव संवादे ॥ चतुरविंशति गुरव्या
व्याने नाम नवमोऽध्याये ॥ १५ ॥ चौपडी ॥ ६४६

॥ अवचूते इतहा सो व्याख्यान
मगवाने अवाच ॥ सुनि उद्धव जे
कहौ ॥ तेरे सब संदेह हित हो ॥
जे वसगियां नां ॥ बुद्धे और स क नों
नां ॥ १ ॥ म म म कानि स मा ॥
हृदे बैवि में आब ॥ ते जा हिए आ
मों ॥ और सबे बंधन के लोभ ॥
सावधान के जा मे ॥ लोभ सब
माने ॥ जे जे लोभ आ रंगि के ॥
नद नद नद ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उपजावै॥ जिनके संग जम द्वारे जावै॥ यो
विचारि आरंभ नित जे॥ द्वे निद कां मचर
नमम नजे॥ ४॥ जहां लगे हैं नां नो बुधि॥ सो
सब उद्धव जां निकु बुद्धि॥ द्वे तभाव सो भ्र
म करि जां नो॥ सुयन मनोरथ समि करि म
नो॥ ५॥ ताते और कर्म सब तजे॥ नित ने मि
तिक ककु द्रक नजे॥ ते उ ककु सत्य नादि
जां नो॥ करै तो करै नही तो जानै॥ द्वे भक्ति
मां दिं जो अंतर परै॥ तो ते भूलिन कब दूंक
रे॥ जो जास सैन अंतर जां नो॥ तो तास मै सेद

ज में वं नैं ॥ ७ ॥ जमनि मादि निद चल
धरै ॥ नियम न कौ ना वै त्यों करे ब्रह्म विज्ञ
रसर नहि जा वै ॥ जातै नेद सकल कौ पा
॥ ८ ॥ जम अरु नियम कछु नही से वै ॥ सत
र कहै सीष सोलै वै ॥ मान रहित मछर न
जानै ॥ तन मन अरु पि प्रीति कौ वं नैं ॥ ए
दांत दां ममिता परि देखै ॥ सावधान आ
नहि करै ॥ तजै अस्वप्न व्यान बोलै ॥ तन
न निद चल कदे न डोलै ॥ १० ॥ प्रदा सहित
सकिति होई ॥ गुरु चरन निसे वै सिष सो

ई॥ दार सुतावितगेहकुटंबा॥ सकलभूत
आतमपितृअवा॥११॥ तिनसबदिनकोंस
मकरिदेखे॥ मिमेरोकरिकदेनलेखे॥ रदेउदा
सआसपरिदरे॥ निसदिनब्रह्ममांदिमन
धरे॥१२॥ सूक्ष्ममथूलदेहदेजेहें॥ नरमस्
पमायाकेतेहें॥ इनदुनौतंआत्मदूरी॥ स्व
प्रकासचेतनिनरपूरी॥१३॥ थूलसरीर
प्रगटजडएहा॥ चेतनिकरैतादिवहदेहा
॥ सोब्रह्मऊतनजडएहा॥ चेतनिकरै
होइआत्मांसंगा॥१४॥ सोआत्माहुंदूते

न्यारा॥ दुहं प्रकासक दुहं अधारा॥
एककाव अनलपरिजरे॥ सोदूजेदिप्र
कासितकरै॥ १५॥ परिसो अनलदुहं
न्यारा॥ स्वप्रकास आतम आधरा॥
सोबदुका वनिसंगा॥ पावेउत
अरुभंगा॥ १६॥ त्यो दैत नहरि मायाकी
॥ ते आत्मां अपकरिलीये॥ तिनसंगज
ममरन दुषपावे॥ लहै अनंदजबही
टकावे॥ १७॥ तातें बहूबिधिकरै विचार
॥ आत्मजां नैं सबतें न्यारा॥ एक अजनमा

रि ए कायल रहन याहा ॥ २५ ॥ आ ॥ आ ॥ २६ ॥
दि आ काश ॥ तिन संगति मन बहुत प्रकार
कबहु ज्ञान हदै नही आवै ॥ जन मि जन
मि मरि मरि दुष पावै ॥ २६ ॥ कर्म रुजो कर्म
नि आचरै ॥ सुष अरु जो सुष भोग निक
रै ॥ एचा रूयो दा से प्रतंत्रा ॥ तातें सब तजि
ये इह मंत्रा ॥ २७ ॥ जे पंडित श्रुति सुमृत जा
नें ॥ तत्व लहे बिनु कर मनिगं में ॥ ते मूरि प
देहा अभिमानि ॥ आपुहि आपु कदावै ज्ञा
नी ॥ २८ ॥ हरि जन संग न कबहुं करै ॥ तत्व

नसुनै कर्म विस्तरे ॥ तिन तें मले जे कचन
दिजानै ॥ तत्त्व बचन सुनि हृदये आनै ॥ २६ ॥
॥ जद्यपि अंत सुषानि कों जानै ॥ अरु हं न
मंगुर देहानि मानै ॥ परिसोत तत्त्व न सम
झेतें ॥ जातै लहे भगति कों भे ॥ ३ ॥ का
ल मति जा कों नित ग्रसे ॥ ता कों कदों क
दा सुष बसे ॥ ज्यों कौई मारन कों लीजे ॥ सु
लानि कटव सै लीकीजे ॥ ३१ ॥ अरु ता कों
जो भोग भोगावै ॥ सो धों कदो कि सो सुषपा

रनिंदा नय सोका ॥ ३२ ॥ तिन के हेत ज त
न ब दु करे ॥ सिध न दा दि वि ध न अति प
र ॥ ज्यो वै ती मै वि ध न अने का ॥ त्यों सुरग
दिल दे की ए का ॥ ३३ ॥ अरु जो ल ह्यो त
ऊ धिर नां दा ॥ देष त बि न सि जा इ स प ल म
ही ॥ इ ही ज ज क रे ब दु को ई ॥ अरु जो अंत
रा इ पै लै न दि हो ई ॥ ३४ ॥ त व सो सुर ग लो
का को जा वै ॥ कै करि दे व दे व सुष पा वै ॥ अ
प ने पु नि नि को उ प जा यो ॥ उ त्त म जा इ
मान दि या यो ॥ ३५ ॥ ब दु गं ध र्व गं न को

कहैं॥ बहु सुंदर नारि मन दरे॥ इच्छा दो
इतहां चलि जावै॥ सहित बिमान बिह
लवन लावै॥ अमृत पांन तहां नित करै
॥ वस्त्राभरण दै बहु धरै॥ यौ नित मगन
बहुत सुषयावै॥ परिवे की कहु चित न आ
वै॥ ७॥ जेतो पुण्य इहा को होई॥ ते तो
रहे सुरग में सोई॥ पुण्य स्त्री एहो वै पुनि
जब ही॥ काल तहां ते गहै तब ही॥ ३८॥ सो
सुषक होत औं क्यौ जावै॥ ता दुष की कहु
कहत न आवै॥ रह्यो चहै परिक्यों का

६॥ कालअधीनमदादुषलदे॥ ३९॥ कौं
सुषपावैकदुजेतौ॥ छीनिलियेदोवैदुषते
तौ॥ सोतजिसुरगभूममेंआवै॥ पीछेजोनि
अनंतनियावै॥ ४०॥ इदनाषाविधिकीग
तितौंसौ॥ अबनिषेधकीसुनियेमोसौ
॥ जोकुसंगमेंप्राणीपरें॥ तीबहुभातिअध
रमनिकरें॥ ४१॥ बंधैकामइंद्रियाचीन
अस्त्रीलंपटलोभादीन॥ बहुजीवनिकीदि
साकरै॥ प्रेतभूतगणकौअनुसरै॥ ४२॥
॥ मैहीएकवसोंसबमांही॥ तिनकेंदीहन

रकमें जां दी॥ वृद्धि आइ था वरत नुं लदे
॥ जनम जनम वृद्धि संकस है॥ ४३॥ ताते वि
धि निषेध जे करै॥ ते सब जनम रन मै परै
करम करै तिन तंत न धरै॥ तन धरि ध
रि बद्ध दुष सों मरै॥ ४४॥ ताते प्रवृत्ति मै सु
ष नां दी॥ भावे ब्रह्म लोक किन जां दी॥ लो
कपाल सब लोक समेता॥ इत नों रेहे ब्रह्म
दिने जेता॥ ४५॥ सो ब्रह्मा ऊं अंत न रहे
तातर बाज काल लौंग है॥ अग्नि रहे
रे नये मां दी॥ यंत्र नव है तिह चल पल

ह॥ ४६॥ स्वरिजचंद एकार सचलें मरजा
दाते सिधुनटलें नृत्युनिरंतर सबकों या
से॥ मेरे काल रूप तें जासे॥ ४७॥ तातें कुटून
सुषप्रवृत्ति॥ सुषचाहें सो गहें निवृत्ति॥
अरु इंद्रिय कर मउपावै॥ तिनकों सत
रजत मबर तावै॥ ४८॥ सो आत्मा इंद्रि
य बस होई॥ तातें सुष दुष पावै सोई॥ प
रि आत्मा अकरता जानौ भोग रहित
हीतें मांनों॥ ४९॥ कर्म रुनों गादि कहे
जेते॥ इंद्रिय अरु गुन कृत सब तेते॥

जोलगियदइंद्रियगुंनबंधा॥ तौलगि
मिटैनतनसंबंधा॥ ५०॥ तनसंबंधामि
टैनहिजौलौं॥ नांनानावबहुतबिधि
तौलौं॥ नांनानावरहैंजबलगैं॥ पराधी
नआतमतबलगैं॥ ५१॥ पराधीनजौल
गियदरहे तौलगिकालनिरंतरगहे
॥ तातेंजेप्रवरतिरतहोवै॥ जुगजुगज
नमजनमनरौवै॥ ५२॥ प्रथमदुतौमेंए
कनिरंजन॥ ताहीतैंउपज्योइहैंअंजन
कालआत्मालोकबेद॥ धर्मस्वभाव
बहुतबिधिभेद॥ ५३॥

नकोई॥ तातेबुधअनुरक्तनहोई॥ एक
निरंजनआत्मजांनै॥ तबसबसंकटअ
वकेजांनै॥ ५४॥ लोकुरुवेदवासनातजे
जै॥ इन्द्रियदेहविषेनहिअजै॥ मनपहुं
चैसोमिथ्यालेषे॥ मनअतीतसोजहंत
हंदैषै॥ ५५॥ ब्रह्मरुआतमएकबिचा
रै॥ याविधिसकलउपाधिदिजारे॥ त
बहीएकब्रह्मकोपावै॥ छूटैहैतबदुनि
नहिआवै॥ ५६॥ इहआत्मअरुदेहवि
वेका॥ याकौंजांनिएककोएका॥ एसेब
चनकदेजबकृष्ण॥ उद्धवदासकरीतब

प्रश्न॥ उद्धव उवाच दे प्रभु जो इह सारो नम
॥ इन्द्रिय देह विषे गुन कर्मा॥ अरु आत्मा
अनह अवंधा॥ ता कों नयो कों न बिधि
बंधा॥ पचा॥ अरु जो बहुरि जां न कों लहो
छोडि उपाधि देह में रहै॥ सो बहुरि को
लपन होई॥ अरु क्युं करि जां न जै सोई॥
पचा॥ कै सो विचरे कै से रहै॥ कै से जावे कै से
कह॥ कै से पादि रे कै से सोवे॥ कै से सुने को
न बिधि जोवे॥ द०॥ अरु आत्मा एकै देना
दी॥ एक मुक्त क्युं एक बंधा हो॥ एवंब

के कं मुक्ता ॥ एतौ बहुत एक कौ उक्ता ॥
६१ ॥ गुण अनादि आत्मा अनादि ॥ तातें
प्रदतौ बंधन आदि ॥ नित्य मुक्त कौ कदि
प्रदेवा ॥ या कौ मोहि बतावौ नेत्रा ॥ ६२ ॥
दोहा ॥ एउद्धव निज भक्त के ॥ सुनिकरि
निरमल बेन ॥ ता कौ प्रत्युत्तर कह्यो हरि
जी करुना अंन ॥ ६३ ॥ इति श्री भागवत म
पुराणे एकादश स्कंधे श्री भवदुद्धव संवा ना पा
टीका यादव मोक्षाय ॥ १० ॥
चौपाई ७० ॥ श्री गुरु ॥ सुनिउद्धव प्रम
गवान उवाच ॥ १

गियां नां॥ जाते नैद मिटे तु न नां नां॥ बंध
र मुक्त तोहि स मा ऊ॥ तेरो सब अज्ञान मि
टाऊ॥ १॥ बंध मुक्त जे कहि ए को ई॥ सो ते
सकल गुन नि ते हो ई॥ ते सब गुन माया
के जां नों॥ इन ते दूरि आत्मा मां नों॥ २॥
सो कर मोद जनम अरु सुष॥ नय अ
रु मर नादिक बहु दुष॥ ए सारे माया क
त केवल॥ सदा एक आत्म निद केवल
॥ ३॥ ज्यों सुपि नें सुष दुष अने का॥ तिन में
आत्म कौं न दि ए का॥ ते सब बुद्धि रुमन

कों दो वैं॥ इन्द्रियदेह प्रगटते सो वैं॥ ४॥
पुनि बुद्ध्यादिक छून दिरहैं॥ जा कों प्रग
ट सुषपतिकहैं॥ तब आत्मां निरंतरि दो
ई॥ परिता कों सुष दुष नहि कोई॥ ५॥ जो सु
षपतिमें आत्मरहै॥ तो विवहारपीछे ले
गहै॥ परिता कों नही विकारा॥ एसब
माया के विवहारा॥ ६॥ परि आत्मां आ
पते मांनैं॥ तातें सुष दुष बहु विधि जानैं
परि आत्मां एकर सनित्यं॥ बंध मोक्ष ए
सकल अनित्य॥ ७॥ उद्धव जां नों एक अ

विद्या॥ अरु जीजा कहि या विद्या ए दोऊ हैं मेरी
सक्ति॥ इन मैं सब दिन की आसक्ति॥ ८॥ बंधन
न कस्यो च दोनों मैं जा कौं॥ घरि आविद्या पठुं
ता कौं॥ अरु जा के बंधन निमिटां ऊं ता कौं वि
द्या सक्ति पगं ऊं॥ ९॥ एजे दोइ मुक्त अरु बंधां
॥ ते मम सक्ति नु दे सं बंधा॥ आत्म दे सो मेरो
रूप॥ सब ते न्या रो परम अनुया॥ १०॥ ज्यों सीसि
के प्रति बिंब अनेका॥ परिते बहु तन ही सब
एका॥ अरु जा जा को घट विन साई॥ साई सो
ससि माहि समाई॥ ११॥ त्यों सब आत्म
सा॥ परि घट संग लहे दुष सं

क्तिजां हि यौजवहा॥ घटं कोना सकरै सोतव
ही॥ १२॥ सोई सोतव मो कौल है॥ ओर सक
ल न वही मै र है॥ अरु प्रति बिंब घट निद्रुं मा
ही॥ सदा अलि प्लित कट्टं नां ही॥ १३॥ परि
घट संग लिप्त से हो वै॥ अरु त्यों लिप्त ओर ऊ
जो वै त्यों आत्मा सकल ते न्यारा॥ सदा अलि
प्लन लिप्यै वि कारा॥ १४॥ परियात न मै आ
पुबंधां नां॥ ता कै संगिल है दुष नां नां॥ अ
व मै बंध मुक्त की कट्टं॥ तेरे सब संदेह हि
दट्टं॥ १५॥ एक देह मै द्वै कौ वा सा॥ परमा
त्म अत्म कै या सा॥ ज्यौ द्वै पंष्य रहै तरु मां

हो॥ तरुते भिनलित कंदूं नांही॥ १६॥ दीऊ
चेतन एक समांना॥ सषा रूप एक हि अस्या
नां॥ आपु दुतेति न वा साकी थो॥ तिन में एक
तरु हि चित दी थो॥ १७॥ देह दृष्ट के सुष फल
पावे॥ ता तें दुष आपु ही पावे॥ तब ता काज
कर्म बढ करै॥ तिन तें जुग जुग जन में मरै॥ १८॥
॥ देह मे र मर नों करि जां मे॥ देह जन म तेज
न म हि मां मे॥ असे सदा बढत दुष पावे॥
देह मे सो आत्मा कदा वे॥ १९॥ परमात्मा
द तरु मां ही॥ २०॥ सुष फल क बढूं पावे नां ही
ता तें कछू कर्म न ही गहे॥ निजानंद

हचलरहे॥२०॥ यों परमात्मआत्मजानें
देहअतीतहुहुं कों मों नें॥ सुषफलअरुआ
रजनि तजे॥ मुक्तदोइ परमात्मनजे॥२१॥
ज्यों तनमांदि मुक्तपरमात्म॥ विद्यापाइबसे
त्यों आत्म॥ तनमे है परितनमे नांदा॥ आपुहि
जानि न थो थिरमांदा॥२२॥ सुपिन देखि ज्यों
जागे कोई॥ सो सो सुपिन चितारे सोई॥ परि
सो सुपिन देहअरु सुपना॥ मिथ्या जानें नर
मते उयना॥२३॥ अरु ज्यों सदतअविद्या
दोई॥ सो तनमे नादि परि है सोई॥ ज्यों सो वत
सुपिना तन पावे॥ ता कों आपु जानि मन ला

वे॥२४॥तनमेंबंधमुक्तजेजीवा॥बंधजीवमु
क्तासीसीवा॥बहुस्योंकहूंमुक्तकेलक्षणाजि
नकोंजांनेहोइविचक्षण॥२५॥दिखेसुनेंकरे
कछुकरे॥सोकछुकदेनदिरदेधरे॥सक
लअर्थइंद्रियकृतजांनें॥आपुहिरकअव
र्त्तामानें॥२६॥पूरबकर्मअधीसरीरा॥व
र्मकरेइंद्रियमनसीरा॥तिनमेंवासकीयों
नहिजांनें॥मूरखआपुहिकरतामानें॥२७
॥बहुरिमुक्तऐसीविधिरहे॥अहंकारया
तनकोंदहे॥आस्रअस्रअहंनअरुस
ना॥दरसपरसअघ्नानरुव

नमैं इंद्रिन कौबर तावे ॥ आपुन कबहुं प्री
तिलगावे ॥ रहे मांदि पिरिलिप्त न होई ॥ ज्यो
आकास पवन रावितोई ॥ २९ ॥ विद्यानां म
से हृषीपाई ॥ दिठ वैराग सांन धरवाई ॥ ता
तें काटे संसय सारे ॥ जागि सकल भ्रम ने द
नियारे ॥ ३० ॥ इंद्रिय प्राण बुद्धि मन मांदा
॥ कबहुं कछु बासनां नांदा ॥ सो जघापित न
हुं मे दरसे ॥ पैरि सो मुक्त तनहि नहि परसे
॥ ३१ ॥ एक दुष्ट तन पीडा करै ॥ एक बहु तप
जावि स्तरै ॥ परि बुधरोष तोष नहि आंनै
सकल देह कृत मिथ्या जानै ॥ ३२ ॥ विधिनि

बेधजो कोई करे ॥ कि बाकोरे भैंथविस्तरे ॥ मु
निकछु न लोवुरे नहि देषे ॥ गुन अरु दोष र
त सब लेषे ॥ ३३ ॥ विधि निषेध नांही कछु क
रे ॥ नां कछु कहै न हृदये ॥ निसदि न रहै ब्र
ह्मरस मत्त इच्छा मेज्यो जड उ न मत्ता ॥ ३४ ॥ औ
सचिदन मुक्त के मां नों ॥ अरु मुमुक्षु को सा
ध न जानों ॥ मुक्त न यो जे चाहै कोई ॥ ये सब
साधन साधे सोई ॥ ३५ ॥ जिन सब सबद
सुहे जां नों ॥ परिनिजत त्व नहाय हिचां न्यो
इन साधन निमां हिरत नांही ॥ ताके अ
वधिथा जांही ॥ ३६ ॥ सबद

जा॥ हरिजी अरु हरिभक्तनि साजा॥ तातें व
सविनाशम असें॥ बंध्यागाइ सेइ येजे सें
॥ बंध्यागाइः दधविन होई परधीन तनुराखे
कोई॥ असती नारि पुत्र अन्याई॥ घरमा विह
नों धन अघिकाई॥ ३८॥ ज्यों इन ते दि नदि न
दुष होई॥ कबहुं सुष पावे नही कोई॥ मोहि
विना सों बहु विधि बां नी॥ केवल बंधन ही व
जा नी॥ ३९॥ मोतें जगउ तपति संहारा॥ सब
प्रतिपालिक विविधि प्रकार॥ किं बा जान
मकर सबहु तै रेजा बां नीमें नांही मेरे॥ ४०
॥ मेरे नां नां विधि संबंधा जा बां नीमें नांही

बंधा ॥ बंधा बानी साहि विचारै ॥ निह फल
जां निन पंडित थारै ॥ ४१ ॥ या विधि जां निव
हुत प्रकारा ॥ बहु त मांति करि बहु ता विचा
रा ॥ जहां तहां ते मे मुहि निवारै ॥ पूरण एक
ब्रह्म मे धारै ॥ ४२ ॥ जो ते जिह जेनां नो अर्थ ॥ म
न धार रा कौ नहि समर्थ ॥ सो म महेत कर्म
सब करै ॥ प्रेम म गन फल ज स परि हरै ॥ ४३
॥ औरै कर्म अकर्म विकर्मा ॥ बंधन जां नित
जे सब भर्मा ॥ जाही तैं उष जे म म भक्ति ॥ ता
ही मे राखै अनुरक्ति ॥ ४४ ॥ अधा सदित सु
नै गुंन मे रे ॥ जिनि ते कर्म न आवै ने रे ॥ गा

वै सुमिरै अस्तुति करे॥ प्रेम सहितानि स
न विस्तरे॥ ४५॥ जे कछु धर्म काम अरु अ
करै सकल ते मेरे अर्थ मम आधीन निरं
दिर है॥ मन क्रम वचन आसन दिग है॥ ४६॥
॥ सा विधि होवै निहचल भक्ति॥ और सव
ल ते सहज विरक्ति॥ तब मेरे निजरूप
जांनै॥ ता ते नां नां भेद दि जांनै॥ ४७॥ तब
नाही पद मांदि समावै॥ जा ते जनम फे
नही पावै॥ पाँइद सत संगति ते होई॥ स
त संगति बिनु लहै न कोई॥ ४८॥ भक्त नि
विना भक्ति नहि पावै॥ भगति बिना नही मे

आवे॥ तातें सत संगति कों करे॥ दूजो ज
न सकल परिहरै॥ ४९॥ दोहा॥ ये सुनि
रिजी के बचन॥ मन मे बाटी प्यास॥ तब न
निअरु भक्त के॥ लछन पूछे दास॥ ५०॥ उद्ध
वाच॥ दे प्रभु पूरण परम अनंत
जग बहुत नांतिके संत॥ जा कों संत कहौ
मदेवा॥ ता को मोहि बतावौ भेवा॥ ५१॥ अ
जो भक्ति कंवन जो गानें॥ जातें तु वनि जरु
दि जां नैं॥ तब उद्धव को देखहु मानां॥ क
सिंधु बोलै भगवानां॥ ५२॥ श्री भगवानु
॥ परम कृपाल द्रोह नहिं जां नैं॥ क्षमावंत

रुसत्यवषांनै॥ निधारहतदुंदसबसमता
परउपकारीहृदै नममता॥५३॥ आयेकांमल
धिधिररहे॥ इंदियेजितकोमलतागहे॥ स
चारसंयहनहिजांनै॥ लघुअहारनईहात्रं
नै॥५४॥ सीतलहृदैविचारहिवारे॥ धर्मआ
पुनेदठताधरै॥ सावधानअरुदितविका
॥धीरजवंतदयाअधिका॥५५॥ सोकमो
हअरुक्षभापिपासा॥ जरामृत्युजीतेषटपा
सा आयुमानअपुमाननजांनै॥ औरनिकै
बहुमानहिवांनै॥५६॥ जोकोईसरनागत
आवै॥ ताकेज्योंत्योंजांनउपावै॥ सबकोमि

त्रसुनासुनजानै॥दृढविश्वाससकलभ्रमभो
नै॥५७॥ममआधानदीनकरहै॥साधनको
बलकदेनगहै॥मोदीकोंकरताकरिजानै
॥कबहुंभुलिनआपाआंनै॥५८॥जद्यपि
वेदरूपमेंगाये॥बर्णाश्रमकुलधर्मबताये
॥सौहुंविधिनिषेधसबतजै॥दृढनिश्चयम
मचरणनिभजै॥इसोभक्तनिजभक्तकदाहै
॥तार्कसंगभक्तिकोंपावै॥देसरुवालरदिहै
सर्वात्म॥चिदानंदमयप्रभुपरमात्म॥६०॥
॥असोजानिजानिमोहिभजै॥औरसकल
कल्पनातजै॥सोभैशैकंहिएनिजभक्तलामै॥

नितदं जै अनुरक्त ॥ ६१ ॥ अरु जै औ सो मो
न जां नै ॥ परि अत्यंत प्रीति कों वां नै ॥ लै क
मो हि सकल परिहरै ॥ तै जनि मो हि आयु
सि करै ॥ ६२ ॥ ए भक्त नि केल दान कादिए ॥ मे
रु पादुते तेल दिए ॥ तिन कों पाइ भक्ति कों प
वे ॥ भक्ति पाइ मम चरण नि आवे ॥ ६३ ॥ ता
मो हि च देखे जो कोइ ॥ मम संतनि कों सेवै सो
॥ अब मैं कहों भक्तिके अंग ॥ जाते पावै मेरो
संग ॥ ६४ ॥ मम प्रतिमां में मो कों न जै ॥ मन
मवचन फलादिक तजै ॥ हित सों दरस पर
परिचर्जा ॥ अस्तुति अरु दंडवत सवर्जा ॥ ६५ ॥

तन अरुजिन के पीछें जेत। मोको सकल समर पेत
॥ मेश कथा बिषे अति अधा ॥ मोवि नुक कून
करे पल अर्धा ॥ मेरे जनम कर्म गुन गावै ॥ से
निरंतरि मोको ध्यावै ॥ ६६ ॥ जनमा एमी
दिजे प्रबी ॥ बहु त उच्छाद करे तेश बी ॥ ६७
नृस्यगीत अरु बहु विधि बाजा ॥ मंदिर रू
बहुत विधिसाजो ॥ कथा को रतन बहु
चरचा ॥ जागरणादि बहुत विधि अरु बा
द्वे ॥ असे बहुत नांति उच्छादा ॥ सब परब
सब विधि निरुच्छादा ॥ मथुरादिक हरि धा
निजावै ॥ बहुत नांति करि प्रेम बटावै ॥ ५
॥ और नि को अरचादि सिखावै ॥ गोर गोर

नित
नर्ज
मो
सित
कृष्ण
वे॥
मो
॥ अ
संग
मव
दि

रावै॥ बहुविधिकरेवागफुलवा
नमसहितचतुराई॥ ७०॥ पुरमंदिर
रावै॥ ओंहरिअरुहरिभक्तनिभादे
देजोसकतिनहोई॥ तोदूंद्यमगं
७१॥ बहुविधिमादिमांकदेकहोवे
नेओंभिलिकैकरवांवे॥ मंदिरादिव
रावै॥ बहुविधिसीचेधूलिनिवार
अविचित्रचौकविस्तरे॥ कैकरिदा
करै॥ मानरहितकछूंदननजाने
करैमोनहीबघानै॥ ७३॥ मोकोंक
जासों॥ औरकछूनहीदेधैतासों

तन अरुजिन के पाछें जेत। मोको सकल समर पे त

॥ मेरी कथा बिषे अति अधा ॥ मोवि नु कछु न
करे पल अर्धा ॥ मेरे जनम कर्म गुंन गावै ॥ से
निरंतरि मोको ध्यावै ॥ ६६ ॥ जनमा एमी
दिजे प्रबी ॥ बहु त उच्छाद करे तेश्वी ॥ ६७
नृस्यगीत अरु बहु विधि बाजा ॥ मंदिर रू
बहुत विधि साजा ॥ कथा की रतन बहु
चरचा ॥ जागरणादि बहुत विधि अरचा
६८ ॥ औसं बहुत भान्ति उच्छादा ॥ सब परब
सब विधि निरछादा ॥ मथुरादिक हरि धां
निजावै ॥ बहुत भान्ति करि प्रे ॥ ६९ ॥
॥ ओर नि को अरचा दिसि ॥

तिमां पधरावै॥ बहुविधिकरे वागफुलवाइ
॥ श्रीअथां न सहित चतुराई॥ ७०॥ पुरमंदिर
दुनांति करावै॥ ज्यों हरि अरु हरि भक्त निभावै
आपुमांदि जो सकति न होई॥ तो दूंद उद्यमगं
नै सोई॥ ७१॥ बहुविधि मादि मां कहे कदावै
॥ और नि सों मिलि कै करवां वै॥ मंदिरादि ब
दुनांति बुहावै॥ बहुविधि सीचे धूलि निवा
॥ ७२॥ चित्रविचित्र चौक बिस्तारै॥ कै करि द
स आपु ही करै॥ मां न रहित कछू दंन न जानै
॥ जो कछू करै सो न ही बंधानै॥ ७३॥ मोकों व
रै आरती जा सों॥ और कछू नही देखै ता सों

॥ मम प्रसाद प्राप्ति सौं लेवै ॥ प्राप्ति ही न जीव नि
नहि देवै ॥ ७४ ॥ यों ही ज्यों ज्यों उष जै प्रेम ॥ त्यों त्यों
अधिक बढ़ावै नेम ॥ मम भक्त निकै र है आधी
न ॥ तन मन धन सौं नित लै लीन ॥ ७५ ॥ अरु एका
द सौं रनि भक्त ॥ मम पूजा करि हरे अभङ्ग स्त
रिज अग्नि विघ्न अरु गाढ़ ॥ भक्त लेश आकाश
रवाद ॥ ७६ ॥ जल अरु धरणि आय मे त्यों ही
सब निमांदि मम पूजा यों ही ॥ विद्या अथी स्वर
की पूजा ॥ सौं कौं छो डिन जां नें दूजा ॥ ७७ ॥
रघा राजस करि उष जावै ॥ साति कसीत स
निबरतावै ॥ तां मस ग्रीषम सकल बिना सै

कलजगतकों आप प्रकाशें ॥ ७८ ॥ तातें मेरी
रमविभूति असें जानि करे अस्तुति ॥ पाव
मां हि होम करि जजै ॥ विघनि अति धिभाव
नजै ॥ ७९ ॥ तए जलादि गाडू की पूजा ॥ नक्तने
में और न दूजा ॥ नक्त बेष निज बंध वुजानें ॥
ति घस्म के पूजा वानें ॥ ८० ॥ ज्यों अपने बंध स
धी ॥ तिन सों घाति सब निहै बंधी ॥ तिन कों व
त जांति करि सेवै ॥ तन मन धन निद च ल करि
वै ॥ ८१ ॥ त्यों ही नक्त आपने भाई ॥ असें जानि
रे अधिकार्इ ॥ तन मन धन सों घाति बटावै
जिन तें मेरे नेद दिपावै ॥ ८२ ॥ हृदया का स

नसों सेवै॥ सब आधार पवन चित देवै॥ जल
कौजल अरु फूल फुलादि॥ अधरणी पूजै मंत्र
दि॥ ८३॥ भोगनि सों निज देह हि भजै॥ मो वि
अंतराय सब तजै॥ सब भूतनि में मो कौ जां
॥ सम दरसन इह पूजा वां नै॥ ८४॥ इनि सब
गौरनि पूजा करै॥ मेरौ रूप हृदयें धरै॥ रूप च
त्र भुज आयुध चार॥ स्याम सरीर पितंबर धा
र॥ ८५॥ सीस मुकुट सुभकुंडल करण॥ कौ
स्तुभादि बहु विधि आभरण॥ श्री सौ रूप स
वनि में धारै॥ सावधान कै प्रीत बटावै॥ ८६॥
या विधि वाइ रूप सरवाग॥ जपत पदां नद॥

या ब्रत जागरे देत करै जो करै ॥ मो विन औ
हृदैन दिधरै ॥ ८७ ॥ इन साधन नि करै न रज
ई ॥ प्रेम भक्ति मम पावै सोई ॥ ए साधन करै
बहु भांति ॥ साधु मिला पदो इ दिन राति ॥ ८८
तिन ते औ सी जुक्ति दिपावै ॥ जातै जान भा
उर आवै ॥ जातै जान भक्ति को कारण ॥ ए
भक्त भव सागर तारण ॥ ८९ ॥ ताते भक्त नि
चित लावै ॥ जिन ते मेरी भक्ति दिपावै ॥ तिन
के विन ज भक्ति को नित ॥ कबहुं और न ज
वै चित ॥ ९० ॥ में उन को मरे हैं तेई ॥ जय
में औ सो भेदन जानै कोई ॥ जो कछु कहै क

में सोई ॥ जद्यपि मेरे मन नहि होई ॥ ए१ ॥
हि मिलन कौं एक उपायो ॥ बहु विधि षो जत
और नयाया ॥ साधु संग मिलि नक्ति दि कर
ई ॥ सोई एक जगत जल तरई ॥ ए२ ॥ भक्त नि
बिना भक्ति नहि पावै ॥ भक्ति बिना नहि मो
में आवै ॥ मो मैं आये विन जहां जहां जाई ॥
तहां तहां काल निरंतर घाई ॥ ए३ ॥ इद अति
गोप्य मतौ है मेरो अरु मेरे आधीन चित तेरो
॥ ना तें इद मतौ सौं कह्यो ॥ आगे कहु कहु दिवे
नहि रह्यो ॥ ए४ ॥ दोहा ॥ बहुरि गोप्य अपनो
मतौ ॥ कहौ तो दिस मगई ॥ जातैं छूटे ज ।

नय॥ सोमैरद्वैसमाद्॥ ६५॥ इति श्री भगवत्
महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीमग्व उद्धव
वादे भाषायां एकादशोऽध्यायः॥ ११॥ श्लोक
॥ ५१३॥ चोपई॥ ८०॥ ४॥ श्रीमग्वान उद्धव
च॥ उद्धवमतो गोपिसुनिमरे॥ पावैमोदिति
द्वैतवतेरौ॥ आपमिलनकोपथदिषां॥ ३॥
रैसकलकुपंथपिषां॥ १॥ जोगकहीजेअ
प्रकाश॥ सांख्यप्रकृतिअरूपुरिषविचार
॥ बहुविधिवर्णाश्रमधर्मा॥ सकलत्यागद्वे
बोनिहकर्मा॥ २॥ वेदादिकबहुविद्यापा
॥ जहांलगेद्वैतयआतिकावा॥ होमज

प्रवापीदूपा ॥ इच्छादांनसमयऋतुस्त्या
॥ ३ ॥ एकादशी आदि व्रत जेते ॥ गुप्त मंत्र
मेरे द्वै केते ॥ मम प्रतिमा पूजा आचरण
॥ तीर्थ अटन नियम जम करण ॥ ४ ॥
श्री रौं समदम आदिक जेते ॥ साधन स
कल मुक्ति केते ते ॥ इन सब दिन ते मोहि
न पावै ॥ साधू जन पल मोहि मिलौ वै ॥ ५ ॥
॥ उन ते मन को सगन कूटे ॥ मम चरण नि
भें चित न चिहूटे ॥ तार्ते मोहि न पावै उच
ते ॥ पावै बचन साध के सुनतै ॥ ६ ॥ सा
असे बचन सुनावै ॥ सत्रा

जनां वै ॥ सार असार कालनिःकाला ॥ स
ध्रुदिषां वै सवतत काला ॥ ७ ॥ सवते म
को संगमिटां वै ॥ मेरे चरण कंवल लिपि
वै ॥ औसी विधि नव सागर तारें ॥ मेरे ज
तत काल उद्धारें ॥ ८ ॥ जे ते तरे तरे गे जे ते
अरु अवहुं तर ते हे के ते सब साधु संग ते
जां नौ ॥ दूजौ और उपादन मां नौ ॥ ९ ॥ ध
मृग जा तुधां न असुरादिक ॥ चारण सिध
नाग गुह्यादिक ॥ अप्सर विद्याधर गंधर्व
॥ जिनि जिनि पायो ते ते सर्वा ॥ १० ॥ वैस्प
द अंत्यं ज अरु नारी ॥ बहु राजसतामस

अधिकारी ॥ जुग जुग जे सत संगति आ
॥ तिन हंति न मेरे पद पाए ॥ ११ ॥ वृत्रा सु
वृष पब बाबा ना ॥ बलि प्रहिलाद बनीष न
जा ना ॥ मय सुग्री वरीक्ष हन बता ॥ गज
रुगीध व्याधि अघ वंता ॥ १२ ॥ तुला धा
कुबिजा वृज गोपी ॥ धर्म नि की सी मां जि
निलोपी ॥ जज्ञ वंत बिप्र नि की बनिता
पुरुष नि की कीन्ही अवमनिता ॥ १३ ॥
और अने क कहं लों कहिये ॥ कहत
हत कहं अंत न लहिये ॥ तिन क बि
वेदन जां न ॥ सांख्य रूजोग न

॥१४॥ जपतपजज्ञब्रतादिनकीन्हें॥ श्री
शैधर्मनकोईचीन्हें॥ परिजोसाधसंगति
निषथि॥ तोसबमेरेचरणनिआये॥१५॥
अरुतुंउद्धव्योंमतिजांनै॥ तिनकोंसं
तिमेरीमांनै॥ उद्धवसंतरुमेदेनांदी॥ मे
हीहोंसंतनिउरमांदी॥१६॥ किनहुंमि
लौंधारिकेतनकों॥ मिलिकारिसाधों
नकेमनकों॥ ऐसीविधिएकनिकोता
॥ एकनिसाधुरूपउधारै॥१७॥ साधुनि
हैमनकेमलदरै॥ सोमनअपनेचरण
निधरै॥ ऐसीविधितिनकोंउधारै॥ज

हं तारों तहां में ही तारों ॥ १८ ॥ साधु संग से
मेरी संग ॥ साधु संग है मेरी अंग ॥ ताते दो
ऊ साधु संग जां नों ॥ के तो दो ऊ मेरे ई मां नों
॥ १९ ॥ गोपी गाइ बृद्ध नग नागा ॥ औरों न
द बुद्धि बड नागा ॥ मम सत संग प्रेमति नि
बांधों ॥ भाव नगति मो कों आराध्यों ॥
२० ॥ और कबू साधन नहि जां नों ॥ अ
रु नहि ब्रह्म रूपे करि मां नों ॥ परितिम
को हित मो सो नवौ ॥ ताते सब मन कों
मलग्यौ ॥ २१ ॥ अमहि बिनांति न मो
को पायौ अति अपार नव दुषमि

॥ जाकों जोग सांध्य बतदां नां ॥ जज वेद वि
द्या विधि नां नां ॥ २२ ॥ करि संन्यास बहु
दुष सहें ॥ तेऊ मोकों कदे न लहें ॥ ताकों
निसुष हा भैया यो ॥ जो केवल मन मो सोल
यो ॥ २३ ॥ रांम सहित मोहि पायो जवही
॥ चले अक्रूर मधु पुरी तवही ॥ तव ते
पी मे रेहेत ॥ पाइ मूरछा नई अचेत ॥ २४ ॥
॥ बहुं स्त्रियों समुक्ति महा दुष पावै ॥ निसव
सुरम मचरण निध्यावै ॥ मोहि छोडि स
बहुष मय देखै ॥ लोक वेद कुल कछु न ले
खै ॥ २५ ॥ जो नि सि मो संग यल सीबीतै

तेईतिनकोकलयबितातैं॥मेरेगुणानिसु
नैंअरुगावै॥लीलारूपहृदमेभांवै॥२६॥
॥कबहुंविरहमहादुषरावै॥कबहुंत
पैदसोदिसिजावै॥कबहुंघारातजनकी
भाषैं॥ममदरसनआसातेरावैं॥२७॥
नीदभूषतिससकलगंवाई॥औरदेह
गुणरह्योनकाई॥तिनकेदुषतेईपै
जांनैं॥कैमैतीजीकेहाबषानैं॥२८॥
॥विरहप्रचंडअनलआधिकाश॥
कालविकारजयेजारिहारा॥प्रेम
हसकलमलकाले॥धौमौवि

तरटाले॥ २९॥ तव इह उपजी परम अनु
या॥ नूली आपनई ममरूपा जौं जोगे सुर
सहिधावे॥ कै करि ब्रह्म आपविसारावे॥
३०॥ अरु जौं सरिता सिधु समावे॥ नाम
पगुण भेद गंवावे॥ त्यों वै नई रूप सब मेरो
॥ कैत भाव कहुं ह्योन नेरो॥ ३१॥ पाप जो
नि अवला ते सारी॥ अरु प्रुतिकी मरजा
दायरी॥ निज पति छोडि की यौ बिभ चार
॥ अरु जिनि मो कों जान्यो जार॥ ३२॥
ब्रह्म भाव कहुं नदि जां न्यो॥ नित पर
पुष मोहि तिनि मां न्यो॥ परितो हुं नव

सिधुमितायो॥ सतनिसहस्रणिममप
दपायो॥ ३३॥ तातै सुनिउ उव नडभा
गा॥ लोकवेदसवकों करित्यागा॥ जो
है सुन्यों सुननकों जोई॥ पर्वतिनवति
जो कछू होई॥ ३४॥ सवतजिरकसर
णममआलो॥ हेतभावमनतें विसराही
॥ जहांतहां ममरूपहि देखौ॥ आपाप
कछू और नलीषौ॥ ३५॥ औ सेहै कवि
मोको यैहौ॥ जाते जगतजनमि नहि औ
हौ॥ यों हरिजीवांणी विस्तरि॥ तब उज्ज
व आसंकाकरा॥ ३६॥ उद्धव॥ ७

॥ प्रभु तु मत्पागवेदको कस्यो ॥ सो मेरे उर
संसयरह्यो ॥ तुम्हरी आज्ञा वेद कहावे ॥
ताहि को डिके से सुषपावे ॥ ३७ ॥ तुम्हरी
श्रुति में करणे नाये ॥ तुम्हरी इहां दूरिक
रि नाये ॥ तातें मन भर मतु हे मेरो ॥ धिर
कीजे अपने जन के रो ॥ ३८ ॥ किधों त्रै सासि
किधों ए देवा ॥ ता को मोहि बताने वा ॥
तब गोपाल बचन उचारे ॥ ज्यों रवि उदय
मधि अंधियारे ॥ ३९ ॥ श्री जगवान ऊव
च ॥ उद्धव अब सुनि उति मजांना ॥ जातें
उद्धव टैं भ्रमनांना ॥ प्रथम दि आपनि रं

जनएका॥ श्री कृष्ण नदी दुर्गा श्रीनेका॥
४०॥ बहुविधा माया विस्मयकार चोदे
दबदुःख अंधार॥ तस्यैवायु न वेसा कि
यो॥ प्राण अरु संवद॥ नक्षत्र लीयो॥ ४१
सोता सद्य ज्ञाता॥ नक्षत्र लीयो॥ ४२
आगार॥ मणि पुर कथं सना॥ नक्षत्र लीयो॥ ४३
विशुद्ध मध्य मां धामां॥ ४४
टवैवरी बांनी॥ जोर दलोक रुहेत॥ ४५
स्वर लघु मातरु अजर जेत॥ नां लो नक्षत्र
विस्तार तेते॥ ४६
तारे॥ वेद माहिती रसादि सार॥

तिनकोबहुविधिविस्तार॥जाकोकोईल
देनपारा॥४४॥जैसेअनलकावमथ्यका
दो॥ईधनपवनसंगबहुबादो॥योंममबा
नाकोविस्तार॥जातेंप्रगदोसकलविका
रा॥४५॥ग्रहविस्तारसहकोसारे॥जामेचे
तनिरूपदमारे॥ईद्विगुणउपजीदशप्रकार
॥सुत्ररुमनबुद्धिचितअंशकार॥४६॥स
तरजतममायागुनजांनों॥सबविस्तारति
न्हेंकोमांनों॥जोअद्वैतएकनिरधारति
न्हेंकीन्होंमायाविस्तार॥४७॥तिनमेंबहु
तजांतिआभासो॥उत्तममध्यमनीचप्रका

स्यो ॥ विधाने वेधना तं व ॥ १ ॥ सुषु
षट्केति न के फल भय ॥ २ ॥ सुषु
असं ॥ एक बीज तं वेद ॥ ३ ॥ सुषु
व एक अधारा ॥ ४ ॥ सुषु
रा ॥ ५ ॥ जेसे ब्रह्म ॥ ६ ॥ सुषु
तदूजौ नाद को ॥ ७ ॥ सुषु
॥ द्वै फल फल ॥ ८ ॥ सुषु
मम चेतन ॥ ९ ॥ सुषु
रा ॥ सो चेतन ॥ १० ॥ सुषु
संसा ॥ ११ ॥ सुषु
तदौ सुनियौ ॥ १२ ॥ सुषु

॥ मूलअपारवासनांताके ॥ ५२ ॥ आदिद्विके
त्रियगुणत्रिसाषा ॥ तिनहीपंचनूतपरसास
॥ ३ ॥ पसाषामनअरुइंद्रियदस ॥ सदादिकस
रत्नेपंचौरस ॥ ५३ ॥ कफअरुवातपित्तत्रिय
बलकल ॥ सुषअरुदुषप्रगटएद्वैफल ॥ तामें
द्वैपंषीकोवासा ॥ परमात्मअरुआत्मयास
॥ ५४ ॥ जेमूरिषइहमेदनजानें ॥ तेबहुनांति
वेदविधिगंनें ॥ तिनतेहोवैबहुविधिवंधा
॥ जुगजुगदुषयात्रैतेअंधा ॥ ५५ ॥ जेइहदे
हृदकरिजानें ॥ आपुहियंदीन्यारोमानें
॥ वेदसुमृतसबमायादेवै ॥ सकलअतीत

आपुकों लखे ॥ ५६ ॥ तब इह बिधिति बंध
छिटकावें ॥ सुषत्र सुषको निकटिन आ
॥ सकल मां हि आपुकों मां नैं ॥ नेद देह ह
माया जो नैं ॥ ५७ ॥ चेतनिस कति ब्रह्म
लखे ॥ और सकल माया करि देखे ॥ परि इ
सकल नेद तब यावै ॥ जब सत गुर की सर
हि आवै ॥ ५८ ॥ सत गुर बिनां न यावै को
॥ ब्रह्मादिक भावै सो होई ॥ तातें गुर की
रण हि आवै ॥ दृढ उपासनां भक्ति बढा
॥ ५९ ॥ गुर सेवा कोई सो प्रभाव ॥ जाते ऊं
जे मेरो भाव ॥ गुर से बजातै यावै भक्ति ॥

रसेवातें सकल विरक्ति ॥ ६० ॥ गुरसेवातें ज्ञान
हेल है ॥ गुरसेवातें कर्म दिद है ॥ गुरसेवातें प्र
मप्रकासा ॥ गुरसेवाममचरणनिवासा ॥ ६१
॥ मोहि मिलन को डू है उयाई ॥ गुरसेवा विन
ओर न काई ॥ तातें गुर की सरणाहि आवे
॥ तन मन धन सौं हेत लग आवे ॥ ६२ ॥ तातें उ
पजै ज्ञान कुठार ॥ सब पापनि को काटन द
रा ॥ त्रिगुणलिंग सरीर उपाधि ॥ जो आत्म
कों लागी व्याधि ॥ ६३ ॥ ज्ञान कुठार सकल
तेहरै ॥ या विधि आत्मनिरम करै ॥ पीछे जा
नाथ्यां न सब त्यागे ॥ निसदिन एक ब्रह्म अ

नुरागो॥६४॥तवसोव्रत्यदिमादिसमावे
बहुस्योजगतजन्मिनादित्रावे॥तातेतुम
सवसाधनस्यागो॥निसदिनुएकव्रत्यत्र
नुरागो॥६५॥दोहा॥यदुद्धवतीसौक्ये
॥भवमोचनममज्ञान॥अबबहुस्योसाध
नसदित॥जावोंपरमनिधान॥६६॥इति
श्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्री
भगवदुद्धवसंवादेभाषायांद्वादशमोऽध्या
यः॥१२॥चौपई॥७७॥श्रीभगवानु
वाच॥मुनिउद्धवश्रवणपरमगिधानां॥ज
पावेपरमनिधानां॥जातेज्ञानंदोद

॥ या विधितु व्रजानदि दहौ ॥ १ ॥ साति
कराजसतामसजेहे ॥ उद्धवते गुणमाया
केहें ॥ सुषदुषसवतिनदि केजानों ॥ तिन
तें परे आत्मां मां नों ॥ २ ॥ तातें नर सातिक
कों गहे ॥ सातिकरि रजतमकों दहे ॥ पी
छे ब्रह्ममादि धिर होई ॥ सातिक ऊतव
त्या गे सोई ॥ ३ ॥ असा विधिता ज्यों गुण दहे
॥ तब दहे ब्रह्म ब्रह्म में रहै ॥ ज्यों ज्यों होइ स
त्व अधिकार ॥ त्यों त्यों ध्रुम भक्ति बिस्तार
॥ ४ ॥ सकल वस्तु सातिक जव नजे ॥ त
बही साति गुण ऊपजे ॥ सातिक ज्यों ज्यों

त्यों त्यों भक्ति त्यों ही त्यों अन्यत्र निरक्ति
५॥ तब रजत मंदो ऊमि टिजां धुं ॥ तातें
तिन के गुण नहि आं वें ॥ हरष रु सो क मा
न अय मां नां ॥ निद्रा आलस ग ब गु मां नां
॥ ६॥ राग दोष आदि कहै जे ते ॥ द्वंद सकल
रजत म के ते ते ॥ तातें ज व र ज त म जां ही
॥ तब तिन के गुण उप जै नां ही ॥ ७॥ तातें
सातिक संगति करै ॥ रजत म की संगति
परिहरै ॥ मूल सकल को संगति कारण
॥ संगति बोरे संगति तारण ॥ ८॥ दे स रु
काल पुत्र जल धान ॥ अंथ रु रु

रुध्यांन॥ गर्भाधानादि संस्कार॥ मंत्र
जाप एद सप्रकारा॥ ए॥ एद सजा कों दो वै
जैसे॥ गुं ए विस्तारै ता कों तै से॥ सातिक तो
सातिक उपजां वै॥ राज सतौ राज स अधिक
वै॥ १०॥ ताम सतौ ताम स विस्तारै॥ जैसे एद
सतै सा करै॥ जादी जा मे जो गुं ए होई॥ सो
सो उत्तम जां नै सोई॥ ११॥ परि जो उत्तम सा
धु बंधा नै॥ सो वह सातिक उत्तम जां नै॥
जो अति निश्चयत भोगु ए सो दै॥ सो राज सक
क्ष्म मध्यम जो दै॥ १२॥ तातें एद स सातिक से
वै॥ राज सतां म सनां मन लवै॥ राज सतां

मसजोहितहोई॥ तौहंसवच्छिटकावेसै
ई॥१३॥ सातिकसंगतिउपजेसत्य। त्यों
लौलहैभक्तिकौतत्व॥ जौलगिहटउपजे
विज्ञान॥ देखैसकलएकभगजान॥१४॥ अ
रुदूनोंदेहनिभ्रमजानें॥ सवविस्तारसुख
सममानें॥ तबइहव्रसमाहिथिरहोवे
॥ सातिकदूकीऔरनजोवे॥१५॥ त्योंव
सनिताँउपजेअनल॥ अरुहोवेमारुतत
प्रवल॥ सववासनिकोंदाहसोई॥ आप
हिवहुरिउपसमितहोई॥१६॥ त्योंसाध
नयातनतंहोवें॥ किप्रचंडः

वै ॥ बहु स्त्रियों आपु उय समित होई ॥ साधन
ले सर दे नहि कोई ॥ १७ ॥ गुणा ती त सो कहि
ये जोगी ॥ ती न्युं काल व्रत्सर स जोगी ॥ मोहि मि
ल्यो मो मोहि समावे ॥ सो बहु स्त्रियों न व मे नहि
आवे ॥ १८ ॥ तातैं सब साधन छिट कावो ए
क निरंजन मो कों ध्यावो ॥ तव हरि की सुनि
अदनुत वां नी ॥ जन उद्धव इह प्रसव वां
नी ॥ १९ ॥ उद्धव ऊवाच ॥ हे प्रभु इहा जे
सो कहिए ॥ जानां दिक्कत जे सुषल हिए ॥ प
रि जे विषय सुषनि कों चाहै ॥ तातैं बहु आ
रंज संबाहै ॥ २० ॥ ते वापु र सदा दुष रहै

कवदंभलिन सुषकौलहे ॥ परिततो वि
षयनि दुषजानै ॥ जानिबूभिकुं उद्यम
गानै ॥ २१ ॥ ज्यौं बकरा मारन कौली थी
लै छेरिनु मेठा दो कियो ॥ बदनिरलज
कछु नदि जानै ॥ तिन सो मिलि विषया
दि कौगानै ॥ अरु जै सै गर्दम अरु कृता
तिरस्कारतें सहैं बद्रंता ॥ सुषके दैत स
वनि आधीनां ॥ सदा रहैं दुर्वल अति शं
नां ॥ २२ ॥ द्वैतौ मूढ कछु नदि जानै ॥ तामि
विषयनि उद्यमगानै ॥ ऐतौ नर जानै स
वजाता ॥ देखै जगत चलो सब जाता ॥

॥ प्रथमे तो सुष आं वै नांदा ॥ जो आवें
तो धिर नरहां ही अरु जो दिनाचारि नादि
जां वै ॥ काल दुते तो पां न न पावें ॥ २४ ॥
काल निरंतर य स तैं जा वै ॥ एक दिना ज
म द्वार पगं वै ॥ तहां नरक देव दुत प्रका
रा ॥ जिन के दुष कौ अंत न पारा ॥ २५ ॥
आगें चौरासी नय नारे ॥ विषियन कौ
बहु दुष विस्तारे ॥ या न व जल के दुष अपा
रा ॥ कहों कहां लौ नार न पारा ॥ २६ ॥ औ
सी सब विधि मान व्रजां नें ॥ तो दू कों आ
रं न निवां नें ॥ आयु आयु कों दुष उपजां

॥ आयु आयु जंम द्वार पग वै ॥ २७ ॥
इह सकल कृपा करि कहौ ॥ मेरे उर को
संसाद हो ॥ यों कहि कै उर जंम रहे ॥
तब हरि जी प्रत्यक्ष र कहै ॥ २८ ॥ श्री भगव
न ऊवाच ॥ उर जंम रह आतम अविनासी
सो जवहीं सातव मै आवै ॥ तब स्वाधान वि
षे सुषया वै ॥ २९ ॥ बटु स्यों ति नहि त उद्यम
है ॥ नहि पावै तौ दुष कोल है ॥ या विधि सु
षट्प जवहीं जानै ॥ तब ही देह आय कहि
मानै ॥ ३० ॥ असें बटु देह अहं कोरा ॥ तब ही
राजस को अधिकारा ॥ राजस सहित जव

मनहोई॥ तव एई सुषजां नै सोई॥ ३१॥
तव संकल्प विकल्प नि करै॥ नि सदि न ह
देविषै सुषधरै॥ तव जा सुषाहि सुनै अरु दे
षै॥ तव वसहै निज सुष करिले षै॥ ३२॥ त
व ह दे मै बाढै कांम॥ जान विचार न राषे नांम
॥ तां तें बहु राजस अधिकारा॥ राजस ते म
न गहै विकारा॥ ३३॥ तव राजस कौ वेग प्र
चंडा॥ जां नहि मारि करै सत घंडा॥ ता तें
जां न सुनै अरु जां नै॥ अरु और न सों आ
पुवषां नै॥ ३४॥ परिसो कांम नही बह रा १
वै॥ ले करि प करि कर्म करवावै॥ परि ज

द्यपियानरकीबुद्धि॥रजतमतेनदिया
वैसुद्धि॥३५॥तौद्रुनिसदिनदोषविचारै
॥उरतेकलकामनांशरै॥सावधानआल
सनदिकरै॥क्रमक्रमममचरणनिचित
धरै॥३६॥आसनजीतिकरैबसिप्रांन॥नि
सदिनउरराखैममध्यान॥अरुममसिष
चारिसनकादि सकलतत्वज्ञाननुकीआ
दि॥३७॥तिनिविचारिकरिजोगादिभा
ष्यो॥सौतौद्रुओरसबनाष्यो॥ज्योंही
ज्योंमनदूजोतजै॥अरुज्योंज्योंममचरच
रणनिभजै॥३८॥ग्राहीतेसबमिटै व

रा॥ याही ते छूटे ससारा॥ याही ते मम चरनि
पावै॥ बहु स्यौ जगत जनमि नही आवै॥ ३८
॥ ताते परम जोगइ हराव्यो॥ जाते मेरे सिष्य
नाव्यो॥ जबइ हवांनी बोले कृष्ण तब उद्धवै
जनकी न्दी प्रसन्न॥ ४०॥ उद्धव उवाच॥ हे प्र
भुजौ नस में जा रूप॥ तुम जाव्यो इह ज्ञान
सरूप॥ सनकादिक नि कों न विधिलह्यो
कंपूछ्यो कैसै सुम कह्यो॥ ४१॥ ज्ञान सदि
त सब मो कों कह्यो॥ मेरे उर को संसा दह्यो
॥ जबइ उद्धव की न्दी प्रसन्न॥ तब बोले क
रां मय कृष्ण॥ ४२॥ श्री कृष्ण उवाच॥ ब्रह्म

पुत्रसनकादिकचारा॥मनतेंउपजेब्रह्म
विचारा॥जनमहितेजिनिगहीनिवृत्ति॥
मनबचक्रमसौतजीप्रवृत्ति॥४३॥प्रह्म
करातिनिब्रह्माआगे॥इसोभेदज्योसोद
तजागे॥अतिसुखजानीनहीपरे॥उत्तर
कहौकोनउच्चरे॥४४॥सनकादिउवा
च॥प्रभुब्रह्ममयदेवा॥याकोहमेंबतावौ
भिवा॥विषयवासननिचितदिगह्यो॥
चिनुप्रातिकरिकेंमिलिरह्यो॥४५॥दो
ऊमिलआपुमेंअैसे॥नार
रजैसे॥निनुज

करिनिनहोहिएदोई ४६ इहवा
बैलांउरधार ॥ उत्तरदेनकोंबहुतविच
र ॥ पारितोइउतरनदीआया ॥ जातेंक
गिसौमनलायो ॥ ४७ ॥ तवत्रत्याइहवा
विचारी ॥ जाहिनकोईताहिमुरारी ॥ ताते
कस्योचितवनमेको ॥ हंसरूपमेंप्रगयो
नैस ॥ ४८ ॥ हंसरूपतातेदेषरायो ॥ जाते
इहआमयसमुकायो ॥ केजोहंसहतिकों
गहे ॥ सोईयाकेनेदहितहैं ॥ ४९ ॥ तवति
निनाहिदपिसुषवायो ॥ त्रत्यामिलिअवि
मायोंकजो ॥ करिबीनतीतवनन

ने ॥ हे प्रभु तुमको दं मनहि जानै ॥ ५० ॥ त
वतिनि सों भेजो कछु कह्यो ॥ तिनके उर को
संसादह्यो ॥ तेई बचन कहों अब तो सों ॥
सावधान कै सुनियो मो सो ॥ ५१ ॥ तुमको
होयों प्रह्वो जबहीं ॥ जान कह्यो उतर भैंत
बहीं ॥ ५२ ॥ दंस रुबाच ॥ बिप्र दूं प्रसन्न कर
तुम जैसी ॥ कर ने नही संभवे तैसी ॥ वस्तु वि
चार है तनही कोई ॥ तोया की उत्तर क्यों
होई ॥ ५३ ॥ अरु जो देह रूप ऊ कहिये
॥ तो दू कछु है तनहि लदिए ॥ पंचभूत नि
र्मित तन सारे ॥ जेक

॥ ५४ ॥ ताते सकल एक देनां ही ॥ दूजो
कोंन बिचारै मांहीं ॥ पुरुष दृष्टि देखें तें एक
॥ प्रकृति दृष्टि दूं नही अनेक ॥ ५५ ॥ ताते प्र
कृति करीतु मज्जेसी ॥ बहु तनि मांही करी जे
सी ॥ अरु जो दीसे तत बिचारा ॥ तौ नदि प्र
कृति पुरुष विस्तारा ॥ ५६ ॥ जो कछु दीसे सु
निये कहिए ॥ मन अरु बुद्धि जहां लों ल
हिए ॥ सो सब मै ही दूजो नां ही ॥ ओ सो जां
न धरौ उर मांहीं ॥ ५७ ॥ नां मरूप ते सकल
बिकारा आदि अति मघि मांटी सव्वारा
॥ त्यों ही आदि अति मघि मां ही ॥ मै ही ए

कथेत कलु नांही ॥ ५८ ॥ दैत दृष्टि साधु
को कारण ॥ ब्रह्म दृष्टि निज सुष विस्तार
॥ लगंत रंग नि सों दुष लहे ॥ तब सुष ज
तेत जिजल गहे ॥ ५९ ॥ त्यों ही दैत दृष्टि
ष ॥ एक दृष्टि सोई निज सुष ॥ अरु
मप्रक्षम विरंचि दिं करी ॥ सो में हृदै आ
नै धरी ॥ ६० ॥ विषय नि मां हि चित्त मि
रह्यो ॥ अरु विषय नि चित्त दि दृढ ग
पुत्र दूद द्यों ही सत्य ॥ परिते आत्म
हि असत्य ॥ ६१ ॥ विषय चित्त ए दोऊ
॥ आत्म ब्रह्म निरंजन राया ॥ विषय

सोंजबचित्तलगावै॥ तबदिचिततिनतें
सुषयावै॥ ६२॥ तबविषयनिकेध्यांनदि
करे॥ तिनकेहेतुकर्मविस्तरै॥ तातेंएव
मेकमिलिरहै॥ ॥ ॐ सेजनमजन॥ ६३॥ ता
तेंआत्ममेरोअंसा॥ मेरीसरणिगहेतडि
संसा॥ बदिरहुतेंविषयपरिहरै॥ अरु
चित्तसोंचितवूनवकरे॥ ६४॥ विषयस
चित्तजयाकारिजांनै॥ तिनतेंपरैआयु
कोमानै॥ ब्रह्मसरूपएकअविनासी॥
ज्ञानरूपचेतनि सुषरासी॥ ६५॥ मनअ
रुबुद्धिचित्तअहंकार॥ इंद्रियविषय

दहविस्तार॥ येनमरूपसकलदेभाया
॥ भूलिआत्मा आपबंधाया॥ ६६॥ ज्ञेयैजा
लिसकलव्रिटकावे॥ आपुदिमोदियेक
करिध्यावे॥ जाग्रतसुषुप्तिबधो नो
तिआचरणबुद्धिकेजांनो॥ ६७॥ तिनते
परैआत्मास्यासदाएकरसपरमअनंया
॥ सातिकदुतेंजागनोहोई॥ राजससुषु
कहैसबकोई॥ ६८॥ सषयतितांमसगुण
तेआवे॥ मनअरुबुद्धितिदूंकोयावे॥
एकरूपआत्मतिदूंमांदी॥ सोधीभूतलिपि
कदुनांदी॥ ६९॥ तोतेंतिदूंगुणनितेन्या॥

रो ॥ निजानंदमय रूपह मा रो ॥ तामेयि
र द्वै करै विचारा ॥ सहजाहि छुटे त्रिगुण
पसारा ॥ ७० ॥ देहविषे बांध्यो अनिमानां
॥ तातें नेद उग्रो इह नांनां ॥ तातें निजा
द विसरायो ॥ काल असंख्य मदा दुषय
यो ॥ ७१ ॥ ओ सै जानित जे अनिमानां ॥ क
देन करै सुषानि को ध्यांनां ॥ तिहं गुणानि
तें करै विरक्ति ॥ चौथे पद बांध्ये आसक्ति
॥ ७२ ॥ तब सहजै मो माहि समावै ॥ ब
हु स्यो देह कदे नहि पावै ॥ अरु सकल
ग्रंथ निविस्तरे ॥ वेदधर्मानां विधि

करे॥७३॥प्रवृत्तिमां दिवदुतविधिजागे॥परि
जो जानिदेत नदित्यागे॥सोनितसोवतजाग
तजांनों॥ताकोभैदृष्टांतबधांनो॥७४॥जे
सेसयनकरैनरकोई॥सोवतसुप्रलहैपुनि
सोई॥बदुतकजांतिकरैबिब्रदारा॥लेनदे
नजलयांनअदारा॥७५॥बदुस्त्रोंरेनिअएते
सोवें॥दिवसिअयेस्योहाउविजोवै॥अैसीवि
धिकैअदिनबीतें॥जागतसोवतसकलव्य
दाते॥७६॥बदुस्त्रोंबदैअैसीमनआने॥
रातिदुदिनकीनिद्राभांने॥कदेनसोवैजा

गतरहे सावधान आलसनदिगहे ॥ ७७ ॥ ओ
सेकाज आयनो करै ॥ चौरादिके धन कौन दि
दरै ॥ परिजब इहा जागि करि देखे ॥ तब ब्रह्म
सकल वृथा करि लेखे ॥ ७८ ॥ सोवत जाग न स
ब विवदारा ॥ जाकै हित जागें सो सारा ॥ आ
पुही सब मिथ्या करि जानै ॥ कबहुं न लिस
त्यनदि मानै ॥ ७९ ॥ त्यों ही वेद धर्म आचरण
॥ अरु ते सुषजिन कै हित करण ॥ ते सब सु
न रूप विवदारा ॥ पंडित ह्यो डै सकल यसार
८० ॥ भ्रम ते धस्यो देह अभिमानो ॥ ताते बर

णाश्रमनां ॥ तातें करैं बहुत विधिक
मा ॥ सुषनिमतिविस्तारै धर्म ॥ ८१ ॥ दो
परिसकलवृथाकरि जां नें ॥ सुप्तजा
रणासमकरि मां नें ॥ जो देहादिक सक
लयसाश ॥ चेतनिकरि वरता ननिहा
रा ॥ ८२ ॥ सुषदुषभोगकरै अरु जां नें ॥
आपुदि सुषीदुषीकरि मां नें ॥ बहुद्वेष
जबदि सुप्तकोयावै ॥ बहुवित्रद्वारनिसे
मनलावै ॥ ८३ ॥ तबदुं जां नें सकलयसा
रा ॥ आयापरसुषदुषवित्रद्वारा ॥ व
रिसुषद्विषादि सब जां ई ॥ मन

तच्छ्रद्धांकारनकाई ॥ ८४ ॥ तव आत्मा
निरंतर रहै ॥ जागें सकल बात जो कहै
॥ लियौ दियौ अरु आयौ गयो ॥ जहां लगै
छै अनुभव्यौ ॥ ८५ ॥ सो आत्मा एकर सरदै
॥ तिहुं काल की बात नि कहै ॥ यो अविना
सी आत्मा एक ॥ दूजे माया भेद अनेक ॥ ८६ ॥
तीनि अवस्था ते है मन के ॥ मन में आना
से है तन के ॥ तनितिन के तीन गुण जे हैं
तीन गुण माया के ते हैं ॥ ८७ ॥ औसी विधि
निश्चय सों जानें ॥ निस दिन हृदय विचा
र दिवां नें ॥ सकल उपाध्यन को आधा

रा. ज्ञानषडङ्गकारेण्डका ॥ ८८ ॥ हरे
मांदिमेंताकोरुजे ॥ १२ वेदान्तकेकृत
जेइदसारोजगप्रकृतिज्ञानको
कृतमिथ्याकरिमने ॥ १३ ॥ ज्ञानको
उपजतदेवे अहंनिग्रहकानकोने
षेसोईशतिसकलकोरुते लक्ष्मणमा
नहृदेमेंमांदि ॥ १४ ॥ शिरकोई शिरज
शहोई बालककेकरिमने कोई शिरज
तिदेदसेअव धिरणचललजहउमो
२ ॥ ६१ ॥ ज्योइदसगतर धिनिताप
रिअतिचंचलकलअनित ॥ एक

में सकल अभास्यो ॥ नृगुण पाइ बहु मेद
प्रकास्यो ॥ ए २ ॥ सुप्ररूप गुण में ज्यो भोग
यो बहु भांति विचारै जो गी ॥ ताते जग ते द
ष्टि उतारै ॥ साचु जांनि हदै नहि धारै ॥ ए ३ ॥
तस्माच्छोडै निह चल रहै ॥ मन बचक मक्
खु कर मन गहै ॥ ईहार हत ब्रह्म रस भोग
॥ निजानंद मय होवै जो गी ॥ ए ४ ॥ ओ सेव
या जाति सब त्यागै ॥ निश्चल रहै ब्रह्म अ
रागै ॥ सो जो रहै देह दुंदुमांही ॥ तौ दुंदु फि
भ्रम उपजे नांही ॥ ए ५ ॥ जो इह देह जाइ
कहुं आवै ॥ वै वै उठै पी वै अरुषावै ॥ ओ

रों कछु करे विवहाय ॥ परिसो सिधन
जानै सशि ॥ ए६ ॥ निश्चल रहै निरंजन
दादादिक कछु जानै नादा ॥ ज्यों को
तन बस्त्र निधरै ॥ बहु स्थों सुखायान
दुकरै ॥ ए७ ॥ सोतिनि बस्त्र निजानै ना
॥ प्रथम बंधे तातें नदि जांही कर्म रहै
तन के जौ लों ॥ सहित इंद्रिय निवरतै
तौ लो ॥ ए८ ॥ कर्म ता के तन को धोषै ॥
नयां न सो नित संतोषै ॥ जोगी ब्रह्म
दिथिर रहै ॥ देहादिक की सुधि न लहै ॥
ए९ ॥ जैसे सुप्त देखि करि जागै ॥ ता

नां सो नदि अनुरागो ॥ ते से मोद निसाते
जाग्यो ॥ कहं न लिये ब्रह्म अनुराग्यो ॥ १०० ॥
॥ देह थका ब्रह्मदि मिलिरह्यो ॥ नव कौ
सकल बीजति निदह्यो ॥ सो बहु स्यां नव
में नदि आवै ॥ ब्रह्म मिल्यो सो ब्रह्म समावे
॥ १०१ ॥ तातें देह आदि विस्तार ॥ भ्रम क
रित जो त्रिगुण मय सारा ॥ त्रिगुण अती
त ब्रह्म कौ सेवो ॥ विषय न कौ कह्यु ना
वन लेवो ॥ १०२ ॥ विषय चित्त दोऊ भ्रम
जानो ॥ ब्रह्म मां दिरदि दूनों नां नो ॥ संक
ल अतीत आयको देखो ॥ सब घट एक है

तनहिलेयो ॥ १०३ ॥ ब्रह्मरुद्राथ एकक
रिमांनों ॥ दैतनात्रकबहुं जिनिआनों
निसदिन ब्रह्मविचारदि करौ ॥ परिव
लमेरौ उरमें धरो ॥ १०४ ॥ मम आधीन
निरंतर रहौ ॥ याविधि जगतबीजसंब
दहौ ॥ जातैबदुरिनभवमें आवौ ॥ ब्रह्म
रूपके ब्रह्मसमाजौ ॥ १०५ ॥ इहमेतमसौ
कह्यो विचार ॥ सांख्यरुजोगसकलको
सार ॥ मेरौ मुख्यमतौ अतिजांनों ॥ बहु
तमांतिहृदैमें आनों ॥ १०६ ॥ तुम्हरोहि
तमनमांदि विचार्यो ॥ मेंहोंविष्णुहं

सतनधास्यौ॥ मैदं ब्रह्म सकल कौई स
बिन औ रे सकल अनी स॥ १०७॥ सां
सत्य तेज तप जोग॥ प्रिय समद मश्री व
रत नोग॥ औ रौ बस्तु जहां लों सार॥ ते
स्त मेरे आधार॥ १०८॥ ताते जो मम स
एहि आवै॥ उत्तम वस्तु सकल सो पा
मो बिनु बहु साधन अगदै॥ तो द्रव
न सुख को लदै॥ १०९॥ मै नृगुण परि
बगुण सवें॥ मै नृपेक्ष सकल चित दै
॥ कछु न च हों करौ उपकार॥ सब को हि
त सब को आधार॥ ११०॥ सब उपज

ॐ सब प्रतिया लों ॥ सब पोषों सब सं
कट गलों ॥ तातें मोहित जें दुष पावें
॥ तब ही सुखी सरणि जे बजावें ॥ १११ ॥
॥ सरणागत को वगि उधारें ॥ आप मि
लां ॐ भव भव राशें ॥ तातें सब तजि
मो कौन जो ॥ यावो मोहि जगत भव
तजो ॥ ११२ ॥ उद्धव उद्धम ज्ञान सुना
यो ॥ सनकादिक नयन सुषया मे
॥ हृदय हो संदेह नुकाई ॥ मिहि मिलन की
विधि सब पाई ॥ ११३ ॥ बहु तं भांति
मयुजा करी ॥ बहु तं भांति अस्तुति

स्तर ॥ मेरो भजन हृदय मे धार्यो ॥ ओ
र सकल तत्काल निवा स्यो ॥ ११४ ॥
आपु कृतार्थ करिति निमान्यो ॥ हेत
भावत जिब्रस्य पिछान्यो ॥ तबतिन के
अस्तुति कर तेही ॥ ब्रह्मा के देषत आ
गेही ॥ ११५ ॥ सबही को आनंद बधायो
॥ तब मैं अपने धाम सिधायो ॥ तातें उ
द्धव इह तुम जां नौ ॥ अपने परम भाग
करि मान्यो ॥ ११६ ॥ सनकादिक नि सम
तुम किये ॥ ते ईबचन तुम्हें मे दिये ॥ ता
तें इह जां न तुम धारौ ॥ ब्रह्म जां नि सब

देतनिवारै ॥११७॥ सम आधीन सदा
ईरहौ दूजी सकल कामना दहौ ॥ औस
के निजे पद को पै हौ ॥ जाते जगत व
दुरि नहि औहौ ॥११८॥ दोहा ॥ इह उद्ध
व तो सों कह्यौ ॥ परम ज्ञान निज सार ॥ या
कों गहि निज पद लहै ॥ छूटै सब संसार
॥११९॥ इति श्री नाथ वृत्त महापुरुषो
एकादश स्कंधे श्री भगवत् उद्धव संवादे दं
संगीतायां नावायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥ श्री
पद ॥ ए० ए० ॥ औसौ सुनिहरि जी को ज्ञा
न ॥ भक्ति उधार क भ्रम सब आन ॥

उद्धवदृढकरिउरधरी॥ पारिकवृ प्रसन्न
स्मसें करी ॥१॥ उद्धव उवाच ॥ परमदया
लदयानिधिदेवा ॥ मोकों बडौ बतायौ मेवा
॥ भक्तिहुतें पईये ॥ तुवचरणों ॥ छूटे जग
तजनमं अरु मरणों ॥२॥ पारिअ वएक
प्रसन्नकों कहों मेरेया संदेहहि दहो ॥ जे
बहुबिधि श्रुति सुमति जां मे ॥ तेतौ बहु
साधन निबधां मे ॥३॥ मुक्ति देत बहं पं
थानि कहें ॥ अरु ते ऊबहुतौ मिलि गहें
॥ तातें ते ऊपंथ असेया ॥ भक्तिसमों कों
छूबिसेया ॥४॥ जाजा पंथ तु म्हे प्रभुये

ए॥ बहु स्थौ भव सागर नहि औ ए॥ सो सो
पंथ कया करि कहो॥ मेरी सकल मूट ता
दहो॥ ५॥ तुम बिन इह दूजो नहि कहै॥
जान लहे सो तुम तै लहे॥ उद्धव औ सी
पूछी बां नी॥ तब उत्तर की कृष्ण ब्रषां नी
॥ ६॥ श्री भगवान उवाच॥ उद्धव कल्प स
मय जव भयो॥ तब इह तत्त्व लीन के गयो
॥ पुनि मै सृष्टि समे इह जाना॥ ब्रह्मा
सौ श्रुति तत्त्व ब्रषां नां॥ ७॥ सोई श्रुति पुनि
ब्रह्मा पढायो॥ ऋग्वेदिक स्वायंभूषा
सात महा रिविभृगु जिनि आदि

रुक्वायंभूमनुमन्वादि॥८॥तिनिअष्ट
निर्लेन्द्रदविस्तारा॥नांनोविधिवेभेद
विचारा॥सुरनरअसुरसिधगंधर्व॥
विद्याधरजज्ञादिकसर्व॥९॥सप्तदीप
नरबहुपरकारा॥किंनरकिंपुरिषा
दिअपारा॥सतरजतमतिनकीउत
पति॥तातैंबहुविधिनईप्रकृति॥१०
॥तिनतैंभयेबहुतविधिवेद॥तिनतै
सेईजानेबेद॥वेदतत्वसोकतद्रंरह्यो
॥आपस्वभावसमातिनिकह्यो॥११
॥ज्योंज्योतिनकेभएस्वभाव॥त्योंत्यो

जानैश्रुति को भाव ॥ त्यों ही त्यों आचर
एनिक रें ॥ त्यों त्यों आयु सुमृति विल
॥ १२ ॥ परं पराजोति न ते होवें ॥ तेतिन के
हेत सुमृति जोवें ॥ तिन तैं आयु करे व
दुय थं ॥ नां नां भांति चलावै थं ॥ १३ ॥
ऐसा विधि उय जे या थंडा ॥ ज्ञान रुध
हो दिसत थंडा ॥ मम माया करि मोहित
होवै ॥ तातैं तत्व थं नहि जोवै ॥ १४ ॥ अ
पनी अपनी रुचि अनु मां ॥ करे क
रु भावै जां नां ॥ नां नां निधि साधन
सुनावै ॥ तिन तिन तैं कल्याण बतावै ॥

१५॥ एकै बहु विधि धर्म निभायें ॥ तिन तैं
भुक्ति मुक्ति कों आषे ॥ एकै का है जसहि
विस्तरिए ॥ जाते सकल दुषनि तैं तरिए
॥ १६॥ जा कौ जस है जग मे जो लौं ॥ सो
रर है सुरग मे तौ लौं ॥ एक इहां ईकां
बषां नैं ॥ आगें सुरग न

१७॥ जात दाकरे
ईछो डि तन
लहैन जो

॥ १८॥ ओ
राई की

मन्त्ररुसत्य॥दूजेसाधनसकलजस
॥१८॥जोगग्रंथबहुसाधिव्याने॥ति
नतेमूढमुक्तिकोंजांने॥सांमरुदाम
दंडअरुमेद॥इनकोंगहैएकपाटिवेद
॥२०॥न्यायसहितसबउद्यमकरै॥उत्त
मधर्मजांनिउरधरै॥दांनजोगउत्तम
कारिभाषै॥इहैमुक्तिसाधनकरिराखै॥
२१॥एकैजजदांनतपगहै॥एकैजम
यमानिसंग्रहै॥एकैतीरथवर्तमन
॥कहौकहालोंबहुविधिकरै॥२२॥
नतैसुरगादिकसुषपावै॥हीनज

हां फिर आवें ॥ बहु स्यों न च जो निबहु
हैं ॥ नरकनि में कै ई जु गरहें ॥ २३ ॥ अरु जब
रहें स्वरग द्वंद्व मां ही ॥ तब बहु कछु सुषपावें
ही ॥ काम क्रोध निदा अय मां न ॥ राग दोष
छां अति मां न ॥ २४ ॥ इत्यादि कनि ग्रसे नि
तरहें तातैं कौं न जांति सुषल हैं ॥ नक्ति वि
नां विधि लोक द्विजावें ॥ काल तहां ऊं दुं
ढहावें ॥ २५ ॥ तातैं उद्धव भ्रम दे सारा ॥ सु
षम मचरणानि की आधार ॥ जिनि मेरे च
रनि चित धस्यौ ॥ साधन साध्य सकल पर
हस्यौ ॥ २६ ॥ तिन कौं उद्धव जो सुष होई

॥ सो सुषक हूँ न पावै कोई ॥ सो सुषक हूँ सु
न्यों नहि आवै ॥ सोई ये जानें सो पावै ॥ २७ ॥
॥ सो पावै जो मो सो मागें ॥ और सकल आ
सय को त्यागें ॥ मम आधीन निरंतर रहै
दूजी सकल कामना दहै ॥ २८ ॥ सकल व
स्तु कौं कीन्हें त्याग ॥ अंतः करण धरो वैरा
ग ॥ सम दरसी नित सीतल चित्त ॥ मम चि
त वन हृदय दृढ बिज्ञ ॥ २९ ॥ ता को दसों दि
सा सुष रूप ॥ सो सुष जो अति परम अनु
प ॥ जो जन मेरे सुष को जानें ॥ ता को मन क
त हूँ नहि मानें ॥ ३० ॥ ता के सब आधीनै रं

है॥ परिसोमोविनकछूनगहै॥ असलो
ककोंकदेनलेवे॥ इंद्रलोकपलचित्तन
देवें॥ ३१॥ सबभूराजनैननहिदेवें॥ सप्त
पातालमुषतितृणलेखे॥ जोसिधिअ
णिमादिकहेंअष्ट॥ जोगीजिनहितसा
धेकष्ट॥ ३२॥ तिनहंकोकबहंनहिलेई
॥ आपुहुतेनितसेवेतेई॥ मुक्तिनिक
टहीरहैसदाई॥ परिमेरोअनछुवेंनका
ई॥ तौमेंहाएकसदाप्रियताको॥ ममच
रणनिमनरातौजाको॥ तादातेमेरेप्रि
यसोई॥ ताविनऔरनहाप्रियकोई॥

३४॥ त्यों मेरो सुत बिधि नहि प्यारो ॥ नदी स
कर जो रूप दमारी ॥ नहि प्रिय त्यों संकर्ष
रा भारी ॥ श्री अर्धंगा त्यों नदी सोई ॥ ३५॥ यों
नदी प्रिय मेरे मम देह ॥ जै सो तुम सों परम
सनेह ॥ तुम सो भक्त मदा प्रिय मेरे ॥ ता कैं
हों निरंतर नेरें ॥ ३६॥ इच्छा रहित रुसीत
लहदय ॥ सब निरबेर सब निपर सरदय
॥ ब्रह्म दृष्टि देखै सब मांही ॥ ब्रह्म बिचार तजै
पल नांही ॥ ३७॥ मैं ता कौ प्रथम हियौ कस्य
॥ त्रिगुण या सबंध न बिस्तस्यौ ॥ परिता कैं
जै सो बल भारी ॥ काटी माया सक्ति दमारी

॥ ३८ ॥ एतेपरसबऔ गुणतज्यो ॥ उलटि
आइममचरणनिनज्यो ॥ अरुसबसुषता
केबसरहै ॥ सोतजिमोहि कछु नदिगहै
३८ ॥ बहतनिकेन वबंधनदहै ॥ नां वप्रग
टकरि मैरो कहै ॥ तिनतिनकोंममचरणनि
ल्यावै ॥ सदासबनितेआपुछिपावै ॥ ४० ॥
अहंकारममतानहीआने ॥ मोहिछोडि
दूजोनदिजानै ॥ गुणाअतीतताजनके
पाछै ॥ प्रहतनधरैफिरोंमैआछै ॥ ४१ ॥ सा
तिकगुणधारीप्रहदेह ॥ करोंमुद्धताचर

एनिषेद ॥ निःकंचनतनद्वं नदिरक्त ॥ मो
दासौ नितदी-अनुरक्त ॥ ४२ ॥ सीतलहृद
यबिक्त-अनिमान ॥ कृपाव्रंतसब एक
समान ॥ कैदं कांमचलेनदिवुधि ॥ मोहि
सेइयार्इ-अतिशुद्धि ॥ ४३ ॥ मुक्तिदुंतेनि
तनिस्पृदारदे ॥ तेजनमेरेसुषकौलदे ॥
तासुषकौ सुषजानेतेई ॥ औरसकलसं
मुमेंनदिकोई ॥ ४४ ॥ निस्पृदजननिस्पृ
दसुषयावे ॥ स्पृदाव्रंतकेनिकटिन-आवे
॥ विषयनिकेबसमानवृद्धाई ॥ इंद्रियज
तिसकेनदिकोई ॥ ४५ ॥ परि-आधीन

होइ ममजबही ॥ विषयकछूनसकेकारित
बहां ॥ विषयसत्रुमैसकलनिवारें ॥ आप
मिलां ऊंभवन्नयटारें ॥ ४६ ॥ पावकप्रग
टकारेंलैअस्म ॥ होइप्रचंडकारैसबनस्म
॥ त्योंममभक्तिप्रगटजोहोइ ॥ जारैपापर
हैनहीकोई ॥ ४७ ॥ बहुरिपापकोनिकट
नआवै ॥ भक्तिप्रतापमोदिसोपावै ॥ सा
धेसिधजोगअष्टगबहुविधिजज्ञहोइज
संग ॥ ४८ ॥ सांख्यविचारसकलजोजांनै
॥ बंदपटैदेवैसबदांनै ॥ तपहिकारैइंडि
यमनबांधै ॥

रसकलधरमनिकोंसां धै ॥४६॥
मोहिकदेनदिपावै ॥ भक्तिमोहित,
कालमिलावै ॥ एकभक्ति
करै ॥ दूजेते अति अंतर परै ॥४७॥
सहित करै ममभक्ति ॥ तासों मेरी
आक्ति ॥ दो ब्रह्मादिसबनिको ईस
बिन औरै सकल अनीस ॥४८॥
भक्तनिके आधीन ॥ तेमोक्षों ज्यों जल
सों मीन ॥ जो चंडालभक्तिमें आवै
हीतन निरमलता पावै ॥४९॥
मखंदन करै ॥ तापदरेण

रे॥ तान्यं भवनदा सब सता के॥ मेरी न
क्ति विराजे जाके॥ ५३॥ विद्या पढे धर्म ब
दु करे॥ जीव दया बहु विधि विस्तरे॥
सत्य व्रत अरु दृढ संतोष॥ कबहुं कहुं
करे नहि शेष॥ ५४॥ कवि सद्दित पुर
णतपसा धै॥ मन ईद्रि देहादिक बाधे
॥ तीरथ वृत्त आदि देजे ते॥ सब आचर
ण करे सब ते ते॥ परिलो मेरी नक्ति न
होई॥ तो न मल नहि होवै कोई॥ विन
रो मंचंद्र वै विनु चेतु॥ आनदां शुक्
ला विन नेतु॥ ५६॥ तो लौं साधु भक्ति

नाहिकुदैं॥ भक्ति बिनां उर सुधिन ल
है॥ इवै प्रेम तेजा को चेत॥ कबहु रोवै
मेरे देत॥ ५७॥ कबहुं गदगद बां हो हो
ई॥ कबहुं ऊंचे गावै सोई॥ कबहुं मधुर
मधुर सुर गावै॥ कबहुं प्रेम मग न रहि
जावै॥ ५८॥ कबहुं नृत्य प्रेम बसि करै
कबहुं हसै गुण निविस्तरे॥ लोक वेद
की लाज न जानै॥ ज्यों उन मत सकल औ
गंमै॥ ५९॥ जो ओं सो मेरीं जन होई॥ मि
भुवन सुद्ध करतु है सोई॥ स
के पाप निवारै॥ सकल भुव

न ता रे ॥ ६० ॥ जे से हे म म लिन ता होई ॥ व
दू जल मां हि धोइ ए सोई ॥ ओ रो ज त न व
हु त वि धि की जे ॥ हे म दि ब हु त क सो टी द
जे ॥ ६१ ॥ य रि कि टुं वि धि सु ध न दो ई की
दि ज त न क रें जो को ई ॥ सो ई हे म आ गि मे
दी जे दे क रि पू क त प त्र आ ति की जे ॥ ६२
॥ ता तें को ई म ल न हि र है ॥ अ प ने सु द
स्तु प कों ग है ॥ त्यौं ही ज त न क रे ब हु को ई
॥ य रि आ त्मा न नि र्म ल हो ई ॥ ६३ ॥ मे री
भ क्ति मां हि ज ब आ वैं ॥ त ब स व क र्म म
लि न छि ट का वैं ॥ नृ म ल हो इ ल है नि ज

रूप॥ पावै मोहित जैन वकुं य॥ ६४॥ ज्यों
ज्यों मेश भक्ति दिक्करे॥ मेरे गुण निहदे मे
धरे॥ अवरण की रतन सुमिर नगं नै॥ ज्यों
ज्यों और वासनां भां नै॥ ६५॥ त्यों त्यों हृद
प्रकासे जान॥ देखे ब्रह्म मिटे सब आन॥
केत भाव कति हृद न हिर है॥ निर्भय निजा
नंद पटल है॥ ६६॥ नैन निमादिरोग ज्यों
होई॥ तातैं कहन देखे सोई॥ पुनि ज्यों ज्यों
औषध हिल गांवे॥ त्यों त्यों दृष्टि होत नित
आवे॥ ६७॥ त्यों त्यों सकल वस्तु कों देखे॥
आपुहि परम सुखी करि लेवे॥ तातैं

रूप दृढ अंजन ॥ जातै देखै देव निरंजन
॥ ६८ ॥ जो संसार सुष नि कोंध्या वै ॥ सो संसा
र मां हि बहि जावै ॥ अरु जो ध्यावै मेरे चरणी
॥ यावै मोहि मिटै भव मरणी ॥ ६९ ॥ सातैं सब
साधन भ्रम जां नौ ॥ स्वप्न समो बदैत सब
मां नौ ॥ मन क्रम बचन सकल को त्यागौ
॥ निस दिन मम चरण नि अनु रगौ ॥ ७० ॥
जो या भव हि चहै छिटकायो ॥ अरु चाहै
मम चरण नि आयौ ॥ तेतिन की संगति प
रिहरै ॥ ७१ ॥ जुवती सुष नि सुनें नहि प्रवर्ना
॥ नैन न देखै करै न गवर्ना ॥ कबहुं मूलि हदै न

दिआंनै॥मनक्रमबचननिरंतरआंनै॥
७२॥ओसोबंधनकदेनहोई॥कोटिनुसंग
करैजोकोई॥ज्योजोषितअरुजोषितसं
गी॥बंधनकरैंहोतपरिसंगी॥७३॥ता
तैंतिनकेसंगहितजै॥सावधानमम
चरणनिनजै॥निर्नयगौरकरैअस्थान
न॥मोबिनसंगतजैसबआन॥७४॥
मरोध्यानननिरंतरकरै॥प्रेमसाहितह
दैमैधरै॥रुक्मबचनसुनिहदैराखै॥
७५॥ओरप्रसन्नकेजाखै॥७५॥उ-व॥
वाच॥॥हेप्रभुतुमै

॥ कौन रूप में चित लगाने ॥ मैं तो मुक्त से
इतु वचरण ॥ पारिजो चंदे । मिठा यो मः
एण ॥ ७६ ॥ कृपा सिंधु तुम करुणा करो ॥
ध्यां न जोग बां नी विस्तरो ॥ सुनि उद्धव
निज जन की बांणी ॥ तब श्री हरि जी अ
पव बांणी ॥ ७७ ॥ श्री गंगा नदी वाचा । उद्धव
तो कौं ध्यां न सुनां ऊ ॥ जोग सदित सब
अंग वतां ऊं ॥ जोग सदित जो ध्यां न
करै ॥ तो मन बेगिर जहि पारिहरै ॥ ७८ ॥
॥ सम आसन में अस्थि रहोई ॥ जघं
नियर राखै कर दोई ॥ देह समान चलै

नदिउलै॥नासाद्विष्टिकवृ नदिबोलै
७८॥इउा पूरि कूंमकाथिरधारै॥पुंनि
रेचकपिंगुलानिसारै॥बाहुस्थोपु रि
पिंगुलाद्वार॥इउा निसारै बारं बार
॥८०॥इंद्रिय अर्थ सकल परिहरै॥मे
रो देत हृदे में धरै॥उद्धव द्वै विधि जो
ग कहावै॥ता ने दहि सत गुर ते पावै
॥८१॥मंत्र सहित सो नाम सगर्भ लेला
॥सो उत महै जां गायाम ॥८२॥पू
रे सखे रेचक करै॥उंकार मंत्र उर ध
रै॥घंटा नारद मुल्य उर ध्यावै॥ता सो

लिकारिषणंचलावै॥८३॥ यौत्रिकालः
भ्यासेकोई॥ प्राणमासदीमेंधिरहोइ॥
दुस्योंहदैकमलकोंध्यावै॥ अष्टपावुरी
साविगसावै॥८४॥ ऊँधैमुषतेउरध
करै॥ ताकेमध्यसुरिजदिधरै॥ स्त्रिज
मेंपूरणससिआनें॥ ससिमेंअनलते
जमयमानै॥८५॥ अनलमध्यममस्त
दिध्यावै॥ परमप्रीतिसोंमनहिलगावै
॥ अंगुसमानचतुरभुजरूप॥ अतिसी
तलमुषदानिअनूप॥८६॥ नूतनसज
लमेघतनस्यांम॥ तडिततुल्यअंबर

रुचिधां म॥ मंदहाससोभानिधिः श्रान
 न॥ मकरकृतिकुंडलसुमकांजन॥ ८५
 ॥ कंठकोस्तुभ्रमनिवनमाला॥ उरभृगु
 लतालक्षिविसाला॥ संभरुचकगदा
 अरुयश्च॥ हस्तचारिद्रुं सोभासका॥ ८६
 ॥ हेममुकुटदीनमणिजस्यो॥ अतिदी
 भाइमो नसिरधस्यो॥ जालतिलक
 बुजवरनेन॥ नक्षत्रसादमुधाको
 न॥ ८७॥ करकंकराश्रंगदमुद्रिका
 गुनूपरकटिमेंकाद्रिका॥ अंकुसवज्र
 धजाअरिबिंद॥ चिद्रितचरण रण

दुषदं॥८॥ नषमार्णगाणि आतप्रभा
प्रकास॥ उरअज्ञानअंधतमनास॥ औ
रसकलअंगानिबदुभूषण॥ जिनकेध्या
नमितेसबदूषण॥ ए॥१॥ वैसकिसोरप
रमसुकमार॥ नषसिषध्यावैवारंवार
चरणनितेंप्रतिअंगदिध्यावै॥ एकैग
दिए॥ दिछिटकावै॥ ८२॥ योंलेनषते
सषपरजंत॥ निसदिनहृदैध्यावैसंत॥
औरबासनांसबपरिदरे॥ मेरेरूपअडि
गमनधरे॥ ए॥३॥ याविभिजबमाननि
दचलहोई॥ तबफिरिअंगनिध्यावैको

ई॥ अतिसुंदरमुषमेमनधारे॥ औरस
कलचितवनिनिवारे॥ ६४॥ या
मनअपनेवसहोई॥ तबविराटमें
रेसोई॥ संकलविराटरूपममजानें॥
मोतेमिनकछुनाहिमानें॥ ६५॥ योंवि
राटममरूपहिजानि॥ निहवलज
दकोंजाति॥ तबताहूतेमनहिनिवारे॥
अनिरंजनब्रह्मविचारे॥ ६६॥ ब्रह्मवि
रनिरंतरकरे॥ सबआकारद्वारे
दरे॥ आत्मब्रह्मएककरिदेषे॥ चेतनि
रूपअखंडितलेषे॥ ६७॥ निजानंदनि

दचल निरधारा ॥ सत्यसरूपवारनदिया
रा ॥ एक अजन्मा आपे आप सुषदुषरदि
त पुन्यनदीयाप ॥ ६८ ॥ कालनकर्मजीव
नदीमाया ॥ आपे आप निरंजन राया ॥
जे सै अग्नि अषांडित होई ॥ ताते उवैपतं
का कोई ॥ ६९ ॥ बहुरि अग्निदीमांदि समा
वै ॥ तब दियतं गा नां मगं मावें ॥ असे आ
त्मब्रह्मविचारै ॥ एक जांनिकारि द्वैतनि
वारै ॥ १०० ॥ असीनांति विरहि करतें च
॥ निसदिन ब्रह्ममांदि मन धरतें ॥ त्रिगु
णाकार सकल भ्रम जागै दो ॥ ब्रह्म सोव

न सो जागे ॥ १०१ ॥ के करि ब्रह्म ब्रह्म मिलि
जावे ॥ जहां दुते बहु स्ये नदि आवे ॥
सा विधि भव दुष नि दहे ॥ मे हो नि जान
द पद लहे ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ यह ये जो ता सो क
ह्यो ॥ जा करि हरि पुरि जाइ ॥ परिया मे
बहु बिघन हैं ॥ ते भाषों सम जाइ ॥ १०३
॥ इति श्री भागवते महा पुराणं एकोदश स्क
धे श्री भगवत्पुंड्र वसंवादे चतुर्थोऽध्यायः
॥ १४ ॥ चौपई ॥ १० ॥ श्री भगवान् जगन्नाथ
॥ उद्धव जोग्यं य समं
बिघन बतं ऊं

धै॥ सावधाने जोगद्वि साधै॥ १॥ मोमें
धरै आयनौ चित॥ ताकों सिधिविघन दे
हित॥ जोति न तें सिद्धि न कों परिहरै॥ सो
ममचरणनि कों अनुसरै॥ २॥ तिन सों क
बही रहै लुनाइ॥ तो अम सकल वृथाई
जाइ॥ औ सै कृष्ण बचन मन धारी॥ उद्ध
वकीन्ही प्रसन्न बिचारी॥ ३॥ उद्धव ऊवाच
॥ के प्रकार धारणा देव॥ अरु सिद्धिनु को
के विधि नेव॥ तिन के नाम कृपा करि क
हो॥ जोगनिके विघननि कों दहो॥ ४॥ तु
व आधीन सिद्धि हें सकल॥ तुमूरी कृपा

होइ जन अकल ॥ उद्धव प्रसह दे मेधा
री ॥ तब बोले गोपाल मुरारी ॥ ५ ॥ श्री न
गवान ऊवाच ॥ उद्धव सिद्धि अगार हव
हिए ॥ मम धारणां करे तेल हिये ॥ तिन मे
अष्ट सिद्धि परधान दश मध्य मते करे
वषां न ॥ ६ ॥ जाते देह रूप अणु होई ॥ क
त हं नही आवरण कोई ॥ अणि मां नां म
सिद्धि यद जानौ ॥ महा मोह नी माया मां
नौ ॥ ७ ॥ जो तन करै महा विस्तार ॥ जदा त
हां कछु वार नयार ॥ मदि मां नां म सिद्धि
सो कहिए ॥ कबहु नू लिन ता कौं गदि

ए॥८॥ जो या देह ही अतिलघु करे ॥ मुष्टि
न आवे दृष्टि न परे ॥ सोय दल घिमं सिधि
कदा वै ॥ मम जन या के निकटिन आवे
॥९॥ जे जे इंद्रिय भोग निकरे ॥ जहां कहुं बि
षंयु निबिस्तरे ॥ तिन सब भोग निजा क
रिल दिय ॥ प्रापतिनां मसिधि सो कहि
ए॥१०॥ एक गोरहुं वै गोर दे ॥ देखे सुनें
सकल की कहे ॥ ताहि अगोचर रहे न
काई ॥ सो प्राकासक सिधि कहाई ॥११॥
इंद्रिय देह बुद्धि मन प्राण ॥ तिहुं लोक
तिन को अस्थान ॥ तिन कों त्यों प्रेरै ज्यों

जां नैं॥ ताहि ईस तासिधि बंधां नैं॥ १२॥ वि
षय सुषनि कों कदे न गहै॥ जातैं अति आ
नंदित रहै॥ नाम अवसितासिधि कहा
वै॥ मेरी नक्तनिकटि नहि जावै॥ १३॥ जो
जो इच्छा मन में ल्यावै॥ सो सो सकल प
लक में आवै॥ वसिता नाम सिधि है सो
ई॥ मेरी जन आदरै न कोई॥ १४॥ अष्ट
सिधिए अति परधान॥ इन तैं मध्यम
भाषों आन॥ तन के गुण व्यापे नहि को
ई॥ नाम अनू र्मि कहिए सोई॥ १५॥ दूर
अवन सुनैं सब बैन॥ दूर दरसदैं सै सब

नेन॥ मन के बेग मनोज बधावै॥ कामरू
पबूदूरूप बनावै॥ १६॥ परके तन में करे
प्रवेश॥ सिद्धि छूटी परकाय प्रवेश॥ निज
अच्छाते तजै सरीर॥ सो स्वच्छंद मृत्यु देवी
र॥ १७॥ मिलि अपर्शनि विचरै देवा॥ देवे
तिन्है लहै सब भेदा॥ सो सुरजी अंदर्सन
कहिये॥ मिथ्या फल है कदे न गहिये॥
१८॥ जो संकल्प करै सो होई॥ जया संक
ल्प कहिए सोई॥ जहां गयो चाहे तहां जा
वै॥ अप्रतिहत गति सिद्धि कहावै॥ १९॥
एद समिलि अष्टादस कहिये॥ ओरी

पंचतुच्छ नदि गदिये॥वर्तमानं नञ्चरुचूत
नत्र व्य॥सब कछु जां नें लिखि अलिष्य
२०॥यदेहे सिधित्रिकाल सुजां न॥आगे
सिधिवेषां नों आंन सीत उल्ल आदिक
जद्वंद्व तिन्हदि निवारै सो अद्वंद्व॥२१॥
विष अरु अग्नि सूर्य जल थंजो॥जाते
होवे उ सो अचंज प्रतिष्ठंन सो सिधिक
हावे॥हरिजन ता के निकटिन आवे।
वै अष्टादश अक्षर पंच॥मिलिते ईस
कलपर पंच॥एमे मुल रूप उचारि॥सा
बदतन दिविस्तारि॥२३॥ममथा

णां करतें आवैं ॥ जोगिनि कों बहु विधि वि
चलावैं ॥ जौति निते विचलै नदिक बही ॥ तौ
मम चरन निपावैं तबही ॥ २४ ॥ जाधारणा
दुते जो आवैं ॥ जैसे जोग कों विचलावैं ॥ सो
सब उद्धवतौ सों कहौ ॥ जोग पंथ के विघन
निदहौ ॥ २५ ॥ अगुण रूप जो कछु विस्तार
॥ सो नाना विधिरूप दंभारा ॥ ताही ताहि मां
हि मन लावैं ॥ तैसी तैसी सिधि दिपावैं ॥ २६
॥ सद्यः सयरसरूप रसगंध ॥ पंचभुत के स्
रूप बंध ॥ तिन में जाजा में मन लावैं ॥ ताता
के रूप हि मिलि जावैं ॥ २७ ॥ महातत्त्व मेम

नदिलगावे॥ पंचभूतसाषाकरिध्यावे
जाजासाषामेंमनधावे॥ ताहीतासमिदे
दवधावे॥ २८॥ पंचभूतकेजेपरमान॥ ति
नेमैजोगीधावेध्यान॥ तातासमिलघुदे
ददिकरे॥ काहूसोंबदूगह्योनयवे॥ २९॥
सातिकत्रदंकारमनधावे॥ ताकोंमेरींरु
पविचारै॥ तबजेंइंद्रियजोमधनिकरै॥
बहुतजातिविषयनिविस्तरे॥ ३०॥ तेतेसु
षयदुजोगीयावे॥ सोबदूजासिसिधिकदा
वे॥ मेरींसुत्ररूपमनत्रांमें॥ तातेंत्रिभुवन
कीगतिजानै॥ ३१॥ ज्योंहीवालेघर

एणं करे तें आवै ॥ जोगिनि कों बहु विधिवि
चलां वै जौति नि ते विचले नदि कबही ॥ तौ
मम चरननियां वै तबही ॥ २४ ॥ जाधारण
दु ते जो आवै ॥ जै से जोगी कों विचलां वै ॥ सो
सब उद्धवतौ सों कहीं ॥ जोगयंथ के विघन
निदहों ॥ २५ ॥ अगुण रूप जो कछु विस्तार
॥ सो नाना विधिरूप दं मार ॥ ताही ताहि मां
दि मन लावै ॥ तैसी तैसी सिधि दि पावै ॥ २६ ॥
॥ सद्यस परसरूप रसगंध ॥ पंचभुत के स्
स्मबंध ॥ तिन में जाजा में मन लावै ॥ ताता
के रूप दि मिलि जावै ॥ २७ ॥ महातत्व मे म

नदिलगावै॥ येचुमुसुचकाकनिआदि
जाजासावामेचुनधारे॥ तादेतातालिदे
दबधारे॥ यद्यप्येमुसुतवेलेपुसोतनरि
नेमैजोगीधारे॥ याद॥ ताततालिदुडे
हदिकारे॥ काद्रुलोकाद्रुतानेनरे
सातिवन्त्रदंका॥ यद्यप्येनविनेरुत
पविचारे॥ तदुजेदेहिममममममम
वदुतभातिविचित्रनिर्दुल्लभ॥ यद्यप्ये
षयदुजोगीयदु॥ येचुमुसुचकाकनिआदि
वै॥ मेरोमुसुचकाकनिआदि॥ यद्यप्ये
कीगतिजनि॥ येचुमुसुचकाकनिआदि॥

यो त्रिमुत्र॥ नि आचरण निषेधै॥ मेरौ काल
रूप मन धारै॥ सब व्यापक सब ईस बिचारै॥
३२॥ तातें सिधि ईस तायावै॥ त्रिमुत्र निज
ने त्यों उपजावै॥ ~~निज~~ ईस जाही सो जो
ई कर बावै॥ ताके अंतर त्यों उपजा॥ ३३॥
॥ आदि पुरुष जे मेरौ रूप॥ ता में धारै चित
अनूप तातें सिधि अवसितायावै॥ विषय
निबिन आनंद बटावै॥ ३४॥ नृगुण ब्रह्म
मां हि मन धारै॥ सब करता सब ईस बिचा
रै॥ तातें बसिता सिधि हिल है॥ सोई सो पा
वै जो चहै॥ ३५॥ सुध सत्व मय मोहि बिचा

रे॥तामेंजोगीमनकोंधारै॥तातेसुध
आपहुंदोई॥षटऊरमीनब्यापैकोई॥
३६॥गगनाधारप्राणमनधारै॥सह
पमनमांदिबिचारै॥तबजहंलगेयव
आकास॥सुनेंतहांलोंबचननिवास
॥३७॥नैननिमेंसूर्यकोंधारै॥अरुसूर्य
नैनबिचारै॥अपरिवृत्तनमोहीकोंले
तबसोतिहुंलोककोंदेखै॥३८॥पव
नसहितमोमेंमनधारै॥जहांतहांम
पबिचारै॥असैंमनकोंजहांचलावै॥म
केवेगतहांईजावै॥३९॥सादेमेरेस्त

विचारै॥ तिनहां तिनमें मनकों धारै॥
६ चाहै भयो रूप तब जोई॥ बारन लागे दो
वै सोई॥ ४०॥ कस्यो प्रवेसहि चाहै जामे
॥ ध्यान आपनों आनें तामें॥ तब तात न
में जावै औ सैं॥ भृंग फूल ते फूल दिजै सैं॥ ४१
॥ मूल द्वार यगें बंध लागवै॥ प्राण चलाई
सास में ल्यावै॥ ब्रह्म रंघ द्वै गोनहि करै॥ जो
मनु होइ ताहि अनुसरै॥ ४२॥ सुगंद वसु
वनिता ध्यावै॥ मेरो रूप जानि मन ल्यावै
तब ते सहित बिमान निआवैं॥ ताजोगी को
सुष उय जावैं॥ ४३॥ जो जो बस्त हदै में धारै

॥ ताता को प्रभु मोहि बिचारै ॥ सोई सो
पावै तत काल ॥ जब दीयावै काल अका
ल ॥ ४४ ॥ सकल नियंता सब कोईस ॥ नित
स्वाधीन सकल कासीसं जोगी असो मोको
ध्यावै ॥ ताकी आनन कोई सिटावै ॥ ४५ ॥
ज्ञान रूप सब अंतर जांमी ॥ ध्यावै मोहि स
कल को स्वांमी ॥ अपनी जांनै जनम मरण
की ॥ ज्ञान त्रिकारु सब के मन की ॥ ४६ ॥ प्र
कृति गुण निते न्या रो जांनै ॥ अकृति न को स्वा
मी करि मांनै ॥ ध्यावै मोहि सदा अद्वंद्व
ब कोई न दिव्याये द्वंद्व ॥ ४७ ॥ सब

कसकलअतीत॥ लिपेनसूरजअगनिज
लसीत॥ असेमोकोंध्यावेजोई॥ असेलद
रापावेसोई॥ ४८॥ जोमेरेअवतारतिध्यावे
॥ आयुधक्षत्रचंमरमनल्यावे॥ ताकोंकद
नअंतरदोई॥ सबदिनमांदिविराजेसोई
॥ ४९॥ योधारणाकरेममजोई॥ सिधि
नुपावेजोगीसोई॥ परिएअंतराडूदेसारे
॥ मेरेभक्तिनिदूरिनिब्रि॥ ५०॥ मोतेए
३॥ नतैमैनादी॥ तातेममजननिकटिन
जांहा॥ मोदिनलदेइन्दुजेलेवे॥ मोदिम
जेतिनकोंएसेवे॥ ५१॥ मोदीतंतउतपाति

सबदिनकी॥मैंप्रतिपालकसुंति
नकी॥ममआधीनसिधिअरुजोग॥
सांख्यरुजांनधर्मधननोग॥५२सब
नैकसलकोस्वामी॥मैंसबदिनको
तरजांमी॥सबमेंबाहरिभीतरिए
॥मोमेंवरतैसकलअनेक॥५३॥बं
तसबभूतनिमांही॥बाहरिनीतरि
नांही॥स्योसबमेंहीनांहीआन॥
नदृष्टिसोईअज्ञान॥५४॥सातैद्वैत
वनदिआंनै॥मेरोरूपसकलकरि
॥साधनसिधिसकलभ्रमतजै॥मेरे

रणानिरंतरिभजै॥५५॥ममप्रसादम
मचरणनिआवे॥अतिआपारभवदु
षमिरावे॥यदमैतौसौंभाष्योज्ञानया
तेऔरसकलज्ञान॥५६॥देहा॥ए
कब्रसकरिदेखनौ॥यदसुनिदुःकरज्ञा
न॥पूछीबिस्मविभूतितव॥उद्धवपर
मसुज्ञान॥५७॥इतिश्रीभागवतमहा
युगलोएकादशस्कंधेश्रीभगवद्रुद्र
संवादेभाषायांपंचदशोऽध्यायः॥१५॥
चौपई॥११४॥॥उद्धवकृपाच॥तु
महोपरब्रह्मविनासी॥चिदानंदवि

ज्ञानप्रकाश॥ आदिन अंतमध्यनदि
को॥ कोई नैदल देन दिता को॥ १॥ तुम
सकल जगत उय जावौ॥ तुम प्रतिपालौ
मबिन सावौ॥ तुम सब बाहर अरु सब
हो॥ सदा अलिप्तिलियौ कहुं नाही॥ २॥
दातदां तुम ही हो एक॥ यह सब भ्रम
दृष्टि अनेक॥ हे प्रभु यह जग अति वि
रा॥ ऊंचर नीच विबध प्रकाश॥ ३॥ अ
रु या जीव सत्य करि मांज्यो॥ विषय नि
बहु मांति बधा ज्यो॥ एका कै एक दृष्टि
मांज्यो॥ कै से सकल ब्रह्म करि ध्यावै॥

४॥ ज्ञानवंततु व्रजन है जे ते ॥ ब्रह्म दृष्टि
देखं त है ते ते ॥ ता ते तु म अब करुणां क
रो ॥ निज विभूति मो सों बिस्तरो ॥ ५ ॥ तिन
में देखि सकल मे देखे ॥ तब अद्वैत ब्रह्म
करि लेखे ॥ सुनि उद्धव के उत्तम वै न ॥ बो
ले हरि जी करुणा ओ न ॥ ६ ॥ श्री जगदांन
ऊवाच ॥ उद्धव प्रसन्न मली तु म कीन्ही ॥
जातें परै ब्रह्म गति चीन्ही ॥ इह प्रसन्न अर्जु
न त करी ॥ ता सों मै या विधि उचरी ॥ ७ ॥
ता ही विधि अब तो हि सुनाऊ ॥ औ सै ब्रह्म
दृष्टि उपजाऊ ॥ कौ रव अरु पंड व कुरु

धेत॥ जबही जु रेजारत कहेत॥ पातन अ
जुन को रव सब देखे सकल बंध आपने
करिलखे॥ इन सब दिन को जो मैं मारी॥
आपुही आपन रक्तो डारी॥ ६॥ जो सी
धि जां नो अहंकार॥ आपुहि को जो म
रन दार॥ तब मैं ता दिज्ञान सम कायो॥
ता को सब अज्ञान मिथ्यो॥ १०॥ प्रह
करि अर्जुन सब विज्ञी॥ तुम को को की
ना है जे सी॥ ताते उर को उचरी॥
विधि ब्रह्म दृष्टि को वैरी॥ ११॥ उर
में सब दिन को सीमा॥ अहंकार

को अंतरजां में ॥ आपुहु ते सब को उप
जां ॐ ॥ सब पोषों सब को बरतां ॐ ॥ १२ ॥
सकल रहे मेरे आधीनां ॥ मोह में दो वै स
बलीनां ॥ तातें सब में दुजानां दो ॥ यों बिस्
तिजां नौ मन मां दो ॥ १३ ॥ परितो सो बि
सेष सो कहौ ॥ तेरो द्वैत दृष्टि को दहौं ॥ स
बरक्षक निमां हि मेरक्षक ॥ तिन में का
ल सकल जे भक्षक ॥ १४ ॥ सो मैं प्रकृति जि
गुण की आदि ॥ पंचभूतनि में मैं सुतादि
॥ सूत्र सकल बंधन में जानैं ॥ बडेनु मां हि
जिय देवो सब दुर्जय मंदतत्वहि मां नैं

॥ १५ ॥ सब सुख निमादि जिय देवो ॥ सब
दुर्जय निमादि मन लेवो ॥ वेद जानि मै ज्ञान
जानौ ॥ उँऊ कोमं जणि मै मां नौ ॥ १६ ॥ ब्रं
दनि मै गङ्गा जी छंद ॥ ऐं अकार अक्षर के छं
द ॥ सब देव नि के मध्य पुरंदर ॥ सकल ब
सुनि मै मै वै संदर ॥ १७ ॥ नील कंठ एकाद
स दर मै ॥ बिस्मनां मद्वादस दिन कर मै
॥ तिन मै भृगु जे सप्त महा शशि ॥ तिन मै
मनु जे सब राज शशि ॥ १८ ॥ देव जट शिख
में नारद जानौ ॥ कामे धेनु धेनु न मै मां
नौ ॥ सिधनि मै मै कायिल सरूप ॥ पद्म न

मांदिगर्भममरूप॥१९॥ प्रजापति नमो
दौदक्ष॥ तिनमेंम करजहांलोंमक्ष॥ बाद
निमेंअध्यातमबाद॥ सबअसुरनिमेंघ
दिलाद॥२०॥ तप्तप्रकासकमांदिदिनेस
जह्ररक्षगणमांदिघनेस॥ तिनमेंसोम
सवालजेउउगन॥ सबधातनिमेंमैंद्रं क
चन॥२१॥ गजनिमांदिमेंगजऐरावत॥ में
अनंगजेसिष्टिउपावत॥ तहांबरुणजे
सबजलजंत॥ नागनिमेंममरूपअनं
त॥२२॥ नरनिमांदिममरूपनरेस॥ स
र्पनिमेंवासुकि सर्वेस॥ उच्चैस्त्वाहयनि

मैं जाँ नौं॥ दंड धरन तिन में जम मानौं॥ २३
॥ सकल मृगनि में मृग राजा॥ सरित न में गं
गा सिर ताज प्रब आश्रम मां हि संन्यास
॥ वर्ण मां हि विप्र मम बास॥ २४॥ सकल म
रनि मे रूप समुद्र॥ सकल धनुष धारि नु ह
रुद्र॥ में हौं धनुष आयुध न मां हि॥ परम
निवास मे रुतें नां हि॥ २५॥ जे अति गहन दि
मालय तिन में॥ में पीपल सब बन सपती में
॥ में पुरोहित मां हि वसिष्ठ॥ तहां दृढ़ स्थिति
ब्रह्मण॥ २६॥ सनां यतिनि मां हि सेनां
मं प्रवर्तक सो ब्रह्माजीनी

षधितुमैजव्रजांनों॥ धितरनिमें अर्जमां
 मांनों॥ २७॥ ब्रह्मजज्ञसबजज्ञनिमांदि॥
 व्रतआद्रोहसमाकोनां दिबायुअग्निज
 लसूर्यवांनी॥ अरुमनएषटसोधकजां
 नी॥ २८॥ चतुरदेहआतमाविचार ब्रह्म
 चारिनमें सनंतकुमार॥ अस्त्रीनिमें सत
 रूपायंनी॥ पुरुषनिमें स्वायंभूजांनी॥ २९॥
 सावधानतिनिमें संवतसर॥ अनय
 गौरतिनमें उरअंतर॥ मैहों धर्मअनय
 कोंदांन॥ गुह्यनही प्रियमौनं समान॥ ३०॥
 त्रियापुरुषसंजोगीजेते॥ ब्रह्माहुते॥

सरेसवतेते॥ सकलवानरनिमेंदनयेल
॥ कृतितिमांदिमसरूपवसंत॥ ३१॥ मारग
सिरमांसनिमेंजांनों॥ नक्षत्रनिमेंआनि
जितमांनों॥ देवलआसितरहितजेदुंदर
॥ कमलकोससबदिनमेंसुंदराकर॥ जुग
निमांदि सतजुगसेनांम॥ वेदनिमांदि वेद
मेंसांम॥ व्यासनिमांदि व्यासदेयायन॥
तिनमेंतुमजेद्विष्णुपरायन॥ ३३॥ कवि
मांदि कबिसुक्रदिजांनों॥ सत्किंवंतम
यहतनमांनों॥ विद्याधरनिमांदि सु
संन॥ पद्मरागातिनमेंजेमनगि

सबत्रिणजातिनमेंकुसजांनों॥ होम
वस्तुमेंगोघृतमांनों॥ तिनमेंधनजेस
व्यवसाय॥ जयमारगसबतिनमेंया
य॥ ३५॥ अंगसमाधिजोगअंगतिमें॥ मे
होंक्षमाक्षमावंततिनिमें॥ धरिजमेंजो
धारजवंत॥ मेबलतिनिमेंजबलवंत
॥ ३६॥ छलनिमांदिछलमेंहोंजूप॥ मे
रेहेतकर्मममरूप॥ बासुदेवसंकर्ष
नबीर॥ प्रद्युम्नरुअनिरुधसरीर॥
३७॥ नारायणीवमहाधर॥ नरहरिअ
रुजमदग्निपुत्रवर॥ व्यूहचैननवध

जाजां नौं॥ वासुदेव तहां जो कों मां नौं॥
॥ तिन में धिर ताजे सब मू धर॥ पूर बलि
जनां म में अपसर॥ में हो बिस्वा बसु मंध
र्व॥ धरणी मां दिगंध में सर्व॥ इणार सज
ल मां हि स ए आ का सा॥ रवि सा सितार नि
में पर का सा॥ तेज स्वनि में पावक जां नौं
॥ विप्र भक्त नि न में बलि मां नौं॥ ४७॥
नि में अर्जुन बहू सार॥ में सब उत प
थित संहार॥ इंद्रिय मन बुद्ध्या दिक् जे
॥ मेर सक्ति प्रवर्त्तते ते॥ ४८॥ सब दिनु
सब अर्थ निगदों॥ तेज उति न में चेत

हों॥ सधसपरसरूपरसगंध॥ तिनते
मंचभूतसबंध॥ ४२॥ इंद्रियनमदतत
हंकार॥ त्रिगुणसहितप्रकृतिविका
र॥ प्रकृतिरूपुरुषजहां कबुजेतौ॥ मे
रैरूपसकलदेतेतौ॥ ४३॥ मोबिनुक
हं कबुदैएनांही॥ मेंहीप्रगैदिरह्योसब
मोही॥ जोपरमोएगनोमेंकबही॥ तैति
निपोरहिपांऊंतबही॥ ४४॥ परिममनि
मितजेब्रह्मंड॥ तिनकोंगनतपरैनादि
षंड॥ तातैकहोंबिभूतिकहांलो॥ जोक
बुमेरोरूपतहांलो॥ ४५॥ अरुअबजु

क्रिबिभूतिदिकहों॥द्वैतद्विष्टिऔसी
विधिदहों॥लजातेजसमाधनदोंन
दरताऐश्वर्यरुजांन॥धृष्ट॥बलसौजा
रुधीरजजहां॥ममबिभूतिजांनौतहां
तहां॥एबिभूतितौसोकंकुनही॥
अपारकदिवेकोरंही॥६७॥मनथिर
रणकाजएजांनौ॥इदईज्ञानकदेमति
मांनौ॥इद्विष्टदेहमनबुधिप्रांण॥नि
लकरिदेवौनगवान॥६८॥मनतेखब
आकासुतारीं॥चेतनिमेहैसूयवि-
रो॥एकअप्यंडितजहांतहांसोई॥

पापरदुजानहिकोई॥४९॥ऐसो
ब्रह्मकोंप्रावे॥ब्रह्मपाइजगतनहि
वे पुनितनमनइंद्रियअरुघ्रांन॥
करिजिननिधस्योममंघ्यांन॥५०॥
बहुतनांतिआचरनां॥जयतपदांन
दिककरनां॥कावेकोसमस्योजलजै
॥५१॥यत्नयत्नश्रवजावेसबतैसे॥५२॥
वचनकायमनघ्रांन॥सबकोंबंधि
रेममंघ्यांन॥मोदिध्यांइमोमादिस
वे॥तवसंसारमांदिनहिआवे॥५३॥
दोहा॥ज्यौंउडवतोसोंकद्यो॥वदवि

तिको ज्ञान॥ त्यों ही सत्समूह सब॥
देवो श्रीनगवांत॥ ५३॥ इति श्रीनागव
ते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीनगव
उद्धव संवादे नाथाय विभूतिकथन
नाम षोडशोऽध्यायः॥ १६॥ वी० प० ॥ १२०
॥ दासनिमें उद्धवनिज दास॥ जाके हे देज
न प्रकास॥ तिनि जीवनि की दित मन धर
॥ तातें प्रसन्न कृष्ण सौं करी॥ १॥ उद्धव ऊव
च॥ प्रभु तुम कल्प आदि उद्वाहो॥
निमिति धर्म बिस्तारो
दिन रजेते॥ तिनि धर्म नि

॥ २ ॥ तिनि में कोई भक्ति दिया वै ॥ को
ई कर्म सिधु बहिजा वै ॥ ताते तुम करु
णा में देवा ॥ जाषी नर धरम निके नेवा
३ ॥ धर्म करत ज्यो उपजै भक्ति ॥ तुम्हरे च
रन बढै अनुरक्ति ॥ छूटे काल जाल न वे
कूप ॥ लहै तुम्हारे ब्रह्म स्वरूप ॥ ४ ॥ जघ
पिपुनि बिधि सों बिस्तार्यो ॥ जब प्रभु रं
स रूप तुम धार्यो ॥ परिवदु काल कहे
ते भयो ॥ ताते धर्म लीन है गयो ॥ ५ ॥ हे
कछ और करै कछ और ॥ ताते जीव
पावै दोर ॥ ताते तुम करुणा करि जा

वै॥ बदे जात जे जी व निरावो॥ द्वि अरु
यदु तुम ही जों नो देवा॥ तुम विन दू जे ल
हैन नेवा॥ तुम ही कहौ सुनौ उर धरौ
॥ तुम ही राखौ तुम ही करौ॥ ७॥ ब्रह्मा ह
की सना म जारौ॥ वेद जहां निज मूरति धा
रौ॥ तदं ऊं यद को ई न दिजौ नै॥ ज्यों वै ध
त्यो सबै वषां नै॥ ८॥ अरु यद के से क दि
मानि आवै॥ कर म कर ते न कि दिपावै
अब तुम या ही कौं त न धारौ॥ जातें निज
धर्म दि विस्तारौ॥ ९॥ जौ वै दुं ठ प्रया रौं
करि हो॥ यद निज धर्म न ही उचरि हो॥

तापा छै कोई नहि कहि है॥ यदनि जध
र्म गुपति ही रहि है॥ १०॥ ताते अब तुम कर
णों करौ॥ यदनि जधर्म बेगि विस्तारौ॥ औ
सी सुनि उद्धव की बानी॥ आयुन बोले सारं
गयांनी॥ ११॥ श्री भगवानुवाच॥ धन्य ध
न्य उद्धव जत मेरे॥ दूजौ नदी बरा बरि ते
रे॥ मेरो निज जन कहिए सोई॥ देत पराए
बर तै जोई॥ १२॥ ताते तुम परकार जक
स्यो॥ मोतैं परम धर्म बिस्त स्यो उद्धव पर
म धर्म मम भक्ति॥ और सकल ते करै बि
रक्ति॥ १३॥ भक्ति बिनां जो कोई धर्म सो

सब ज्ञानों पर मन्त्रधर्म ॥ तब मे प्रथम
कियो संसार ॥ तब नदि दु सो कल विस्तार ॥ १४ ॥
जेई जे मां न वत न धरे ॥ मोहि
से इते ते ऊधरे ॥ दै कृत कृत लहे मम
धां म ॥ ताते सो कृत जुग से नां म ॥ १५ ॥
बोऊं कार रूप तब वेद ॥ औ से कछु दुते
नदि मेद ॥ सब इंद्रिय मन निह चले क
रे ॥ मे रो ध्यां न निरंतर धरे ॥ १६ ॥ औ
से सब पाप निपरिहरे ॥ सब मेरे चर
न नि अनुसरै ॥ त्रेता बिषे न ये मति मं
द ॥ विषिय नि ते मां नै आनंद ॥ १७ ॥

ताया छै कोई नहि कहि है ॥ यदनि जध
र्म गुपति ही रहि है ॥ १० ॥ तातें अब तुम कर
णों करौ ॥ यदनि जधर्म बेगि विस्तारौ ॥ औ
सी सुनि उद्धव की बानी ॥ आपुन बोले सारं
गयांनी ॥ ११ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ धन्य ध
न्य उद्धव जत मेरे ॥ दूजौ नही बरा बरिते
रे ॥ मेरो निज जन कहिए सोई ॥ देत पराए
बरतै जोई ॥ १२ ॥ ताते तुम परकार जक
स्यो ॥ मोतैं परम धर्म बिस्त स्यो उद्धव पर
म धर्म मम भक्ति ॥ और सकल ते करै बि
रक्ति ॥ १३ ॥ भक्ति बिनां जो कोई धर्म ॥ सो

सब जानौ परम अधर्म ॥ जनमै प्रयास
कियो संसार ॥ तब नहि दुख तो कर्म निवार ॥
१४ ॥ जेई जे मानव तन धरे ॥ मोहि
सेइ ते ते ऊधरे ॥ दै कृतक तल दे मम
धांम ॥ तातें सो कृतजुग सेनांम ॥ १५ ॥
बोऊं काररूप तब वेद ॥ औ से कछु दुख
नहि मेद ॥ सब इंद्रिय मन निहचलै क
रे ॥ मेरो ध्यान निरंतर धरे ॥ १६ ॥ ओ ॥
सै सब याप निवारि दरे ॥ सब मे
न निअनुसरै ॥ तै ता बिषै न ये
द ॥ विषिय नि ते मां नै आनंद ॥ १

ताया छै कोई नहि कहि है ॥ यदनि जध
र्म गुपति ही रहि है ॥ १० ॥ तातें अब तुम कर
णों करौ ॥ यदनि जधर्म बेगि विस्तारौ ॥ औ
सी सुनि उद्धव की बानी ॥ आयुन बोले सारं
गयांनी ॥ ११ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ धन्य ध
न्य उद्धव जत मेरे ॥ दूजौ नही बरा बरिते
रे ॥ मेरो निज जन कहिए सोई ॥ देत पराए
बरतै जोई ॥ १२ ॥ ताते तुम परकार जक
स्यो ॥ मोतैं परम धर्म बिस्तस्यो उद्धव पर
म धर्म मम भक्ति ॥ और सकल ते करै बि
रक्ति ॥ १३ ॥ भक्ति बिनां जो कोई धर्म ॥ सो

सब जानौ परम अधर्म ॥ जब मै प्रथम
कियो संसार ॥ तब नहि दु तो कर्म बिस्तार ॥ १४ ॥
जेई जे मानव तन धरे ॥ मोहि
सेइ ते ते ऊधरे ॥ कैत कृत कृत लहे मम
धाम ॥ ताते सो कृत जुग सेनाम ॥ १५ ॥
बोऊं कार रूप तव वेद ॥ औ से कछु दुते
नहि नेद ॥ सब इंदिय मन निदु चले क
रे ॥ मेरो ध्यान निरंतर धरे ॥ १६ ॥ औ
सै सब पाप निपा रदरे ॥ सब मेरे चर
न निज रस रे ॥ जे न विषे न ये सति सं
द ॥ विविध रिसे मेरे जे नंद ॥ १७ ॥

तिनिनिमित्तिवदु उद्यमकरै॥ राज
सत्तेपापनिबिस्तरै॥ तबतिनिधर्मदे
तबेदविस्तारे॥ वदुतनांतिकेकर्मनि
वारे॥ १८॥ बर्णाश्रमभेदउपाये॥ न्यारे
न्यारेकर्मग्रहाये॥ अपनोधर्मत्यागजो
करै॥ सोनरजाइनरकमेपरै॥ १९॥ ओ
सेबदुविधिनयदिदिषायो॥ थोरक
र्मनिमैठहरायो॥ तामेनाथ्योआतम
भजन॥ मोविनसकलकर्मकोतजन
॥ २०॥ वदुस्योवदुआरंभनिघदे॥ राज
सत्तेनदिनिश्चलरहे॥ तिनकेहेतज

जो उपजायो विष्णु कर्तृक
सुनायो २१ विष्णु जन्म कर्तृक
हो वैतदृष्टि श्री ली जन्म
ते विष्णु उपजायो २२ जन्म कर्तृक
नायो २२ जन्म कर्तृक
पदनाचै श्री जन्म कर्तृक
स्य जन्म कर्तृक
बलियो २३ जन्म कर्तृक
बोम मस्तक कर्तृक
मस्तक कर्तृक
मस्तक कर्तृक

रैं ॥ सो सो सब बंधन विस्तरे ॥ जा जा अं
गदु ते जा उ प ज्यो ॥ त्यों त्यों ता को लह न नि
प ज्यो ॥ २५ ॥ ऊंचे अंग दु ते सो ऊंचो ॥ नी
चे अंग दु ते सो नीचो ॥ तिनि के बहु विधि
मये सुजाव ॥ ता ते उ प जै नां नां भाव ॥ २६ ॥
संमदं मसत्य क्षमा संतोष ॥ सदा दया
लन उ प जै रोष ॥ तय अरु सोचन प्रमम
भक्त ॥ इनिलक्षण निविप्र अनुरक्त ॥ २७ ॥
क्षमाति जवत उद्यम धीर ॥ सूर उदार अ
चल गंभीर ॥ विप्र भक्त मेरो दृढ भाव ये
क्षत्रि के मये सुजाव ॥ २८ ॥ बुधि आस्ति

कादांनञ्चदंन विष्णुमनादध्यात्म
वैष्णवयोगीश्वरलक्ष्मण चन्द्रशेखरप्रसाद
विचित्राण २२ गङ्गापतिहं नमो नमो नमो
तिनतैं वाङ्मयदे कोनके अनन्य एक
पटतानां दी शैलेन्द्रकादुदनिमांशी
३० मिथ्यावादप्रमोचरुचोरी वाङ्मय
स्तिकहृदेकलेन दामजीश्वरजीश्वर
कार वरदजीश्वरजीश्वरजीश्वरजीश्वर
मक्रोधमदहस्योदयेन नमो नमो नमो
मारथसहित जीश्वरदयाश्वरजीश्वर
धर्म यदसचकासाधारणधर्म

ब्रह्मचर्यके धर्म हिकहों॥ जातें जसि उपाई च
हों॥ विप्रक्षत्रा अरु वैश्य त्रिवर्ण॥ इनकों स
काल वेद विधि कर्ण॥ ३३॥ गर्भाधानादिक
संस्कार॥ तिहू वर्ण कौय द्वा आचार॥ जब
ते बहुरिज ने ऊपावै॥ तब ते गुर के निकट
रहावै॥ ३४॥ बहु विधि गुर की सेवा करै
॥ वेद पढ़ै अर्थ हि उर धरै॥ जनों से बला
कर जय माला॥ दंड कमंडल अरु मृगच्छा
ला॥ ३५॥ दंत बस्त्र तन मल न निवारै॥ सी
स जटा हस्त निकुस धारै॥ आसन चंचल क
देन करै॥ लोक वारता हूँ देन धरै॥ ३६॥

मुत्रपुण्यत्यागश्चात्मानं ॥ ३ ॥
जनजलयांनो जनसेवक-लक्ष्मी ॥ ४ ॥
षकेसादिकदूरिनद- ॥ ५ ॥
रिदृष्टतथापि कथं द्रव्यं तद्विदुः ॥
रे ॥ जो आयदीते जात्रे जलदी ॥ तदु- ॥
पछितावैतवदी ॥ ३ ॥
णां यां म- ॥ जापके नृ-दीते नाम ॥
कगुरुविप्रमगर्ह ॥ ३ ॥
कगड ॥ ३ ॥ संध्यं वासवतः सैविकम् ॥

चवननबोलैदालनचाल॥ गुरकों मेरेरूप
दिजांमें॥ नरकीबुधिवदेनदिआंमें॥ ४०॥
॥ सबदेवमयगुरकोंलिये॥ तनकेकछु
चरणनदेखे॥ भिक्षाआदिऔरकछुजो
ई॥ गुरकोंआनिसमरपेसोई॥ ४१॥ ज
वगुरताकोंआजादेवे॥ तबप्रसादआप
हूँलेवे॥ बेठेगाटेआवतजात॥ भोजनस
यनरातिपरनात॥ ४२॥

॥ नदी की भाति गुर से प्रवाह करे ॥ प्रवाह
सों पाछें अनुसरें ॥ श्री सेवक अनामिका
धारे ॥ मन जंभें नदि सो भजि साध ॥ प्र
॥ श्री से गुर कुल वर ते सोई ॥ प्रवाह नदि न
मापति दोई ॥ पुनि प्रवाह नदि नदि नदि
॥ तौ गृह स्थितानदी मंजरी ॥ प्रवाह नदि
देह समर पन करे ॥ प्रवाह नदि नदि नदि
॥ गुर अरु अमि आपस न सोई ॥ प्रवाह
दि अवर कछ सोई ॥ प्रवाह नदि नदि नदि
वने नुके यो ॥ प्रवाह नदि नदि नदि
प्रवाह नदि नदि नदि नदि नदि

मानिं अति त्रास ॥ ४६ ॥ सोच आच मन अ
रु अरु अस्नान ॥ संध्यो पासनगत अनि
मान ॥ तीर्थ सेवा जयत पानि द्वा ॥ तजै दर
स संभाषण दुहा ॥ ४७ ॥ मन अरु वचन
देह बस करै ॥ मेरौ भजन हृदय में धरै ॥ अ
रु मम भजन सब नि को धर्म ॥ भजन वि
नां सब धर्म अधर्म ॥ ४८ ॥ ओसा ब्रह्म
चर्य ब्रत धारी ॥ दृढ तपनि सिदिनु बेद वि
चारी ॥ विगत पाप ओसी विधि होई ॥ मे
री भक्ति लहेत ब सोई ॥ ४९ ॥ ओसी विधि
भक्त सागर तजै ॥ मेरे परम रूप को भजै

॥ अरु जो को ऊहोइ सकां म॥ तौ सौं करै
जुवती अरु धां म॥ ५०॥ कै निद कां मग
है बानवास॥ कै अधिकार पाइ संन्यास
॥ अरु जो उपजे मेरी नक्ति॥ तौ नदिके
कटि आसक्ति॥ ५१॥ यह है ब्रह्मचर्ज को
धर्म॥ या तेंदु जो सकल अधर्म अवग
दस्य को धर्म सुनां ऊं॥ सकलगृहस्थ
निकों समझां ऊं॥ ५२॥ ब्रह्मचर्ज जो हृदि
वहरावै॥ तौ गृहस्थ आसरम
गुरते वेद पढै सब जवदी॥ गु
देइ पुनितवदी॥ ५३॥ गुरते

उरधरे तब विधि सौं अस्नान दि करे ॥ त
ब देखै उत्पम कुल लक्षण ॥ करे विवाह दि
त्रिया विचक्षण ॥ ५४ ॥ ओ देखै अपनौ अ
धिकार ॥ त्यों ही करे विवाह विचार ॥ वि
प्रविवाहै चाख्यौ बरण ॥ विप्रको डिह
त्री कों करण ॥ ५५ ॥ वैश्य विवाहै वैश्य रु
सुद्र ॥ सुद्र एक ई कुंचन क्षाद्र ॥ उत्तम सो
जो एके करे ॥ बहुत निहृष्ट नहि बिस्त
रे ॥ ५६ ॥ श्रुति अधिग्रह जज्ञ अरु दान
तिहू वर्ण कौ एका समान ॥ दान ग्रह न
जज्ञ करवाव न ॥ अधिक विप्र कों बेट

पद्यंवन॥५७॥परिएतानिहेंतिहेअ
॥अग्निमधिजलवरिषाजैसे॥इनतेअ
सतेजनदिरहे॥तातेंइनकोंबिप्रन
हे॥५८॥करिकेसिलादेदनिरबाहे॥ता
अधिकेनदीसंबाहे॥बिप्रदेदपूर
तययेए॥सोबिषयनिलगिनदीमदे
ए॥५९॥बहुतजांततयकष्टिदिकरि
॥हरिभजिहरिदीकोंअनुसरीए॥
लावृत्तिकरिशेदेद॥नदीममताजु
नतीसुतगेद॥६०॥अतिथियालनो
जतमनांही॥मोहीकोंदेखेसबमांही॥

जीवनमुक्त होइ सो बिप्र ॥ मेरे चरणनि
पावे छिप्र ॥ ६१ ॥ जो कोई मम मक्ति दि करे
॥ ता को कछु आपदा परे ॥ सो आपदा मि
टावे कोई ॥ सो मेरो हित कारी होइ ॥ ६२ ॥
॥ ता को मैं उधारो औं सैं ॥ ना वनि सों अंजो
निधि जे सैं ॥ परि क्षत्री निज चर्म बिचारै
सकल पालनां हिरदै धारै ॥ ६३ ॥ क्षत्री
सब के दुषानि हरै ॥ सकल जीव प्रति
पाल दि करै ॥ सो क्षत्री सुरलो कहि जा
वै ॥ बासव सहित महा सुष पावै ॥ ६४ ॥
॥ जो आपदा बिप्र को परै ॥ तो सो बनि

जवृत्तिकोंकरे॥ जघयि सज्जीवृत्तिदेऊ
चा॥ परिसो अतिहिंसातेनीची॥ ६५॥ जो
सत्रीकोंपरे विपति॥ तोसोगदे विनिज
कावृत्ति॥ किंवा विप्रवृत्तिकोंगहे॥ अथ
वामगया करि निरबदे॥ ६६॥ वेस्पदि
रे आयदा कबहो॥ सुअवृत्ति सो टारे तव
दा॥ अरु जो विपति सुअकोंपरे॥ तो प्रति
जामवृत्ति दिधरे॥ ६७॥ या विधि जव
दिमिटे विपति॥ तबही गहे आयनीवृ
त्ति॥ पंचजज्ञ प्रतिदिन करने॥ गृह
स्थकोंनाही परिहरने॥ ६८॥ करि

पाठरिष्य न कौं जै जै ॥ करि कबू हो म
देव तनि न जै ॥ भूतनि बलिरु स्वधा सों
वितर ॥ जल अनादिसत्ति सों इतर दई
॥ तिनि सब दिनि में मो कौं जाने ॥ और
सब निपरि करुणा आंने ॥ जो सहज ही
कटू धन पावै ॥ किंवा न्याय दुते उपजा
वै ॥ ७० ॥ ता सों लोग आयने पोषै ॥ और
जुजु करि मोहि संतोषै ॥ जे ता लागति घ
र में दोई ॥ ते तोई धन राखै सोई ॥ ७१ ॥
और सकल मम हेतु लगवै ॥ भूलि न
दूजे मारग जावै ॥ जद्यपि रदै कटू बटू

मांही॥ तो हलिये कदे कहुं नांही॥ ७२॥ नि
सदिनु हदै करे विचार॥ मिथ्या जाने स
व परिवार॥ अस्त्री पुत्र बंधु सब असे
जल को निकट बढाऊ जेसे॥ ७३॥ ए
सब यों प्रतिदेह दिआवे ज्यों निद्रा प्र
सुधि ना पावे॥ ज्यों ज्यों जागे वारंवार॥
त्यों त्यों मिटे सुपिन औ हार॥ ७४॥ यों
हए प्रतिदेह दिआवे॥ देह तजे स
तति तजावे अरु यों ही स्व
प्ना ये दरष गये अति सोका॥ ७५॥ ताते
वल बासना ददे॥ अति थि

मैं रं है ॥ अहंकार ममता नदी आं में ॥ सब
माया बंधन करि ज्ञानें ॥ ७६ ॥ सब कर्मनि
मेरे हित करे ॥ मो बिचि अंतरा इ पर हरे
॥ प्रेम भाव दृढ उर में राखे ॥ और सकल दि
र देखे नाखे ॥ ७७ ॥ ओ ते न ये दु तैं वन जावै
॥ किंवा गृह दिमां हिरहावै ॥ ओ सो गृही मु
क्त करि मां नों ॥ और कछू दिर देखे न दि आं
नों ॥ ७८ ॥ अरु जो दोइ नवन आसक्त ॥ तु
वति सुता दिकनि सों अनुरक्त ॥ विषया
लं पट तस्मां आतुर ॥ ज्ञान रहित कर्मनि
मेचातुर ॥ ७९ ॥ आयु दि पर वसता दि

नजानें॥ औरनिकीचिंताउरआने॥
माईदृढ़पितरहेंमेरे॥ मोबिनदुःखलहें
बहुतेरे॥ ८०॥ यहअबलालघुसंपतिज
की॥ मोबिनहोइकहागतिताकी॥ एअ
नाथमोबिनसबवाला॥ क्योंकरिजीवे
अतिबेहाला॥ ८१॥ मोबिनइन्हिदिकों
नुप्रतिपाले॥ कौनविबिधिदुःखनि
कोंठाले॥ ऐसेनिसदिनआनेचिंता॥ क
बहुंनहिहोवैनिहंचिंता॥ ८२॥ कदेनसु
षपावैयालाका॥ अखोरहैचिंताभय
का॥ याविधिचिंताकरतअपार॥ नरक

दिजात्रैवारंवार॥८३॥दीहा॥ब्रह्म
चर्यगृहचर्यकोमेंनाध्वोषदधर्म॥प्रा
तेंउद्धवऔरकछु॥सोसबजांनिअध
र्म॥८४॥इतिश्रीभगवतेमहापुराणे
एकादशस्कंधेश्रीभगवदुद्धवसंवा
देभाषायांआश्रमधर्मनिरूपणना
मसप्तदशोऽध्यायः॥११॥चौपई॥१२
८६॥श्रीभगवानुवाच॥अबमेंक
हूंधर्मवनवास॥अरुअधिकारस
हितसम्यास॥जातेमेरीभक्तिदिपावे
॥भक्तिपादममचरणानिआवे॥१॥

वरषपचासदृतेउपरंत॥तबवनजादुर
हैएकंत॥नारिसुतनिमेरहनेदेई॥जोनि
धिवनैसंगतौलेई॥२॥कंदमुलफलवृति
हिकरे॥बलकलमृगछालातनधरे॥तए
परानिकीसेजसंवारै॥इंजिनुके
र्थनिवारै॥३॥केसरोमनसदुरिनकरै
देहदंतमलनदियरिहवै॥भूमिसय
कालस्नान॥मलनउतारैमुसलस
न॥४॥ग्रीष्मरितुयंचाग्रिसाधै
छायानदिबांधै॥सीसस
सहै॥सीतकालजलसाईरहै॥५॥

हिजा त्रैवारं बार ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म
चर्य गृहचर्य कोमें नाधोष दधर्म ॥ प्रा
तें उद्धव और कछु ॥ सो सब जांनि अध
र्म ॥ ८४ ॥ इति श्री जगत् ते महापुराणे
एकादशस्कंधे श्री जगत् उद्धव संवा
दे जाम्बवी आश्रमधर्मनिरूपणना
मसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ चौपई ॥ १२
८६ ॥ श्री जगद्वा न उवाच ॥ अब मैं क
हूं धर्म ब्रह्मवास ॥ अरु अधिकार स
हित सन्यास ॥ जाते मेरी भक्ति दिपावे १
॥ भक्ति पाइ मम चरणानि आवे ॥ १ ॥

ग॥१३॥वेदविहितविधि कोंजजे॥कृति
 जकोंसर्वसदेतजे॥जबकोईसन्पासदि
 करें॥तबदीसुरविघननिबिस्तरे॥१४
 ॥परियदविघनगणोकछुनांही॥मेरे
 रणधरेउरमांदि॥जोंकबदीकवु
 बस्त्रादिराखे॥तोंकोपीनओरसबनांवे
 ॥१५॥दंडकमंडलकरमेंधारे॥ज्योंमल
 त्योंनहिओरबिचारे॥देखिदेखिधरणी
 पगधरे॥बस्त्रछानिजलपानाहिकरे॥
 ॥सत्यवंतबांनीकोंबोलेहृदैबिचारको
 नहिडोले॥मोंनधारिबाणीकोंदंडे॥॥

ग॥१३॥ वेद विदित विधि कों ज जे ॥ कृति
ज कों सर्व सदैत जे ॥ जब कोई सन्यास दि
करे ॥ तब ही सुर विघन निविस्तरे ॥ १४
॥ परियह विघन गणों कछु नांही ॥ मेरे
रण धरे उर मां दिखे ॥ जे कि बड़ा कबु
बस्त्रादि राखे ॥ तो कोपीन और सब नांखे
॥ १५ ॥ दंड कमंडल कर में धारे ॥ ज्यों मल
त्यों नहि और विचारे ॥ देखि देखि धरणी
पग धरे ॥ बस्त्र छानि जल पां नहि करे ॥
॥ सत्य वंत बां नी कों बोलै हृदये विचार को
नहि डोले ॥ मौन धारि बांणी कों दंडे ॥ अ

रुकाया के कर्म निषंढे ॥१७॥ प्राणा धाम म
नदिव स करे ॥ सब इंद्रिय अर्थ निपरिहरे
॥ अरु एंवि नून ही जामां ही ॥ नेष धरे जी
ता सो नां ही ॥१८॥ निज्ञा करे सप्त घर विप्र
॥ और कछू कहुं गढ़े नहि प्र सोऊ विप्र च
तुर विधि जेत ॥ जां निरहे निज्ञा कों ते ते ॥
१९॥ विप्र कही जेद सप्रकार ॥ तिनि की तु
म सो कही विचार ॥ देव विप्र रवि विप्र दि
जां नों ॥ विप्र विप्र अरु क्षत्रा मां नों ॥२०॥
स्य सुप्र अरु एक विउल ॥ पसुर म लेख
विप्र चं उल ॥ निज्ञा नित्य रुप दे पदा वै

सकल अर्थ ^{रु} तत्त्ववता वै ॥ २१ ॥ इन्द्रिजित
सीतल संतोष दिव विप्र सो निर्गत शेष ॥ त
पञ्चरु सत्य अदिसा करै ॥ दिन दिन षट्क
र्मनि अनुसरै ॥ २२ ॥ काल लोप कवट्ट न
दि होई ॥ रिषि ब्राह्मण कदिय तु है सोई
॥ विनहिं साफल मूल नित्य वै ॥ तिनेही
सों देह दिख रता वै ॥ २३ ॥ वरषा सीत उष्ण
सब सब सदैव विप्र विप्र नित आध दिग है
॥ अश्वादिकानि करै आरोह रण में सुर
त जेत न भोह ॥ २४ ॥ नीति साहित वां नें अ
रंभ क्षत्री विप्र हृदे नहि दंभ ॥ अरु जो

समविनजदिकरे॥यसुराधेधेताविस्तरे
॥२५॥सोवदवेस्यत्रासएकदिए॥तातेले
निसानदिगदियेतिललोनघृतदूधरत्न
दा॥तिलअरुनीलमदीमधुमंदा॥२६॥
इनिकोंविनजकरतुहेजोई॥सुअविप्रक
दियतुहेसोई॥सबअतनिकेडोहदिक
रे॥सबकेसिद्धनिदेवतुफिरे॥२७॥आ
दिनदिसासोअधिकार॥विप्रकदा
मंजार॥नदअनदपकेअकारजका
॥गम्यअगम्यनलधेअनारज॥२८॥ह
घनसकलयसुनिकेलदरा॥सोय

बांभण कहे विचक्षण ॥ बापी कूं पतला व
पुरावै वृद्ध बागा दिक नास करवै ॥ २६ ॥ सं
ध्या असु असु न न जां नें ॥ औ सो विप्र मं ले
छ बषा नें ॥ निद कलो भा पर धन दूरे ॥ नृ दई
कूर पिसु न ता करे ॥ ३० ॥ सो चंचाल विप्र क
रि मां नें ॥ औ से दस विप्र नि जां नें ॥ ता तें उत्त
म निहा करे ॥ और स काल दूरे परि दूरे ॥ ३१ ॥
सात घ रनि तो निह्या पावै ॥ ता ही करि सं
तोष उपावै ॥ सो ले जावै नदी त ओ ग ता तें
कछू एक करै विभाग ॥ ३२ ॥ की ई मां गै ता
को दई ॥ कै जल मां दि प्र वा द करे ई ॥ विच

रेधरणाकैनिहंसंग॥ कदेनककूनसंवारैअंग
॥३३॥ तनमनइंद्रियनिग्रहकरै॥ मेरौरूपह
दैमैधरै॥ निसदिनुरदैआत्मांयंम॥ विषयसु
षनिकोसुनेननांम॥३४॥ समदरसीअरुधी
रजवंत॥ सदारदैनमयएकंत॥ मेरेआवृन
योअनिसुद्ध॥ परमविवेकीजंजलदुद्ध॥३५
॥ आपुदिमोदिविचारैएक॥ कदेनदे
लिअनेक॥ आत्मअंसब्रह्मकोंजानें॥ बध
मुक्तदोऊचममां॥३६॥ बंधनजबइंद्रिय
नुबसिहोई॥ मुक्तइंद्रियनुनबधैसोई॥
सैजांनिइंद्रियनिजातै॥ मोहिसुमिरतै

न वितीत ॥ ३७ ॥ दुहं लोक तै हो इ विरक्त त न हं
महि हो त्रै आसक्त ॥ पुर गां मादि आइ जो परै
मिहा अर्थ प्रवे सहि करै ॥ ३८ ॥ देह पवित्र सेल
वन सरिता ॥ वान प्रस्य जहा आचिरिता ॥ त
हं तहां नित ही चलि आवै ॥ तिनि आप्रमनि नि
हा पावै ॥ ३९ ॥ तिन वैल है सिला को अंन ताते
हो वै मन परसन ॥ ताही ते न मल ताल दे ॥ उ यजे
ज्ञान सकल मल दहै ॥ ४० ॥ इंद्रिय अर्थ निस
त्य न देखै ॥ दण मंगुर सब न प्ररले धै ॥ तातें स
वतें गहै विरक्ति नहि उद्यम निविषे आसक्ति ॥
यह सब अहंकार करि जां नैं ॥ आत्म विषे स्व

प्रसममाने ॥ कदेन हृदये चित्तं नृनन्तरं ॥
 मनःक्रमवचनदुरिपरिहरे ॥ ५ ॥
 साविधिजवउपजैजान ॥ दोडो नृनन्तरं ॥
 सबआन ॥ मेरा नृनन्तरं ॥ ५ ॥
 बवर्णाप्रष्टिदकात्रे ॥ ५ ॥ निनिनिनिनि
 दोऊभ्रमजाने ॥ वेदमुमनिका संकानम
 ने ॥ अतिदुःखपरिहानकसामिरदे ॥ ५ ॥
 धिनिषेधकदृकदृनगदे ॥ ५ ॥
 मेपरिज्योउममेन ॥ निननमयद ॥ ५ ॥
 वन ॥ पुष्पनवाना ॥ ५ ॥
 दृष्टदमवांमंसोदे ॥ ५ ॥
 कदमगदे ॥ ५ ॥

ज्यों कहै सुनें त्यों त्यों हो ॥ तत्त्वमतो नदित्या
गै क्यो हो ॥ ४६ ॥ काहू ते उदवे जान आं में ॥
अरु काहू को आयु नवां में ॥ निधा आदि
सहै दुरवै न ॥ अंतर धरै निरंतर चै न ॥
४७ ॥ काहू को अग्र मान न करै ॥ मन क्रम
वचन मान बिस्तरै ॥ यसुस मान बैरादि
नवां में ॥ सकल विकार देह के भांने ॥ ४८ ॥
जो आत्म अयनेत न मां हो ॥ सोई सब हू
जो को नां हो ॥ ज्यों बहु घटनि मां दि ससि
एक ॥ घटनि संग जानिये अनेक ॥ ४९ ॥
ताते इष्ट अनिष्ट कहै ॥ जानिये अने

सो सब आहु किं विस्तरे। तातें आत्म
बुद्धि दिराये॥ नेद देह कृत ते सब नाये॥
५०॥ सम सुपाय भोजन नहि आवै॥ तौ ह
कछु न मन मै ल्यावै॥ कर्म रचित सब दे
ह निजाने॥ तिन ही ते सब सुख दुष मा
ने॥ ५१॥ ते सब सुख दुष कर्म सीरीर॥ ये
आत्म मै ज्यो मृग नीर॥ केवल आहार
दिन दिन नाये॥ उद्यम ऊ करि प्राणादि
राये॥ ५२॥ प्राण निराये होइ विचार ल
हे मोहि छूटे संसार॥ जो मेरी इच्छा ते आ
वै॥ उत्तम मेध्यम सो कछु पावै॥ ५३॥

मो असन वस्त्रादिक च है ॥ जैसो आवै ते
सो ग है ॥ प्रिय अ प्रिय की बुद्धि न आने ॥
दो ऊमि थ्याई करि मांने ॥ ५४ ॥ कोई टेक
न मन में धरे ॥ मो विन और सकल परि
दरे ॥ सोच आच मन अरु अस्मानां ॥ ओ
रो कछु आचरणानां ॥ ५५ ॥ ते कछु सं
काते नहि करै ॥ जो कछु सोइ द्वा आचरे
॥ ज्यों मेरे श्रुति को नय नोही ॥ दो ऊम्र म
जानत हों मांही ॥ ५६ ॥ परितथापि कर्म
नि आचरो ॥ लोकनि को हित मन में धरे
॥ त्यों जानी विधि किं कर नोही ॥ विधि नि

मानवबुद्धिकदेनदिलेखे॥६१॥सरधा
साहितअसूयातजे॥मनक्रमवचननिरं
तरनजे॥जोलगिब्रह्मविचारदिपावे॥
तोलगिगुरताजिकदंनजावे॥६२॥यांछे
ज्यो जांनें त्यो रदे॥परमदं सकेधर्मनिग
दे॥परिजिनिषट्ठरिपुजीतेनांदी॥इंदि
यअर्थविचारतमांदी॥६३॥चंचलबुद्धि
नज्ञानविराग॥ताकोसकलवृथाहैत्या
ग॥मेवदिषाइजीवकाकरे॥ताकोदो
षकह्योनाहियरे॥६४॥देवपितरारि
नृतनिमावे॥तिनकोरिणसिरऊप

रिगये॥ अथ रीति गति में लोहि विपावे॥ अ
 पुद्विबं चैवं धउपावे॥ ६५॥ सो सुषकों न
 लहेया लोक॥ अरु लो नृष्ट दो इपर लोक
 क॥ असेवर्णाश्रम के धर्म॥ इन तेन लि
 लहे ददिकर्म॥ ६६॥ अब चाख्यों के धर्म
 प्रधान॥ न्यारे न्यारे करों वधान॥ सम अ
 रु अदिसा संन्यासी कों॥ श्रुति विचार
 तयवने वासी कों॥ ६७॥ गृह में दया ज
 नमम कर्म॥ ब्रह्मचर्ज गुरसेवा धर्म
 ॥ ब्रह्मचर्ज तपसो च संतोष॥ सकल
 सुहृद कत हन दिशेष॥ ६८॥ मे

नसकलममकारण॥एसबदिनुकेधर्म
साधारण॥गृहीदेइबनितारितुदांन॥
भूलिनगमनकरोदिनआंन॥६८॥यावि
धिअपनेअपनेधर्म॥मेरेहेतकरैसब
कर्म॥सबमेजांनेमेरोभावै॥काटूंपर
नादिधरैकुआव॥७०॥सोपावैमेरोदट
भक्ति॥ओरसकलतेकरैविरक्ति॥ताते
उपजेमेरोज्ञान॥देखेमोहिमिटेसब
आंन॥७१॥ओसोदुपावैममरूप॥व
दरिनआवैभवकूप॥जेहेसकलवए
आश्रम॥तिनकेएमेभावैधर्म॥७२॥

भक्तिसहित एमो हिमिलावे ॥ भक्ति बिना
भव सिधु वहावे ॥ औ सौतत्व लहे ते ति
रे ॥ और सकलानि तजन में मरे ॥ ७३ ॥
दो दायद उद्धव सो सो कह्यो ॥ बर्ण श्रम व
धर्म ॥ जाते मम भक्ति हिलहे ॥ छुटे न ध
न कर्म ॥ ७४ ॥ इति श्री नागव्रत महापुरा
ण एकादश स्कंधे श्री नागव्रत उद्धव संवादे
भावाया बर्ण श्रम निरूपण नाम अष्टाद
समोऽध्यायः ॥ १८ ॥ चौ पई ॥ १३६ ॥ श्री
वां न ऊवाच ॥ उद्धव एव बर्ण रु आश्रमां
ति न के मे संव नावे धर्मा ॥ ३ न

भाति उपावै ॥ ताते मेरे ज्ञान दियावै ॥ १ ॥ ज्ञा
न दियाइ सकल भ्रम जानै ॥ वर्णाश्रम मि
थ्या करि मानै ॥ सब साधन तजि मो कौ
ध्यावै ॥ और कछु हृदय न दित्यावै ॥ २ ॥ ज्ञा
न के मेही हों साधन ॥ अरु मेरो ईनित अ
राधन ॥ मोही करि मो कौ आराधै ॥ तन
न इंद्रिय मो सों बांधै ॥ ३ ॥ मो बिन स्वरग
दिक न दितेई ॥ मेरे ईचरण निचित दे
॥ मो बिनु मुक्ति कदे न दिगदै ॥ मो बिन
सकल बासना ददै ॥ ४ ॥ मेही दित मेही
ता के प्रिय ॥ मो बिन और सकल अति

प्रिय जे देसादि तज्ज्ञान विज्ञान ॥ तेई ज्ञाने
मोहि सुज्ञान ॥ ५ ॥ ज्ञानी ते मेरे प्रिय ना
ह ॥ सदा वसै मेरे मन मांहीं ॥ मेता को
रो है सो ईदू जो नही परस परकोई ॥ ६ ॥
जयत पती रघुव्रत अरु दाना ॥ कहों क
लो जो विधि नां नां ॥ ते सब करें नहि क
ल असो ॥ ज्ञान कला ते दो वे जे हो ॥ ७ ॥
ता ते ज्ञान ह दे मै धारौ ॥ औरै साधन स
वारौ ॥ सब मै रूप आप नौ जानौ ॥ मोहि
ज्ञानि प्रभु सेवा नां नौ ॥ ८ ॥ कहि
न विज्ञान ॥ देखे सकल एकै

बहुतै मम निजरूप समाए ॥ जहां जाइ
कोई नहि आए ॥ ९० ॥ जबही प्राणी ज्ञान दि
पावै ॥ तबही मम निजरूप समावै ॥ ज्ञान
विना नहि पावै मोहि ॥ यद निजमतो क
हत हंतो हि ॥ १० ॥ उद्धव तो मे विबधिवि
कार ॥ जनम मरण सुख दुःख पुरकार ॥
ते समस्त या तन के ज्ञानों ॥ सो तन मा
या भ्रम करि मां नों ॥ ११ ॥ आपुही सुद्ध नि
रंज न देखौ ॥ द्वैत अतीत एक करि लेवौ
॥ जे जे सकल प्रगट देहादिते आत्म में दु
तेन आदि ॥ १२ ॥ अरु अंत हं रदै क कूनां

बहुते मम निजरूप समाए ॥ जहां जाइ
कोई नहि आए ॥ ६ ॥ जब ही प्राणी ज्ञान दि
पावे ॥ तब ही मम निजरूप समावे ॥ ज्ञान
विना नहि पावे मोहि ॥ यह निजमतो क
हत हंतो हि ॥ १० ॥ उद्धव तो मे विवधिवि
कार ॥ जनम मरण सुष दुष पुरकार ॥
ते समस्त या तन के ज्ञानों ॥ सो तन मा
या भ्रम करि मां नों ॥ ११ ॥ आपु ही सुद्ध नि
रंजन देखौ ॥ दैत अतीत एक करि लेखौ
॥ जे जे सकल प्रगट देहा दिते आत्म में दु
तेन आदि ॥ १२ ॥ अरु अंत हं रदे कछू नां

॥ अथ अज्ञानदुते वरतां ॥ ज्ञानदृष्टि
करि देखै अवदी ॥ त्रिगुण रहित आपुहि
हेतवदी ॥ १३ ॥ जैसे रजुमांदि अधिक
दिसे आदि नंदु तो अंत नहिरहे ॥ भ्रमते
मध्यमंद मति मानै ॥ हे नाही परि हे सो जां
नै ॥ त्यौ देहादिसक भ्रम देखौ ॥ आपुहि
सदा ब्रह्म मय लिखौ ॥ औसौ सुनिदरि जा
सौ ज्ञानहि ॥ उद्धव जन पूछ्यो भगवान
हि ॥ १४ ॥ उद्धव उवाच ॥ हे प्रभु ज्ञान कृपा
करि कहौ ॥ मेरे नां ना भ्रम कों दहौ ॥ अरु
त्यौं हा भाषौ विज्ञान ॥ नहि आपनी पर

रक्षक नांही ॥ में विचारि देख्यो उर मांही
२० ॥ तुम्हरे चरण क्षत्र सिर धारे ॥ सो सम
स संताप निवारे ॥ ता कों दस दिशि अंम
त दिबर खे ॥ ता के दरस और सब दर खे
॥ २१ ॥ ज्यों का हू कंगाल हिली जै ॥ ता के
सीस क्षत्र लो दी जै ॥ सो है नृप मांहा सुव
पावै ॥ अरु और नि के दुःख मिटावै
२२ ॥ त्यों तुम्हरे चरण क्षत्र सिर धारे ॥ सो
अपने न व दुष निवारे ॥ सो मै ती ज्यों लो
क नि मांही ॥ ता समि और क हू की नां
ही ॥ २३ ॥ अरु जै ता की सरणी दिआ

वै॥ ते ते सकल परम सुषपात्रे॥ यानत्र कं
पपस्यो वेदाल॥ तापरि उ स्यो महा अ
हिकाल॥ २४॥ तातें विषय विषय हि
सुषजाने॥ तिनि निमिबहु उद्यमगंने
॥ तातें सदा अमिति दुषपात्रे॥ जाको
कबहुं अंतन आवे॥ २५॥ ताको कृप
यिषुषयियावो॥ काटि कुं पते मृतक
जिवावो॥ बचन मृतकी वर्षा करौ॥
अपने गुनि बाधि उद्धरौ॥ २६॥ तुमह
जगत्पिता जगत्स्वामी॥ जगपालक
जगअंतरजामी॥ औसे बचन सुनेन

गवांन। तव उद्धवसौ जाष्यो ज्ञान ॥ २७ ॥
श्रीमगवांन ऊवाच ॥ उद्धव प्रसा कीरी
मसोई ॥ धर्म पुत्र की नीती सोई ॥ सरसे जी
मे भीष्म परे ॥ हं मकों सुनत वचन उच्चरे
॥ २८ ॥ तेई अब मै तोहि सुनाऊं ॥ नति ज
न बिज्ञान जनाऊं ॥ प्रकृति पुर म महत
त अहंकार ॥ शशदि क जे पंच प्रका
॥ २९ ॥ त्रिय गुण अरु इंद्रिय दस एक ॥
पंच भूत मिलि नये अनेक ॥ आ व र ज
ग म विविधि प्रकार ॥ इति अर्वा ई स दो
विस्मर ॥ ३० ॥ इति विन श्रौ र क हं क हं

नांही॥ एक दृष्टि देखे सब मां हों॥ जा क
सकल एक करि जां नैं॥ ता कों सो धू जां न
बधां नैं॥ ३१॥ अरु जब ए अगई सतत्व
॥ माया जां नैं सकल असत्व आत्म ब्रह्म
एक करि जां नैं॥ देहादिक सब मिथ्या
मां नैं॥ ३२॥ रजु जां निं ज्यों सर्प निवारै॥
त्यों समस्त मग रूप विचारै॥ जे सै दिस
मोह मिटि जावै॥ आगों दिस कीषव
रिहि पावै॥ ३३॥ करत निरंतरि जां न
विचार॥ देखै ब्रह्म मिटै विस्तार॥ तावै
कदियवटै विज्ञां न॥ तावें लटै मोटि

तजि जंतु ॥ २५ ॥ आदिह तीअरु दिदि
अंत सोई है अरु देवदत्त त ॥ लक्ष्मीका
प्रगटं देजे ते ॥ आदि न ते अरु अंत त ॥
॥ २५ ॥ तातें अरु दे ॥ गिरा दिने ॥ विदे ॥
मोदा कों ले ॥ जे ॥ ति ॥ को ॥ त ॥
॥ घटना मादि कामि ॥ जे ॥ र ॥
तिकौ म तो हरे ॥ जे ॥ जे ॥
तिसदा बंधा ॥ जे ॥ जे ॥
षे ॥ जे ॥ सत्य ॥ जे ॥
लघटा निमें ॥ जे ॥ जे ॥
नेद मिटा ॥ जे ॥ जे ॥

जां नै मोदि मिटावै नैद ॥ ३८ ॥ अरु त्यों ही
सब प्रगट लेखे सप्त धात के सब तन देखे
॥ अरु देखे उपजत विन संत ॥ यो प्रत द
विचारै संत ॥ ३९ ॥ अरु सत पुरुष नये दे
जेते ॥ तिन के वचन विचारै ते ते ॥ एकै
मतो सब नि को देखे ॥ जां नै मोदि नैद न
मलेखे ॥ ४० ॥ अरु त्यों अनुभव ह देखे विचा
रे ॥ चेतन राखि अचेतन डारै ॥ सब दे
खे चेतन आधार ॥ इंद्रिय देह विविधि
विस्तार ॥ ४१ ॥ चेतन ते जउ अर्थ निगदे
॥ चेतन विन कोई न दि र देखे ॥ यों वेदांत

री कथा सुनै अरु कहै ॥ प्रीति सहित उर अं
तर गहै ॥ ४६ ॥ पुजा मै अति निष्ठा धरै ॥
बहुत मांति अस्तुति बिस्तारै ॥ बंदन क
रै प्रदक्षणा देई ॥ अरु अष्टांग प्रणाम क
रई ॥ ४७ ॥ सब भूतनि में मो कों जानै ॥ प
रिमम जन मेरो तन मां नैं ॥ मम भक्तनि
कों जानै ॥ परिमम जन मेरो तन मां नैं
॥ मम भक्तनि को बहु बिधि से वै ॥ तन म
न धनति नही कों दे वै ॥ ४८ ॥ मेरे हेत क
रै जो करै ॥ मो बिन और सकल परिहरै ॥
मेरे गुणनि कहै उर धारै ॥ दूजी सब कां

मनां निवारै ॥४८॥ मेरे अर्थ अर्थ सब
ग ॥ सुष अरु नोग निति वैराग ॥ जपत व
ज्जोग व्रतदां न ॥ सयनासन जो जन ज
पां न ॥५०॥ इत्यादिक सब मम हित क
॥ जातें अंतर सो परिहरे ॥ सदा आप
मोहि निविदे ॥ प्रेम सस्त्र उर यां थिदि
दे ॥५१॥ औ सै जव मम भक्ति दिल दे ॥
वत्र व सेव कछु न दिरहे ॥ साधन सा
ल दे सो सकल ॥ काल कर्म ते होवें अ
ल ॥५२॥ जव मो बिषे चित्त को धारे ॥
तव कै साति कर जत मटारे ॥ धर्म

री कथा सुनै अरु कहे ॥ प्रीति सहित उर
तर गहे ॥ ४६ ॥ पुजा मै अति निष्ठा धरै ॥
बहुत नांति अस्तुति बिस्तरे ॥ बंदन क
रै प्रदक्षणा देई ॥ अरु अष्टांग प्रणाम क
रई ॥ ४७ ॥ सब भूतनि मै मो कों जाने ॥ प
रिम मजन मेरो तन मां नैं ॥ मम भक्तनि
कों ज्ञानै ॥ परिम मजन मेरो तन मां नैं
॥ मम भक्तनि को बहु विधि सेवै ॥ तन म
न धनति नही कों देवै ॥ ४८ ॥ मेरे हेत क
रै जो करै ॥ मो विन और सकल परिहरे ॥
मेरे गुणनि कहे उर धारै ॥ दूजी सब क

मनां निवारै ॥४८॥ मेरे अर्थ अर्थ यत्र यत्र
ग ॥ सुष अरु नोग निति वैराग ॥ जय नमः
ज जोग व्रतदां न ॥ सयुनासन जो जनक
पां न ॥५०॥ इत्यादिक सब मम दिन कर
॥ जाते अंतर सो परिहरै ॥ सदा आ
मोहि निविदै ॥ प्रेम सस्त्र उर गुंथि
दै ॥५१॥ औ सै जव मम न कि दि
वत्र व सेवक छु न दिरहै ॥ सा
लहै सो सकल ॥ काल कर्म तै दो
ल ॥५२॥ जव मो बिषे चित को
तव दै साति कर जत मटारै ॥५३॥

री कथा सुनै अरु कहै ॥ प्रीति सहित उर
तर गहै ॥ ४६ ॥ पुजा मै अति निष्ठा धरै ॥
बहुत मांति अस्तुति बिस्तरे ॥ बंदन क
रै प्रदक्षणा देई ॥ अरु अष्टांग प्रणाम क
रई ॥ ४७ ॥ सब भूतनि मै मो कों जानै ॥ प
रिमम जन मेरो तन मां नैं ॥ मम भक्तनि
कों जानै ॥ परिमम जन मेरो तन मां नैं
॥ मम भक्तनि को बहु विधि सेवै ॥ तन म
न धनति नदी कों देवै ॥ ४८ ॥ मेरे हेत क
रै जो करै ॥ मो बिन और सकल पारिद
॥ मेरे गुणनि कहै उर धारै ॥ दूजी सब क

मनानि वारै ॥४८॥ मेरे अर्थ अर्थ सब त
ग ॥ सुष अरु नोग निति वैराग ॥ जयत पज
ज जोग व्रत दां न ॥ सयनासन नोजन जल
पां न ॥५०॥ इत्यादिक सब मम दित करै
॥ जातें अंतर सो परिहरै ॥ सदा आप को
मोहि निविदे ॥ प्रेम सस्त्र उर गुंथि दिं न
दै ॥५१॥ औ सै जब मम नक्ति दित दै ॥ त
ब त्र व सेव कछु न दिर दै ॥ साधन साध
ल दै सो सकल ॥ काल कर्म तै दोवै अक
ल ॥५२॥ जब मो बिषै चित्त को धारै ॥
तब दै साति कर जत मटारै ॥ धर्म एषै

र्यज्ञानवैराग॥ इन कों सहजलदेवडना
ग॥ ५३॥ अरु जो मेरी जुक्ति न पावै॥ देह
गैह सौं चितलगावै॥ तब होवै रजतम
अधिकार॥ बधे अधर्म परै संसार॥ ५४॥
बंद्ध मुक्ति कों चितै कारण॥ बोरै चितचि
तई तारण॥ मो मे धारै मो कों लदै॥ नव
में धारै नव मे बदै॥ ५५॥ तातें धर्म जान
वैराग॥ ईस्वरता आदि कजि नाग॥ ते स
मस्त मेरे आधीन॥ तातें होवै मम ल्यो
लीन॥ ५६॥ सेवत मोहि सकल ए पावै
॥ मो बिन कोई निकटि न आवै॥ मेरी

भक्ति कहा वै धर्म॥ उद्धव दूजो सकल अ
धर्म॥ ५७॥ एक ब्रह्म दरसन सो जाना या
बिन और सकल अज्ञान॥ अरु उद्धव
हे वैराग॥ जो समस्त विषय निको त्या
ग॥ ५८॥ अरु ऐश्वर्य सिद्धि अणिमादि
॥ मम सेवक की सेवक आदि॥ ताते जे
मम सुराहादि आवे॥ ते ई भक्ति मुक्ति
षया वै॥ ५९॥ दोहा॥ ऐसे अदभुत वे
न जब॥ कहे कृपा कारि कृष्ण॥ उ
व जन हारि विकारि॥ कीन्ह
॥ ६०॥ उद्धव अवाच॥

एकरूणां करो ॥ ज्यों है त्यो सब विधि वि
स्तरो ॥ ज्यों तु मधर्म भक्ति कृत नाथ्यो ॥ ब्र
ह्म दृष्टि कों ज्ञान दि राख्यो ॥ ६१ ॥ अरु
वैराग्य दि क समुझाये ॥ मेरे सब संदेह मि
टाये ॥ त्यों ही सकल तत्व सो नाथ्यो ॥ दोइ अ
तनु दूरि करि नाथ्यो ॥ ६२ ॥ जम क दिए स
के प्रकार ॥ अरु त्यों क हो नियम विस्तार
॥ अरु सम कों नु को नु दम देवा ॥ कों नहि
मां अरु घति कों भेद ॥ ६३ ॥ कों न सर ता
अरु तप दांन ॥ कों न सत्य को रूठ वषां
न ॥ कों न त्याग को धन है ॥ ६४ ॥ कों न ज

जदक्षिणावरिष्ठ॥६४॥बलअरुदया
लानअरुसुष॥बिद्यालजासोभादुःष
॥पंडितमर्षगदस्पयंथ॥स्वर्गनरक
रुबंधुकुपंथ॥६५॥कौनदरिद्रकौन
धनवंत॥कौनरुपणकोईस्वरवंत॥
अरुइनतेउलटाहैजेती॥असमंअद
मआदिकसबतेती॥६६॥मोसोंदेवस
पाकरिकहौ॥राखेतत्वअतत्वादिदहो
॥यौंसुनिबहुउद्धवकीप्रक्षम तवबोले
हैयाकरिकक्षम॥६७॥श्रीभगवानकृत्
च॥हिंसारहितसत्यअमतेयं॥संगानि

वर्जितसबको देयं॥ लजामौन-आस्तिक
धीर॥ ब्रह्मचर्य-अरु समा-अजीर॥ ईश
एवा दसजमग है निवृत्ती॥ अरु त्यों द्वाद
सनितमप्रवृत्ती॥ सौचरकपटरहितध
र्मादर॥ जयतय-अरु ममपूजासादर॥ द्वा
॥ तीरथ-अटन-अतिथि कों पोष॥ गुरुस
वा-अरु दृढसंतोष॥ परउपकारहोमवि
स्तारै॥ मुक्तिमुक्तिचाहे सो धारै॥ ७०॥ स
मजोमोमें निष्ठाबुद्धि॥ दमदंडियनिग्रह
मनसुद्धि॥ जो दुःषनिउपजवि कोई॥ ति
नितेजा के दुःषनहोई॥ ७१॥ सकलस

है कछु मन न दिआ नैं॥ ता कौं न मन न लोपा
बधा नैं॥ जिह्वा इंदिय चंचल होई॥ तिनि ह
मों कों धारै सोई॥ ७२॥ दस अरु अं बला
कों न दिनु दे॥ तौ कों मेरो जन धाति कहे॥
भूत द्रोह त्याग सो दां न॥ भोगत जन सो
पन दिआं न॥ ७३॥ सोई सुरजो जी तै स्त
भाव॥ सोई सत्य सकल मम भाव॥ भो व
लाये वचन सो सत्य॥ मो लिन लै लै स
ल असत्य॥ ७४॥ कर्म सिमै जो दो क आ
ग॥ सो वद परम सो छ है अंग॥ सो
गत ह जै फल कर्म॥ सो धन इष्ट

धर्म॥७५॥ जज्ञस्त्वमेहों नदि आं न॥ सो द
क्षणा देइ म म ज्ञां न॥ प्राणायाम परम बल
दिये॥ जा करि बडो सनु मन ग दिये॥७६॥
भाग्य जो म म ऐ स्वर्ज दिये वै॥ चेतनि निज
नंद के आ वै॥ मेरी नक्ति एक य दलान जि
क्ति बिना सो सकल अत्मान॥७७॥ जाते
दमिटे सो बिद्या॥ उद्धव दूजी सकल अवि
द्या॥ लजा मां नि अकर्म न गहे॥ मम जन
ता कौं लजा कहै॥७८॥ निद के च न निरपे
क्षति रत्ना भा॥ इत्यादि क जे गुण ते सो भा
सो सुष जो सुष दुष अतीत॥ पुण्य न पा

उत्तमनदिसीत॥७६॥विषयनिकीइहाधुः
जांनों॥गुणसंपन्नआदिसोमांनों॥बंध
निकीजुक्तिदिजांनों॥ममजनपंडितता
बषानें॥८०॥अदंकारजाकैजगआदि॥
पनेकहैदेहगेहादि॥सोसमस्तभूरिषई
नों॥यातेऔरआंतिमतिमांनों॥८१॥जा
करिमोदिलहैसोपंथ॥जाप्रवृत्तिसोस
लकुपंथनितसंतोषीसीतलहृदय॥सा
तिवचित्तसखनिपरसर्दय॥८२॥इहै
गसुषकौमंडार॥नरकनिमेंतामस
धिकार॥सतशुभएकबंधुकरिजांनों॥

और सकल ई बैरी मानों ॥८३॥ सतगुरु ते
मेरो रूप जाँतै जी वत जै गढ़ कं प ॥ सतगुरु
बिना बंधु नहि कोई ॥ सतगुरु बिनु जो तै
सोई ॥८४॥ मानव तन सोई गढ़ काहिए
के प्रदे प्रदी कै रहिए ॥ सो दरिद्र जो तू
वंत ॥ छपण इंदियानि बस बरतंत ॥
॥ बिष यनि अनासक्त सोई स ॥ बिष य
बसते सकल अनीस ॥ इतनी प्रसन्न
मेतौ सौं ॥ जाजा बिधि तुम पूछी मो सै
॥ बिधि नैषे धु केल दूरा जे सें ॥ वि
निषेध कौं जौ लौं जाँ नैं ॥ ऊँच नीच व

अदनिमानें॥८७॥ सोयदसकलनवेधेजा
नों॥ अददृष्टिमें विधिप्रतिमानों॥ विधि
रुनिषेधै देषो॥ दहंतै परें तादि विधिले
षो॥८८॥ विधिनिषेध पसुमाननुमानें॥
पंडितकदेहदेनादिआंनै॥ तातें विधिनि
षेधभ्रमजानों॥ भैरौरूपसकलकरिमां
नों॥८९॥ दोहा॥ विधिनिषेधभ्रमजाननों
॥ ज्ञानकह्यो जबरहस्त॥ वेदबचनतबसु
मिरिकारि॥ उद्धवकीन्दीप्रस्त॥ ए०॥ इ॥
तिश्रीभागवतेमहापुराणेएकाद
वेश्रीभगवदुद्धवसंवादेजीषायांए

नाविशोध्यायः॥१६॥चौपई॥ १४५०॥उद्ध
वृज्जवाच॥हेप्रभुजीतुमकारुणंकरौ॥मे
रौयहसंसषपरिहरो॥तुम्हरीआजाकहि
एवेद॥ताहीमेंदीसतहेनेदे॥१॥विधिनि
षेधसोवेदवषांने॥ताहीतेंसबकोईमांने
॥तुम्हरीआजाक्योंभ्रमलेषे॥जातेविधि
निषेधनहिदेषे॥२॥अरुतेप्रगटदीसैदे
व॥विधिनिषेधकेबहुविधिनेव॥प्रग
टविधिवर्णआश्रम॥तिनिकेविविधि
मांतिकेधर्म॥३॥तिनिकेप्रगटफलमु
रगादि॥अबकौनहियदपंथअनादि

॥ अरु निषेध प्रगट प्रति लोम ॥ अं वृष्टादि
कजे अनु लोम ॥ ४ ॥ लोम निमेषं संकर हे जने
॥ अरु ति नि के कर्मो पुनि ते ते ॥ ति नि के क
ल प्रगट नर कादि ॥ क दे दु ते फल जाइन
वादि ॥ ५ ॥ जा के फल दि वेद ज्यों कहै ॥ ता
कों कारि नर त्यों ही लहे ॥ अरु त्यों द्रव्य दे
सवय काल ॥ प र्गट विधि निषेध गोपा
ले ॥ ६ ॥ अरु जो विधि निषेध नहि सत्य ॥
त्यों सुख अरु दुख फलों असत्य ॥ को ई स्त
र्ग नर क नहि जावै ॥ तौ वदु अम कारि वि
धि न करावै ॥ ७ ॥ अरु का कहिये

२॥ तुम्हरे वचन न आन प्रकार ॥ यद तौ कहै ॥
तुम्हरो वेद ॥ जाते बिधि निषेध के भेद ॥
॥ देव पितर मुनि मान वजे ते ॥ वेद न ग्रन व
रि देखे ते ते ॥ बिधि न षेधाति न के फल जां न
॥ अरु त्यों ही त्यों ते ऊगं नै ॥ ए ॥ सकल तु
म्हारी आजा मां दी ॥ ज्यों ज्यों था पे त्यों वर त
ही ॥ सो मिथ्या क्यों कहिए वेद ॥ याकों मो
दिवता वौ भेद ॥ १० ॥ द्वै बिधि वचन बटे सं
द ॥ वै है सत्य किं धौ प्रभु एह ॥ यद पूरण
देह मिटावौ ॥ एक मांति के वचन सुनावौ
॥ ११ ॥ या बिधि पर मजां न बिस्तारी ॥ अ

पनरचे जीवतिस्ता ॥ मु ॥ १ ॥ जीव
बांनो ॥ तब बोले प्रसा ॥ १ ॥
हौं ॥ तेरे सब संहति ॥ उह पर ॥ जीव
उपाइ ॥ कर्म ॥ भाति ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव
ज्यौ जा को देख्यो ॥ प्रसा ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव
कियौ विचार ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव
ती ते विषय ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव
क्रम सकल ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव
हरां ॥ ता ते वच ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव
धानि वेध ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव ॥ संहति ॥ जीव

कलज्ञानके कारण॥ ज्ञानलहते सकल
वारण॥ एतुमसिद्धब्रह्मकी ज्ञानों॥ ताते व
संदेह न आनों॥ १६॥ जिनि न ब्रह्म सुष ज्यों हे
ज्ञानें॥ ब्रह्म लोक लों डः ष करि मां में॥ ताते
न के उद्यम दहे॥ और सकल ताजि धिर दहे
॥ १७॥ तिन कों ज्ञान जोग आधिकार॥ धि
द्वे करणों ब्रह्म विचार॥ अरु जिनि विषय
डः ष नदि ज्ञानें॥ अरु तिन के उद्यम नाहि
भांने॥ १८॥ यरिम मगुण सुनिकारि सुष
ने॥ मेरो भजन न लौ करि ज्ञानें॥ ता कों भ
क्ति जोग अधिकारी॥ औ से ज्ञाने तत्त्व वि

चार॥१८॥ अरु जे विषय न के आधी न ति
के उद्यम सों लेली न ॥ कथा सुनन कों न हि
वकास ॥ अरु मम प्रीति न हो अभास ॥ २
॥ तिनि कों कर्म जोग अधिकार्इ ॥ इन तैं ओ
र न श्रेय उपाई ॥ एती न्यं भाषत हों तो सों ॥
रुचल चित के सुनियो मो सों ॥ २१ ॥ प्रथ
कर्म जोग विस्तारें ॥ विषई जीवनि कों नि
रें ॥ मेरे बहु विधि गुण विस्तार ॥ कथा
संग विविधि प्रकाश ॥ २२ ॥ तिन में प्री
न उष जै जौ लौं ॥ कर्म जोग न हित जिये
लौं अरु जौ लौं न बढै वैराग ॥ विषय नि

नमिटे अनुराग ॥ २३ ॥ तो लों कर्म जोग न दित
जे ॥ कर्म लिही करि मो कों न जे ॥ अय नें धर्म
दिथि रर दे ॥ कबहुं भूलि निषेध न गदे ॥ २४ ॥
॥ जज्ञ म हो छौ बहू विधि करे ॥ सकल कर्म
मदित विस्तरै ॥ मन तें इच्छा सकल मिटावै ॥
सो जन स्वर्ग नरक नहि जावै ॥ २५ ॥ ॥ औ सै ज
न भक्ति कों लदै ॥ तातें कर्म कालि माददै ॥
इव यद मां न व्रत न औ सो ॥ सकल सृष्टि में न
दातें सो ॥ २६ ॥ ॥ स्वर्ग नरक के बंधे या कों ॥ प
रि कों ही नही पावै ता कों ॥ ज्ञान भक्तिया
न करि लदै ॥ और सब निवारि न व्रज लव

दे॥२७॥जो औ सो मानव तन पावै॥सो समस्त
कांमनां मिटावै॥तजै निषेध सकल ईकर्म
॥अरु कांमनां हेत जे धर्म॥२८॥अरु किंदि
न दिवंछै नर देहा॥परम रतन नहि सोवै
दा॥जघपि बहु स्थौं नर तन पावै॥परि क
छ जांनादि कल रहवै॥२९॥मात पिता
मोई कुल लोग॥जांना मिटावै करि संजोग
षांन पांन आदि बहु साधै॥बालाप न ते ता
कों बांधै॥३०॥तातें जो लगि नां दी मरे॥तो
लगि जत न प्रथम ईकरै॥या तन कों
करि मांनै॥अरु पुनि ब्रह्मदांनि

३१॥ ताते जतन निरंतर करै ॥ सात्वधान तादि
दैधरै ॥ यातन में आसक्त न होई ॥ करै उपाइ
मुक्ति को सोई ॥ ३२ ॥ ज्यों पंक्षी तरु बासा करै
तामें प्रीति मां निमन धरै ॥ अरु ता वृक्ष दि
काटे कोई ॥ जिनि के हृदये दयानदि होई ॥ ३३
॥ वृक्ष संग जो पक्षी परै ॥ तौ तिन के बस के का
मरे ॥ परि जो प्रथम दि वृक्ष दि त्यागै ॥ काट त
दधि आप कृति भागै ॥ ३४ ॥ आपु दि औ सी
मांति बंचावै ॥ पीछें तहां रदै जहां भावै ॥ त्यों
ही नरतन तरु आधार ॥ आत्म पंथि कियो
आगार ॥ ३५ ॥ ता कौं निस दिन करै पहार

सदा निरंतरं वारं ॥ औसौ देवि धरे मन जास ॥
प्रथम दिव्यागेतरु को वास ॥ अर्ध ॥ मो मे आर
वसे रा करे ॥ ताते नदुरिन जन मे मरे ॥ आन व
तन मन सागर नावा ॥ मेरी कृपा दु ते यदु पा
वा ॥ ३७ ॥ जा मे गुर ये वर सुषदाई ॥ सा नु व
ल मे य व न स हाई ॥ तो हूं आपु दि जो न दि ता
रे ॥ ना व छो डि न व सा गर डा रे ॥ अचा ता को
आत्म घाती जां नो ॥ दू जो आत्म घात न मां नो
॥ अरु जो न व ते हो इ विरक्त ॥ दुष मय जां नि
न हो वै रक्त ॥ अर्ध ॥ खो स मस्त इं दि य व स व
रे ॥ मन निश्चल करि मो मे धरे ॥ जो न न

रत अचल न दोई ॥ तोहूं आतुर होई न सोई ॥
४० ॥ एक दिवारे न सकल निवारै ॥ क्रम क्रम
सकल उपाधि दिटारै ॥ कछु इक आसा पूरे
मन की ॥ हृदै धारै मूल मन न की ॥ ४१ ॥ दे
सोत जिव कहै त ॥ सावधान नित रहै सचे
त ॥ आगे फल की अवधि बतावै ॥ दुःषादि
इ बिरक्ति उपावै ॥ ४२ ॥ अैसें क्रम ही क्रम
मन धारै ॥ क्रम क्रम सकल बिकार निवारै
॥ इन्द्रिय गुण हृदै नही आनै ॥ स्वास जीति म
न की गति आनै ॥ ४३ ॥ मन जीत न को प
उपाई ॥ यातें मन गति जानी जाई ॥ जै सैं

बसतुरंगमहोई ॥ अस्वधारबसुहोइनसोई
॥ ४४ ॥ तबतापरचटि कै औसवार ॥ दठनदि
करै एकहीबार ॥ कहुदय कौं रुषसहितचल
वै ॥ पाछै देचाबुकदौरी वै ॥ ४५ ॥ औसीविधि
दय कौं बसकरै ॥ त्यों जौगीक्रमक्रममनधरै
॥ सांध्यविचारनिरंतर करै ॥ जाविधियद
जगउपजेमरै ॥ ४६ ॥ तत्त्वनिकीउत्तपत्तिवि
चारै ॥ ज्यों ज्यों बिनसेत्योंमनधारै ॥ सकल
उपाधिवरेकीदेखै ॥ आपुदिपरसकलते
वै ॥ ४७ ॥ याविधिजोलगिमनबस
गिकरैविचारहिसोई ॥ औसीविधिज

व्यविचारै॥ गुरकेवचनहृदैमैधारै॥ ४८॥ सब
सबदातेदोइविरक्त॥ मनघरमेंहोवैअनुरक्त
योगपंथजेअष्टप्रकार॥ अरुयहआत्मदेह
चार॥ ४९॥ अरुममप्रवणकीरतनध्यान॥
नजीतनकोपंथनआन॥ जोगरुसांध्यभक्ति
तानि॥ स्वपंथनिमैलानेबीनि॥ ५०॥ इतिते
थौनहीउपाई॥ जातेमनमोमेंवहराई॥ ताते
थौकछूनकरै॥ इनपंथनिमोकोअनुस
रै॥ ५१॥ अरुजौकदेपापदैआवे॥ सावधा
ताउरनरहावे॥ तौहूंऔरनकरैउपाई॥ सो
सोपापइन्हेंतेजा॥ ५२॥ औरकरैनांनविधि

जोई॥ सो सो अधिक अधिक मल होई॥ विधि
निषेध संबंही मल जां नों॥ कैट्टं कल्ल उत्तम मति
नों॥ ५३॥ विधि निषेध एकी नै दोई॥ जातें बंधे
रहैं सब कोई॥ भय ते बहु आरंजन करैं॥ अपने
अपने विधि आचरैं॥ ५४॥ तापी छैं सब बंध
जनां ऊं॥ करैं अबधे सकल छोटां ऊं॥ सकल
न त्यागे एक दिवार॥ तातें कीन्हें बहु परकार
५५॥ तातें विधि निषेध नहि करणों॥ सकल
त्यागि मोमें मन धरणों॥ विधि निषेध सब मि
थ्या जां नों॥ अरु भव सुष सब दुष करि मां नों॥
५६॥ परिसमर्थत जिबे कौं नांहीं॥ प्रव

न प्रगथौ न हि मांदा ॥ ता कों नक्ति जोग अधिक
र ॥ सह जे छूटै सकल विकार ॥ ५७ ॥ मेरी कथा
रंतर सुनै ॥ हृदै मां हि मेरे गुंन गुनै ॥ दृढ विस्वा
स हृदै मै राखै ॥ मेरे गुंन नां मनि नित नाखै ॥ ५८ ॥
यो जद्यपि विषयनि मेरे हृदै ॥ परि मन बचन
मत्पागे चहै ॥ सो नित नक्ति जोग सो न जै ॥ मोति
चिअंतराद्र सब तजै ॥ ५९ ॥ तंत्र पंथ पूजा वि
रै ॥ मम हित जो कुछ सो सब करै ॥ या विधि स
कल बासना नाखै ॥ मेरी रूप हृदै प्रकाशै ॥ ६० ॥
ताते ब्रह्म रूप मम जानै ॥ कैत ना व मिथ्या क
मां नै ॥ संसय कर्म नर्म नय नागै ॥ अहंकार त

जिसो व्रत जागै॥६१॥ जहां तहां मोही कों देखै॥
बिन और कछु न दिलेखै॥ अंसो कै मम रूप समा
वै॥ याही जन्म और न दियावै॥६२॥ तातें जाके
मेरी भक्ति॥ निसदिनु मम चरण नि अनुरक्ति
॥ जाके जघा पिनां ही जान॥ अरु नांदा बैराग सि
दां न॥६३॥ तौ हूं सो मो कों अनुसरे॥ अति दुस्त
र भव सागर तरै॥ वर्णाश्रम के धर्म निकरै॥ ब
हुत भानि तप कों अनुसरे॥६४॥ निसदिन
सांध्य ज्ञान बिचारै॥ गहि बैराग सकल गहि
डारै॥ साधे योग अष्ट परकार दान व्रतादिक
बहु परकार॥

वैं॥ ममजनके आधीन रहं वैं॥ मेरी भक्ति स
कल सिरता जा॥ जैसै सकल नरनि मेरा जा॥
६६॥ भुक्ति मुक्ति पलनहि परिहरें॥ ममजन
की नित सेवा करें॥ अरु जघपि में बहु विधि
कदं॥ भुक्ति मुक्ति कछु दीन्ही चहें॥ ६७॥ परि मे
रो नैज जनन दिले वैं॥ सकल त्यागि मम चर
ण निसे वैं॥ निरपेक्षता परम द्वै श्रेय॥ मो विन
सकल वस्तु को देय॥ ६८॥ निस्पृहता यह सुष
अपार॥ जहां न काल कर्म अधिकार॥ मैं नि
स्पृह निस्पृह जो हों दूँ मेरो भक्त कदा जै सोई॥
६९॥ मेरे समिल दया दे जा मैं॥ मेरो रूप जानि

तातेनिस्पृहतासुषत्रेसो॥सकलविषयेनाहीजे
युंतामें॥सबतेनिस्पृहनिताममनत्तामेंनिस्पृ
हतासोंअनुरक्त॥७०॥तंतेंनिस्पृहजनमेशीर
षयावै॥स्पृहावंतकेनिकटनआवै॥७१॥दीप
कंतनक्तहेंमेरे॥तिनिकेपुण्यपापनाहिनेरे॥
रागदोषविवर्जसमदरसें॥त्रिगुणातीतप्रत्य
कोंपरसे॥७२॥जोगभगतिअरुसांध्यतीनि॥
तान्योंएकेकहेंप्रबोनी॥इनकोंपायेंगींयांयां
येबिनपायेमोदिनआवै॥७३॥एसाधनहै
न्योंनीके॥इनबिनुओरनतारकीजीवै॥मम
धनहेंमेरीस्त्य॥इनतेंतत्तनओरअनप॥
७४॥मेरीगोपिरदसिदेजोग॥जीतत्रय

क्षिप्रसंजोग॥ छुटै सकल अविद्या भोग॥ व
लजाल नदिसंझौ रोग॥ ७५॥ एमेंतीनिपंथ
स्तारे॥ इनि द्वैवदुत जीवनिस्तारे॥ जेइजे
इनमें आवे॥ तेई ते मेरो पद पावे॥ ७६॥ त
॥ जेइ न पंथानि को त जैं करैं कर्म अधिकार
तिनि पसु जीवनि को कहै॥ विधिनिषेध
स्तार॥ ७७॥ इति श्री भगवत्ते महापुराणे
दशस्कंधे श्री भगवदुद्धवसंवादे भाषायां
पादत्रयनिरूपण नामाविंशोऽध्यायः॥ २
सकल्लोक ८८५॥ चौपई॥ १५२७॥ श्री
गवानं ऊं वाच॥ ज्ञान भक्ति अरु कर्म उप

इ॥ आयु मिलन कों दिखव ताई॥ परिजे अति दं
 पसु अज्ञान॥ इन कों छोड़ि करै कछु आन॥ १॥
 बहुत का मनाह दे धारै॥ तिनि हित बहु कर्म नि
 बिस्तारै॥ ते पसु दुःख निदंत र पावै॥ न व प्र व
 द मां ही बहि जांवे॥ २॥ तिनि हित विधि निवे
 ध उवा रे॥ तिनि के बहु आरंभ नि ना रे॥ अ प
 मो अ प नों जो अधिकार॥ तामें बरतै तजि दि
 ॥ ३॥ ऊँची नीची सब परिद रे॥ अपने
 प्रबु स रे॥ सो सोति नतिन कों
 धे जां नों॥ ता

मति देखो

बंधनलेखो ॥ उपजीवस्तु समस्त असुद्ध ॥ प
रिकदिनाषे सुध असुद्ध ॥ ५ ॥ क्रमक्रमसव
लक्षोऽं वनकारण ॥ मियदकीयो ॥ नेद उच्च
रण ॥ पापक्षो डायधर्मग्रदवा ऊं ॥ या विधि
दुआरं नक्षोऽं ऊं ॥ ६ ॥ यद समस्त जग को
योहार ॥ या ते जग को वार न पार ॥ क्षिति
जल ते ज पवन आकास ॥ सब जग पंच
त परकास ॥ ७ ॥ ब्रह्मादिकथा वर पर जं
॥ पंचभूत पं ॥ करि सब वर तंत ॥ अरुण
को आत्म सब मां दी ॥ ताते नेद कहू कछु न
दी ॥ ८ ॥ परितथा पि मै भाव्यो वेदे ॥ तां वि

रि कान्दं नां नां भेद ॥ तिनि के स्वारथ सुष के
त ॥ विधि उच्चार फल निस मेत ॥ ए ॥ दिस क
लगुणा इत्य सुभावा ॥ दू न के जा षे नां नां भाव
एक निषध एक विधि जा षे ॥ यों स को च
दिस वरा षे ॥ १० ॥ जौ ते दे स ह स्म मृ ग नां
अरु ज हं दि ज से वान करां ही ॥ अरु जौ
स्म मृ गो बं दुं र दे ॥ ११ ॥ परि अ से छ त हं
ग दे ॥ ११ ॥ अरु ज घा पि तु र को त हं
॥ परि म ग द र आ दि क नु के मां ही ॥
रु जौ म ग घा दि क परि द रे ॥ परि क द र ज
ता दूरि न करे ॥ १२ ॥ अरु क द र ज ता मे

होई परिजो होवै ऊसर सोई सो सो देस
निषेध कही जे तिनमें वासादिक नहि व
जे तिनिते और देस सुचि जां नें तिन
मांही वासादिक गं नें अरु जो काल ध
को नांही सुत क आदि भये जा मांही १४
सो सो काल निषेध कही जे उत्तम सो
जा में विधिकी जे बस्त्रादिक जलादि
क निषुध मूत्रादिक निते होवै हि असु
ध १५ सुद्ध असुद्ध बचन ते त्यों ही सुद्ध
ते पुष्पादिक यों ही तब ही पाक कस्यो स
सुद्ध बहुत काल को होइ असुध १६

कदिये भूमि मसान अशुध ॥ बहुत काल
होवें सुध ॥ भूमे जो बरवा जल दोह ॥ लिह
त काल ते सोधे सोई ॥ १७ ॥ जैसी जो लिखे
ऊं जानें ॥ सुध अशुध मेर पादि जे ॥ लिख
मान सुध वाला दिक् ॥ अशुध वाला दिक्
वा दिक् ॥ १८ ॥ जीरण बल अशुध जे
ध ॥ अशुध त को परम अशुध ॥ जो रस
लसक्ति अनुमान ॥ सुध अशुध दिक्
वधान ॥ १९ ॥ सो सब देह जल अशुध
विधि निषेध को कहै लिख ॥ जो
अशुध गज दंत ॥ लिख देह ॥

॥ २० ॥ कालाग्निजलमाटीबाई ॥ जप्ताजोगह्व
पुष्कराई ॥ अरुजोककुलग्यौदुर्गंध ॥ जौल
गिधोयेमिटैनगंध ॥ २१ ॥ तौलगिजांमिअसु
दनगहिये ॥ गंधगयेतेनिर्मलकदिए ॥ सति
अवस्थातपअस्नान ॥ संसकारसुभक्तम
दांन ॥ २२ ॥ ममसुमिरणतेंहोवैसुद्धि ॥ करे
न्यथाहोइअसुद्धि ॥ मेरोमंत्रलीयेविधि
नें ॥ मंत्रविद्वाननिषेधदिमांनें ॥ २३ ॥ अर्थ
मोहिसुद्धसबकर्मकरेविषर्जयहोदिअ
धर्म ॥ देसरुकालकर्मअरुकर्ता ॥ इव्यमं
त्रएषट्आचर्ता ॥ २४ ॥ एजोसुधतौहोइ

सुध॥ कहुं दोवै सुधि असुधि॥ कहुं असुधि जो
होवै सुधि॥ २५॥ सुधि असुधि मेदहें जो कें॥
राजदहू कों दै ता ता के॥ जो कदिए ऊंचे को ध
र्म॥ नीचे कों दै उदै अधर्म॥ २६॥ अरु जो क
धर्म नीचे कों॥ सो ईहें अधर्म ऊंचे कों॥ ता
ही तें दोऊ भ्रम जां नैं मेरो भक्त कदे नहि
मैं॥ २७॥ जो कबहुं बिष अमृत लीजे॥ लै
वे नीचे कों दीजे॥ तो तिन में तो नेदन होई
मरणों अमर एक समि होई॥ २८॥ यों ए
धिनिषध कर्म दोवैं ऊंच नीचे की और
जोवै॥ परिए दोऊ दै कबू नां दी॥

॥ २० ॥ कालाग्निजलमाटीवाई ॥ जप्ताजोगहै
सुद्धकराई ॥ अरुजोकछूलग्यौदुर्गंध ॥ जौत
गिधोयेमिटैनगंध ॥ २१ ॥ तौलगिजांनिअसु
द्धनगहिये ॥ गंधगयेतेनिर्मलकदिए ॥ सति
अवस्थातपअस्नान ॥ संसकारसुभक्कर्म
दान ॥ २२ ॥ ममसुमिरण
न्यथाहोइअसुद्धि ॥ मे
ने ॥ मंत्रबिद्वाननिषे
मोहिसुद्धसबकर्मक
धर्म ॥ देसरुकालक
त्रएषटआचर्ता ॥ २३ ॥

सुध॥ कदुं होवै सुधि असुधि॥ कदुं असुधि
होवै सुधि॥ २५॥ सुधि असुधि भेद है जाके।
राजदहू कौं है ता ताके॥ जो कहिए ऊंचे को
मनीचे को है उदै अधर्म॥ २६॥ अरु जो क
धर्म नीचे को॥ सोई है अधर्म ऊंचे को॥ ता
दाते दोऊ भ्रम जानें मेरो भक्त कदे न दि
में॥ २७॥ जो कबहुं बिष अमृत लीजे॥ ले
वे नीचे को दाजे॥ तोतिन में तो भेदन
मरणों अमर एक समि दोई॥ २८॥
धिनिषध कर्म दोवें ऊंचनी
जोवै॥ परिए दोऊ दंक

चारो अंतर मांदा ॥ २९ ॥ नीचे नीच कर्म आच
रें ॥ मदिरा पां नादिक अकरे ॥ तो हूं उन कों दूष
न मांदा ॥ नित ही है दूषण ही मांदा ॥ ३० ॥ अरु
जोग ही करतु है संग ॥ रितु के समय जुव ता
प्रसंग ॥ तो ता कों कछु दूषण मांदा ॥ सो नि
त है दूषण ही मांदा ॥ ३१ ॥ जैसे यस्थो धर
में कोई ॥ ता दिन परने को मय होई ॥ परि
कछु चट है अंचे ॥ संग करे ददि आवदि न
चे ॥ ३२ ॥ ता तेतिन को संग न करे ॥ मन न
मवचन संग परिहरत ॥ ज्यों ज्यों प्राणी ह्यो
डे ॥ कर्म त्यों त्यों छूटे पावे सम ॥ ३३ ॥ हे म

धर्मसबदिनकोएद॥ भेटैसोकमोदसंदे
द॥ यानिमितिमैभेदसुनाये॥ थोरैथोरैमै
दराये॥ ३४ पावैभ्रमकदिसकालनिवा
रे॥ औसीभांतिजीवनिस्तारै॥ जवनरवि
पयनिउत्तमजांनै॥ तबतिनिमैआसक्ति
दिवांनै॥ ३५॥ तातैहृदयजेकाम॥ ताने
तदांकलदकोधाम॥ तादीदुतेकांछउप
जावै॥ तबआविवेकआपुंदीआवि॥ ३६
॥ सोआविवेकदरेसबज्ञान॥ ननेडाग
भक्तकसमान॥ तातेकाजअकारुदरे

निसदिन बह्विध चिंता लोभे ॥ ३७ ॥ सब
पार्थी दो वें हीन ॥ निसदिन रहै दुषित अति
हीन ॥ तातें समुझै आपुन आन ॥ मिथ्या जीवै
समांन ॥ ३८ ॥ ज्यों दो वें लोहार के पाल ॥ स्व
सलेत यों यों वै काल ॥ अरु पुनि कर्म फल दिजे
ते ॥ स्वर्ग दिक्कानां विधिके ते ॥ ३९ ॥ ते ते का
करि रुचि उपजाए ॥ मेदिनि घेघानि विधिक
वाए ॥ जे सै औषध कुट कपि वै ए ॥ बालक के
लाड देषए ॥ ४० ॥ औषध को फल लाडना
ही ॥ औषध दुते रोग सब जांही ॥ स्वर्ग है ते

जौ कर्म निकरै॥ पुनि सुनित त्व फाहिल परि
दरै॥ ४१॥ तब अनर्थ तजि अर्थ दिपावै॥ मे
मे कै निब कर्म समावै॥ अरु रज बतें जनम
दिपावै॥ तब तें आयु दिविषय कमावै॥ ४२
॥ पुत्र कलित्र कुटुंब रुघांना॥ इन के हेतव
दें सुषणांना॥ आयु आयु कों करै अनर्थ॥
तिन कों मूरिष जानें अर्थ॥ ४३॥ ओ सेयानव
मै नित भ्रमै॥ कदे न जानें सुष के मर्म॥ अरु
तिन कों जो भ्रम त देखै॥ सदा निरं
त लेवै॥ ४४॥ सो तिन कों कब हं न बटा
अर्थ रुको मन कदे डटावै॥ तातें मै तो

वविधिजांनों॥कैसेकर्मरुकांमवषांनों॥४५॥
परिजेककुश्रुतिमांदिमुनाए॥अर्थधर्मअ
रुकांमवताए॥तेतेसकलछोडावनंकार
॥दितविचारिकीन्दोऊचारण॥४६॥ऐसे
वेदतत्वनदिजांने॥भूरिषयुष्यतवेनवष
में॥फलनदेतआरभैकर्म॥तिनकोकदे
छूटेनर्म॥४७॥कांमीछपणलोभअधिका
री॥तत्माअकुलसदाबिकीरी॥फूलदिम
दिफलदिकारिमांने॥कांमनिलागितत्वन
दिजांने॥४८॥भौतिनकेनितहृदेमांही॥प
रितोहंतत्वजांनेनांदि॥जातेप्रहसवज

गतपसार॥ अरु समस्त जाकी आधार ॥
धृष्ट॥ जाकी सक्ति पाइ सब बरतैं॥ चं वु क सं
गलोद ज्यों नरतैं॥ जाकी आज्ञा सब दी मानैं
॥ की ई मरु जादान दिमानैं॥ ५०॥ ओ सो मे
प्रगट सब ई स जे सैं सकल देह में सी स॥
परिते काम कर्म तम अंध॥ ना मोहि देखै अ
रु न दिखें ध॥ ५१॥ जे सैं नयन राग मय होवैं
॥ आगे होती बस तु न जोवैं॥ यों अज्ञान अ
ध कर्मिष्ट॥ देखैं न होनि कंठ में दृष्ट॥ ५२॥
ते मो बिनु मम मतो न जानैं॥ हनि जीवनि
जज्ञादि कहां नैं॥ ते फिरिति नृह नैं धर

क॥ जनमजनमयावैनय सो क॥ ५३॥ जव
वा के बहुदि सा देषी॥ हानि हानि जी ब्रजी॥
का पेयी॥ तिनि के देत कही यदबांनो॥
साजजदि मां दि बंधांनो॥ ५४॥ पसु बंध
कजज में नाथ्यो॥ और समस्त दूरि करि
व्यो॥ जब प्राणीता में बहरावै॥ तेब पुनि
बैदे सकल मिटावै॥ ५५॥ यांति माति प
दिसा नाथी॥ सो मूरिष नित त्व करि रा
॥ तातै बहुविधि कर्म नि करै॥ बहु कां
ना हदै में धरै॥ ५६॥ पसु हिंसा करि क
बिहारा जे जे पावै बहु परकार॥ देव पि

विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु
कञ्जगवने ॥ श्री कोइ साधन ॥
जावे ॥ धनदितगदके धनदितगदके
॥ पावै परे विष्णु जे कोइ ॥ सोइ मोहि
वै सोइ ॥ सो जे बदा विधिकर्म ॥ सो
पसुदह्लोक ते जावे ॥ ६० ॥
स्वनिमजै ॥ जहा दिक्कगजमी ॥

समस्तप्रेतबुद्धसेवै॥ तनमनधनतिमति
नकोदेवै॥ ६१॥ इद्रांजजबहुतविधिव
जें॥ विप्रनिबहुतदिक्षिणां दीजें॥ तातें
स्वर्गादिवापेण॥ तहांबहुतविधिभोगभ
गेण॥ ६२॥ पुनिजबहोवैतिनकोअंत॥ त
बहुजेनुवमंधनवंत॥ ऐसीनांतिकांम
नाकरै॥ तिनिनिमित्तिकर्मनिबिस्तरे
॥ ६३॥ तिनकोमेरीबातनभावे॥ नरक
कुहांतेहूदेआवे॥ जघपिवेदकर्मउच्च
रै॥ धर्मरुअर्थकांमबिस्तरे॥ ६४॥ प
रितथापिब्रह्मईवतावे॥ क्रमक्रमहू

जेसकलछोडांवे॥ परिछुतिको आसय
नदिजांने॥ तेकछुओरेओरबषांने॥ ६॥
॥ सद्यसमहाडुबोध॥ जाकोकोईल
देनसोध॥ सूक्ष्मयूलरूपदेवाके॥ मो
बिनमेदलदेकीताके॥ ६६॥ प्राणस्वरू
परसेनांम॥ पसंतीकोमनमेंधांम॥
जीकंवमध्यमामूल॥ चौथीप्रगटवेष
यूल॥ ६७॥ मेदतीनिकोकोईनजांने।
तातेओरेओरबषांने॥ अंतपारकोई
दिपावे॥ ज्योसायबयाह्योनदिजावे॥
६८॥ अतिगंभीरअर्थदेयाको॥ कोई

मेदन जानै जाको ॥ मैं सब दिन मैं अंतर जा
मी ॥ सक्ति अनंत सकल को स्वां मी ॥ ६८ ॥
सर्व व्यापक ब्रह्म स्वरूप ॥ लिप्त न कत हूं
परम अनंत ॥ सोई व्यापक सब दिनु मां ॥
॥ स ए रूप द जा को नां हि ॥ ७० ॥ कमल ना
ल में तां तं जै मैं ॥ स ए रूप सब मैं मैं ओ मैं
॥ सोई प्रगटो बहु विस्तार ॥ मन कारि ह
दय दुते मुष द्वार ॥ ७१ ॥ ज्यों म करी तं तू नि
विस्तार ॥ करि विस्तार बहुरि संहारे ॥ वे
द रूप त्यों म म विस्तार ॥ वी ऊं कार मूल
कार ॥ ७२ ॥ ताते अक्षर बहु त प्रकार ॥ ति

न ते छंदवार नदियार॥ चारि चारि अक्षर
धिको हो॥ छंद दो त असी विधि जां हो॥ ७
॥ एक दु ते वौं हो दि अनेक॥ बहु स्यो संक
एक के एक॥ गाइत्री अक्षर चौबीस॥ उल्लि
क छंद अष्ट अक्षरी स॥ ७४॥ जो बती स अ
नुष्टय सो है॥ दहती नाम तीस षट को है॥
ति नाम अक्षर चाली स॥ त्यों ही त्रिष्टय चौ
ली स॥ ७५॥ जंमती छंद अष्ट चाली स॥ क
त पार नदिको टिबरी स॥ या विधि प्रगट
बेद बिस्तर॥ जाको कछू वार नदियार
॥ ७६॥ कहा हृदय में कहां बतावै॥ ले

रिसकल अंतवदरावे ॥ ॐ सोमतीनजामे
कोई ॥ मोविनुभावे विधि किनिदाई ॥ ७७
जजरूपकादिमोकोराषे ॥ सकलदेवम
यमोकोभाषे ॥ मेरेदेतकर्मकरजावे ॥ म
तेउपज्योसकलवतवे ॥ ७८ ॥ अंतसक
लकोभाषेनास ॥ मोकोकादेनित्यपरव
स ॥ नांनारूपनिवृथाजनावे ॥ एकव्रस
दिसकमुनावे ॥ ७९ ॥ जेसैसांपजेवरी
दी ॥ योसबजगतवतावेनांही ॥ मोकोनि
जनभाषे ॥ अंजनसकलदूरिकरिनाषे
॥ ८० ॥ तातैश्रुतिनितमोदिवतावे ॥ परिय

तत्त्वनकोई पावे ॥ सो पावे जो मम आधीन
है निहं काम दोइ लै लीन ॥ ८१ ॥ यों सुनिक
रि श्रुति तत्त्व कों ॥ उद्धवल ही अंनंद प्रस
करी पुनि कृष्ण सों ॥ जाते वृद्धे दंद ॥ ८२ ॥
इति श्री भागवते महापुराणे एकाशस्कंधे
श्री भगवद् उद्धव संबादे ॥ भाषायां वेदस्य ब्र
ह्म परतत्वावृत्तिस्तु एतानां मयैकविंशोऽध्या
यः ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ १६ ॥ १० ॥ उद्धव ऊवाच ॥
हे देव स तत्त्व है कैते ॥ कहौ कृपा करि मो सों
तेने ॥ जिनि को रचित सकल संसारा ॥ जो
सैनांना विस्तारा ॥ १ ॥ तुम तो अष्टाविंशति


कहे ॥ तेमें दृढ करि मनमें गढ़े ॥ परिवद
नें रिषिवद विधि कहे ॥ अरु तिनि तें सुनि
त्यों दी गढ़े ॥ २ ॥ कोई कहे तत्त्व छबीस ॥ अ
रु त्यों कोई कहे पचीस ॥ केई षट अरु के
ई चारि ॥ केई नाथें सप्त विचारि ॥ ३ ॥ केई
नव को करे विवेक ॥ केई नाथें दस अरु
एक ॥ केई तत्त्व बतों वैषोडस ॥ अरु त्यों
एक कहे त्रियोदस ॥ ४ ॥ केई नाथें दस अ
रु सात ॥ एरिषि मृत सुमृति विष्यात ॥
कौन प्रयोजन लैले नाथें ॥ अपनें अप
नें मत दिशे ॥ ५ ॥ कृपा करो निज बे नय

नमो नमो नमो नमो नमो नमो
नि उच्चैर्देवैर्नरैश्च ॥ १ ॥
ले यो यालादिसर्वं ॥ २ ॥
वृज्यो ज्यो सब सवि ॥ ३ ॥
रावे ॥ ते ते सब तु य ज नो य स र स वि स
सबै असत्य ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ते ॥ माया मां हि सत्यं देते ॥ ५ ॥
ति न कौं देये ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
माया मां दे ज्ञं हि विचार ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥
नो म सौ उच्यते ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दी ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यद्योंदा हैं ज्यो में भायों ॥ तेरा कही सति न
दिं रायों ॥ या विधि मम माया नर माये ॥ ति
निति निनां नों विधि पंथ चलाये ॥ १० ॥ मम
माया की सक्ति अने त ॥ तिन के पंथ न को न
दि अंत ॥ जव समद मउर अंतरि आवे ॥ त
ब ए भेद सकल मिटि जां वै ॥ ११ ॥ जे ते तत्व
कल माया के ॥ जित ने भए मते ता ता के
क्रम क्रम तत्व उपज ते गए ॥ त्यों त्यों भेद ब
हुत विधि नए ॥ १२ ॥ जे से एक वृद्धि विस्तार
॥ ता की संयाति बहु प्रकार ॥ कछु साया व
ते पर साया ॥ अरु तिन के बहु विधि उप

या ॥१३॥तिनकोबहुतजांतिविस्तार॥पांन
फूलफलबिबिधप्रकार॥अरुतावृक्ष
वरणोकोई॥ज्योंज्योंकरेंसत्यत्योंहोई॥१
थोरहोंहिकहैंजोसाया॥बहुतहोंहिमि
येप्रसाया॥उयसायामिलिबहुविधिहो
तैसबयंथसतिसबजोवै॥१५॥योंसंसार
हविस्तार॥मायामूलबहुतप्रकार॥तत्व
कलसायायरसाया॥अरुतिनकेबहु
उयसाया॥१६॥तातैंज्योंवरणोंत्योंसत्य॥प
रिसबमायासकलअसत्य॥ज्योंहीज्योंजि
केमनआयो॥त्योंहीत्योंतिनवरनिसुना

॥ १७ ॥ मायाकरिवंध्यो सो आत्म ॥ तातें द्योरे
सो पर आत्म ॥ एहे अरु जउ ते चौ बीस ॥ तिन
मिलें सकल छ बीस ॥ १८ ॥ अरु जो बंध मुक्त
होई ते अममाया सतिन कोई ॥ तातें जीव
ब्रह्म हे नां ही ॥ यों पचीस जां नो मन मां ही ॥ १९ ॥
॥ सतर जतम एगुणं हे जे ते ॥ जउ रूप माय
ते ते ॥ रजउ तपति सातिक प्रतिपाल ॥ तां म
रूप ग्रसत हे काल ॥ २० ॥ रजदु ते कर्म अधि
कार ॥ तं म ते अविवेक अपार ॥ सातिक गु
ते उपजे ॥ जां नां ॥ एहे माया के गुण नां नां
२१ ॥ इन तें परे आत्मा मां नों ॥ तातें ब्रह्म रूप व

रिजांनों॥ पंचवीसताहीतैं कहें॥ अरु सों दो
निऔ रों गहें॥ २२॥ सो है काल गुण निबिस्ता
॥ सूत्र स्वभाव  दिंय सारे॥ तातैं काल
रूप दरिजांनों॥ अरु स्वभाव महत त्व दिंमा
॥ २३॥ तातैं तत्त अधिक नदि गदिए॥ पंचवी
छवी सैं कहिये॥ प्रकृति पुरुष महत त्व अदं
र॥ तन मात्रा ते पंच प्रकार॥ २४॥ कारण रु
चा नयनर सद्धान एष चौं इंद्रिय हैं ज्ञान॥
यु उय स्थ चरण करवानी॥ पंच कर्म इंद्रिय
ज्ञानी॥ २५॥ मनद सहें इंद्रिय कौरा जा॥ जा
की सक्ति करै सब काजा॥ क्षिति जल ते

न आकाश अगई सती निगुण पास ॥ २६ ॥
उत्सर्ग कर्म अरु बचन ॥ एषं चैवं इंद्रिय फल
चन ॥ ताते अष्टाविं सति तत्व ॥ अवि कन
षे ज्ञानी सत्व ॥ २७ ॥ सृष्टि आदिता माय एक
रुष सक्ति तेन य अनेक ॥ तन मात्रा रुम दत
अदंकार ॥ एदे कारण सप्त प्रकार ॥ २८ ॥ यं
भूत अरु मन इंद्रिय दस ॥ कारज रूप प्रकृ
षोडस ॥ सतरुज तम गुण ती निप्रकार ॥ ति
तैरच्यौ सकल बिस्तार ॥ २९ ॥ कारण कर
प्रकृति एजां नों ॥ पुरुष निमित्त रुसाषी मां नें
इच्छा सक्ति पुरुष ते पावें ॥ मिलि समस्त सब

ष्टिउपायै॥३०॥सप्तधातको सब बिस्तार॥आ
त्मदृष्टाकी आधार॥सकलतत्वसप्तदिमें आ
ए॥तातें एकनिसप्तवताए॥३१॥पंचभूतआप
दीउपजाए॥तिनि के बहुविधि देह बनाए॥आ
पुष्यवेसकीयोहरितिनमें॥चेतनिदीसतहैंजिन
जिनमें॥३२॥ऐसीविधिषट्को बिस्तार॥आ
पुमादिवहुकरे बिचार॥एष्टीआपतेजत्रय
तत्व॥अरुआत्मनमतसबसत्व॥३३॥यावि
धिचारितत्वबिस्तार॥ऊंचौनीचौसबसंसार
॥पंचभूततनमात्रायच॥पंचेंइंद्रियमिलिष्य
यच॥३४॥मनआत्मा मिलेंदससात॥तत्व

सप्तदसजां नौतात ॥ मन आत्मा एक करि जां
तेज नषोडसतत्त्व बंधां नै ॥ ३५ ॥ पंचभूत अरु
द्रिय पंच ॥ त्रय जीव मन को पर पंच ॥ औसी
धिकारि पंथ चलावे ॥ तेरह को सब जगत ब
ंध ॥ ३६ ॥ इंद्रिय पंच पंच भूत ॥ आत्म मिलि
सब जग उदभूत ॥ औसी विधि एकादस कहे
॥ त्योंही त्यों सुनिह दे गहे ॥ ३७ ॥ पंचभूत मन
बुद्धि अहंकार ॥ आत्म मिलिन त्रको विस्त
र ॥ औसी विधि बहु मारग कहे ॥ जुक्ति बिच
रिह दे भै गहे ॥ ३८ ॥ प्रकृति पुरुष को लहो
वेक ॥ इनको जां नि एक को एक ॥ औसी सु

नितत्त्वनिर्कोजान ॥ उद्धवपुच्छोपरमसुजां
न ॥ ३६ ॥ उद्धव उवाच ॥ हे प्रभू जीयदज्ञान
सुनावो ॥ मेरे उरवैनरमहिमिटावो ॥ चेतन
ज्ञानरूपअविनासी ॥ सुखानंदपरमपरका
सी ॥ ४० ॥ ओ सो आत्मतुम्हारे रूप ॥ परे गुण
निते परमअनुप ॥ जडविना समय परमअ
सुख ॥ दुःखरूपयत्नदसुषनसुख ॥ ४१ ॥ ओ
सी प्रकृतिपुरुषतैन्यारी ॥ तोहं नई परमपर
प्यारी ॥ प्रकृतिमांदिआत्ममिलिरह्यो ॥ अ
रुआत्मा प्रकृतिकारिगह्यो ॥ ४२ ॥ इनमैमै
दनजांन्योपरै ॥ एकमेकद्वैसबअनुसरै

इनमें प्रकृतिक दां लों का दिये ॥ कों न आत्मा
दिट्कारि ग दिए ॥ ४३ ॥ करि करुणां वाणी वि
स्तरो ॥ वचन बां न सं सय परि दरो ॥ तुव माया
धो संसार ॥ तुम ही दुं ते हो उद्धा ॥ ४४ ॥ तुम
माया की गति जां नों ॥ कृपा करौ तब तुम ही
नों ॥ बां नी सुनी भक्त अयने की तब बोले श्री कृ
ष्ण विवे की ॥ ४५ ॥ श्री न गदा न ऊ वाच ॥
हे उद्धव यद जां न अगाध ॥ कोई एक ल है म
म साध ॥ सो यद जां न सुनां ऊं तो दि ॥ तु हे स
अन ब्रत मो दि ॥ ४६ ॥ उद्धव प्रकृति रचे सं स
र ॥ सहस्र मथूल त विविधि प्रकार ॥ उपजे ब

ते हो इबिनास॥तामै आतमानित परकोस॥
॥३३॥ वयददे मेरी माया॥तिनि सँरजत मगुण उप
जाया॥तिनि को त्रिविधि सकल विस्तार॥ जा
कछु वार नदि पार॥४॥ त्रिविध कदन कौं पा
बहु भेद॥ जिन तें जीव लेहे नित षेद॥ अध्यात्म
अधिदैव अधिभूत॥ त्रिविध रूप सब जग उ
दभूत॥४॥ दग अध्यात्म रूप अधिभूत॥ व
वि अधिदैव तमिलि अदभूत॥ तीनों मिलें य
र स परज वही॥ तिन कौं कारिज सी सँत वही
॥५॥ तीनों विना कछु नदि दोई॥ तीनों मि
परतै सब कोई॥ त्वचा स पर स पवन त्यों जो नै

करणरुसद्दिसायोंमोंनों॥५१॥नासांगध-
स्विनीसुता॥जिह्वा रसरुवरुणजलजुता॥चि-
चेतनांअंतरजंमी॥बुद्धिवोधनांब्रह्मास्वांम-
॥५२॥अहंकारअहंकरतारुद्र॥मनमांविब-
देवताचंद्र॥श्राविधित्रिविधिप्रपंचपससा-
॥सकलपरैआत्मनिजसारा॥५३॥इनतीमै-
नजगतनहोई॥तेआत्मबिनरहैनकोई॥
दिसकलकीआत्मएक॥जातैंचेतनहोंहि-
नेक॥५४॥सुप्रकाशआत्मअविनासी॥चे-
नरूपसकलपरकीसी॥एसबआत्मकेअ-
र॥अरुआत्मासकलकेपार॥५५॥बिनं

त्मां कवच नदी होई ॥ अरु आत्मां न जं नै कोई ॥ मह
तत्त ते उपेज्यो अहंकार ॥ तिहं गुणानि को त्रिनिधि
प्रकार ॥ ५६ ॥ सो अज्ञान मूल करि मां न्यौं ॥ ता को क
यो जगत भय जं न्यौं ॥ सो आत्मा आप गहिलि यो ॥
भव नय आपु आपु को किं यो ॥ ५७ ॥ आत्म सद
एक ई रूप ॥ अहंकार ते परे अनूप ॥ सो जब
रूप आप नौ जं नौ ॥ तब ही सकल उपाधि
दि मां नै ॥ ५८ ॥ सो कवच है ए न ही उपाधि ॥ ५
रि आत्मां लई करि व्याधि ॥ समु में जब
प नौ रूप ॥ तब आत्मां तजे भव कंप ॥ ५९ ॥
अरु तब रूप आप नौ जं नै ॥ जब भव च

हृदैमें आनें ॥ जद्यपि निष्ठा सब संसार ॥
कलुदासे विविधि प्रकार ॥ ६० ॥ परिजो लें
नदी मो को भजे ॥ तो लो निज अज्ञान मत जे
जब दी मेरे सरणादि आवे ॥ तब दी आत
ज्ञान दी पावे ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ ऐसे आमुष वें
सुनि ॥ प्रकृति पुरुष को ज्ञान ॥ उद्धव क
न्दी प्रसन्न तब ॥ हरिजन परम सुज्ञान ॥ ६२ ॥
॥ उद्धव ऊवाच ॥ ॥ तुम करि रदित व
दि हैं जिन की ॥ कहिए देव कौन गति
न की ॥ सकल बियापी आत्म एक ॥ केय
करि पावै देह अने का ॥ ६३ ॥ अरु सुभज

सुभकर्म है जेते॥ त्रिगुणरचित कहें सब तते॥
तिनि कर्म है॥ निनिद करम बंधावै॥ क्यों का
जो निअ जो नीयावै॥ ६४॥ अमर मरै कैसे क
देवा॥ या को मोहि बतौ नवा॥ यद तु म बि
ना न कोई जानौ॥ जद्यपि बिद्या वेद बषा न
॥ ६५॥ जो कछु पढे बंध सो होई॥ तातैं तत न ज
ने कोई॥ या बिधि उद्धव पुछ्यो ज्ञान॥ तब दा
बोले श्री भगवान॥ ६६॥ श्री भगवान उवाच
॥ उद्धव यद मन परम विकारी सब इंद्रिय
निमांदि अधिकारी॥ इंद्रिय न दै मन ई सब
करै॥ सुषदित बहु उद्यम विस्तरे॥ ६७॥

तनजावे॥ तदा इतदा आत्मा आव॥ जनजा
तनतजिरे॥ जनसुषनसुनें अरु देखें॥ तिन
नकों उतिम करिले वै॥ ६८॥ तिनकों सो मननि
दिनु ध्यावे॥ वदतनही नमये तदा जावे॥ वदत
याइ बि सारै याकों॥ जनममरण कदियतु देखें
कों॥ ६९॥ जातनमें बाधे अनिमान॥ छोड़ि
वतन जो आन जनममरण आत्मकों सो
दूजो जनममरण नदिकोई॥ ७०॥ जे सें स्व
मेनो रथ जावे॥ यदतन छोड़ि ओरई पावें
तव यातन की सुधि न रहै॥ वादी तनकों अ
पुदिकहै॥ ७१॥ जनममरण समुतिकों
ई॥ आत्मजनममरण है सोई॥ और क

आत्म नदिमये॥ अरु कबहुं नांही अवतरे
॥७२॥ यों न नेमै मन को अभिमाना॥ ताते त
न उय जत है नां नां॥ ते सब आत्म के आधा
रा॥ तन मन बुद्धि चित्त अहंकारा॥७३॥ ति
न संगति आत्म को दुष॥ ति नू दित जे विन
पल नहि सुष॥ उद्धव सकल देह दे जे ते॥
सदा सकल विन सत है ते ते॥७४॥ काल न
दी प्रवाह प्रचंड॥ ता करि पल कपर तन दि
षंड॥ जे से नदी निरंतर बहे॥ परि देष न को
ही रहै॥७५॥ अर ज्यो अर्चि निरंतर जावे॥
परि दायादिकति मै रहवे॥ अरु जे से सब

वृक्षानिकेफल दी सैं तौ परिधिर नां दी पल
॥ ७६ ॥ तौं ही सब देहनि कों जां नौ ॥ काल य
स्तानिरंतर मां नों ॥ ज द्यपि अवस्था जाती
वै ॥ बाल कुमार जुवादि क देवै ॥ ७७ ॥ पति
तौ हूं मुरिषन दि जां नें ॥ में वद ई दी यों कानि
मां नें ॥ यह आत्म सो सदा अजन्मा ॥ देह सं
ते पावै जन्मा ॥ ७८ ॥ अरु तौं अमरि जां
॥ देह संग मरतौ सो मां नों ॥ जै सैं अग्नि दारु
संगा ॥ सदा लहै उत पति अरु नंगा ॥ ७९ ॥
लगितन की संगति रहै ॥ तौ लगि आत्म अ
दुष सहै ॥ गर्भ प्रवेस वृद्धि अवतार ॥ बाल

अवस्था तथा कुमार ॥ ८० ॥ जीवन मध्य ज
अरु मरणा ॥ नव अवस्था देह आचरणा
आत्म एक रूप सब दिन में ॥ कबहुं न दीलि
पेति नति न मे ॥ ८१ ॥ ऐसे जानि मुक्त तब होई
॥ मेरो सरणागत जो कोई ॥ अयनों दादो पि
ता बिचारै ॥ तिनको मरणों उर में धारै ॥
८२ ॥ नाई औ अव में अनुरक्त ॥ तौं हो ते ऊत
आसक्त ॥ ते तो प्रगट काल वस नये ॥ परव
स पर छोड़ि सब गये ॥ ८३ ॥ मेरी यौं दै दे गति
ऐसी ॥ भई बाप दादे की जैसी ॥ अरु मेरे अव
बालक जैसे ॥ दम द्रुक्ते पिता के तेसे ॥ ८४ ॥

सकल अवस्था सब मम गर्ई ॥ यदलो प्रगट
औ रई भई ॥ याही विधि जै है सब देह ॥ सब
वदे पुत्र धन ये है ॥ ८५ ॥ यों उर मै बदे नांति
विचारै ॥ अपने बंधन सकल निवारै ॥ देह
दिक सब संगति तजै ॥ सदा निरंतरि मो कैं
भजै ॥ ८६ ॥ बीज जनम पा कै ते अंत ॥ ये तीषे
मां द्विबर तंत ॥ ये ती कर न हार सो न्यारा ॥ ८७ ॥
तन न्यारै करै विचारा ॥ ८७ ॥ कर्म बीज विस
रै नांही ॥ दग्ध करै जे हैं तन मांही ॥ तन ते अ
पुहिं न्यारै जां नैं ॥ संग करै ते सुषुष मानै ॥
८८ ॥ ताते तन कौ संग निवारै ॥ या विधि आ

आपुकोंतारै जीतन न्याये आपुन जानें त
सुषहेतकर्मबहुगंनै ६६ तिनतेंनांनोदेदनि
पावै तिनदीजनामिजनाममारजावै कातव
तेंसुरकैरिषिहोई राजसनरकैदानवहोई
॥६७॥ तामसपस्यादि ककैनृत याविधिनि
गुणजगतउदभूत जहापिआत्मसदाअनी
ह॥ कबहुं कहुनकरै समीह ६९ परितव
करताहोई सगुदोषबंधतुदैसाई जैसैना
वैगावैकोई तिनकोईजोदृष्टाहोई ६०
योंत्योंआपादिवैवेकरै तानतालरागादि
रधरै त्योंमायागुणकर्मनिगंनै आत्म

करै आपु कों मानै ॥ ८३ ॥ तिनही कर्म निबंछें
पु ॥ जो कछु करै होइ सब पापु ॥ तिन कों जा
त जैन ही जौ लों ॥ जनम मरण दुष मिटै न तो
॥ ८४ ॥ अल प्रवाह टि गवाटो कोई ॥ तट वृक्ष
देखै चल सोई ॥ नयन भ्रमत ज्यों कोई देखै ॥
सब धरणी भ्रमती लेखै ॥ ८५ ॥ जै से यद अ
थिर जां नों ॥ और सकल चंचल करि मानै
निश्चल मन करि देखै जब ही ॥ निश्चल ब
रूप सब तब ही ॥ ८६ ॥ जै से स्वप्न मनोरथ
पायो सब जगत अरु विषया सखा ॥ परि
घापि जग सत्य न कोई ॥ तौ हूँ कदे न वर्त्तन

३ ६७ जैसे स्वप्न मय कछु नांदी पारिजो
लौहें निद्रा मांही तो लगि सकल मय ईजा
में सुष दुष पावै उस मगंनै ॥ ६८ ॥ लो ज्ञा
ननाद बस जौ लौं जनम मय मय मिह
तौ लौं तातें उद्वेग मय मजाने मदा अनर्थ
रूप करि मांनौ ॥ ६९ ॥ दिखयनि कौ उद्यम
छिटकावौ ॥ अरु जे दै ते मय मय लो तो
लगि आपु दिस मुं नोंदी ॥ ७० ॥ जगि देनां जग
य मांही ॥ ७० ॥ अरु आपु दै नदि मुं नोंदी
मम आधीन नदोई जौ लौं ॥ ७१ ॥ मम आधीन
तर रहै जग अपहास मय सव सहै

॥ केई एक करे अपमान ॥ केई गहि बांधे अजं
न ॥ केई मूतें थूकै तन में ॥ डारे धूरि नीष के अन
में ॥ १०२ ॥ केई डह के मूट डिगावें ॥ एके निदें
टल गावें ॥ ए से बह बिधि दुष उपजावें ॥ बहु
बिधि नय के बेन सुनावें ॥ १०३ ॥ परि जो अप
नों ये या बिचारै ॥ सो ए को मन में नदी धारै ॥
दु कष्ट निते मन न डिगावै ॥ सो न बत जिम म
चरण निआवै ॥ १०४ ॥ मेरो पंथ षड ग की
र ॥ जो न डिगै सो उतरै पार ॥ दरि के बेन निदु
कर जांनि ॥ उद्धव प्रह्म करी नयमानि ॥ १०
॥ उद्धव ऊवाच ॥ हे प्रभु एतुम बेन सुनाय

॥तिमेरे उर दुः कर आए ॥ जो असाध वेका जध
कावै ॥ तो ते सदे कौ न विधि जावै ॥ १०६ ॥ मेरे ह
दे ज्ञान वहरावौ ॥ सहन उयाई मोहि समझावौ
जे सहनौ उत्तम करि जौ नैं ॥ अरु त्यों और न पा
सब धौ नैं ॥ १०७ ॥ परिते आइ परे नहि सदै ॥
अंत प्रकृति के वसै रदै ॥ केवल जे तु वच र
ण आधार ॥ तिन के कौई नही विकार ॥ १०८ ॥
ते नित निश्चल सीतल रूप ॥ नित्य अनंदित प
रम अनूप ॥ तिन कौ कदेलि पै कछु नांही ॥ स
दा वसै तु वचरण निमांही ॥ १०९ ॥ औरै सक
ल प्रकृति आधीन ॥ सदा विका र नि आंगे दी

तातें तुम ही करुण करौ ॥ ज्ञानादिक मम
देधरौ ॥ ११० ॥ दोहा ॥ ऐसी कीन्ही प्रसन्न
उद्धव परम सुजान ॥ नाथो सहन उपा
तव ॥ नव नंजन नगवान ॥ १११ ॥ इति श्री
वत महापुराणे एकादसस्कंधे श्रीभगवदु
वसंवादे नाथायां द्वाविंशोऽध्यायः २२ चौपद
१७२१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ हे उद्धव ऐस
हि कोई ॥ दुर्जन वचन हूनि तन ही होई ॥ यु
नि वचन बान जो सदै ॥ मन क्रम वचन हो
हिल हे ॥ १ ॥ जो ऐसो सोध कदा वै ॥ यों बि
माधुपद हि नहि पावै ॥ येचि कसी सहने ग

बहुअपमाना॥तरसकारगन्धाविधिनां
हिवांन॥अरुतेमेदेमरमस्थान॥२॥तो
तिनतेंदुषदोईनऐसो॥दुषवचनब
नानितेंऐसो॥परिमैंतौहिउपाइसुनां
॥सहनसीलताउरवहरां॥३॥मोसोंसु
नोएकईतहास॥जातैहोइहृदैपरकास
॥भिक्षुकएकज्ञानमयभाषी॥ताकीतो
हिसुनां॥४॥कियौअसाधुनि
तबतिनिभिक्षुकगाथाकहा॥उमातेअ
पनीसबईदहा॥५॥सोअबसुनोंसुचि
तुहैमोसों॥निजजनजांनिकहतहं॥

तौ सो ॥ मालव देसर दै घर जा कोषे त
बिन ज जीव का ता को ॥ ६ ॥ औ धवंत
लो नी अरु कां में ॥ विप्र निके अपज
स को नां में ॥ जा कै हो इ द्रव्य अधिक
ई ॥ अरु जो नहि देई नहि पाई ॥ ७ ॥ अ
पन कौं पाइ उपजावै ॥ पुत्रादिक पावै
नही पावै ॥ देव पितर अतिथि नहि प
षे ॥ बेन दु कौं नहि क दे संतोषे ॥ ८ ॥ सो
दर्ज जा औ सो होई ॥ तातें नीचौ और न
ई ॥ तातें सो क दर्ज दिज न यो ॥ सब ज

मैं जिनि अपजस लख्यो ॥ ८ ॥ जाति अति
थि बंधव निज तन कौं ॥ दूँ न दूँ दे तन प
चै धन कौं ॥ पुत्रादिक काल पै दुष लखें ॥
जाति मृत्यु दुर बेगानि कहें ॥ १० ॥ पुत्र क
त्र रुक न्यां भाई ॥ जहां लगें सबंध सगाई
ते सब झोह निरंतरि करै ॥ ता कौं अप्रिय
सब आचरै ॥ ११ ॥ औ सो देखि पाप जाति
कौं ॥ जह स मां न बिहै जा कौं ॥ धर्म
मद न्यौं कारि हीन ॥ दुहूँ लोक के सुष तें ही
न ॥ १२ ॥ जिन हित पंच जज्ञ निर्वह करै ॥

गंय हलोक नहि प्रलोक केवल बटे दुष
प्रसोक ॥ २० ॥ बहुत कष्ट सहि इंहां उपा
पुनि प्रलोक नरक में जावे ॥ प्रमज सखि
को जस सुद्ध ॥ अरु जे पांडित जान प्रबुद्ध
२१ ॥ सकल गुणानि के हे गुण जे ते ॥ लोभ त
ते ना से ते ते ॥ जे से रूप वंत अति कोई ॥ कि
अंग न लखन होई ॥ २२ ॥ सेत कुष्ट को छि
काए क ॥ मेटे गुण अरु रूप अनेक ॥ थौं
ऊं हो वै लोभ ॥ मेटे सकल रूप गुण सो भ
२३ ॥ जब ते धन को साधन करे ॥ वृद्धि दे

तउद्यमविस्तरे॥ तबतेत्राससोकमय
लहे॥ चिंताअग्निनिरंतरदहे॥ २४॥ सि
द्धनयेअरुदहतमोगनासलगंनदिसु
षसंजोग॥ चौरीहिसामिथ्यादंनकांम
क्रोधविस्मरणाथंन॥ २५॥ बैररुगर्वस
पदांनेद॥ अघतीतिचिंतामयवेदाख्य
इहजबहोदिअनर्थ॥ तबनिनहुंतेहो
तहेअर्थ॥ २६॥ तातेपरमअनर्थकहा
वै॥ नलोचहेसोदुरिबहावै॥ अर्थनांम
सुनिभुलेलोक॥ विनविचारपांवेदुषसा

॥२७॥ पुत्रकालित्रबंध अरु आई ॥ मा
तपिता दित सजन सहाई ॥ प्रव्य हेत सब
करैं विरुध ॥ आ पुत्रा में ग नें जु ध ॥ २८ ॥
॥ प्रव्य काज अति क्रोध कहि करैं ॥ तिन को
मारैं आ पुन मरैं ॥ घनहिता प्रिये प्राण
हि छिटकावै ॥ आपु हि मूढ नरक में जा
वै ॥ २९ ॥ जा कौ देव बहु त विधि ध्यावै
॥ परिवानर देह दिन दिपावै ॥ सो नर त
नता में दिज देह ॥ ३० ॥ रुणां म प्रहरि जी
कौ गेह ॥ ३१ ॥ ता कौ पाइ अर्थ नहि सा

धै॥सबतजिहरिकों नदिआराधे॥भव
अनर्थअर्थकों गदे॥सो नवसिंधुआप
तैवदे॥३१॥तातेंदूजोनदिमतिमंद॥परै
दुषमैंतजिआनंद॥देवपितरशिषिभूत
सदाई॥पुत्रकलित्रआपुदितजाई॥३२
॥धनदिपाइजोदुहिदिनपोषे॥औरानि
कोंनदिसंतीषे॥सौंसबत्यागिनरकमेंजा
वै॥तहांमूटनानादुषपावै॥३३॥सोतन
धनमैंवृथागंवायो॥नवदुषतेनदिआपु
बंवायो॥जादिपाइबुधऐसीकरै॥जातै

बदुरि न जन में मरै ॥ ३४ ॥ सो न रत न मै
हृथा गंवायो ॥ छोड़ो अर्थ अनर्थ उप
यो ॥ बय बल आयु सकल मम गए ॥ न
सषट्द्व अंग सब भए ॥ ३५ ॥ अब मैं अ
र्थ को न बिधि साधौ ॥ दुसरा धरि के
आराधौ ॥ भाई जे अनर्थ सब जां नैं ॥ ते
क्यों आरंजनि गानैं ॥ ३६ ॥ छोड़ें अर्थ अ
नर्थ उपावै ॥ क्यों सब आपु आपु दु
पावैं ॥ परिए कोई नही स्वतंत्र ॥ सकल
विषय तहै परतंत्र ॥ ३७ ॥ ते जा की माया

रिमोदे॥ नटबाजी के समिसब सोदे॥
भाई सो प्रभु बडो बालि ए॥ ब्रह्मा आदि
सकल को डूपा॥ ३८॥ जेधन अरु जेधन
न के दाता॥ जेकां मद अरु काम विष्णा
ता॥ अरु बहु धर्म कर्म हैं जेते माता पिता
सुषदाई केते॥ ३९॥ कहौ कहौ तो दित आ
चरै॥ मृत्यु यस्त जे नहि परिहरै॥ काल स
रूप सनु है जा कौ॥ कहौ कहौ कौ सुषदै
ता कौ॥ ४०॥ परि जे दीन बंध जग वांन॥
रुणो सागर परम निधान तिनही

करुणां करी ॥ जातैं मम उर औ सीध
४१ ॥ भव सागर ते तारै जा कौं ॥ देहि ना
बे रागहि ता कौं ॥ तातैं मोहि दि यो बैर
॥ मेरे प्रगटे पुरण जाग ॥ ४२ ॥ अब जे
पुहोइ कछु मेरो ॥ ता करि न जन करै
रि कै रो ॥ या तेन के गुण सकल निजा
॥ मन ते सकल काम नां टारौं ॥ ४३ ॥ स
लसाधु अनुमोदनु करै ॥ तथा अस्तु
कहि उच्चै ॥ जघपि आपु थो रोह मे
तौ हूं हरि कौ पद आति ने रो ॥ ४४ ॥ नृ

दंगजबहीहरिध्यायौ॥एकमद्वंद्वतमें
प्रनुपायौ॥तातेप्रनुसमकोईनाही॥ज
नकौप्रगटदोतपलमांही॥४५॥मनबुद्ध
क्रमअवताकौनजोदूजीसकलकांस
नातजो।असौनिश्चयमनमेंधर्यो॥जि
हूकमयोसकलपरिहस्यो॥४६॥सीतल
हृदयत्रिषासबत्यागी॥निश्चलमयोविष
बडसागी॥अहंकारममताकबुनांही॥इ
काकीविचरैभ्रमांही॥४७॥इंद्रियप्राण
वचनमनगह्योअंतरनाहरसंगादेदह्यो

॥ आपुदि कादुकों नलषावे ॥ मिहादे
गदनि में जावे ॥ ४८ ॥ संसकार नदितन
को जाके ॥ जीरणादुक् वस्त्र तनता के ॥
दस कुट्ट धविप्रकों जो वे ॥ तव वदुदुष्ट
तकी होवे ॥ ४९ ॥ केई लाकों दंड छेडां
॥ केई पात्र को षोसिले जांवे ॥ केई लेहि
कम उल्लुकरते ॥ केई निकसन दंडिन
रते ॥ ५० ॥ केई धुलि नीष में डारें ॥ केई
उज्जोध करि मारें ॥ केई आसन को ले
में ॥ उर्ध्व करि केई पग ला रें ॥ ५१ ॥ केई

कथा कौं परिहरै ॥ मारु मारु गं नी उच्चरै ॥
ईषो सिलेहि जयमाला ॥ केई बस्त्र जां दिल
बाला ॥ ५२ ॥ केई अं नि अं नि करि देवै ॥
ईषो सिषो सि पुनिलेवै ॥ केई नीष अं नले
जां हो ॥ नो जन करे पावै नां हो ॥ ५३ ॥
तन में थूकें मूतें ॥ केई निंदा करे बहंतें ॥
ईकां ननिला गिपुकारै ॥ केई सीस धेलि ज
ल उरै ॥ ५४ ॥ केई मौन छोडाई बोलीवै ॥
ईबोलत मौन मझवै ॥ केई तादि बांनि
रिखै ॥ केई जानन पावै भाषै ॥ ५५ ॥

करें बहुल अपमान ॥ निंदै बहु विधि म
अमान ॥ यह द्वै चौर जान नहि पावे ॥ ति
देखे निशि चोरी आवे ॥ ५६ ॥ या को दी
यो द्वै बिल ॥ तातै हे यह व्याकुल चित
कल कटू ब्याधि परह स्यो ॥ जीवन क
नैष यह ध्ये स्यो ॥ ५७ ॥ दिखौ यह कै सो है
॥ महा प्रबल अंतर को धौ टो ॥ देखो हं म
चिहारे के ते ॥ परिया के उरि निदैन ते ते ॥
धीर ज वत अडगि यह औ सौ ॥ पवन प्रच
रगिर जे सौ ॥ या के जान नह म कछू कहें

॥ न क ज्यो ध्यां न मान गदिरह्यो ॥ पद्यो व
रि क्रोध ब दिलै डारै ॥ का व मां हि दै उपरि म
रै ॥ हा सी सहित बीन ती करै ॥ हित से विष
नति उन्नरै ॥ ६० ॥ ए ज्यो तिक दुष भाषै जै सैं ॥
व आतमि क पावै तै सैं ॥ सीत उल्ल बर्षा दिव
दै बिक ॥ जर रोग आदिक ते दै दिक् ॥ ६१ ॥
सब दु बिधि पावै दुःष ॥ के देन आदै तिन के
सुष ॥ परिसोक न नम म मैं आनै ॥ अपने
करे कर्म सब जानै ॥ ६२ ॥ तब तिन भाषी गा
पाएक ॥ हृदय स्यो परम निवेक ॥ नि

ककदेवचनतवजेई॥मेंतौसोनाषतहें
ई॥६३॥मिदककुळाच॥सुषदुषदाइव
गनएतें॥अरुनहिदेहनहीसुरजेते॥ना
नहीकर्मनहीकाल॥एसमस्तहेमनको
न॥६४॥जगतचक्रमेंमनैकिरावे॥जीव
हादुषमनतेंपावे॥मनकरैविषयनको
॥तातेंहोइकर्मसंजोग॥६५॥होवैसत
मविस्तार॥तातेंजोनिबिबिधिप्रकार
मेंदुःषनिरंतरलहे॥देहजोगतेंनिसदिन
॥६६॥तातेंदुषदायकमनएक॥संतकरें

दपरमविवेक॥आपआत्मासदाअनीह॥प
रिसोमनकरिकरैसमीह॥६७॥मनसोबंध्ये
अविद्यामांही॥तातैबंधनजावैनांही॥विष
समानविषयबिकोंपावै॥ताकेसंगजीबुदु
पावै॥६८॥यहहैजीवब्रह्मकोअंग॥याकोंसं
सृतिमनकेसंग॥मनकरिरहितब्रह्मसुषरा
॥सदायेकरसप्रमप्रकासी॥६९॥तातैबंधन
मनईकरै॥संगआत्माजनमैमरै॥जबधनरहि
तजीवयदहोई॥तबसिवजीवभेदनहिहोई॥
७०॥तातैजिनअपनोमनगह्यो॥सा

हिरह्यो॥ अरुजोमनवासिकीन्होनांही॥ ति
मसकलवृथाईजांही॥ ७१॥ स्ववर्णदिव
वेंबुद्धांना॥ एकादसीआदिब्रतनांना॥
नेअपनेकर्मनिकरै॥ सदैमजमनियमानि
बिस्तरै॥ ७२॥ विद्यावेदपढैउच्चारै॥ ओरो
कलधर्मबिस्तरै॥ परिजोबसिनांहीमनएक
तोमिथ्याआचरणअनेक॥ ७३॥ मनबस
काजकहेसबतेते॥ विधिआचारनबंदमें
॥ मननिग्रहसोउत्तमज्ञान॥ मननिग्रहबिन
लअज्ञानं॥ ७४॥ तातैजोमननिग्रहकरै॥

सा बाध काहे कौं बिस्तरे ॥ ता कौं बिधि न दु
ते कछु नाही ॥ सब बिधि दे मन नियह मांही ॥
७५ ॥ अरु जो बसि नांही मन एक ॥ तो बिधि क
हे दृष्टा अनेक ॥ सब दिन कौ फल मन बसि क
रणों ॥ मन बस का ज सकल आवरणों ॥ ७६
मन कौ बसि करै जो कोई ॥ इंद्रिय गुण आपु बि
बसि होई ॥ मन बसि बिन इंद्रिय बसि नांही ॥
रि करि जतन बहु त मरि जांही ॥ ७७ ॥ मन बसि
ये सकल बसि देवा ॥ तीनों भुवन करे नित सेवा
॥ सकल बलि नुतै मन बलि व्रत ॥ मारी कदै स

अद्विष्टो ॥ अरु जो मन बसि कीन्हों नां ही ॥
प्रमसकल वृथा ईजां ही ॥ ७१ ॥ स्ववर्ण दिव
रुवें बहुदां नां ॥ एकादसी आदि व्रत नां नां ॥
पने अपने कर्म निकरै ॥ सदैम जमनिय मा
बिस्तरै ॥ ७२ ॥ विद्या वेद पढ़ै उच्चारै ॥ ओरो
कल धर्म बिस्तरै ॥ परि जो बसि नां ही मन ए
तो मिथ्या आचरण अनेक ॥ ७३ ॥ मन ब
काज कहै सब ते ते ॥ विधि आचार न बंद में
॥ मन निग्रं सो उत्तम ज्ञान ॥ मन निग्रं बिन
कल अज्ञान ॥ ७४ ॥ सातैं जो मन निग्रद करै ॥

॥ बिधि काहे कौ बिस्तरे ॥ ता कौ बिधि न दु
कछु नाही ॥ सब बिधि दे मन नियह मांही ॥
५॥ अरु जो बसि नांही मन एक ॥ तौ बिधि क
ह्या अनेक ॥ सब दिन कौ फल मन बसि क
हौं ॥ मन बस काज सकल आचरतौं ॥ ७६
न कौ बसि करै जो कोई ॥ इंद्रिय गुण आयु दि
सि होई ॥ मन बसि बिन इंद्रिय बसि नांही ॥ क
करि जतन बहुत मरि जांही ॥ ७७ ॥ मन बसि न
सकल बसि देवा ॥ तीनों सुवन करै नित सेवा
सकल बलि नुतें मन बलि व्रत ॥ मारी करै सब

दिनुकों अत ॥ ७ ॥ मनकों कोई जीति न
सकै ॥ बहुत उपाइ निकरि करि यकै ॥ असे
मनकों जीतै कोई ॥ सब दिनु मांदि प्रबल दे
सोई ॥ ७ ॥ सो दुर्जयारि पुबसिन दि करै ॥ ब
हर जुझादिक बिस्तरै ॥ वैरी मित्र बहूत बि
ठां नै ॥ अनदित अरु दित तिन तै जां नै ॥ ८ ॥
ते अति मुट सुषीन दि होवै ॥ मन जीतै विन ज
गुगरोवै ॥ दुषरूप जड मिथ्या तनकों ॥ आ
निकरि बांध्यो मनकों ॥ ८ ॥ तब बहु कि
देह संबंधी ॥ तिन सौं मूरिष ममता बंधी यद

मैं य समस्त दे मे रैं ॥ मित्र सत्र गनै बहु तेरे ॥ च
॥ ता तें मूढ महा दुष पावैं ॥ उपाजि उपाजि पुनि
रि मरि जावैं ॥ ता तें दुष को मनई कारण ॥ आ
म को भव जल में डारण ॥ ८३ ॥ अरु जो सुष दु
ष दाता एते ॥ मो को दुष देत हैं जेते ॥ ते सब सुष
ष मो को नांही ॥ देह एक सब आपुन मांही ॥ ८४ ॥
॥ ते सुष दुष देह ई पावैं ॥ आतम के कंदु निकटि
न आवैं ॥ अरु जघापितन के संजोग ॥ करै जीव
ई सुष दुष भोगे ॥ ८५ ॥ तौ हू मैं दुष देवों का को
॥ रूप सकल मम देषो जा को ॥ आपु आपु के
दुष दीजे ॥ आपु नो अहित आपु क्यों

८६॥ यातनमेंमेंही दुषपां ऊं॥ अरुतिनदंमें
५पजां ऊं॥ दंतनिभूलिजीभकारिजै॥ तोकि
हातिनैदुषदीजै॥ ८७॥ दंतनिअरुजीभदिदु
दर्द॥ सोतौसकलआपुकरिलेई॥ इंद्रियअ
धिपतिदेवताजेते॥ जोदुषदांनिहोहिसबते
॥ ८८॥ तोहआपुकौंपक्वोंकीजै॥ परउपाधि
कौंसिरकारिलीजै॥ करदीजैमुषमांदिअस
सों॥ सोमुषकारैकरिहिदसनसों॥ ८९॥ तो
वकअरुबासवजांनै॥ रागदोषभावैसोंगंनै
॥ योसबइंद्रिनुकेसबदेवा॥ करैआपमेंदोष
अरुसेवा॥ ९०॥ तेतेसबजांनैसोंकरै॥ जानै

अपनै मन न दिधरै ॥ अरु जो सुषुः प्रदाता
पु॥ दूजे कौं कबु नां ही पापु ॥ ६१ ॥ तौ यह सब अ
पनौ स्वभाव ॥ कौं नै कौं आनि ये अभाव ॥ अ
आतम मै सुषुः वनां ही ॥ उपजै ज्ञान सकल मि
टि जां ही ॥ ए॥ २ ॥ आपु नालि सुषुः करि ली नै
॥ सब मिटि जां ही आपु के ची नै ॥ तातें दोष कौ
न को धारिये ॥ जो अपनौ मन बसिन दि करि
॥ ए॥ ३ ॥ अरु जो यह सुषुः षके दाता ॥ लो कबे
कदिय त बिष्पाता ॥ तौ आपु न क्यौं क्रोधादि क
जे पर कौ दुष आपु क्यौं ली जे ॥ ए॥ ४ ॥ यह आका
स मां हि दे जे ते ॥ द्वादस रासि बसै सब ते ते ॥ रा

दोष आपनमें करें॥ तिनको सुष दुषानित
परें॥ ८५॥ तातारासिजनमजे पावें॥ तिनव
गतिसुष दुषआवें॥ तैं आत्मा सदा अजन
बार बार देह दुर्दनि कों जमां॥ ८६॥ तातैं सुष
पतनई पावें॥ निकट आतमां के नहि आवें
अरु जघापि संगति दुष परें॥ आप क्रोध त
कासौ करें॥ ८७॥ कर निहारते ग्रह दुर्दजां नें
ग दोष भावें त्यों ठामें॥ अरु दुषदां निदो द्विज
कर्म॥ ती ती सकल आपुही नरम॥ ८८॥ यद
उदेह कर्मता मांही॥ आतम निकट देह दुर्दना
॥ आतम चेतन जान स रूप परे सकल तें प

मन्त्रनूप॥९॥ तातैं जो धौन सौं करैं ॥ व
कौ दोष हृदै में धरैं ॥ अरु जो दुष काल ते कहिये
॥ तौ आपुन में कदे न लहिये ॥ १०० ॥ तनई काल
दुते दुते दुष पांवे ॥ ते आत्मा के निकटिन आदें
॥ काल आत्मा ब्रह्मस्वरूप देह बिलक्षण सकल
अनूप ॥ १०१ ॥ तातैं काल दुते दुष नांही ॥ काल
भयांत कदे न निमांही ॥ ज्यों ते आग्नि आग्नि
डारें ॥ सो बहू आग्नि आग्नि ही जाये ॥ १०२ ॥ अ
रु ज्यो पाला कौ कएलीजे ॥ लै बहू ते पाला में
दीजे ॥ तौ पाला कौ भय कबु नांही ॥ जघा पिर

है सदा तामांहीं ॥ १० ॥ यों ही एक आत्मां क
सुषुप्तुषादिदेहनिक्केष्यात् ॥ आत्मसबते स
अतीत ॥ इच्छा रहित अनीद अमीत ॥ १० ॥ ४ ॥
आत्मां परेतें परै ॥ दंड जहां लों ते सब वरै ॥
ई आत्म कौं नही जानै ॥ सुषुप्तुष कौं न कौं न
जानै ॥ १० ॥ ५ ॥ सुषु अरु दुष जहां लों जेते ॥ एव
कृतिही के सब ते ते ॥ सो प्रकृति ए आपु ज
॥ चेतनि आत्म ब्रह्मसरूप ॥ १० ॥ ६ ॥ केवल
नेलियो संसार ॥ सुषुप्तुष तनम ^{स काल} नत अ
॥ मोह निमार्ते जागे जेते ॥ नृन व नये तत्तद

तेते॥१०७॥ तातैं अब मैं नय नहि आं नों॥ आ
पुहि परैं सकल ते जां नों॥ हरि चरण नि की से
वा करों॥ औ सी बिधि न व्रसागर ति रों॥१०८॥
जिई जे आये हरि सरणां॥ तिन ही तिन पाये व
रि चरण॥ तातैं मैं हरि चरण निज जों॥ मन
क्रम बचन और सब तजों॥१०९॥ उद्धव यों
दिज नयों बिरक्त॥ तन हूं मैं न रह्यो अनुरक्त
बहुत असाध निबहुत डिगायो॥ परि सो
कछु न मन मैं ल्यायो॥११०॥ एना षेद स अ
सि लोक॥ करि बिचार मे द्यो नय सो क

उद्धव सुष दुष दायक ॥ आतम कौ को एते
यक ॥ १११ ॥ सुष दुष दाता नांही को ई ॥ जो तो क
द्वैत कछु होई ॥ सुष दुष भ्रम ते जांने सकल
म एक अज नां अकल ॥ ११२ ॥ भ्रम छूटे दू जा
नां ही ॥ मेरो रूप मिले मो मां ही ॥ जब सुष दुष
प्रा करि जांने ॥ मां नां प मां न ह दे नहि आने ॥
धीर ज धरि म म चर ए नि भ जै ॥ दे दा दि क व
आ सा त जै ॥ त व भ व सा गर कौ तरि आ वै ॥ मे
ने जा नंद पंद पा वै ॥ ११४ ॥ ता तै उद्धव मन ब
म सकल द्वैत कौ जां नौ भ्रम ॥ सब ते मन कौ

प्रहकरी ॥ निश्चल करि मम चरणनिधरी ॥
११५ ॥ याही कों कहिय तुहें जोग ॥ जा करि दं
वै मम संजोग ॥ अरु जे या गाथा कों धारै ॥ सु
नै सुनावै सदा विचारै ॥ ११६ ॥ तिन कै निक
टि दूध न दिआवै ॥ अंतकाल मम चरणनि
पावै ॥ तातैं या कों सदा विचारै ॥ मेरो बल अं
तर गति धारै ॥ ११७ ॥ देह यह उद्धवता से
कह्यो ॥ मन संजम दृढ ज्ञान ॥ अलभाषत हो
सांध्य कों ॥ सुनत मिटै ज्यों आन ॥ ११८ ॥ इति
श्रीभागवत महापुराणे ॥ ६५ ॥ ॥ श्री ॥
गवत उवाच ॥ देवायानि दक्षक

न त्रिषौ विप्रोऽप्ययः ॥ २३ ॥ चौ पई ॥ १८ ३६ ॥
मगजां न ऊवाच ॥ उद्धव तौ सौ सांष्यदिकदौ ॥
तत्र मप्रमदिविनददौ ॥ जादिसुनत ही छू
द्वैत ॥ दिषै एरुत्रस अद्वैत ॥ १ ॥ प्रथमदिमदौ
रुषते नये ॥ ते ये सांष्यप्रगट करि गये ॥ मुक्त
अजां न त ही दोइ ॥ सांष्यविनां न ही छूटे कोइ
॥ सोई सांष्य कदौ मै तो सौ ॥ निश्चल मन द्वै
नियो मो सौ ॥ उद्धव प्रथमदुतो मै एक ॥ मो
न कछून दुते अनेक ॥ ३ ॥ तब मै प्रकृति आप
ते करी ॥ ज उचेत निद्वै विधि बिस्तरी ॥ तिन दू
ते उपज्यो पुत्र ॥ मदात त्वजो कहिये सुत्र ॥ ४ ॥

॥ एकप्रकृतिते त्रिगुणकी नै ॥ लक्षणां जिन
दूकौ दी नै ॥ सत्रदुते त्रिविधि अदंकार ॥ न
रमां वन कों बडे विकार ॥ ५ ॥ पंचभूत जे
धुवी आदि ॥ ~~सत्रदुते~~ सत्रदुते सत्रदुते ॥ ताम
सत्रदंकार ते एते ॥ राजसते इन्द्रिय सब जे ते
॥ ६ ॥ सातिक ते मन अरु सब देवा ॥ जिन कों
पाइ न एव दुजे वा ॥ तत्र सब दिन में धोर मि
लायो ॥ तिन सब दिन मिलि अंड उपायो ॥
अंड सलिल मांही धिर कस्यो ॥

नित्यौ नित्यौ ध्यायः ॥ २३ ॥ चौ पद ॥ १८ ॥ ३६ ॥
गजानन ऊवाच ॥ उद्धव तौ सौ सांख्यदिकदौ ॥
भ्रमप्रमदिविनददौ ॥ जादिसुनत ही छूटे
देत ॥ देषै एरु ब्रह्म अद्वैत ॥ १ ॥ प्रथमदिमदी
रूपतेनये ॥ तेये सांख्यप्रगटकरिगये ॥ मुक्त
यजानत ही दोइ ॥ सांख्यविनांन ही छूटे कोइ
॥ सोई सांख्यकदौ मै तो सौ ॥ निश्चल मन द्वै
नियों मो सौ ॥ उद्धव प्रथम दुतो मै एक ॥ मोति
मक छून दुते अनेक ॥ ३ ॥ तब मै प्रकृति आपु
ते करी ॥ ज उचेत निद्वै विधि बिस्तरी ॥ तिन दू
ते उपज्यो पुत्र ॥ मदात तब जो कहिये सुत्र ॥ ४ ॥

॥ एकप्रकृतिते त्रिगुणकी नृ॥ लक्षणादि
द्वंद्वौदीनृ॥ सत्त्वद्वैतत्रिनिश्रिअहंकार
रमावनको ब्रह्मविकार॥ ५ ॥ विवेकचरण
धृतीआदि अहंकारद्वैतसत्त्वद्वैत
सत्त्वद्वैतद्वैतद्वैतद्वैतद्वैतद्वैत
॥ ६ ॥ विवेकचरणद्वैतद्वैतद्वैतद्वैतद्वैत
पादद्वैतद्वैतद्वैतद्वैतद्वैतद्वैत
लक्षणादि
अहंकार

सब नरमतर है ॥ जनमें मरें बहुत दुष सहै ॥
॥ १५ ॥ उत्तम मध्यम नीचे जेते ॥ छोटे बड़े धूत
कहावे ते ॥ जे कछु जहां लगे आकार ॥ ते स
प्रकृति पुरुष विस्तार ॥ १६ ॥ प्र
कृति पुरुष विन और न कोई ॥ इंद्रिय मन
वर है जोई ॥ प्रथमहि निराकार में एक ॥ त
सैं ए आकार अनेक ॥ १७ ॥ अरु पुनि में ही रा
हैं अंत ॥ ता सैं अबहुं मैं वरतंत ॥ जा की आ
अंति है जोई ॥ ता के मध्य दु में पुनि सोई ॥ १८ ॥
ज्यो माटी ते बहुत घट भए ॥ अंत फुटि माटी मि

लिंगये ॥ मांटी आदि मांटी ए अंत ॥ तो मांटी
मध्य हं बरतंत ॥ १६ ॥ ज्यों कंचन के बद्ध आ
नुरणां ॥ आदिरु अंत एक ई स्ववरणां ॥ तो मध्य
हं और कछु नां दो ॥ नां मरूप मिथ्या द्वे जां हं
॥ २० ॥ स्यों जं बदै बैत जिब्यो दार ॥ तब में दादो
सब बिस्तार ॥ आदिरु अंति मध्य में एक ॥ मि
थ्या नां मरूप अनेक ॥ २१ ॥ माया ते म हत च
अहंकार ॥ तिन तें होइ सकल बिस्तार ॥ बद्ध
स्यों नास सकल को होई ॥ महादादि को र हं
न कोई ॥ २२ ॥ प्रकृति मूल अरु पुरुष अ

अरुजो काल सदा करतार॥ मेरी सक्ति तीनि
जानौ॥ मोतै कै त क दे मति मानौ॥ २३॥ य
वेधि च ल्यो जाइ बिस्तार॥ नदी प्रवाह तुल्य
मार॥ परमात्म की इच्छा जो लौ॥ बतै सकल नि
तरतौ लौ॥ २४॥ बहु स्त्रीं प्रलय सकल को
॥ सूक्ष्म मथूल रहै नहि कोई॥ महा बल छि
त्ते मम काल॥ ता को सकल जगत यदृष्याल
५॥ काल बिना सै सब ब्रह्मंड॥ कत हूँ कछु न
षंड॥ अनादृष्टि होवै सत वर्ष॥ ताते देह निव
आकर्षी॥ २६॥ छोटे बडे देह है जते॥ लीन अश्रु

मैं होवें ते ते ॥ अम्भ भूमि मैं होवें लीन ॥ भूति
गंध मिलि होवें दीन ॥ २७ ॥ गंधलीन होवें जल
ही ॥ जल स्तन मरस मां हि स मां हि ॥ रस तव तेज
मां हि मिलि जाई ॥ तेज जोति मैं जाई स मां ई ॥ २८ ॥
जोति पवन मां ही मिलि रहै ॥ पवन न हित वस
रंगुण गहै ॥ स परसलीन होइ तव गगन ॥ गगन
सध मैं होवें मगन ॥ २९ ॥ सध मिलै तामस अहंका
र ॥ सो अरु इंद्रिय दस प्रकार ॥ ते सब मिलि राज
स अहंकार हि ॥ मिलि करि सकल हों हि संहार
हि ॥ ३० ॥ देव रुमन साति क अहंकार ॥

अरुजो काल सदा करतार॥ मेरी सक्ति ती
गों जानों॥ मोतें कै तक दे मति मांनों॥ २३॥ य
विधि च ल्यो जाइ बिस्तार॥ नदी प्रवाह तुल्य
सार॥ परमात्म की इच्छा जो लों॥ बतैं सकल ति
तरती लों॥ २४॥ बहु स्थों प्रलय सकल को
॥ सहस्र मथूल रहै नहि कोई॥ महा बल छि
ले मम काल॥ ता को सकल जगत यदृष्याल
२५॥ काल बिना सै सब ब्रह्मंड॥ कत हं कछु न
षंड॥ अनादृष्टि होवै सत वर्ष॥ ताते देहानि
आकर्षी॥ २६॥ छोटे बडे देह है जते॥ लीन अ

मैं होवै ते ते ॥ अम्भ भूमि में होवै लीन ॥ भूमि
गंध मिलि होवै क्षीन ॥ २७ ॥ गंधलीन होवै जल म
॥ जल सूक्ष्म रस मांदि समांदि ॥ रस तब ते ज
मांदि मिलि जाई ॥ तेज जोति में जाई समांदि ॥ २८ ॥
जोति पवन मांदि मिलि रहै ॥ पवन नहि तब सय
गुण गहै ॥ सपरस लीन होइ तब गगन ॥ गगन
मैं होवै मगन ॥ २९ ॥ सध मिलेता मस अहंकार
॥ सो अरु इंद्रिय दस प्रकार ॥ ते सब मिलि राज
अहंकार हि ॥ मिलि करि सकल होंहि संहार
॥ ३० ॥ देव रुमन सातिक अहंकार ॥ मिलि क

रिसकलहोंहि संहार॥ अहंकारमहतत्व
ले॥ प्रकृतितवैमहतत्वहि गलें॥ ३१॥ प्रकृति
लमें होवै लीन॥ कालपुरुषमिलि होवै क्षी
पुरुषमिले पुरुषमिले पुरुषोत्तममांही॥ पुरु
मकहु जावै नांही॥ ३२॥ जेदा जेद रहिततव
॥ नित्यानंदद्वैतावितरेक॥ चैतानिनिर्मलज
सरूप॥ पूरणअक्षयपरमअनुप॥ ३३॥ त
उद्धवमिथ्याद्वैतआदिअतिमध्यद्वैत
लबुदबुदसमसवआकार॥ उत्तममध्यमा
विधिप्रकार॥ ३४॥ औसैसदाविचारै जोई

कैकौन मांतिभ्रम दोई ॥ राबि उदोतर दैत म के
सैं ॥ नदी मध्य दावानल तै सैं ॥ ३५ ॥ यद में भाष्ये
सांध्य प्रकार ॥ सकल द्वैत उत पातिसं दार ॥ या के
ज्ञान न संसयर दै ॥ अहंकार दृढ ग्रंथ दि दै ॥
३६ ॥ छो डै रूप अरूप समावै ॥ जातैं बूढ़ रि न दु
ष कौ पावै ॥ तातैं या कौ सदा विचारै ॥ मो कौ ज
नि आ पु कौ तारै ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ उद्धव यद तौ सैं
के ह्यो ॥ सांध्य ज्ञान विचार ॥ अवगुण दृष्टि न के
क ह्यो ॥ भिन भिन प्रकार ॥ ३८ ॥ इति श्री नागव्रते
महापुराणे कादशस्कंधे श्री नगव्रदुद्धव संवादे

भाषायां सांख्यनिरूपणं मच्चतुरविंशो
॥२४॥ चोपद् ॥ १८॥ ७७॥ श्रीमद्गोपबुद्ध
ध्वजव्रजभाषेण गुणवृत्ति ॥ जिनको जानें
वृत्ति ॥ जा गुणतें जो लक्षण होई ॥ जिन
सौ सोई ॥ १॥ समदमक्षमाविवेकस्व

जिनकरै विक्रम
तममारगमै धिर
धीर्जवंत ॥ परउपका
स्तिकानितनिहंसंग
गा ॥ ३॥ कोमलबिनय

॥ अमरु कलह सो क अरु मोहा ॥ निद्रा आल
समय प्रदोहा ॥ ८ ॥ निमदिनु चिंता उद्यम हीन
हृदै आसा साहस हीन ॥ औसी बहुतामस कीवृ
त्ति ॥ जिन तें कदे न लहे निवृत्ति ॥ ९ ॥ उयजे ममता
अरु अहंकार ॥ तातें करें विविधि विवहार ॥
ते सब मिलत गुण नि कीवृत्ति ॥ तिन तें बाढे ब
हुत प्रवृत्ति ॥ १० ॥ धर्मरु अर्थ कांम अनुरक्ति
अद्यालो भतथा आसक्ति ॥ धर्म प्रवृत्ति पण
एजे ते ॥ बहुत भांति बिस्तारें ते ते ॥ ११ ॥ बर्ते अ
पने अपने धर्म ॥ प्रिय अरु गृह सुष गृह कर्म

॥एसबमिलितगुणनिकीरति॥जिनितेबद
विधिहोइप्रवृत्ति॥१२॥समदमआदियुक्त
नरजोई॥सातिकलक्षणकहियेसोई॥राज
सकांमादिकआधिकार॥तांमसजहांक्रोधा
दिविकार॥१३॥जबस्वधर्मसोंमोकौंनजे
दूजसकलकांमनातजे॥त्रियापुरुषनावे
सोहोई॥सातिकप्रवृत्तिकहीजेसोई॥१४॥ज
बकांमनाहृदैधारिलेवे॥अपनेकर्मलिमोकी
सेवे॥यहस्वभावराजसकौकहिये॥मुक्ति
हेतकबहुंनदिगहिये॥१५॥जबहिंसाहृदै

भैं आनै॥ निज कर्म निमम सेवा वानै॥ सो ब्रह्मता
मम सृष्टि कहावै॥ तातैं मम सुष क देन पावै॥ १६
॥ सतरज तम सी न्यौ गुण जे दै॥ जीव दि को बंधन
सब ते दै॥ ते गुण मेरी आजा करै॥ तातैं मोहि न जे
तेतिरै॥ १७॥ चित्त दुतें उय जै एस काल॥ इन को
त जैं आत्मा अकाल॥ इन की छोडि रहै मो मांदा
॥ बहु स्यो उय जै बिन सै नांदा॥ १८॥ करि साधन
रज तम परिहरै॥ सातिक गुण को वृद्धि दि करै
सातिक सूरि ज ज्यौ प्रकास॥ अति सीतल ज्युं
चंद बिगास॥ १९॥ सकल कल्यान मूल सुष कारी

॥ निश्चल करण सकल दुषदारी ॥ तातें ध
जान सुषल है ॥ चिंता सो क मोह न य द है ॥ २० ॥
जब साति कतां मसन दिर है ॥ राज स आड
से रा ग है ॥ राज स रूप संग बल भेद ॥ ताते मां
कर्म न य वेद ॥ २१ ॥ जब सत अरु रज छूटे दो
॥ केवल एक तमो गुण होई ॥ तम विवेक नास
के आन रण ॥ उद्यम दर ता ज उता करण ॥ २२ ॥
॥ तातें सो क मोह को बासा ॥ निद्रा आलस नि
निस दिनु आसा ॥ जब छूटे इंद्रिनु की वृत्ति
दिन होई हा उत पति ॥ २३ ॥ चित्त प्रसन स

निहंसंग॥ सो सातिकममगृहद्वै अंग॥ जब तन
मन इंद्रिय मन बुद्धि॥ धिर नहि हों हिल दें न दि
सुद्धि॥ २४॥ वां नैं विविधिकर्म विस्तार॥ जो जानैं
राजस अधिकार॥ जब विकार बहु विधि मन ग
द्वै॥ आसा बंध निरंतरिर द्वै॥ २५॥ सो कविषाद
चेतनां दीन॥ सो तां मस उद्यम बल छीन॥ जब
उपजै सातिक कौ भाव॥ तब सब होवे देव स्वभा
व॥ २६॥ राजस तैं असुर नि की वृत्ति॥ भूत गुण
नि की तम उत पति॥ सातिक ते जागरणों होई २
॥ राजस पावै सुपिनां सोई॥ २७॥ तां मस दुते सु

मोकादिजावै॥राजसमेंमरिनरतनपावै॥तामसमें
पतिलहै॥ब्रह्मचर्यनिरंतरहै॥सातिकऊर
मोकादिजावै॥राजसनरआदिकतनपावै॥२८॥
मसनीचेथावरआदि॥याविधिभरमेंजीव
आदि॥सातिकबहुमानजोहोई॥तामेंमरणलहै
कोई॥२९॥सोदेननिकैरिनरकानिलहै॥ती
गुणतजिमोमेंरहै॥३०॥मेरुहैतकर्मजोकरे
मेंदूजोफलनहिधरै॥सोब्रह्मसातिककर्मकदा
॥तातेजीवमहासुषपावै॥३१॥फलनिमात्र
मकर्मनिगंमें॥ताकोराजसकर्मबुझांनै॥दि
हेतकरैममकर्म॥सोतामसहैबडौ॥

३२॥ भेद रहित सो सातिक जांन ॥ देह भेद सो रा
जस जांन ॥ बालक मूक तुल्य जो होई ॥ तां मस जा
न कही जै सो ॥ ३४ ॥ आत्म देह रहित जो एक ॥ स्
हे मे रौ जान बिबेक ॥ द्वै बिरक्त वसिये एकंत ॥
सातिक वास कहे सो संत ॥ ३५ ॥ गृह में कही ये
राजस वास तां मस जूप सुरा आवास था वर
चल मम मूरति जहां ॥ नृगुण वास कही जै त
हां ॥ ३६ ॥ सातिक कर्ता जो निद संगी ॥ सो राज
सफल कर्म प्रसंगी ॥ बिधिक सिद्धित ता मसी
कर्ता ॥ आसला गि कर्म निबिस तर्ता ॥ ३७ ॥

आपुहिमेठिरहेममसरणां॥ताकोसबनगु
आचरणां॥सोजननिरगुणकरताकहिये
॥ताकेसंगपरमपदलहिये॥३८॥जोनिक्क
आत्माजानै॥सकलजनकीप्रदावांनै॥स
नत्यागिजोनिदचलहोई॥सातिकप्रदाक
हेयेसोई॥३९॥राजसप्रदावांनैकर्म॥तांम
प्रदाकरैबिकर्म॥निर्गुणप्रदामेरीभाति
जातैमिटैसकलआसक्ति॥४०॥पथ्यपावि
बिनाप्रमआवे॥जामैअपनोधर्मनजावे
जातैउपजैनहीबिकार॥सोकहियेसातिक
द्वार॥४१॥षाढाभीवातीषाढारा॥दुषदाय

कराजसञ्जारा॥ जो असुद्धहिंसातैं आवें
सोतामसञ्जारकहावैं॥ ४२॥ ममजनअसु
मेरोउचिष्ट॥ सोनिर्गुणमोजनअतिइष्ट॥ इं
द्रियसुषतप्मादिकदहै॥ तजिआरंभनिधिरहै
रहै॥ ४३॥ आत्मतेउपजैसुषजोई॥ सातिकसु
कहियतुहैसोई॥ इंद्रियसुषराजसनहिगदि
ये॥ निद्राआलसतांमसकहिये॥ ४४॥ मेरेषे
मज्जितिसुषजोई॥ निर्गुणसुषकहियतुहैसो
॥ अव्यदेसफलकात्मसज्जान॥ कर्त्ताकर्मआ
वस्थादांन॥ ४५॥ अहानिष्टाअसुअकार॥ ति

रगुणानिर्मितसबबिस्तार॥ जो कबु कटु सुन्यो
रुदेवो॥ मन अरु बुद्धि जहां लोलेवो॥ ४६॥ सो स
बप्रकृतिपुरुषबिस्तार॥ तिरगुणानिर्मितसब
लपसार॥ इ न तैं जीवल है संसार॥ त्रिगुणकर्म
यवारंवार॥ ४७॥ जो इ नितान्यो गुणानि निवारै
॥ चित्त आपनो मोमें धारै॥ सो मेरो तिरगुण पत
पावै॥ बहुस्यो या जगमें नहि आवै॥ ४८॥ तातैं
ऐसी नर देह॥ जा करि मिटै सकल संदेह॥ होवै
प्रगट जान बिजान॥ पावै मोहि मिटै सब आन॥
४९॥ तातैं पंडित सकल निवारै॥ मोकों सेई आप
कोतारै॥ यो बिन सकल अयंडित जानों॥ जेतै

तमघाती मानौ ॥ ५० ॥ सकलदुते दोवै निहं संग ॥
सावधान पल परै न संग ॥ इंद्रिय प्राण देह मन ज
तै ॥ मम चर्चा दिन रै निबिती तै ॥ ५१ ॥ सकल सा
की संगति करै ॥ राजस अरुतां मस परिहरै ॥ देह
दिक तैं निस्पृह होई ॥ आगें इच्छा करै न कोई ॥ ५२ ॥
॥ मोमै धारै निह चल बुद्धि ॥ तब पावै अंतर गा
॥ प्राविधि साति कुरु छिटकावै ॥ ता तैं लि
सरीर मिटावै ॥ ५३ ॥ लिंग सरीर मिटे भवत जै
निर्मल रूप आय नौ भजै ॥ औ सो द्वै मोदी को जा
॥ बाहरि नीतर दैत न मानै ॥ ५४ ॥ मोमै मिलि मोह
मे रहै ॥ बहु स्यौ काल अग्नि नहि दहै ॥ रहै निरंत

रि मेर संग ॥ ता ते क दे न हो वै मंग ॥ ५५ ॥ दोहा
उद्धव ये तो सों कहा ॥ ता न्यो गुण की वृति अब
सों जान दि कहौ ॥ ता ते हो इनि वृति ॥ ५६ ॥ इति प्र
भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे श्रीनगवद्ध
संवादे नाथा योगुणवृत्ति निरूपण नाम पंचवी सो
यः ॥ ५५ ॥ चौ पद ॥ ॥ १६ ॥ ३३ ॥ श्रीनग ज्ञान ऊना च
॥ उद्धव इद न र न है औ सौ सकल सृष्टि में नांदा
जै सौ ॥ या तन करि मम ज्ञान दि पावै ॥ जा ते न व
त जि मो में आवै ॥ १ ॥ ता ते औ से तन को पाई ॥ मे
मिलने को करै उपाई ॥ अंतर मांही मोहि
रे ॥ औ रे सकल बासना रा रे ॥ २ ॥ मम

लक्षण जानै॥ त्यों त्यों आपु आपु में गानै॥ ३॥
नीय सतब मो कौ पावै॥ काल व्याल बद्ध स्यों
नृदिषावै॥ ३॥ माया गुण जब मिथ्या जानै॥ म
रो जान पांडु करि जानै॥ प्रोक्ते रहै देह हूं मांह
॥ तौ हूं फेरि लिये कहूं नांहि॥ ४॥ परिजय पिह
वै॥ ओ सो ऊ करै असाध संगति हि सो ऊ॥ सि
स्त्र उदर परायण जेते॥ मन क्रम बचन त्यागि
एतेते॥ ५॥ करै असाधु एक को संग॥ तौ हूं जा
न ध्यान कौ संग॥ असत संग नर जब ही करै
॥ ता के संग नरक मै परै॥ ६॥ जै सैं अंध के संग
॥ कूप परै होवै सुष संग॥ या की गाथा नाषों ए

क॥ जातैं उय जे परमाविवेक॥ ७॥ जब उर बसी
रहत न दह्यो॥ सो क मोह सागर में बह्यो॥ जब पु
त्रा भाषी जोई॥ तो सौं गाथा नावो सोई॥ ८॥ राउ
स्तर वाच कवती॥ तांकी आन जहां लौं धरती॥
गायहु ते उतरी उर बसी॥ सो मिलि कै नृप के उर
सी॥ ९॥ बहु स्यौं आय मुक्ति जब नई॥ तब ताउ
पदि उर बसी गई॥ नृपति बिलाप करै वैपरि
नृप की और न जावै॥ १०॥ राजान मदेह सुधि
ही॥ बांनि विकल दीनता मांही॥ लज्जारहित
मद जैसै॥ चलो उर बसी पीछै तसै॥ ११॥ अ

लक्षण जानै॥ त्यों त्यों आपु आपु में जानै॥ अ
नीय सत बभौ कौ पावै॥ काल व्याल बहु स्यों
नृदिषावै॥ ३॥ माया गुण ज बभौ मिया जानै॥ म
रो जान पाइ करि जानै॥ यौ कै रहै देह हूं मां हूं
॥ तौ हूं फेरि लिये कहूं नां हूं॥ ४॥ परिज यहि हो
वै औ सो ऊ करै असाध संगति हि सो ऊ॥ सि
स्त उदर परायण जेते॥ मन क्रम बचन त्यागि
एते ते॥ ५॥ करै असाधु एक को संग॥ तौ हूं जा
न ध्यान कौ संग॥ असेत संग नर ज बदा करै
॥ ता के संग नरक भै परै॥ ६॥ जै सैं अंध के संग
॥ कूं प परै होवै सुष संग॥ या की गाथा भाषों ए

क॥ जातैं उपजे परमबिबेक॥ ७॥ जब उर बसी
रहत न देख्यो॥ सो क मोह सागर में बह्यो॥ जब पु
त्रा नाथी जोई॥ तो सौं गाथा नाथी सोई॥ ८॥ राउ
रुख वाच कर्बती॥ तांकी आन जहां लों र्धती॥
गाय दुते उतरी उर बसी॥ सो मिलि कै नृप के उर
सी॥ ९॥ बहु स्यौं प्राप मुक्ति जब नई॥ तब तजि
पदि उर बसी गई॥ नृपति बिलाप करैं वै परि
नृप की और न जावे॥ १०॥ राजान मदेह सुधि
दी॥ बांन विकल दीनता मांही॥ लज्जारहित
मद जैसै॥ चल्यो उर बसी पीछै तसै॥ ११॥ अ

हो प्रिया तु मठा दी हो ॥ मेरी और कृपा करि
ब्रौ ॥ मो कौ मारे काहे जा ब्रौ ॥ कृपा करौ मेरे गृह
ब्रौ ॥ १२ ॥ मिलि उर बसी संग सुष पायौ ॥ सो सो
कल दुःष द्वे आयौ ॥ तन नमयौ जोग वत जोग
इ उर बसी कौ संजोग ॥ १३ ॥ ता उर बसी जान अ
धौ ॥ ता तैं नला मानि करि दधौ ॥ तन मय हृदय
छू नदी आ नैं ॥ निसदिनु मास वर्ष नहि जा नैं ॥
॥ तब ते नृप के पूरण भाग ॥ जा तैं प्रगट नयौ बै
ग ॥ तब नृप बचन बषा नेजे ई ॥ तो सों मैं भाषत ते
ते ई ॥ १५ ॥ पुरुर नौ ऊवाच ॥ अहो एक देवी मम
मोद ॥ आपु दिखियो आप नों जो द ॥ गदियो कं

देवकी माया ॥ जिनि मेरो सब आयुगं ब्राया ॥ १६ ॥
इन मो कौ उद क्यो बह ते रौ ॥ सर्व सु आयु लिखे
रि मे रौ ॥ मे दिन राति न जानो जाता ॥ अमृत क
र मां न्यो बिष पाता ॥ १७ ॥ वर्ष समूह गये मम ब
ते ॥ सकल विकार निली न्हों जाति ॥ देवो में कै
उद का यौ ॥ अस्त्री के कर आपु बि का यौ ॥ १८ ॥
तो मैं राज राज चक्र वर्ती ॥ जाति समस्त करी ब
धती सकल भूय मम चरण नि सेवें ॥ तन मन
न सब मो कौ देवें ॥ १९ ॥ सो मैं बिकान्यो अस्त्री
थ ॥ ज्यो बानर बाजी गर साथ ॥ ज्यो ज्यो अस्त्री
दिन चा यौ ॥ त्यों त्यों मैं मूरिष सुष पा यौ ॥ २० ॥

तापरिराजसहितताजिमोदि॥तृणसमानव
रिचलीबिछोदि॥नगननयौमेंपीछेंधायो॥जे
उनमनआपुबिसरायो॥२१॥कोंनमांतितादे
बलहोई॥तेजप्रतापरदेनदिकोई॥जोहोत्रे
स्त्रीआधान॥जेंसैंषरीसंगषरदीन॥२२॥विद्य
मोनतयस्यात्याग॥वनमेंबसिबोदृढबैराग॥ए
समस्तकीन्देकछुनांही॥जोलगिजियावसैमन
मांही॥२३॥यहउरबसीजबहीतेपाई॥कामअ
ग्निबहुमांतिगंवाई॥परियहअग्निनसीतलम
ई॥अधिकअधिकबाधतआतिगई॥२४॥जें
सैंअग्निप्रज्वलितहोई॥तामेंईधनउरैकोई

सात्यो अधिक अधिक पर जरे ॥ पल कौन ही स
लता करै ॥ २५ ॥ मैं अप नौ न जां न्यो अर्थ ॥ आ
पु कौं कियो अनर्थ ॥ मरिष आपु दिपंडित
न्यो ॥ पस्यो मृत्यु मूष अं मृत जां न्यो ॥ २६ ॥ जो
ईस सकल भू के रो ॥ सो कैर ह्यो त्रिया कौ चेर
मरिष ता कौं धिक्कार ॥ जिन न कियो कछु
न बिचार ॥ २७ ॥ अस्त्री करि जा कौ चित्त द
॥ जान बिचार सकल परिहस्यो ॥ ता कौं द
बिनु कौन छु डावै ॥ दू जो आपु न छुटन पावै
॥ ता तैं दारि चरणानि कौं गहों ॥ सकल स्या
रि कौ कैर है ॥ जद्यपि देवी मो दिव्य माया ॥

तापरिराजसाहितताजिमोदि॥तरासमानव
रिचलीबिछोदि॥नगननयौमैंपीछेंधायो॥जें
उनमत्तआपुबिसरायो॥२१॥कोंनमांतितावे
बलहोई॥तेजप्रतापरहैनदिहोई॥जोहोवे
स्त्रीआधीन॥जेंसैंषरीसंगषरदीन॥२२॥विद्य
मोनतयस्यात्पाग॥वनमेंबसिबौदृढबैराग॥ए
मस्तकीन्हैकछुनांही॥जोलगिजियावसैमन
हो॥२३॥यहउरबसीजबहीतेपाई॥कामअ
ग्निबहुमांतिगंवाई॥परियहअग्निनसीतलभ
ई॥अधिकअधिकबाधतआतिगई॥२४॥जें
सैंअग्निप्रज्वलितहोई॥तामेंईधनडारैकोई

सो तो अधिक अधिक पर जरे ॥ पल को न हास
लता करै ॥ २५ ॥ में अप नौ न जा न्यो अर्थ ॥ आ
पु को कि सो अनर्थ ॥ मरिष आपु हि पंडित
न्यो पस्यो मृत्यु मरष अमृत जा न्यो ॥ २६ ॥ जो
ईस सकल भू के रो ॥ सो कै रह्यो त्रिया को चेर
मरिष ता को धिक्कार ॥ जिन न कि सो कछु
न बिचार ॥ २७ ॥ अस्त्री करि जा को चित्त द
॥ जान बिचार सकल परिहस्यो ॥ ता को द
बिनु को न छु डावै ॥ दू जो आपु न छूट न पावै
॥ ता तैं हरि चरणानि को गहों ॥ सकल त्या
हरि को कै रहै ॥ जद्यपि देवी मो दिवु

या श्रीतिदुःषकदिसमजा यो॥२८॥ तौहं में मूरि
षनदिजां न्यो॥ कामं अंधु सुषई करि मां न्यो॥ तां
ता कौन ही अपराध यह मेरो मन बडो असाध॥
३०॥ जो मैं स्वर्ग नर्क में देखी दुषही मां हि सुषक
लेख्यो॥ गुन मैं सां पजा निदुष पावै॥ अग्नि पतंग
परै मरि जावै॥ ३१॥ तौ तिन को अपराध न कोई
आपु दुःष करि लेवै सोई॥ ता तैं इन को इहै सुन
व॥ मैं मन में क्यों धरौ अभाव॥ ३२॥ जो मैं आप
अग्नि मैं पशौ॥ तौ उर दोष कवन को धरौ॥ देह म
लीन महा दुर्गंध॥ सो करि जां न विमल सुगंध
॥ ३३॥ सो आपुनी अविद्या कस्यो॥ निजानंद

आत्मबीसस्यो ॥ यदतनतौ बहु तानि को
दिए ॥ तामें ममता गहिक्यो रहिए ॥ ३४ ॥ म
पिता अपनों करि कहैं ॥ अस्त्री एकमेक मि
रहैं ॥ के यदतन कहिये राजा को ॥ के पावक
सराहै जा को ॥ ३५ ॥ के भू को के स्थान शृंगार
के आपनों मित्र के काल ॥ यदतन धों कहि
किनकिन को ॥ प्रगट दी सत है तिनतिन को
३६ ॥ महा असुख देह यह औ सी ॥ पर गटन
षांनि है जैसी ॥ तहां कौन बांधे मति मंद ॥ अ
नाम काल को फंद ॥ ३७ ॥ त्वचा रुधिर अरु
स अरु अंत ॥ मंजामेद रो मनष दंत ॥ बि

तरे टंक मि दाड ॥ अस्त्री पर गट नर क की षाड
३८ ॥ तातें अस्त्री अरु ता संगी ॥ तिन के न होइ
जै प्र ॥ संगी ॥ तिन के दर स दु न त म न होइ ॥ देवे
बिना बिकार न कोइ ॥ ३९ ॥ तातें तिन को दर स
न करिये ॥ आपुहि अपुन र क न हि रिये ॥ जो
यह इंदिय अर्थ निवारै ॥ मन बच क्रम दुद संग
ति टारै ॥ ४० ॥ तब मन यह सह जै थिर होइ ॥ कवे
विकार न पर सै कोइ ॥ तातें जे अस्त्री नु को न जे
अरु अस्त्री तिन को बुध त जै ॥ ४१ ॥ दर स पर अ
रु अरु निवास ॥ सेव भांति निते मा नै आ स
इंदिय नु को बिस्वास न करै ॥ ज्ञान वं त नित रू

परिहरे ॥ ४२ ॥ महापुरुष जे जीवन मुक्त ॥ ति
हो को सब संग अयुक्त ॥ तो जे जग सो छुटे चहें ते
मसे कौं संग दिग दें ॥ ४३ ॥ ताते में अब संग
गौरी श्रीपति चरण कें बल उर धारें ॥ दीन बंध
करुणामय स्वामी ॥ कृपा करी यह अंतर जांम
४४ ॥ श्रीनग जांम ऊबाच ॥ या विधि बचन क
नर राज ॥ तजि उर बसी लोक सुष साज ॥ जां
लख्यो सब संसय टा स्यो ॥ मन निश्चल री मो
धा स्यो ॥ ४५ ॥ ताथै उद्धव यह पुरुषारथ
रतन पायो तब ही सारथ ॥ जब समस्त की
गति तजे ॥ संत संगति गहि मो को भजे

संतवताविदितउपदेस॥जिनितेसंसयरहेनले
स॥मनकीसबआसक्तिनिवारै॥संतमहान
वसागरतारै॥४७॥निस्पृहानिरारंभसमदर
से॥संगहरदितद्वंद्वनदियरसे॥अहंकारमम
तानदीआमैं॥मोहिअजैदूजोनहिजोनैं॥४८॥
तेजद्यपिउपदेसनदेवे॥तौद्वंद्वमोहिचदेतेसेवे
तहांकथामेरीनितदीवैं॥तेईअधसंदेहनिषे
वे॥४९॥मेरीकथाप्रवणजेकरै॥तेसबपाप
तेंनिसतरै॥सुनैकहेअंतरगतिध्यावैं॥अति
आदरसोंप्रातिबदावैं॥५०॥तेसदजहीलहेम
मभक्ति॥सदजैहीहोवैसकलविरक्ति॥मेरीम

किल है नरजबदी ॥ पूरण कांम भयो सो तब द
॥ ५१ ॥ ता कौं कछून करणै रहै ॥ जाना नंद रूप
मल है ॥ सीत निसा कंदो वै को ई ॥ तहां अगि
पर जाले सो ई ॥ ५२ ॥ तम तुषार नय सहज दि
जां वै ॥ त्यों साधू सब दुष मिटां वै ॥ यह अपार
गर संसार ॥ जामें बूडें जीव अपार ॥ ५३ ॥ ज्यों
लोक धर्म धन जां नों ॥ त्यों भव तारक साधू
मां नों ॥ जिन के हृदय गट मम चरण ॥ तिन बि
नु या भव और न सरण ॥ ५४ ॥ ज्यों बाहर है सूर
त एक यों उर नयन उघारै अनेक ॥ संतै मात
ये ताहितकारी संतै देव बंधु दुष हीरी ॥ ५५ ॥

तातैं संत संग नित कर लों ॥ और उपाइन हृद
धर लों ॥ तिन तैं अनायास नवति रै ॥ अनाया
समीकों अनुसरै ॥ ५६ ॥ तब पुरुरवा औ सो क
स्यो ॥ स्यो उर बसी लोक परिहस्यो ॥ तब ताजि
नयो आत्मा रां म ॥ बिचस्यो नुवैं मै द्वे निहकां
म ॥ ५७ ॥ तातैं असत संग परिहरिये ॥ साधु सं
ग निरंतरि करिये ॥ साधु जन सुषही नवती रै
॥ सुषही मम चरण निचित धारै ॥ ५८ ॥ दोहा ॥
औ सो साधु असाधु को ॥ सुनिहरि जी सों संग
तब उद्धव जन पूछियो ॥ कर्म योग पर संग ॥ ५९
॥ इति श्री भागवत महापुराणे स्कन्धे दशमोऽध्यायः ॥

नगवदुद्धवसंवादेभाषायांरैलगतौपारख्यानेष
उविशोध्यायः॥२६॥चौपद्व॥१७॥ए२॥उद्धउव
॥देप्रभुरुपाकरौअवअैसी॥भाषोक्रिया
विधिजैसी॥जाकेकरतहोइसतसंग॥पावे
नहोइनिदसंग॥१॥यदजोतुवप्रतिमाकीप
॥तातैअेयकदैनहिदूजा॥याकोंकदैव्यास
नारद॥गुरुददस्यातिपरमविसारद॥२॥अै
सकलमुनीस्वरजैते॥परमअेययदैभाषैते
॥कल्पआदिबिधिसोंतुमकह्यो॥सोदृढकरि
धिहृदैगह्यो॥३॥तिनिनृगादिकसुतनिसु
यो॥सोभवदुतेभबानीपायो॥जैतेसकलव

ए-आश्रमा॥ अस्त्री अंत्यं ज कैं दे हैं सब को ध
र्मा॥ ४॥ या विनु और धर्म हैं जे ते॥ या दी का ज व
हैं ते ते॥ या विनु और धर्म जे करै॥ तो तिन ते क
रि बंधन परै॥ ५॥ यदई सब धर्म नि को धर्मा॥ य
दी दु ते कैं सब कर्मा॥ ता तें पूजा विधि विस्तार
॥ कृपा करौ जीव नि निस्तारै॥ ६॥ तुम दया ल स
ब को हित कारी॥ सुमिरत सकल दुष अघ दार
॥ सुनि ये पर उपकारी बैन॥ बोलै हरषिक मल
दल नैन॥ ७॥ श्री गणेश नमः॥ उद्धव या को
अंत न पार॥ मम पूजा विधि दुंत विस्तार परि
तो कों संक्षेप सुनाऊं॥ तामें तत्त्व सकल को ल्या

ॐ ॥ ८ ॥ पूजा विधि द्वैती निप्रकार ॥ वैदिक तंत्रि
मिश्रित सार ॥ वेद मंत्र अरु वेदिक अंग ॥ सो
द्वैत वैदिक परसंग ॥ ए ॥ यौही तंत्रिक मिश्रित ज
॥ भावैता सौ पूजा गंगे ॥ विप्र रुद्र त्री वैस्प त्रि
ए ॥ इन कौजा विधि पूजा कए ॥ १० ॥ सो समस्त
वेधितु महि सुनां ॐ ॥ जीवनि कों कल्याण उपां
॥ प्रति मां भूमि अग्नि जल वाइ दिज अरु अ
अरक अरु गाइ ॥ ११ ॥ अरु सब दिन में मो को
नों ॥ जया जोग सब पूजा गंगे ॥ गुरु अरु मो में
दन राखे ॥ मानुष बुद्धि दूरि करि नाखे ॥ १२ ॥ सु
होइ जल माटी संग ॥ अस्नानादि सकल ई अंग

तिका कौलै कीन्ह ॥ एकर तन माणिकी करि
॥ एमम प्रतिमा अष्ट प्रकार ॥ जानै मम मंदि
ज सार ॥ १८ ॥ तिनि में होवैं मिश्र लजे ती ॥ स
दिक नि करावै ते ती ॥ सालि गरंम आदि देउ
॥ मेरो तन जानै नित ते ती ॥ १९ ॥ और सब नि
पूजा काल ॥ किं बा जानै नित गोपाल ॥ लेया लि
मार जन करै ॥ और न अस्त्रां न दिवि स्तरे ॥ २० ॥
उत्तम सांमग्री सौं सेवै ॥ तन मन धन सब मो कौ
॥ जो निदकाम निदक पट होई ॥ करे जाव बनि
कौं सोई ॥ २१ ॥ उत्तम बस्तु नि मन करि ल्यावै
मम सहित सब मोहि चढ़ावै ॥ उत्तम विधि अ

नकारावै॥ वस्त्रानरणादिकपहिरावै॥ २२॥ अ
ग्निघृतादिकदोमदिकरै॥ धरणीरविअस्तु
विस्तरै॥ जलकोंपूजैजलफलफूल॥ जानैमो
सकलमेंमूल॥ २३॥ भक्तिसहितजोअरयेतो
ई॥ ताहुंतैमोकौसुषदोई॥ तौजोधूपदीपनेवेद
॥ मोकोंबहुविधिकरैनिवेद॥ २४॥ ताकीमहि
कहाबधनों॥ ज्योंहैत्योंपैमैंहीजानों॥ तातैमे
नितप्रतिआधान॥ तौषनमानोंप्रतिविदीन
॥ २५॥ अबभाषोंपूजाविधितोसों॥ सावधानहै
सुनियोंमोसों॥ दोइपवित्रकरैअस्नान॥ मनमें
राखेमेरोध्यान॥ २६॥ पूजासाजप्रथमसबलेई

फिरि उविवे कौरदनन देखी॥ बेवै उत्तर कै पूरब सु
ष॥ निश्चल प्रतिमा केवल सन मुष॥ २७॥ दर्शन
सों निज आसन करै॥ अंगनि के न्यास दिवि स्तरै
॥ न्यास करै मम मूरति अंग॥ तब गंगे में अस्नान प्र
संग॥ २८॥ उत्तम कलस तौ दसों नरै दूजे जल के पा
त्र दिधरै॥ जल में बहुत सुगंध मिलावै॥ ता सों मो
दिसनान करावै॥ २९॥ अर्घ्य पाद अरु बिष्टर करै
॥ लीनिया त्रता तें जल नरै॥ गंध पुष्प दिध में बहुधरै
॥ गाइत्री अमि मंत्र नि करै॥ ३०॥ तब आयनों करै त
न सुद्ध॥ केहू द्वार न दोइ असुद्ध॥ हृदै मांदि मम रूप
दिध्यावै वीरुं कारज दांते आवै॥ ३१॥ जे से गृह में

दीपप्रकाश॥ योऽध्यावेत नमोऽदिउजास॥ पूजिषे
मसौत नयदोई॥ पुनिमूरति मैयापै सोई॥ ३२॥
सोगोपांग करैत न पूजा॥ कोई नावन उपजे दूजा
दिवै अर्घपाद आचवन॥ रचै अष्टदल पंकज न
वन॥ ३३॥ तापर अस्थापे धर्मादि॥ सकल सक्ति
रविसिसि अम्मादि॥ संषरुचक्रगदा असि अस्त्र
धनुषरुबाण मुसलदलसस्त्र॥ ३४॥ एआवउं अ
वदिसि आनै॥ मणिमालालताउरजांनै॥ नंदसुन
दमदाबलचंड॥ कुमुदेक्षणबलकुमुदप्रचंड॥ ३५॥
अष्टदिसापारषदसमग्र॥ गढौगरडजोरिकर
प॥ विष्णुकसेनव्यासगुरदेव॥ गणपतिदुर्गा अरुस

बदेव॥३६॥कारजोरेहरिसनमुषगडे॥हरिषतव
दनप्रेमअतिबाटे॥सबदिनकोपूजाअर्घादि॥बिन
नम्रताबंदनआदि॥३७॥चंदनअरुकरुणसीर॥उ
कुमअगरुसुगंधितनीर॥प्रथमादिकबूमधुपर्कच
ढावे॥निर्मलजलआचमनकरवे॥३८॥पुनिसुगं
धजलदेइस्नान॥मंत्रबंदनमनकमनहिआन॥पु
उरीकस्तोचनमंत्रभावन॥आदिपुरुषसबकेअ
पजावन॥३९॥जयजयब्रह्मसकलआधार॥नमो
नमस्तेवारनपार॥अैसेतंत्रमंत्रउच्चारै॥सहस्र
षाष्टुतिबिस्तारै॥४०॥वस्तरजनेऊअरुआभरण
अंगअंगतिलकादिककरणा॥

दापत्रकास॥योध्यावेतनमांदिउजास॥पूजि
मसौतनयदोई॥पुनिमूरतिमैथापैसोई॥३२॥
सोगोपांगकरैतनपूजा॥कोईनावनउपजैदूज
॥दिवैअर्घपादआचवन॥रचैअष्टदलपंकज
वन॥३३॥तापरअस्थापैधर्मादि॥सकलसहि
रविसिसिअम्मादि॥संषरुचक्रगदाअसिअस्त्र
॥धनुषरुबांणामुसलदलसस्त्र॥३४॥एआवउं
वदिसिआमैं॥मणिमालालताउरजांनैं॥नंदसुन
दमदाबलचंड॥कुमुदेक्षणबलकुमुदप्रचंड॥अ
अष्टदिसापारषदसमय॥वाढौगरडजोरिकर
य॥विषुक्लेनव्यासगुरदेव॥गणपतिदुर्गाअरुस

वदेवादि विष्णुसंज्ञा
दनकृत्य विष्णुसंज्ञा
नमस्तावेदतयादि
कुमश्रगं नमः
ठावे॥ नित्यं नमः
धजलदे इत्येतत्
उरीकस्तोत्रं नमः
पजावनं नमः
नमस्ते वारनय
र्षाश्रुतिविस्तार
॥ अंग अंगति नमः

सुगंध ॥ प्रेम सहित मो सौ मन बंध ॥ ४१ ॥ बा
ल नोग आचार करे वै ॥ कुसम सुगंध रूच्य प
ना वै ॥ बहु तमांति आरती उतारै ॥ नां नां विधि
नै बेद्य संवारै ॥ ४२ ॥ धीर पांड ॥ घृत दधि लाय
सी ॥ लाड पुत्रा सो हार सुर सी ॥ व्यंजन करे और
बहु तेरे ॥ विन वलगा वै बहु हित मेरे ॥ ४३ ॥ नित
दां त्यौं नि नित उ बट नौं तेल ॥ अन्हु बां वै पंचाम ते मे
न ॥ अलंकार दर्सन आदर सा ॥ गीत नृत्य बादि त्रस
मर्स ॥ ४४ ॥ बहु तमांति नै बेद्य संवारै ॥ नित नां दां ते
मर्ब नटारै ॥ वैदुरि करै पात्र क मै पूजा ॥ मो विन त
हन जां नै दूजा ॥ ४५ ॥ अग्नि कुंड में अग्नि दि धरै ॥

समिधघृतादिकदोमद्विकरै॥ दोमकरैयटिपाटि
मममंत्र॥ जिनकोकहेवैदअरुतत्र॥ ४६॥ करिदो
मदिआचमनकरावै॥ ताकोमेरीरूपदिध्यावै॥
तत्रस्ववर्णतुल्यंछविअंग॥ चारुचतुरस्तुजआ
युधसंग॥ ४७॥ पीतवसनकुंडलमणिमाला॥
सीसमुकुटकाटिसुत्रविसाला॥ भृगुलताअरु
लक्ष्मीआदि॥ बहुविधिध्यावैरूपअनादि॥ ४८॥
पुनिनंदाद्यपारषदजेते॥ बलिबिधानसौपूजे
तेते॥ जयैमूलमंत्रदिवदुबारा॥ जाविधिवधैवै
मअधिकार॥ ४९॥ योहैतापरसाददिले
करिसबनक्तिनिकोंदेवै॥ आशाया

सुगंध ॥ प्रेमसहितमोसोंमनबंध ॥ ४१ ॥ बा
लनोग आचारं करोवै ॥ कुसमसुगंधरुच्युप
नावै ॥ बद्धतमांति आरती उतारै ॥ नां नां विधि
नैवेद्यसंवारै ॥ ४२ ॥ धीरषांड घृतदधिलाप
सी ॥ लाडपुत्रासोहारसुरसी ॥ व्यजनकरै और
बद्धतेरे ॥ विनवलगावै बद्धहितमेरे ॥ ४३ ॥ नित
दांत्यों निनित उबटनौ तेल ॥ अन्हवावै पंचामतेम
न ॥ अलंकारदर्शन आदरसा गीतनृत्यवादित्रस
पर्स ॥ ४४ ॥ बद्धतमांति नैवेद्यसंवारै ॥ नितनांदात
पर्वनटारै ॥ बद्धरिकरै पात्रकमें पूजा ॥ मोविनत
दिनजां नैदूजा ॥ ४५ ॥ अग्निकुंडमें अग्निदिधरै ॥

समिधघृतादिकदोमद्विकरै॥ दोमकरैयटिपाटि
मममंत्र॥ जिनकोंकहेंवेदअरुतंत्र॥ ४६॥ करिदो
मदिआचमनकरावै॥ ताकोंमेरौस्वदिध्यावै॥
तत्रस्ववर्णतुल्यं ह्यविअंग॥ चारुचतुरस्रजआ
युधसंग॥ ४७॥ पीतवसनकुंडलमणिमाला॥
सीसमुकुटकाटिसुत्रविसाला॥ भृगुलताअरु
लक्ष्मीआदि॥ बहुविधिध्यावैस्वअनादि॥ ४८॥
पुनिनंदाद्यपारषदजेते॥ बलिबि
तेते॥ जपैमूलमंत्रदिवद्वारा॥ जाविधि
मअधिकार॥ ४९॥ योहैंतापरसाददिले
करिसबनक्तिनिकोंदेवै॥ आज्ञापाद

सुगंध ॥ प्रेमसहितमोसोंमनबंध ॥ ४१ ॥ बा
लनोग आचमै करौ वै ॥ कुसमसुगंधरुच्युप
ना वै ॥ बहतनांति आरती उतारै ॥ नां नां विधि
नैवेद्यसंवारै ॥ ४२ ॥ धीरषांड घृतदधिलाप
सी ॥ लाडू पुत्रा सोहार सुरसी ॥ व्यजन करै और
बहुतरे ॥ विनवलगावै बहुदहित मेरे ॥ ४३ ॥ नित
दांत्यों निनित उबटनौ तेल ॥ अन्हवावै पंचामतेम
ल ॥ अलंकारदर्सन आदरसा गीत नृत्य बादि अस्
मर्स ॥ ४४ ॥ बहतनांति नैवेद्यसंवारै ॥ नितनांदातै
मर्वनटारै ॥ वैदुरिकरै पात्रकमें पूजा ॥ मोविनत
दिनजां नैदूजा ॥ ४५ ॥ अग्नि कुंड में अग्निदिधरै ॥

समिधघृतादिकदोमद्विकरै ॥ दोमकरै पाटि पाटि
मममंत्र ॥ जिन कों के देवै वेद अरु तंत्र ॥ ४६ ॥ करि दो
मदि आचमन करावै ॥ ता कों मेरो रूप दिध्यावै ॥
तत्तत्स्ववर्णतुल्यं क्वबिअंग ॥ चारुचतुरभुज आ
युध संग ॥ ४७ ॥ पीत वसन कुंडल मणि माला
सीस मुकुट कटि सुत्र बिसाला ॥ नृगुल ता अरु
लक्ष्मी आदि ॥ बहु बिधि ध्यावै रूप अनादि ॥ ४८
॥ पुनि नंदाद्यपारषद जे ते ॥ बलि बिधांन सों पूजै
ते ते ॥ जयै मूलमंत्र दिबहु बारा ॥ जा बिधि बधे जे
म अधिकार ॥ ४९ ॥ पावै ता परसाद दिले वै ले
करि सब नक्तिनि कों देवै ॥ आज्ञा पाइ आपतव

सुगंध ॥ प्रेम सहित मो सौ मन बंध ॥ ४१ ॥ ब
ल नोग आचार करे वै ॥ कुसम सुगंध सधूप
ना वै ॥ बहु तनांति आरती उतारै ॥ नां नां विधि
नै बेद्य संवारै ॥ ४२ ॥ धीर पांड ॥ घृत दधि लाय
सी ॥ लाड पुत्रा सो हार सुर सी ॥ व्यजन करै ओर
बहु तेरे ॥ विमल लगावै बहु हित मेरे ॥ ४३ ॥ नित
दांत्यों नित उबट नौ तेल ॥ अन्ह बावै पंचाम ते
ल ॥ अलंकार दर्सन आदर सा गीत नृत्य वादि ज
स ॥ ४४ ॥ बहु तनांति नै बेद्य संवारै ॥ नित नांदा
मर्ब नटारै ॥ बहुरि करै पावक मै पूजा ॥ मो विन
दिन जां नै दूजा ॥ ४५ ॥ अग्नि कुंड में अग्नि दिधरै ॥

समिधघृतादिकदोमदिकरै॥दोमकरैपाटिपाटि
मममंत्र॥जिनकोकहेवेदअरुतंत्र॥४६॥करिदो
मदिआचमनकरावै॥ताकोमेरीरूपहिध्यावै॥
तत्तत्स्ववर्णतुल्यंछबिअंग॥चारुचतुरभुजआ
युधसंग॥४७॥पीतवसनकुंडलमणिमाला॥
सीसमुकुटकटिसुत्रविसाला॥भृगुलताअरु
लक्ष्मीआदि॥बहुविधिध्यावैरूपअनादि॥४८॥
पुनिनंदाद्यपारषदजेते॥बलिबिधानसौपूजे
तेते॥जयैमूलमंत्रदिवहुबारा॥जाबिधिवधेये
मअधिकार॥४९॥योहैंतापरसाददिलेवै॥ले
करिसबनक्तिनिकोंदेवै॥आज्ञापाइ

पावै॥ प्रातिसहितजेताजीवनावै॥ ५०॥ पुनिः
यै सुगुंधतमल॥ उत्तममाला उत्तमफूल॥ मेरे गुण
वे सुरगावै॥ नामनिनाषे प्रेमबुधावै॥ ५१॥ मेरे गु
ण अरु कर्म सराहै॥ पूरण प्रेम सिधु अवगाहै॥ व
यानित्यमम सुनै सुनावै॥ मोबिन कदून पलव
हरावै॥ ५२॥ चरण पलोदै सयन कराई॥ मुषतै
नांम भूलिन॥ द्विजाई॥ प्राहृत अरु संस्कृत बेत
॥ जेई जे अस्तुति के भेद॥ ५३॥ तिनतिन सोमम
अस्तुति करै॥ बारबार चरणनि में परै॥ पीछै धा
रि जोरि कर दोई॥ करै दान दै बीनती सोई॥ ५४॥
दे प्रभु न वसागर तै तारौ॥ काल मृत्यु न य सो क

निवारौ॥ तुमबिन मेरे और न कोई॥ पाऊं च
रणनिकी जै सोई॥ ५५॥ हृदय जोति जोति मैं धारै
॥ मूरति कों सज्ज बिस्तारै॥ यों आकार जहा लौ
देवै॥ ते समस्त मम मूरति लेवै॥ ५६॥ करै जया वि
धि सब मै पूजा॥ मो कों छोड़ि न जानै दूजा॥ या वि
धि क्रिया जो गमन लावै॥ सो नर नक्ति मुक्ति फ
ल पावै॥ ५७॥ मो कों उत्तम गृह संवरावै॥ ता मै म
म प्रतिमा पधरावै॥ मो कों करै बाग फुल वा
॥ जात म दो व्रत की अधिकारै॥ ५८॥ ममादित
सदा व्रता दिक् देवै॥ बहु तजानि मम नक्ति नि
सेवै॥ मम पूजा प्रवाद के हेत॥ देइ गाव पुर

टरुषेत ॥ ५८ ॥ सोममसं ॥ सुरतापावै ॥ तिहं लो
कौ ईसकदावै ॥ जोममप्रतिमाथापनकरै ॥ सो
बनूपतिद्वै अवतरै ॥ ६० ॥ जोमेरोमंदिरसंवरावै
॥ तिहं लोककीप्रभुतापावै ॥ पूजादिकानिब्रह्मवै
लोक जहां नदीनां विधिसोक ॥ ६१ ॥ तीन्योवि
थेलहैवेकूंग ॥ कालां दिक् सबहुतें अकूंग ॥ जोयों
सवैहै निदकांमीनावै त्यों सवै ॥ तनमनधनसो
मोकोंदवै ॥ सोपावै मेरै निजजान ॥ लहै मोहिब्र
ह्मसबआन ॥ ६३ ॥ वृत्तिसुरनिअरुविप्रानिकेरा
॥ अरुजोकरिहोइकछुमेरा ॥ दई औरकीकिबा
पु ॥ ताकेदरेकस्यो सबपाप ॥ ६४ ॥ सोहोवैहमि

सबदिन कौं फल दोइ समान जावै उत्तम जावै आन
बिष्टामांही ॥ बरष कोटिहं ॥ निक्क सें नांही कर
तावे रक तथा सदाई ॥ अने मोद कजि निरुद्धि उप
जाई ॥ ६५ ॥ तातै ममाहित कर्म नि करै सो बहत
निलै नव जलतिरै ॥ ६६ ॥ या बिधि पूजा को
करै ॥ ता को उपजै ज्ञान ॥ जाते मेरो पद लहे ता को
करै बखान ॥ ६७ ॥

॥२०५॥ उद्धृतं वीणायां जा
न॥ जातैल हेमोदिता जिआन॥ उत्तम मध्यम वार्मस्य
भाव॥ जे सब जग में नांना भाव॥ १॥ तिनतिन

नदिकरै॥ अरु नदिक कृत् अस्तुति बिस्तरै॥ प्रकृति
रुष निमित्त सब जानै॥ एक जानि सब भेद दिना नै॥
॥२॥ ब्रह्मा आदिकी र प्रजं तं॥ एकरूप देखै मम संत
जे जे बहु विधिकर्म स्वभाव॥ तिन को आनै भाव
अभाव॥ ३॥ तो सो होइ अर्थ ते भए॥ माया मोह चि
त आकृष्ट मिथ्या मोहि चित्त को धरै॥ ताते मूरिष
जां मै मरै॥ ४॥ लीन होइ जब इंद्रिय देह॥ स्वप्न ल
दे सब आत्म एह॥ जहं मन ल ग्यो तहं तहं जावै॥
बहुत भांति को सुष दुष पावै॥ ५॥ पुनि सुष पति मै
होवै लीन॥ मरणों कहिए अहं मम ही न॥ यों सुष
पति अरु देषत सुपिनां॥ जन्म मरण बहु सुष दुष

उपनां॥६॥जौलगिसोवैतौलगिपावैजागतदीकछ
वैनरहावै॥त्योंग्रहसुषदुषपापरपुंन्य जन्ममरण
सबजांनैसुन्य॥७॥जौयैग्रहसबदैतअमत्यमोवि
नऔरकछनदिसत्य।देषनसुननकदतमेंआवै॥
मंत्ररुबुद्धिजैहांलौंजावै॥८॥तैसमस्तजोंकछवै
नांदा॥तौसुभअसुनैकांमांदी जद्यदिदैमिथ्यासं
सार॥तौदंडुषकोवारनपार ८ जौलगिदेदबुद्धि
नदिबूटै॥तौलगिनवमयपलकनटै।जैसेअप
नीधुनिकीगुंई॥अरुप्रतिबिंबसिंघकीनाई॥९॥
॥सीपसुपज्यैरीमैसीप॥अरुमृगतस्मानांदैअ
पादैनांदापरदैसोजांनै॥तिनतैसुषदुषबदा

धिमांनै॥११॥जौलगिमिथ्याजांनैनांदी॥तौलगि
कलअनर्थनजांदी॥ब्रह्मरूपयदसबसंसार॥ज
लगेकछुदैआकार॥१२॥ब्रह्मरूपब्रह्मदिउप
वै॥ब्रह्मब्रह्मआधाररहावै॥ब्रह्मेकरैब्रह्मप्रा
पाल॥ब्रह्मेरूपब्रह्मकोकाल॥१३॥जैसेजल
दबदजलमांदी॥जलकोंछोडिद्वैतकछुनांद
॥त्योंहीब्रह्मरूपसबएक॥देखेब्रह्मेजीवअनेक
॥१४॥परियदसबजांनौनिरमूल॥ज्योमृगबारि
गगनमेंफूल॥त्रिगुणरचितयदसबजगजांनौ॥
तेगुणईमायाकेमांनौ॥१५॥जौबिधिसबदामि
थ्याजांनै॥ब्रह्मभावनाहूदैआनै॥परितयाति

जगमें रहै॥ तौ रवि ज्यों गुण दोष न गढ़ै॥ १६॥ याज
में सुन असुन न देखै॥ मिथ्या जां निब्रह्म करि लेखै॥
ज्यों प्रत्यक्ष घटादिक देखै॥ उपजत बिन सत मिथ्य
लेखै॥ १७॥ धरणी आदिकाल त्रिय सत्य॥ नाम रूप त
सकल असत्य॥ त्यों ही ब्रह्म सत्य तिद्रुं काल॥ नाम स
प मिथ्या जं जाल॥ १८॥ असु त्यों करि देखै अनुमान॥
भाई एरा जड तन मन प्राण॥ सक्ति को न कीचे तनि
रहै॥ अपने अपने अर्थ निगढ़ै॥ १९॥ निराकार ते च
तनि होई॥ सब आकार जहां लग कोई॥ तातें सब
मिथ्या आकार चेतनि ब्रह्म सकल आधार॥ २०॥
असृष्टि को परिणाम बिचारै॥ नेति नेति कि

सदापुकारे॥ अरुत्पोंदेषे अनुभवमांही॥ नामरूप
कछुदैएनांही॥ २१॥ अंतनरहिदैदु तेन आदि॥ आ
निश्चलब्रह्मअनादि॥ ऐसेबहुविधिकोविस्तार
मिथ्याजानिसकलआकार॥ २२॥ मनवचक्रम
इनिदं संगं॥ ब्रह्मविचारकरैअनंग॥ ऐसेवचन
देभगवान्॥ तवउद्धवपूछ्योदृढज्ञान॥ २३॥ उ
॥ च॥ हेप्रभुयदआत्मअविनासी॥ चेतनिरूपस्व
प्रकासी॥ निर्गुणनिराकारनितसुद्ध॥ सदाऐन
वृत्तसदाप्रबुद्ध॥ २४॥ ईदारदतसदाआनंद॥ सदा
कासकालियेनद्वंद्व॥ अरुयददेहसत्तिकरिहीन
॥ जउअसुद्धदैजावैलीन॥ २५॥ तातैंतिनकोसंभ

यह संसार लहे सो कौन ॥ आत्म सुख सदा सुख भौन २
न होई ॥ महा विशेष पर स पर दोई ॥ कछू ईछान ही
आत्म मां ही ॥ अरु तन सौं कछू होवै नां ॥
ही ॥ २६ ॥ आत्म कौं बंधन नहि कोई ॥ अरु आत्म
आवरण न होई ॥ यह कारि कृपा मोहि समुझावौ
मेरो भ्रम संदेह मिटावौ ॥ औ सो उद्धव पुछ्यो ज्ञान
तब बोले नव पति भगवान् ॥ २७ ॥ आत्म गवान् ऊच्य
वै ॥ आत्म कौं नां ही संसार ॥ अरु तिन कौं नां ही आका
र ॥ तिन दूनों ते जो आविवेक ॥ ताही कै नव दुःख अने
क ॥ २८ ॥ इंद्रिय देह प्राण मन बंध ॥ इन सों जो आत्म
संबंध ॥ तातैं आत्मा सै संसार ॥ महा दुःख

॥३०॥ जौ लगि लौं इन सों संबंध ॥ तौ लगि आत्म
लें बंध ॥ सो अज्ञान कस्यो सब जानों ॥ नां दी कछु
सकल करि मां तों ॥ ३१ ॥ जद्यपि मिथ्या है संसार
परि तौ हूं कहुं बार न पार ॥ सदा जीव दुष ही मे रहै
॥ बार बार तन छोड़े गट्ट है ॥ ३२ ॥ ज्यों सुपिनां कछु है
नां दी ॥ परिसव साचौ निद्रा मां दी ॥ जौ जौ सुष दुष
मन में ध्यावै ॥ सो सो सकल स्वप्न में आवै ॥ ३३ ॥
है नां दी परि है सो जानै ॥ नां नां बिबे सुष दुष मां नै
॥ जागत ही कछु है एनां दी ॥ सब बिबाहार वृथा है
जां दी ॥ ३४ ॥ हर्ष सो कभय मो हरु लोभ ॥ इच्छा क्रो
ध अ सो भो सो भ ॥ जन मरु मरण विकार जहां लों

॥३५॥ आत्म सदा एकर सर है ॥ अहंकार संगति दु
ष स है ॥ इन्द्रिय देह बुद्धि मन प्राण ॥ सत्त अरु मह
तत्त्व अनिमोन ॥ ३६ ॥ इन सों मिलि करि आत्म ए
क ॥ माया के सुषण दे अनेक ॥ तिन तिन के हित क
र्म निकरै ॥ कर्मन के बस जन्म मरै ॥ ३७ ॥ लिंग बंध
देहनि में जावै ॥ तिन के संग महा दुष पावै ॥ बुद्धि व
चन मन प्राण समीर ॥ महतत्त्व इन्द्रिय कर्म सरीर
॥ ३८ ॥ सष अरु दुष ममता अहंकार ॥ तिन कौनो
ना बिधि संसार ॥ सो न मूल सकल ईजानै ॥ ज्यो ज
वरी सायत्यों मानै ॥ ३९ ॥ ज्ञान षड गभाजि मोहि ॥
उपावै ॥ गुर सेवा सौ सांन धरावै ॥

शनिद्वसंग॥ विचरै सब देषतममं अंग॥ ४०॥
गुरुके वचन हृदयें धारै॥ आदि अंत लोचुति
विचारै॥ जनममरण देखै प्रत्यक्षति जिअ जां
हो वेदक्ष॥ ४१॥ साधनधर्ममादि धिरदोई॥
आत्मदेह विचारै दोई॥ जो या जग की आदि
रुअंत॥ सोई मध्य विचारै संत॥ ४२॥ आदि
अंति मध्य में एक॥ नामरूप भ्रमरूप अनेव
॥ हेम एक ज्यो आदि रुअंत॥ मध्य किये आन
रण अनंत॥ ४३॥ लोक छू देम छोड़ि नहि अं
न॥ जो विचार करि देखै ज्ञाने॥ मिथ्या सकल
मआकार॥ हेम काल त्रय करै विचार॥ ४४॥

॥ त्यों जग आदि मध्य अरु अंत ॥ मोहि अरु रूप
विचारे संत ॥ आदि अंत मे एक अरु रूप ॥ सोइ म
ध्य तथा सवरूप ॥ ४५ ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अ
वस्था ॥ आदि अरु अंत मध्य मास्वस्था इन के न
समये जो रहै ॥ सकल छोड़िता को बुद्ध रहै ॥ ४६ ॥
॥ इंद्रिय अरु इंद्रिय के देव ॥ इंद्रिय विषयानि के
बहु मेव ॥ ते सब ज एक दिवि नाना ही ॥ सत्य ब्रह्म
सो जो जे मां ही ॥ ४७ ॥ जादि प्रकास त सकल प्र
कासे ॥ जाकी सक्ति सत्य से नासे ॥ मुख को मुख क
रण नि के करण ॥ कर के कर चरण के चरण ॥ ४८ ॥
॥ नासा नासन के नैन ॥ जिह्वा जीभ बैन के वै

॥ या विधि सकल प्रकाशक एक ॥ ता विना
या सकल अनेक ॥ ४८ ॥ एजे नाम रूप विस्त
र ॥ जिन सो पूरण सब संसार ते सब आदि दु
ते कबु नांही ॥ अरु नादि रादि है अंत दुं मांही ॥
५० ॥ ता तैं अब दूं मिथ्या मानें ॥ कारण ब्रह्म नि
रंतरि जां नैं ॥ नाम धस्यो सो सकल विकार ॥ ति
हुं काल में मांही सार ॥ ५१ ॥ यह जो कबु सो ब्रह्म
मस्त ॥ आदि मध्य अरु सब कै अस्त ॥ औ सैं ब्रह्म
विधि वेद वषां नैं ॥ ब्रह्म व ताई द्वैत सब मानें
॥ ५२ ॥ आदि समस्त दु तो कबु नांही ॥ अब आभा
उहे मो मांही ॥ या तैं परैं ब्रह्म सम रूप ॥ सकल प्र

सक आ प अ रूप ॥ ५३ ॥ यह विचित्रता मैं आन
से ॥ ताकी सक्ति सक्ति परका से ॥ तातैं सकल ज
सई लघौ तजि करि रूप दि देखो ॥ ५४ ॥ इन तें प
र रूप निज जां नो ॥ अरु ए सब मम रूप दि मां नो
॥ दैत छोडि निश्चल दैर दो ॥ जां निज स तौ जस
हिल दो ॥ ५५ ॥ असें जो नित करै विचार ॥ मिथ्या
जानै सब आकार ॥ गुरु सेवा करि जान बधावै
॥ चेतनि मो दि अर्षाडित धावै ॥ ५६ ॥ यह जो तन
सो आतम नां दी ॥ तन घट रूप विचारै मां दी ॥
अरु इंदिय ते दीप समान ॥ इन्ह दि
स आत्म आन ॥ ५७ ॥ अरु

द्वि॥ आत्मकी नदि जं नै सुद्धि॥ द्विति जल तेज
वन आकास॥ अदंकार गुणचित्त प्रकास॥ ५॥
साम्य प्रकृति तन मात्रा पंच॥ इन्द्रा कौ सब है
त प्रपंच॥ तेज उ आत्म कौ नदि जं नै॥ आत्म स
क्ति इहां सब वं नै॥ ५६॥ सकल प्रकास क आ
एक॥ तेज उ जं नित न सकै अनेक॥ या विधि जं
मम रूप विचारै॥ सकल उपाधि उरे की टारै॥
६०॥ सो बन र दे इन्द्रिय निधं भें॥ किं बा पुर वि
षय नि आरंभें॥ तो हंता कौ नदि गुण दोष॥ जी
त हो नि पायो मोष॥ ६१॥ जे सें घन र बि आडे अ
ये॥ तो तिन सों कछू नदि र बि छाये॥ अरु जो मे घ

दूरि कै गये ॥ तो कच रवि न प्रकासित नये ॥ ६२ ॥
द्वैपरे वरे घन वृंद ॥ जी नैलि पलोक मति मंद ॥ जै
गद पवन घन तौई ॥ धूम धूलि अरु दामिनि दोई
ईशर सुको गुण सीत उष्मादि उपजत विन सत
द्वै अनादि ॥ परि नहिलि पत्र अलि पत्र अकास ॥ लो
त्तां परम परकास ॥ ४४ ॥ परितौ द्वंद्व संगति नहि करे
मया गुण निदूरि परिहरें ॥ जो लोक रिमरी दृढ भासि
बूरी नदी रजत मआसक्ति ॥ ६५ ॥ द्वै द्वै नैन भूले
लौ ॥ मम जन संग करे नदी तौ लौ ॥ जै सैं रोग दोइ
न मांही ॥ दृढ करि मूल उषा स्थो नांही ॥ ६६ ॥
तजि अगद अपथ्य हि करे ॥ तौ सो

॥ त्या अद्वैत रसगन्धर्वमूल ॥ साजाला गिन
ये निर्मूल ॥ ६७ ॥ तौ लगि संग अपथादि करे ॥ तौ
दुस्यों जगमें अवतरै ॥ बंधु कुटुंब सिषिबदुते
आवै सकल सुर निके प्रेरे ॥ ६८ ॥ तिते अंतराद
दुकरै ॥ जोगी को कर्म निविस्तरे ॥ सोतिन ते पा
अवतार ॥ बहुस्यों करै भक्ति विस्तार ॥ ६९ ॥ कर्म
थमें नूतने नांदी ॥ मै प्रेरकता के उर मांदी ॥ या वि
ये पाइ ज्ञान विज्ञान ॥ देखै मोहि मिटावै आन ॥
० ॥ तब ता को तन कर्म नि करै ॥ लेन देन नो ज
विस्तरे ॥ पूरव संस्कार करवावै ॥ विधि को
नेष्यो न मिथ्या जावै ॥ ७१ ॥ सो मुनि मग न ब्र

ससुषमांदा॥ तातेंकरतें जांमैंनांदा॥ जोबेव
अरुवाटेदोई॥ आवैजाइकंदंजेसोई॥ ७२॥ अं
नषाडजलयीवैसोवै॥ ज्योभोदारदेहकोहोवै
॥ सोसोककूनजांमैंजोगी॥ निश्चलरदैब्रसरस
जोगी॥ ७३॥ जोकळूकंदंदेशेसंसार॥ इंद्रियगो
चरबिबिधिप्रकार॥ तैकळूसत्यनदिजांमैं॥
स्वप्नवस्तुज्योजागेमांमैं॥ ७४॥ प्रथमआत्मादु
तौअबंध॥ आपुदिनयोप्रकृतिसौबंध॥ बंदुस
मोसोबिद्यापावै॥ तबदुषजांनिप्रकृतिछिटका
वै॥ ७५॥ तबबदुस्योताकोंनदिगदै॥ मोदिजां
निमोहामैरदै॥ प्रथमदिजबमोकोनदिजांमैं

तव माया सुषुत्तममांन्यो ॥ ७६ ॥ बहुस्यो जव
मसरणदि आवे ॥ मम प्रसादि अज्ञानमियं वै
तव माया को दुषमय जांने ॥ परमांनंदरूपं मो
मांने ॥ ७७ ॥ ताते आयुहि गद्दी उपाधि ॥ ता को त
जे जांनिकरि व्याधि ॥ सदा निरंतर मांने रहे ॥ ब
स्यो भव साग नदि बदे ॥ ७८ ॥ ज्यो रवि अंस सक
नई अक्ष ॥ परिर बिबिनु नल पै प्रतक्ष ॥ रबि संज
ग बहु रिज बदी ई ॥ तव समस्त देषे सो सो ई ॥ ७९
रबि बिन अधकार अति हो वै ॥ ताते को ई न
मन जो वै ॥ रबि संजोग प्रकास दि पा वै ॥ तव स
ब देषे तम दि मिटा वै ॥ ८० ॥ परिते नै नत्रि काल

अलेप॥ अंधकारसौं नयेन लिपते त्यों के त्यों त
महं मांही॥ परिरविं विन कहु देषै नांही॥ ८१॥
रवितेतम उपाधि परिहरै॥ पाई प्रकाश प्रका
स दिहिकरै॥ त्यों यह आत्म मेरा रूप॥ स्वयं प्रव
सक परे असूप॥ ८२॥ जन्म मरण मर जादार
दित॥ काहू करिक बहू नहि गदित॥ दूजे रहि
त आपु हिएक॥ ताही करिय हृदह अनेक॥ ८३॥
॥ मदानुभाव सकल अनुभाव॥ जामै कदेन
कर्म स्वभाव॥ नित्यानंद सदा अति सुख॥ सदा
निरीद सदा परबुद्ध॥ ८४॥ जाकरि इंदियत
न मन प्रांना॥ चेतानिहै खरसो विधिनां

लोमन अरु बचन न जावै ॥ और हो बिधि
को पावै ॥ ८५ ॥ परि जब मो ते रहितो भयो ॥ त
ब ता को सब बल मिटि गयो ॥ अंधकार आयो
अजानु ॥ जातें दूरि भयो मै जानु ॥ ८६ ॥ जब ब
दुस्यो मम सरणादि आवै ॥ तब सो जान प्रव
सहि पावै ॥ तातें छोड़ै सकल उपाधि ॥ जो मो
बिनि करि लीन्ही व्याधि ॥ ८७ ॥ ता को अब ह
पर से नांही पारि मो बिनां तजी नहि जांही ॥
मो को पाइ सकल परिहरै ॥ मेरे चरण निवे
अनुसरै ॥ ८८ ॥ रवि प्रकास मिटै तम जै से
॥ मम प्रकास द्वै तत्त्व म औ से ॥ सो पुनि मो वै

नदिविसरोवै॥ मोहिसेइमोमां हिसमावै॥ ८
॥ मोमेदु तेनमायात्पावै॥ अरुसोमायामे नदि
आवै॥ तातैनितदीमोमेरहे॥ मोमिलिपरम
नंदहिलहे॥ ए०॥ उद्धवइतनोईअजांना॥ जो
केवलमेंजांनैनांना॥ ब्रह्मविनांकबहुदुजोनां
दी॥ जैसेसायजवरीमां दी॥ ए०॥ हेतदेजडमि
थ्याजांनै॥ चेतनएकब्रह्मथिरमांनै॥ अरुयु
दपंचवर्णविस्तार॥ उपजैबिनसैबारंबार
॥ १२॥ जाकोंमिथ्यावेदवधानै॥ अरुत्योदी
गुरुसाधूमांनै॥ अरुअनुभवतेत्योदीदेवै
॥ जागेस्वप्नजगतत्योलेवै॥ ए०३॥ औसोज

गाढ़ करै विघन निवारि भक्ति बिस्तरे ॥ ता को त
न जो निश्चल होई ॥ तौ हूं आदर करै न कोई ॥ १०० ॥
छोड़े जो मम समाधि समेत ॥ गाढ़ि मम सरण बंद
वेदत ॥ जो गढ़ि बाटे अहंकार ॥ ता ते न दिख
टै संसार ॥ १०१ ॥ ता ते सब लजि मो को न जे ॥ म
म आधीन है आपात जे ॥ मम पर साद ते मो के
पावे ॥ बहु स्यो भव दुष में न दिखे ॥ १०२ ॥ जे
दो वे मेरे आधीन ॥ आपुहि माने सब बल ही
न ॥ मैं आधीन हो उता जन के ॥ ज्यों आधी-
न दया मन के ॥ ११० ॥ केवल जो मम सर
आवे ॥ ता ही की सब इच्छा जावे ॥ ता ते वि

न आवे कोई ॥ विघनतदां इंछा जदां दोई ॥ १
मम आनंदर है आनंदित ॥ सब देवे निके
वैबंदत ॥ ताते उद्धव पद ई करणों ॥ मेरा न ज
ह है मेधरणों ॥ ११२ ॥ जग अरु आपु ब्रह्म म
जानें ॥ द्वैत भाव कब हें नहि आनैं ॥ ब्रह्म ना
ते ब्रह्मदि पावे ॥ जन्म जन्म के दुषदि बिसरावे
॥ ११३ ॥ दोहा ॥ असे सुनि श्री कृष्ण सों ॥ अति
दुःकर जान ॥ पुख्यो सुगम उपाइत ब ॥ उद्धव
रम सुजान ॥ ११४ ॥ इति श्री नागवृक्षदापुरा
एकादश स्कंधे श्री भगवद्गुह्य वसंवादे नाग
यां परमार्थानि पुराणयनाम अष्टाविंशोऽध्या

दे प्रभु यह तुम जान बखान्यो ॥ सो तो मैं अति
कर जान्यो ॥ बस नां ही इंदिय सन जिन को ॥ के
से काज दोइ प्रभुतिन को ॥ १ ॥ जे हें परम हंस द
दचित्त ॥ तिन के ब्रह्म दृष्टि है नित ॥ और जे वद
जान विचारें ॥ धेचि धेचिया मन कों धारें ॥ २ ॥ ति
को मन बसि होइ न ज्यों ज्यों ॥ महा कलेसल है ते
त्यो त्यों ॥ तिन को मन बसि होइ न केयो ही ॥ प्रम
करि जन्म गंवावों ही ॥ ३ ॥ तु व पद परमांनंद स
मुद ॥ ता को भेद न जाने दूद ॥ करै जोग जग्यादि
क कर्म ॥ तिन तें कदे न छूटे नर्म ॥ ४ ॥ ता सें ग ब ब
धै जो करै ॥ जा सै जुग जुग जन्म मरें ॥ के व

तुम्हारे जेते ॥ परमां नंदलदे सब तेते ॥ ५ ॥ जबदी
तुव चरणानि आवे ॥ तबदी ते परण सुषपावे
पानि कटन आवेतिन के ॥ तुम्हरे चरण हृदें में
न के ॥ ६ ॥ तातें सदजदि जगत मिटावे ॥ तुव चरण
निमें सदज समावे ॥ तुम ब्रह्मादिस कल के नावे
का ॥ सब दिन कों प्रभुता के दायक ॥ ७ ॥ तिन के च
रण गेहे के दीन तुम ता के होवो आधीन ॥ अस
पद के दा अचं ना स्वांमी ॥ तुम सब प्रभु सब अं
र जांमी ॥ ८ ॥ तिन कों सब तजि सेवे जोई ॥ करे
आपु बस तुम कों सोई ॥ सीस मुकुट धारी हैं जेते
॥ तुव पद मुकुट निगारे तेते ॥ ९ ॥ राम रूप तम

भये मुरारी॥ तिनकी न्दुबानर अधिकारी बां
रसकलसषातुमकरे॥ सबदिनके सबदित अ
चरे॥ १०॥ तातैं जोतुवक्ततदि विचारै॥ सोक्योंतु
वपदभजननिवारै॥ तुमही नषसषदहसंवासी॥
चेतनिसक्तितुमै पुनिधारी॥ ११॥ सदा रहै तुम
आधार॥ तुमही नितप्रतिपालनहार॥ तापरि
जीवतुमै नदिजां नैं कर्त्ता मर्त्ता और निमानें॥
१२॥ तौहंतुम और गुणानदिमानें॥ बहुविधि
जहांतहोरव्यागंनों॥ पुंछिजबहीतुवसरणाद
आवे॥ तबतुमहोंचास्योफलपावे॥ १३॥ प
रितथापिसो अति अज्ञान॥ तुमकों इलेइजो

आन॥ चारिपदारथसेवकलाके॥ तुम्हरीभक्ति
तजेंजाके॥ १४॥ एकजहानांहीतुवमजनों॥ न
कजांनिसोईसोतजनों॥ तातेंजोहोवेसर्वज
तुम्हरेउपकारनिकोतज॥ १५॥ असुविधिस
आयुरबलपावे॥ बहुविधिप्रत्यपकारबन
॥ तोहंतुम्हेदिअनृणनदिहोई॥ ब्रह्माआवि
दांलेंजोई॥ १६॥ जेतुमबादरसनगुरसंप॥
तरिचेतनिसक्तिअनूप॥ योजीवनिकेपापा
ब्रह्मरो॥ आपुदिदेनब्रसंकटारो॥ १७॥ तातें
धौमजनांनंद॥ सहजमिलोतुमछूटैफंद॥
निप्रियउद्धवकेबेन॥ तबबोलैकृपाकेओ

॥१८॥ श्रीमन्नानुवाच ॥ इत्युच्यते उच्यते मम
भक्त ॥ सब जीवनि को दित अनुरक्त ॥ तौ सौं व
हौं आपने धर्म ॥ जातें मिटे सब ज सब कर्म ॥ १९
॥ करतें सुष आगें सुषावे ॥ छोड़े न ब्रज य मो
मैं आवे ॥ उच्यते कर्म करैं नर जे ते ॥ मेरे देत क
रै सब ते ते ॥ २० ॥ कर्म निमै जायें मम नाम ॥ मेरे
करि राखे धन धाम ॥ मोमें अर्थ मन की वृत्ति
॥ ताके सब आचरन निवृत्ति ॥ २१ ॥ मेरी प्रीति
करै जो करै ॥ मेरी प्रीति रहित परिदरे ॥ जिनि
देखनि मै मेरे भक्त ॥ तिनि करि बास होई अ
रक्त ॥ २२ ॥ सुर अरु असुर नर निमै जे ते ॥ मेरे

मक्तनयदें केते॥ तिन तिन के आचरण निजा
ने॥ त्यों ही त्यों आपुन हूं गं नैं॥ २३॥ मेरे जजम दो
हू व करै॥ परबानि में मिला पविस्तरै॥ मेरी जहां
जातरा होई॥ तहां तहां चलि जावे सोई॥ २४॥
गीत नृति वादित्र करावे॥ दूत्र च वर आदिक
अधिकावे॥ अति उदारता करि सब गं नैं॥ म
महित लगे भली सो जानें॥ २५॥ सब भूतनि में मो
को देखे॥ अंतर बाहर एके लेखे॥ आपु आदि ज
ग मो में जानें॥ ज्यों आकास अनादृत मां नैं॥ २६॥
॥ वी सब में जानें मम भाव॥ त्यागै सकल प्रवृत्ति
स्वभाव॥ सब दिन के सतकारादि करै॥ जान

दृष्टि भेदादिपरिहरे ॥ २७ ॥ एकें विप्रवेद अधि
कारी ॥ एकें अंत्यजमदविकारी ॥ एकें विप्रनि
केधनहर्त्ता ॥ अरु एकें धनके विस्तर्त्ता ॥ २८ ॥ ए
कें तेजदीनबहुदेखे ॥ तेजवंतबहुएकें पेखे ॥ एकें
क्रूरसकलदुषदाई ॥ एकें सातिकसकलसदाई
॥ २९ ॥ इत्यादिकुनां विधिदेखे ॥ परिजो भेदक
हूँ नही लेखे ॥ मेरी दृष्टि सबनिमें आनें ॥ ममज
नपंडिततादिवषांनें ॥ ३० ॥ याविधिसबमेमोको
जांनें ॥ देहभेदकछूवैनदिआनें ॥ थोरेकालमादि
ताजनके ॥ सबविकारमिटिजावैमनके ॥ ३१ ॥ स्पृ
र्धातिस्कारअदंकार ॥ सकलमिटैकछुलगे

२॥ ताते देह दृष्टि नदि धरै॥ लोक उट वला जपरि
३॥ ३२॥ हा सी करै सकल ईलोग॥ परिसो आनें
रषम सोग॥ तिन की कछु मन में नदि आनें॥ सब
जीवनि मे मो कौ जा नै॥ ३३॥ परषच्च रचंडालनि
अति॥ जहां लों मेरी सृष्टि अनत॥ नमस्कारति न
तिन को करै॥ दंड समाने धरणि मे परै॥ २४ जाल
गिया वरजंगम माही॥ मरौ ना बहो इधिर नाही
तौ लगि मन बच काय समेत॥ यों सब मेवां ने म
देत॥ ३५॥ या विधि करत रदै नर जोई॥ ता कौ सक
ल ब्रह्म सब होई॥ मिटे अविद्या विद्या आवै॥ ता
तैं बंधन सकल मिटावै॥ ३६॥ उद्धव सकल मते

हैं जते ॥ वेद मध्य में नाथ ते ते ॥ तिन में इह मत तो
मसार ॥ जाते बेगि मिटे संसार ॥ ३७ ॥ मन क्रम
वचन जहां लों जे ते ॥ मम रूप दिखों नें सब ते ते
उद्धव ईसो धर्म है मेरो ॥ कदा प्रभाव कहै तिति
केरो ॥ ३८ ॥ अणु रूप अणु प्रगट जो होई ॥ क्यों ही
दुरि मिटे नहि सोई ॥ जहां लगे गुण निर्मित व
॥ तहां लगे सब होवै अस्तु ॥ ३९ ॥ मो निर्गुण स
गुण प्रकासी ॥ ना ते मम धर्मो अविनासी ॥ मेरो
सक दे नहि क्यों ही ॥ मम धर्मो थोरो अत्यो ही ॥ ४० ॥
॥ अरु उद्धव यह कहा कही जे ॥ मेरो धर्म कदे नहि
ही जे ॥ उद्धव जे लीक कब्यो हाव

विधिप्रकार॥४१॥ जिन तें केवल हांदि अन
॥ प्रवृत्ति हूं को सब मेरे अर्थ ॥ नरक निभां ही उ
र नहार ॥ काम क्रोध दोषादि विकार ॥४२॥ जे
ते ऊतें मो में करैं ॥ तौ हूं मो हिल हूं न ब्रतिरें ॥ जे सैं
कंस मरण नय कस्यो ॥ मेरो धर्म न ही आचर्यो
॥४३॥ परिसो नय ऊ करि मो मां हि ॥ मम पद प
दु-यो भव में नां हि ॥ अरु गोपि कृति किये वि
चार ॥ लंघे वेद तजे नरतार ॥४४॥ परि विन चा
रो मो मै कस्यो ॥ तौ हूति नि भव जल परि दस्यो
अरु ज्यो द्वेष कियो सि सुपाल ॥ जाते जीवनि
से काल ॥४५॥ परिसो ऊ मो में करि दोष भव ज

लतरिकरिपदचोमोष॥श्रींविषरूपाविकार
जेते॥मोमेंआयेअमृततेते॥४६॥तातेयदवि
वेकचतुराई॥इहेंबुद्धिदूजीनहीकाई॥जोमु
सोंसाचदिलीजे॥पूरनकाजआपनोंकीजे
॥४७॥यदभूतीक्षरणंशुरदेहसकलविका
रनहीकोगेह॥ताकरियेयेहरिअविनासी॥
निरविकारपूरनसुषयसी॥४८॥यदसबजस
ज्ञानकोसार॥जातैमिटैसदजसंसार॥मैंसंदे
पमांदिसबकह्यो॥यातेसारनकादिवेरह्यो॥४९॥
यदनरतनअरुयदममज्ञान॥देवनूहंको
लनज्ञान॥जद्यपिजीवलहेन

नपावै एह॥५०॥ ताते में नाथ्यो निज ज्ञान जा
मोदिल दै तजि आन॥ उद्धव प्रसा करी तुमजे
॥ उत्तर सहित कही मैं तेती॥५१॥ ते सब तत्व वे
को जानों॥ मेरो परम रूप करि मानों॥ यह तुम
रो मेरो संवाद॥ अध्यात्म परमात्म वाद॥५२॥
॥ ता को सुनि हृदे मे धारै पावे मोहि आपवे
तारै॥ जो यह मेरो पूरण ज्ञान॥ मेरे नेक निवे
दै दांन॥५३॥ सो कहियु तु है मेरो दाता॥ जहां
हावे विषया ता॥ जो जो देइ लहे सो सोई॥ लोच
वेद नाशत है दोई॥५४॥ ताते दांन देइ जो मेरो
॥ मैं आजाउ जे मति ति नूजे॥ मोति उर मोचे

कोंनितदीपटे॥ ताजनसौंमोसौंदितबढे॥ ज
जनमेरोअतिप्रियहोई॥ ताकेसमिदजानति
कोई॥ ५६॥ जोयहसुनैनित्यकरिआदेर॥ औ
रसकलकौकरैअनादर॥ सोकर्मनिसोलि
तनहोई॥ मेशभक्तिलहेददसोई॥ ५७॥ मैयह
परमजानउच्चास्यो॥ उद्वलतुमककुहिरदे
धास्यो॥ सोकमोदमयोनिवर्त॥ निश्चलम
हदेआवर्त॥ ५८॥ उद्धवयहजोमेशजान॥
सोमतिजानौमोतैंआन॥ तातैंदेनसहितदे
सोई॥ अरुनासतिकडहकुजाहोई॥ ५९
तिनजानैनादिममभक्त॥ इति

आसक्त ॥ तिन कौं ज्ञान न दे नौ एह ॥ ज्यों काल
रुखी जरु मेह ॥ ६० ॥ इनि दोष नि करि दो इवि
न ॥ मेरो नक्त प्रोति दृढ दीन ॥ अस्त्री सूझै औ सो
होई ॥ ताहुं सो अंतर नहि कोई ॥ ६१ ॥ औ संनु सो
यह ज्ञानादि कहिये ॥ तौ तिन सहित परम पद
लाहिये ॥ जो यह मेरो ज्ञानै ज्ञान ॥ ताहि ज्ञानि वे
र है न आन ॥ ६२ ॥ ज्यों कोई पीवै जु पीपुष ॥
रहै न दुजी भूष ॥ ज्ञान कर्म जोग अष्टांग ॥
षष्ठांशि ज्योति सब अंश ॥ ६३ ॥ अर्थ धर्म मो
अरु काम ॥ इन सब दिन को मो मै धाम ॥ ताते
मो मै आवै जोई ॥ इन सब दिन कौं पावै सोई ॥

६४॥ परिमेरो जनक छुन लेवै॥ सकल सागि व
रि मो को सेवै॥ तातैं साधिरु साधन जेते॥ मम उ
दवै मो सो तेते॥ ६५॥ सब तजि जव मम चरण
सेवै॥ आपुनि बेदै कछु न दिते॥ ता के समि
जो प्रिय नांदी॥ सो नित मो मे मे मांदी॥ ६६॥ तब सु
निहरि के असेवै न॥ उद्धव आ सुकुला कुल नै
॥ आगैं गढे अंजलि बांधै॥ प्रेम मगल तन दृढ
धै॥ ६७॥ ब्रह्म नद ते बोल्यो न दिजाले॥ कंव द
ते गदगद स्वर आवै॥ तातैं उद्धव चुप करि रहै
॥ कछु बेर कछु बैन न कहै॥ ६८॥ बहु स्यो चिते
थं नि करि धारज॥ पूरण प्रेम मयो अव

॥ निश्चल आपु कृतार्थ मान्यो ॥ सब संदेह ह
तैं मान्यो ॥ ६६ ॥ हरि के चरण माधौ धास्यो ॥ उ
त्तम क्त वचन उच्चास्यो ॥ जिन तैं हरि सो बाटे वे
॥ जिन कों कहिये सुनि वेक्षेम ॥ ७० ॥ उद्धव उ
वाच ॥ नाथ अजन्मा अरु आवि नासी ॥ परमानं
द परम परकासी ॥ तिन के संनिधान जब आयो
॥ तब ही सब अज्ञान मिय यो ॥ ७१ ॥ संनिधान
पावक के जावै ॥ सहज हित मय सीत गवा
वै ॥ अरु ता परनु म परम दवा लु मोनि जजनु
परि नये कृपालु ॥ ७२ ॥ यह बिज्ञान दीप मो दीव
न्हों ॥ जा तैं सकल सुना सुन चीन्हों ॥ तुम्हरे चर

ए सरण न व मां ही ॥ दुजे वोर क हं सुष ना ही ॥ ७० ॥
॥ जे कोई तु व कृत कौ जानै ॥ अरु ता पर न व कौ
दुष मां नै ॥ सो तु व चरण सरण न दि आवै ॥ तौ व
जे का ते सुष पावै ॥ ७१ ॥ प्रभु जी तु म अति करु
करी ॥ म म माया सी परिहरि ॥ सकल जाद व निमै
अस्ते द ॥ अरु जु व ती सु त बित ग द दे द ॥ ७५ ॥ ए
सब मेरे मन तैं टारै ॥ अपने चर ण कें बल उर धा नै
॥ तु म बिस्तारी अपनी माया ॥ जिनि स द सकल
जगत न र माया ॥ ७६ ॥ सो तु म ज्ञान ष ड ग सो
॥ कै क पा ल निज जी ति निबे दी ॥ मो न्म स्ते ज्ञा
का सी ॥ योगे श्व र दृ श्व र अविना

दिए कवर देवा॥ निश्चल हृदौ निरंतर सेवा॥ तु
म्ह दिछो डिदू जो नदिजां नों परिसेव कैं सेव
गं नों॥ ७८॥ मैहि प्रसाद दीजिए एह॥ तुम सों
निश्चल बटे सनेह॥ करीबी नती उद्धव नक्त॥
बोले हरिजी कैं अनुरक्त॥ ७९॥ श्री भगवान उव
च॥ तथा अस्तु उद्धव मम नक्त॥ मम चरणानि
निश्चल आसक्त॥ अब तुम उद्धव ऐसी करो
लोक निकी सिद्धा विस्तरौ॥ ८०॥ बदरी षंड अ
श्रम मेरौ॥ अति पुनीति दरसन जिहि करौ॥ त
हां तीरथ मम चरणानि कौ जल॥ सुनात दि
दरस पर्स अस्नान हरै मल॥ ८१॥ नाम अलक

दासो गंगा ॥ निर्मल वारे दर्श सब अंग ॥ जहां जा
तुम वासा करौ ॥ फल नक्षरा तन बल कल धरौ ॥
२२ ॥ द्वंद्व सीत उष्मादिक सहौ ॥ विनयादक सुभ
नक्षरा गहौ ॥ इद्रियन के अर्थ निपरिहरौ ॥ यद
बिज्ञान कों म उर धरौ ॥ २३ ॥ मो तैं सीव्यो ज्ञान न
म जोई ॥ बैठि एक त बिचारौ सोई ॥ वचन चित स
मो में धरौ ॥ मेरो धर्म सदा बिस्तरी ॥ २४ ॥ तब त
पों गुण कौ परिहरिहौ ॥ मम न गुण पद कों अनु
परिहौ ॥ यद उद्वल पर तं ज्ञा मेरी ॥ फिरि उत पति
कै है तेरी ॥ २५ ॥ या बिधि कृष्ण वचन उच्चारै ॥ ते उ
द्वल मेस्त गिधारे ॥ चरण निपरि पर दक्षरा दीन्य

॥ तब चालिबेकी अंछा की नंदी ॥ ८६ ॥ जद्यपि द्वंद्व
देनादि आवै ॥ तो दूहरि जीत जेन जावै ॥ आंस
व अति आतुर बुद्धि ॥ तन मय मन यौन तन की सु
॥ ८७ ॥ कृष्ण बिरयौ गन क्यौं ही सदै ॥ बार बार चलि
फिरि फिरि रहै ॥ तब अंतर जांमी गोपाल ॥ ज
कों जां नि प्रेम बेदाल ॥ ८८ ॥ निकट बुलाइ मिले
अंग ॥ जान रूप की नौ सरबंग ॥ तब अपनी पा
वरी दी नंदी ॥ ते उद्धव जन माथे ली नंदी ॥ ८९ ॥ तो दू
प्रथम दि कृष्ण पधारे ॥ जादव लै प्रनास संहारे
॥ तब ही तहां उद्धव चलि आये ॥ कृष्ण एक बैठे
पावे ॥ ए पुनि मेत्रे पधारे तहां ॥ कृष्ण देव बे

जेसे अंधकारकों जांनु ॥ ६२ ॥ मेरे कों दीन्हों आदेस
वेहे जहां ॥ ६३ ॥ कियो हरि कों परनाम ॥ दरसन प
यो अति अनिरांम ॥ ६४ ॥ गढे सये जो रिकर दी
॥ प्रेममगन कछु कदेन कोई ॥ तब तिन कों हरि
नाथो जांनु ॥ विदुरदि कहि यों यह उपदेस ॥ अ
जादीन्हो उद्धव जन कों ॥ अपनी सक्ति कियो थि
मन को ॥ ६५ ॥ तब उद्धव हरि चरण निपरे ॥ हरि ह
देनि श्वल करि धरे ॥ पुनि उद्धव जन पदुं चेतहां ॥
रनारायन प्रगट जहां ॥ ६६ ॥ तहां जाइ कीन्हें आ
चरण ॥ जे जे हरि जी नाथ करण ॥ बल कल अंबर
फल आहार ॥ प्रेममगन नित ब्रह्म विचार ॥ ६७ ॥
तब त्रिगुण बिस्तार मिटायो ॥ उद्धव

पायो॥ यदहरिउद्धवकोसंवाद॥ हरिजीकोदेप
मपरसाद॥ ए॥ दीजाकोंकृपाकरैसोपावे॥ तजि
वसिंधुव्रत्नमेजावे॥ जबतैंयाकोंनापैसुनै॥ ये
सहितहृदैमेंगुनै॥ ए॥ ७॥ तबतेपावैपरमानंद
अमहाबिनामिटेदुषदुंद॥ यदस्वयंमेवआप
रिकह्यो॥ जामेकळूसंदेहनरह्यो॥ ए॥ ८॥ यामे
सोहस्रप्रभाव॥ मिटेजगतउपजेहरिभाव॥
निहरिषगटअमृतदकरे॥ भक्तनिष्यायसक
दुषदरे॥ ए॥ ९॥ एकजलघितेंअमृतउपायो॥ नि
धीनदेवनिर्कोपायो॥ जरारोगआदिकदुषदरे॥
लउपाइबिगतनयकरे॥ १००॥ अरुदूजोयदअम

एक॥ वेदसिधुतत्रयविवेक॥ सो आपने जननि को
प्यायो॥ जनममरणनयद्विरमितायो॥ १०१॥ त्रैलोक्य
आदिपुत्रिष्यअविनासी॥ सुमिरतजिह्वादिमिटे
वपासी॥ कृष्णनाममलीनों अवतार॥ तिनको बंद
नबारंवार॥ १०२॥ दोहा॥ त्रैलोक्यसुनिसुषदेवसो
परमतत्वउपदेस॥ कृष्णकथाके प्रेमते॥ कीन्ही
स्तनरेस॥ १०३॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एक
दशस्कंधेश्रीभगवदुद्धवसंवादे नाषायां उद्धवमुक्ति
निरूपणनाम एकौणत्तिसौध्यायः॥ २६॥ चौपद॥
२२०६॥ राजोवाच॥ हे प्रभु हरिकी कथा सुनाओ॥
करणपुर

हृदयो॥ पाछें आपक हो कदा कीन्हो॥ १॥ आदवकु
को प्रगट्यो आय॥ हरिजी कदा कस्यो तब आय॥
श्वरु को बाधा नहि कोई॥ अरु दिज आपन मिथ्य
होई॥ २॥ सब के तन मन मोहन देह॥ परमांन सुधा
की गढ़॥ जे नारी हरि दरसन पावै॥ तिन सों नैन न
धे चै जावै॥ ३॥ अरु जहरि के रूप दिगावै॥ बांणी स
दित मांन जे पावै॥ अरु जे सुनि करि हृदय धारै॥ ते
पल को नहि छोडै पारै॥ ४॥ नारथ में अर्जुन रथ म
ही॥ बैठे दरसल दे जो जांही॥ तिन तिन हरि की सम
ता पाई॥ सब संसृत तत काल गंवाई॥ ५॥ ओ सो
तन हरि त्याग्यो कै सैं॥ कोई हरै ना गमणि जै सैं

॥ असे वचन कहन रदेन ॥ उतर दीन्हों श्री सुषदेन ॥
॥ श्री सुक ऊवाच ॥ दारावती उठे उत पात ॥ तिन के
दषिक ही हरि वात ॥ उये सेन आदिक सब लोग
सभा सुधार मादरषन सोच ॥ ७ ॥ तिन सों कृष्ण
चन उच्चार ॥ हरि को मतौ न लषें बिचार ॥ निज म
या सों मोहित करे ॥ ज्ञान बलै क सबन के दरे ॥ च
॥ श्री भगवान ऊवाच ॥ हे जादव दु सुनो मम वात ॥
॥ दाराती बहु त उत पाता ॥ एउत पात मृत्यु नी सं
न ॥ ता तैं तजिये यह अस्थान ॥ ए ॥ जुवती बाल
क्ष संबजे ते ॥ संघो धार पठे एते ते ॥ औरै सकल
भासहि जै ए ॥ तहां पश्य म सुरस्वती अहं ॥

करि सनां नतन निर्मल करिए ॥ सु ऊह दै तीर
व्रत धरिए ॥ जे जे बहु तपितर अरु देवा ॥ तिन की
की जे पूजा सेवा ॥ ११ ॥ अरु विघ्न की सेवा की जे
रिस न मान दान बहु दी जे ॥ गाइ नू मिसों नों बस्त्रा
॥ दय हाथी रथ अंन गृहादि ॥ १२ ॥ आसीर बाद दि
जन कै ली जे ॥ जातै विघ्न सकल ईछी जे ॥ दिव रु
तर गाइ की पूजा ॥ पाप हरन बिधि और न पूजा ॥
१३ ॥ औसी सुनि हरि जी की बानी ॥ सब जाद बनि
भली करि मां नी ॥ नां वनि वे वि सिंधु ऊतरे ॥ च
करि रथ न प्रयां ए करे ॥ १४ ॥ ज्यौं हरि तिन को
आजां दीन्हें ॥ त्यों त्यों सब नि सबे बिधि कीन्हें

॥ करि अस्मान धर्म बटु गं नै ॥ मध्य प्रभा स आ पु
दुमानै ॥ १५ ॥ तब तिन कियौ कसं भा पां न ॥ जाते न
लिगयें सब ज्ञान ॥ तिन ते मत्त सकल दुखये ॥ दरि
या बिबेक दरिलये ॥ १६ ॥ तिन में कल दुख्यो उत
न सब में प्रेर क दरि पर छन ॥ तब तिन की ता स न
मं कारी ॥ साति क्य बीर गि स उच्चारि ॥ १७ ॥ कृत ब
मी को करि अपमान ॥ साति क छो डे बांणी वान
॥ भाई जो क्षत्रीय तन धारी ॥ अरु बटु में कहिए
धिकारी ॥ १८ ॥ सो ओ सो ओ सी का कै रे ॥ सो वत
बाल कनि कै सिर दरे ॥ यद प्रहम निबचन सव
का स्यो ॥ कृत बमी को अति धि

। करि सनां नतन निर्मल करिए ॥ सु ऊह दै तीर
व्रत धरिए ॥ जे जे बहु तपित र अरु देवा ॥ तिन की
की जे पूजा सेवा ॥ ११ ॥ अरु विघ्न की सेवा की जे
रिसन मान दांन बहु दी जे ॥ गाइ नू मिसों नों बस्त्रा
॥ हय हाथी रथ अंन गृहादि ॥ १२ ॥ आसीर बाद दि
जन कै ली जे ॥ जाते विघ्न सकल ईछी जे ॥ दिव रु
तर गाइ की पूजा ॥ पाप हरन विधि और न पूजा ॥
१३ ॥ ऐसी मुनि हरि जी की बानी ॥ सब जाद बनि
मली करि मां नी ॥ नां वनि वे वि सिंधु ऊतरे ॥ च
करि रथ न प्रयां लो करे ॥ १४ ॥ ज्यों हरि तिन कों
आज्ञा दी न्ही ॥ त्यों त्यों सब नि सबे विधि की न्ही

॥ करि अस्मान धर्म बटु गं नैं ॥ मध्य प्रभा स आ पु
दु मा नैं ॥ १५ ॥ तब तिन कियौ कसं भा पां न ॥ जा ते न
लि गयें सब ज्ञान ॥ तिन ते मत्त सकल ई नये ॥ दरि म
या बि बे क दरि लये ॥ १६ ॥ तिन में कल दू न यो उ त
न सब में घेर क दरि पर छं न ॥ तब तिन की ता स न
मं कारी ॥ सा ति क्य बी र गि स उ च्चारी ॥ १७ ॥ कृत ब
र्मा को करि अप मां न ॥ सा ति क छो डे बां णी वां न
॥ नाई जो क्ष त्री य त न धारी ॥ अरु बटु में क दि ए न
धि कारी ॥ १८ ॥ सो ओ सो ओ सी का कै रै ॥ सो व त
बाल कनि कै सिर द रै ॥ यद प्रह मनि बचन स ल
का स्यो ॥ कृत ब मां कों अति धि का स्यो ॥ १९ ॥

वर्मो तव कीन्हो क्रुध ॥ बांणी बांण प्रकास्यो जु
॥ और करे सत्री को ऐसी ॥ व्याध कुरतु कीन्हो
सी ॥ २० ॥ मूरी प्रवा निरा युध न यो ॥ जा को बाहु जु
ल कटि गयो ॥ ता को बध ते कीनों ऐसी ॥ व्याध न
सई करै न के से ॥ २१ ॥ तब साति कउ विबोले बांणी
॥ सुनो सुनो दो सारंग यां नी ॥ इन को जस अरु आ
यु सिरायो ॥ ता ते इ सो मतौ द्वे आयो ॥ २२ ॥ एक दि
बचन षउ गति दिका द्यो ॥ कृत वर्मा को मस्तक
बाद्यो ॥ जद्यपि सब मिलि बहु तनि वास्यो ॥ तो
हूं साति कक्रोध न दटा स्यो ॥ २३ ॥ ता ते सकल म
ये तव क्रुध ॥ साति कदी सों वां न्यो जुद्ध ॥ तब ते स

कलभएदुदुओर॥ जुद्धरओसौदुरतरघोर॥
२४॥ कैईधनुषभालसौलरै॥ कैईधनुषभालसौलरै॥
दरै॥ कैईफरसागदाकुमारकैईलैसैदथाप्रदा
॥ २५॥ कैईगुरजगोफराकैई॥ दृष्टादिकानिनि
रैतेतेई॥ दृष्टितसवैकरैसंग्रामवैतेदेयेहृष्ट
रुसंम॥ २६॥ दयसौदयदायासौदाया॥ दयसौ
यसारयासौसाया॥ परसौपरऊंदेऊदनिनो
॥ मदिसरुमदयवैलवैलनिनो॥ २७॥ यचरसौ
यचरमिलिलरै॥ नरसौनरमिलियुद्धादिनर
महामत्तककुलपैनअसै॥ जुद्धकरैवनमंगन
जैसै॥ २८॥ सावज ॥ वाज्यज

जो ज अति क्रुध ॥ तदा सं ग्राम जीतरु सुभ
रें जुद्ध बीर निकों नद ॥ २६ ॥ गद सेना महु
को भ्राता ॥ नाम सुचारु पुत्र विष्ठाता ॥ त्यों
क सों मिलि अनुरुद्ध ॥ सुरथ सु मित्र करे ॥
जुद्ध ॥ ३० ॥ उल्लूक नि सव सह सजित सों
॥ मान आदि दै जो ध अपरि मित ॥ आपु
पु में जुद्ध दिवां नें ॥ हरि करि मो दित कछ
नें ॥ ३१ ॥ वृत्ति बं सदा सार दिवं स ॥ सात्व क
ध क मो ज ब संत ॥ अर्बुद सुर सेन मधु माय
दे स बिर्स जन कुंति रु कुं कुर ॥ ३२ ॥ आपु
मिलि जुद्ध दिवां न्यों ॥ सब मिलि पर स पर स

दमां न्यौं॥ पुत्रपितामाई अरु माई॥ मां मां अरु
नै जल राई॥ ३३॥ कका नती नां ती नां नां॥ मित्र मि
त्र मिलि जुध दिं गं नां॥ सुहृद सुहृद जाति नि सौ
ती॥ सब मिलि मण पर सपर धाती॥ ३४॥ तब स
रणी ए नये सब दिन के॥ टट तथा धनुष ति
न के॥ अयुध सकल क्षीण तब नये॥ तब ति
कर निरै र काल ये॥ ३५॥ नये मुख लचूरण
जेते॥ बज्र समान सिंधु तटी तेते॥ तेते सकल
रनि करिली नै॥ हरि सौ जुधादि क्रोध द्विकी नै
३६॥ शंभु कृष्ण बहु मांति निवारै॥ पारिते मू
क वृन् विचारै॥ शंभु कृष्ण कौं रिय

बुधबुधिअंतरमतिआने॥३७॥तबआपुहंवि
योतिनिक्कोप॥कस्योचहंसबहिनकौलोप॥तब
हरकाकरनितिनिलिये॥घोरमांदिप्रलयसब
ये॥३८॥विप्रप्रापआक्कादितकरे॥हरिमायाति
चारसबदरे॥पावकक्रोधप्रगटतहांनयो॥बां
विपनकुलजारिमरिगयो॥३९॥तबकुलसकल
नष्टहरिदेख्यो॥भूकौंभारउतास्योलेख्यो॥जाका
रणलीन्दौअवतारा॥सोपरिहस्योधराणिना
रा॥४०॥तबसंमदतटमेंबलिजड॥कीन्दौब्रह्म
ध्यानअतिजड॥आपुहिब्रह्ममांदिलेराख्यो॥म
नबदेहदूरिकरिनाख्यो॥४१॥संमप्रयाणलख्ये

हरिजवदं॥ लघुपिंपलतलवेवेतवदं॥ निर्म
लरूपचतुर्भुजधास्यो॥ दसहंदिसकोतिमरवि
वास्यो॥ ४२॥ ज्योतिर्विधूं मयावकपरकासा॥ ॐ
सोप्रगटनयौ उजासा॥ पीतवसनद्वैतनघनसा
म॥ तप्तस्ववर्णसोभा अभिराम॥ ४३॥ सुंदर
दाससहितमुखपद्म॥ कंदलनयनसोभा केस
कणनिकुंडलमकराकार॥ सीसमुकटसो
भा अधिकार॥ ४४॥ रुचिरनीलसिरकेसदि
साल॥ उरभृगुलता अरुवनमाल॥ कंदस्त्र
टिसतविराजै॥ दक्षघंटिकानूपरराजै॥ ४५
बहुआभूषणभूषितश्रंग॥ दिपतमोहै

अनंग॥ आयुधमूरतिमंतसमस्त॥ सुमि
रतिजिन्दिहोइमयअस्त॥ ४६॥ उत्तमचरण
केवलआरक्त॥ जिनकोउरध्यावैनितभक्त
॥ दक्षिणजंघानीचेकस्यो॥ बांमचरणताउप
रधस्यो॥ ४७॥ प्रेनिश्वलद्वैवेठकुम्हा॥ सुमि
रतजिन्ददिमिटैमयतस्त॥ अतिलघुमुसल
पंडजोरह्यो॥ जलमेंडास्योमंझुगह्यो॥ ४८॥
॥ सोव्रह्ममंझुजालमदिआयो॥ ताकेउदरलो
हसोपायो॥ जगव्याधमलकासोकीन्हो॥ ले
करिसरकेआगेदीन्हो॥ ४९॥ सोव्रह्मव्याधदु
लोवनमांही॥ हरिकोपदतिनजान्योनांही॥ ५०॥

रि को चरण दृष्टि जब पक्यो ॥ ५० ॥ सोई बांछा लख्यो ॥
तति निकस्यो ॥ ५० ॥ सोई बांछा लख्यो ॥
॥ बिप्र बचन नंदो मिथ्या करण ॥ ५१ ॥
निकट चलि आयो ॥ रूप छल ॥ ५१ ॥
पायो ॥ ५१ ॥ चरण लग्यो लख्यो ॥ ५१ ॥
भयो तब मृतक समान ॥ चरण छिपि बालि ने
जात ॥ कंपत अंग लग्यो ज्यों सीती ॥ पर दंष्ट्र मु
में कीन्हो अपराध ॥ तुम्ह दिन्ना न्यो मूरि पक्य
ध ॥ यद में कीन्हो सकल अजा ने ॥ बाल चला
यो मृग के जाने ॥ ५३ ॥ या अपराधा दित म
तारो ॥ जेतुं मना मलीयतै तारो ॥ ५३ ॥

सब पाप बिना से ॥ मेरि अज्ञान ज्ञान प्रकासे ॥
५४ ॥ ब्रह्मा आदि करै आराध ॥ तिन को मे की
न्हौ अपराध ॥ ताते प्रभु जी बिलंब न करौ ॥ मो
पापी के प्राण निहरो ॥ ५५ ॥ जातैं बंदू स्यो करौ
न ओ सो ॥ यद अपराध कस्यो में जे सौ ॥ जिन क
माया कौ बिस्तार ॥ ब्रह्मा सिव सन का दिनु मार
॥ ५६ ॥ ओ रौ श्रुति दृष्टा छे जे ते ॥ क्यं ही जां नि स
कैं न दिते ते ॥ मोहित सकल तुम्हारी माया ॥ ताते
किन हं पार न पाया ॥ ५७ ॥ तिन कौ पाप जो निहं
म जे ते ॥ कौ न भान्तिक रिजां नै ते ते ॥ ताते अंब
दूजी न बिचारौ ॥ बेगे मो पापी कौ मारौ ॥ ५८ ॥ ओ

सो जरा बधिक की बांछी ॥ सुनी निः कपट सारंग
पांती ॥ तब प्रभु आप बचन उच्चारि ॥ ता वै सकल
सो कान यटारे ॥ ५६ ॥ श्री भगवान् ऊं बाच ॥ उठु उठु
जरा न यादि मति मां नैं ॥ अयनों कस्यो पाप
जानैं ॥ यह समस्त लीला है मेरी ॥ यामें कदा
है तेरी ॥ ६० ॥ मेरी कृपा जाहि तु स्वर्ग ॥ जहां म
सुष नही उपसर्ग ॥ ऐसे बचन कह हरि जब
धस्यो बिमान स्वर्ग ते तब ही ॥ ६१ ॥ तीनि पारि
क्रम अरु परनां म ॥ करि कै बाधिक गयो स्व
धाम ॥ चटि बिमान सुरलोक दिगयो ॥ जय
सह जहां तहां जयो ॥ ६२ ॥ तब रथ ली

देखै॥परिहरिजीकोंकटनयेषै॥तुलसीगंधप
वनजबपायौ॥ताकेषोजहन्मयेआयो॥६३॥
पीपलमूलकीयेहैंआस्त॥प्रजामनोंससिसर
हुतासन॥आयुधआगैमूरतवंत॥यौनिजप
तिदेखेनगवंत॥६४॥तबदासकधीरजनद्वि
स्यो॥रथताजिविहबलचरननियस्यो॥उमग्यो
हृदयनयनजलछायो॥प्रेममगनमुखबैनन
आयो॥६५॥तबकरिधीरजआस्तनिवारे॥क
रुणांसहितबचनउच्चारै॥हेप्रभुमैंतुवचरणन
देखै॥तेपलकलपकलपकरिलेखै॥६६॥तबते
नष्टदृष्टिमैंनयो॥सबदुषएकबारअनुनयो॥

मूलादिमानकद्वंद्वसुषयायो॥ ज्यौं उडयति नि सि
मां दिक्षियायो॥ ६७॥ तुमबिनमें ज्यौं तनबिन
ए॥ जैसें अंधनयनबिना मान॥ औं सेबचनकद
तदीसूत दध्यो एकचरितरित अदभूत॥ ६८॥ ग
गनदुते उत्तमरथ आयो॥ दयनसदेतं अरुग
डसुदायो॥ मूरतिमयहरि आयुधजेते॥ रथ
जाई चढे सबतेते॥ ६९॥ यदचरित्रदारुकजबटे
ष्यो॥ बिस्मितनयौ अंचनालेष्यो॥ तबहरिसूत
दिबैन सुनाये॥ करिसनमानदुःखबिसराये॥
॥ श्रीमगवान् ऊवाच॥ सूतधारिका कौं तुम जा
वौ॥ समाचार सब जाइ सुनावौ॥ सबका

मनिर्जान॥ अरुमोको अव करत पयांन॥ ७१
दायवतीरदैमातिकोई॥ तनको धरे जहां लौं जो
॥ यद नर लोक तज्यो मै जब दू॥ सिंधु द्वारिका ब
रे तब दू॥ ७२॥ हं मरे मात पिता दिव जेई॥ ले अ
ने लोग नित तेई॥ दिला जेयो अर्जुन संग॥ रदै द
रिका कै दै संग॥ ७३॥ तिन को यद सदे द सुनावो
अरु तुम मम धर्म निमन लावो॥ नाम रूप सब
ध्यामो नो॥ ७४॥ क्षण भंगुर सब नाम रूप॥ निश्च
जानो मोहि अरूप॥ जहां तहां व्यापक मो को ज
नो॥ नाम रूप मम माया मानो॥ ७५॥ मेरे चरण नि
रंतरि न जो॥ दूजी सकल वासना त जो॥ ओं से कै

आवेमोमांदा॥ जातेकिरिदुःषपावोनां॥ १०६॥
यहसुनिसंततहमसौज्ञानहोहोसोकभोदुःख
आन॥ नमसकारकरिबारंबार॥ परिदक्षिणादेवि
विधिप्रकार॥ १०७॥ ॐ हवित्रोगतैः अतिदुःषपाशी
॥ ज्ञानविचारचितवदरायो॥ हरिकेशवरराधेस्त
उरधारे॥ तबदारुकदारिकापधार॥ १०८॥ ॐ हवि
यदनपमैतुमसोकहो॥ अदुःखलकोसदार॥ अ
वभाषोहरिकौगवन॥ अरुहरिजनउधार॥ १०९॥
॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एकदशस्कंधोऽष्टमोऽध्यायः ॥
परीक्षितसंवादे भाषाया बलिदेवनिर्वाणानं
॥ ३॥ चौपई २३ ५५ श्रीमत्कृष्ण

सनकादिकनुलिए॥भृगवादिकनितथासंगिकि
ए॥सहितनवांनीसंकरदेव॥इंद्रादिकसुरअरुउ
देव॥१॥विद्याधरकिंनरगंधरव॥पितरमहोरगच
रणसरव॥गरुडलोकपंडीअरुसिद्ध॥हरिकादरस
कांमनांविद्ध॥२॥सबमिलिहरिदरसनकोंआए॥
सबदिनहरिकेदरसनपाये॥हरिकेजन्मकर्मगुण
गावै॥सबमिलिजयजयसष्टसुनावै॥३॥सकल
विमाननिच्छायोगगन॥बर्षेपुष्पप्रेमकारिमगन
॥बारंबारकरैपरिनांम॥मुषतैनाषेहरिकोनांम
॥४॥ब्रह्मादिकसबहृस्मविभूति॥हृस्मादितेति
नकीउदभूति॥तेसमस्तदेखेनगवांन॥नैनमूदि

विंशत्यध्यायान्धारणामंगलधाम ॥ शिवाजी ॥
तवगन्धोऽध्याय ॥ ५ ॥ ब्रह्मरुद्राय एककारिभ्यां
द्वैतभावसबदूरिबदायौ ॥ निजतनलोभाभिर्भो
गिधारणां धरो ॥ अग्निउपाङ्गसमस्तोत्तरी ॥ तत्त्व
रिजीवैकं गसिधारे ॥ आबिधि सत्त्वकोत्तारिज
ये ॥ ७ ॥ तवदुन्दुभिवाजे सुरलाव ॥ उषज्जोदरभा
देनयसोक ॥ सत्यरुकीरतिधीरजाम् ॥ १० ॥
रुजोत्तमकर्म ॥ ८ ॥ ते सत्त्वगणसंगजगदीश ॥ ९ ॥
ते हरि सत्त्वदिनकेईस ॥ तां ते जहं याथादृष्टि
॥ पूजाध्यायान्धारणानीका ॥ ११ ॥ ते दीपमयनम
तेईते ॥ सत्यादिकविधि सत्त्वजेई ॥ १२ ॥
सकलसुरजेते ॥ हरिकीर्तनदिनलोद ॥ १३ ॥

॥ हरि बैकुंठ प्रयाणों कस्यो ॥ सो किन हूं कों जानि
नयस्यो ॥ कहूं न दाति न हरि कों देख्यो ॥ बड़ौ अंच
सब दिन लेख्यो ॥ ११ ॥ जैसे मेघ दाहि आकास ॥ अ
रुदां मनि प्रगटे घन पास ॥ कै करि प्रगट गुप्त कै ज
बै ॥ ता को षी जन को ई पावै ॥ १२ ॥ सो हरि कियो पव
णो जब दा ॥ काहूं ति नू दिन देख्यो तब दा ॥ भू में प्र
ट दुते तब देखे ॥ गुप्त भये किन हूं न दिखे ॥ १३ ॥ हे
प्रयद अंच जानां दा ॥ सक्ति अनंत सदा हरि मां दा
॥ जड कुल में हरि को अवतार ॥ अरु करि बोनो न
बिबु दार ॥ १४ ॥ सो समस्त माया करि जानों ॥ हरि
की सक्ति दो त सब मानों ॥ हरि जी सदा एकरा स

रहे॥ कमन कर जन्मनाद गढ़ें॥ १५॥ औरै कर्म कर
सब जानै॥ जन्म लियो हरि जो मानै॥ ए सब द
द नि के ब्रिहदार॥ हरि जो इन सब दिन के पार॥ १६॥
जैसे नट बाजी विस्तारे॥ बहुरथों आयु हिसक
निकारे॥ बाजीगर सब दिन तें न्यारा॥ त्यों हरि के
मरु अवतारा॥ १७॥ जिनि हरि रम्यो त्रिगुण संस
र॥ नां नां भांति प्रगट आकार॥ आप प्रवेश कि
तिन तिन में॥ सब बर ताई बिना सैं छिन में॥ १८॥
अंत आयु के आयु हिरहैं॥ त्यों ही इन अवतार मि
गहैं॥ गुर को मत कपुत्र जिनि आन्यों॥ काल म
के गरब दि भांन्यों॥ १९॥ ब्रह्म सस्त्र तें तु

॥ हरि वैकुंठ प्रयाणों कस्यो ॥ सो किन दूँकों जाति
न पस्यो ॥ कदूँ नदीति न हरि कों देख्यो ॥ बड़ो अचं
सब दिन लेख्यो ॥ ११ ॥ जैसे मेघ दोहि आकास ॥ अ
रुदं मनि प्रगटे घन पास दै करि प्रगट गुप्त दै ज
वै ॥ ता को धौ जन को ई पावै ॥ १२ ॥ सो हरि कियो प
णो जब ही ॥ कादूँ ति नू दिन देख्यो तब ही ॥ भू में प्र
ट दुते तब देखे ॥ गुप्त नये किन दूँ नदि पेषे ॥ १३ ॥ दे
पय द अचं जानां ही ॥ सक्ति अनैत सदा हरि मां ही
॥ जड कुल में हरि को अवतार ॥ अरु करि बौनो न
विबुद्धार ॥ १४ ॥ सो समस्त माया करि जानों ॥ हरि
की सक्ति दोत सब मानों ॥ हरि जी सदा एकरा स

रहै॥ कर्म न करै जन्म न दिगदैं॥ १५॥ औरै कर्म क
त सब जानै॥ जन्म लियो हरि जी कों मानै॥ ए सब
दुनि के विवहार॥ हरि जी इन सब दिन के पार॥
॥ जैसे नट बाजी विस्तारे॥ बहु रच्यो आपुहि सब
निवारै॥ बाजी गर सब दिन तेन्यार॥ यों हरि के
मरु अवतार॥ १७॥ जिनि हरि रच्यो त्रिगुण सं
र॥ नां नां नां ति प्रगट आकार॥ आप प्रवेस वि
तिन तिन में॥ सब बर ताई बिना सैं छिन में॥ १८॥
अंत आपु के आपु दिरहैं॥ त्यों ही इन अवतार
गहैं॥ गुर को मत कपुत्र जिनि आप्यों॥ काल मृ
के गरब दिनां न्यों॥ १९॥ ब्रह्म सस्त्र ते तुम दिखैं

यौ॥ बधिकदिस्वर्गसदेहपगयौ॥ तेजोअपः
रक्षाकरते॥ तौतनकौकोदेपरदरते॥ २०॥ स
जगकौउत्तपतिप्रतिपाल॥ नासकरैजिन
बलकाल॥ अैसेसकलसक्तिमयदेव॥ ब्रह्मा
दिकरैजासेव॥ २१॥ हरिबेकींधरणीकोभार
धस्योदुत्तमानुषआकार॥ तासोभूकोभार
तास्योपीछेलेउदूरिकरिडास्यो॥ २२॥ ज्यौं
टोभागोपगमांदी सोकांटेबिननिकसेनांद
॥ कांटेकांटेकड्या जबदा॥ उदऊडारिदियो
नितबदा॥ २३॥ त्योंहरिमृतवादेहक्योंराषै
निजानंदपदसोक्योंनाषै॥ अरुएकेअति

प्रज्ञान॥ तिनको प्रगटि धायौ जानौ॥ जोग सा
करि राखै देह॥ पुरुषारथ करि मानै राखै॥ सक
विकारनि को अगारा॥ ताको राखित जै सुख सा
॥ २४ ॥ तातैं तिनको मोह मित्य यौ॥ देह तजे ते ब्र
वता यौ॥ नै सेतन को को यौ अनादर॥ जाते को
ई करै न आदर॥ २५ ॥ तातैं हरि बैकुंठ पधार
॥ बाजो ज्यो देहा दिन चारे ब्रह्म रुद्र इंद्रादिक
जेते॥ देखियौ गौ हरि को तेते॥ २६ ॥ विस्मय न
कृष्ण गुण गावै॥ अपनै अपनै लोकनि जावै॥
जो यह चरित पढै॥ उविप्रात॥ कृष्ण देव की न मेल
जाति॥ २७ ॥ सो हठ रजि॥ कृष्ण की यावै जातैं कृष्ण

नो कर्मै जावै ॥ हरिदा कदा रि का पचायौ ॥ सो ब सु
पयै आये ॥ २९ ॥ कृष्ण वियोग बिकल अति चित
ते कृष्ण गये ते बित ॥ तिन दह न्यौ के चर राति पर
त च साध्यो बचन उच ॥ ३० ॥ आ सु प्र वा द च ले नै
न ते ॥ अति व्याकुल अट पट बै न न ते ॥ सब जग
ल को ना स सु ना यौ ॥ अरु बँ कौ नि जी न ज ना यौ ॥ ३१
यौ सु नि सो क त प त स ब न यौ ॥ कर त बि ला प प्र म
सहि गये त हां जा इ हरि जी न हि द दे धे ॥ ३२ ॥ त व दै व
रो द शि ब सु दै व उ गु से न रा जा न र दै व हरि बि व
ग तै उ प ज्यौ सो क ॥ ता तै च हौ त ज्यौ न र लो क ॥ ३३
रं म कृष्ण कौ ॥ सौ बियौ ग जा तै मि ट्यौ दे ह सं जै

ग॥ बल जुवती सब लै बल देह ॥ अगनि प्रवेस
यो अति तेह ॥ ३४ ॥ बसु देव हिले यो डस नारि ॥ व
यो सह गमन चिता संवारि ॥ प्रद्युम्नी दिज हार
जेतो ॥ तिनिकी जय नितिर सब तेतो ॥ ३५ ॥ सब हि
नके अति कृष्ण च योग ॥ ताते कस्यो भूत योग
हरिकी बिध जहां लौ जेतो रुकमणी ॥ शांति संक
ल मिलिते तो ॥ ३६ ॥ हरिको रूप कदे मै धर्या
म प्रवेस सब न मिलि कस्यो ॥ भुज प्रमस या प्र
जी को ॥ कृष्ण बि योग प्रहार कजी को ॥ ३७ ॥ त
ते भुज अति डम पायो ॥ कृष्ण जानत बज्र ते आगे

॥ सो क सब दास्यौ ॥ आपु आपु मै मारे जेते ॥ अ
बंध जानि प्रिय तेते ॥ ३४ ॥ तिन के जो पिडा दिव
हांना ॥ मृत क जिया जती बिधि ना ना ॥ सोई सो
जुनि सब कारी ॥ कृष्ण प्रीति ते नहि परिहरी ॥
तब धारिका कृष्ण चित्त भई ॥ सा हरबोर पल
मै लई ॥ कवल हरिजी के गह जेते ॥ त्यो ही र
कल ते ते ते ॥ धर नित्य बिहार तहां हरिजी के
सुमिरत सुनत उधार कजो को ॥ मंगल सकल
गल नि केरो ॥ जिनु वन सुप्रहो वै नित चैरो ॥ ध
अखी बाल बध सब जेते ॥ परत परत उचरे ते
ते ॥ ते अर्जुन दिली लै आये ॥ समाचार पांडव न सु
रे ॥ ३५ ॥ तुम्हरे सकल पिता मह जेते ॥ कृष्ण प्र

राहि सुनि करिते ते तु ॥ तुमहि बंध सधर राजा ति
प्रथरा तिल कबज कहियौ ॥ ४४ ॥ ते सब तजि
तरहि सिंगरा ॥ कृष्णहि से इह कृष्ण प्रथमरा ॥ जो
हरिजी को भ्रवतारा ॥ जा भैं कर्मरु गुया बिस्त
॥ ४५ ॥ तिन को कहै सुनै नर जोई ॥ सब यापानि
बूटै सोई ॥ या बिधि हरि के जे भ्रवतारा ॥ बाल
नत कर्म अपार ॥ ४६ ॥ लोक बूढ़ भैं परत जे
गावै सुनै बिचारै ते ते ॥ सब लेल है परम ज्ञान द ॥
ले कृष्ण बूटै इष्ट द ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ यह हरि को
तार भैं ॥ तुम सौ कह्यो सुनाया ॥ या को कहि सुनि सुम
उरा ॥ नारायण यै जाइ ॥

नस्त्रांभी॥ सकल लोक के अंतर जांभी॥ नक्त
हेत धरै अचतार॥ नाना नांति करै उग्र दार॥ ४९
तिन में कृष्ण सुयं भगवान॥ जान कृष्ण सब सा
प्रधान॥ जिन के गुण निकह्यौ सुषदेव॥ सुनत त
परी दत नर देव॥ ५०॥ जिन के ना चलिय न वनां ह
लै करि गयनि जेय दमोह॥ ५१॥ ऐसे कृष्ण संत नि को
॥ गमस्कारति न प्रभु को नित॥ ५२॥ ते अरु व संत
स सेनां म॥ देह धरे जीवन के काम॥ कृष्ण निधां
कि कर वावै॥ अयनी मक्ति प्रदे मै लावै॥ ५३॥
विधिन चंद्र प्रमितावै॥ अयने परम प्रदहि प्रजं
कृष्ण स्व प्रतिनिज्ञान सुनायौ॥ उद्धव जन निज

दयङ्कचायौ॥य॥सौलैकत्योसैरासक॥॥॥
तातैहोइनअरथधकासा॥जा॥नि॥नि॥
हजीकवेनजानैकोई॥य॥ना॥नि॥
गांकीन्दी॥मोसेचककाआजा॥
नकीहितमनुधारी॥मसुउ॥
री॥य॥जा॥को॥चा॥चे॥मु॥त॥मु॥ना॥
सुरगावे॥ते॥ते॥ते॥ते॥ते॥
अनुराग॥य॥हो॥प्र॥म॥उ॥जा॥द॥म॥
दावा॥रि॥क॥क॥क॥क॥
तजि॥म॥त॥
मनो॥को॥

कांम श्रुजेज्जड्जापोतिहि कांम ॥ ५८ ॥ तिन
वहिन कौनाया एह ॥ नक्तिरुमुक्तिमुक्ति कोगेह
तैयैसौ को जै प्रीति ॥ यह स कल सतने कोरी तो
वत सौ ला सै बां गावा ॥ जैव सु कल यष्टी कुजदि
॥ संतदा स गुरु ज्ञा जां दी न्दी ॥ चतुरदा सय ह नाय
की न्दी ॥ ६० ॥ दोहो ॥ प्रमग्नान प्रगट क ह्यौ ॥ म

घट फ्रेति ज देव ॥ ते मे रैनित्त पुर व सौ संतदा
गुर देव ॥ ६१ ॥ इति श्री नामावत महापुराणो ग
का ॥ २२ ॥ अंके श्री सुकयरी दत्त संवा दे नायाय
श्री कृष्ण वै कं व प्रयां गो ना मै र क चि सो ध्या यः ॥

